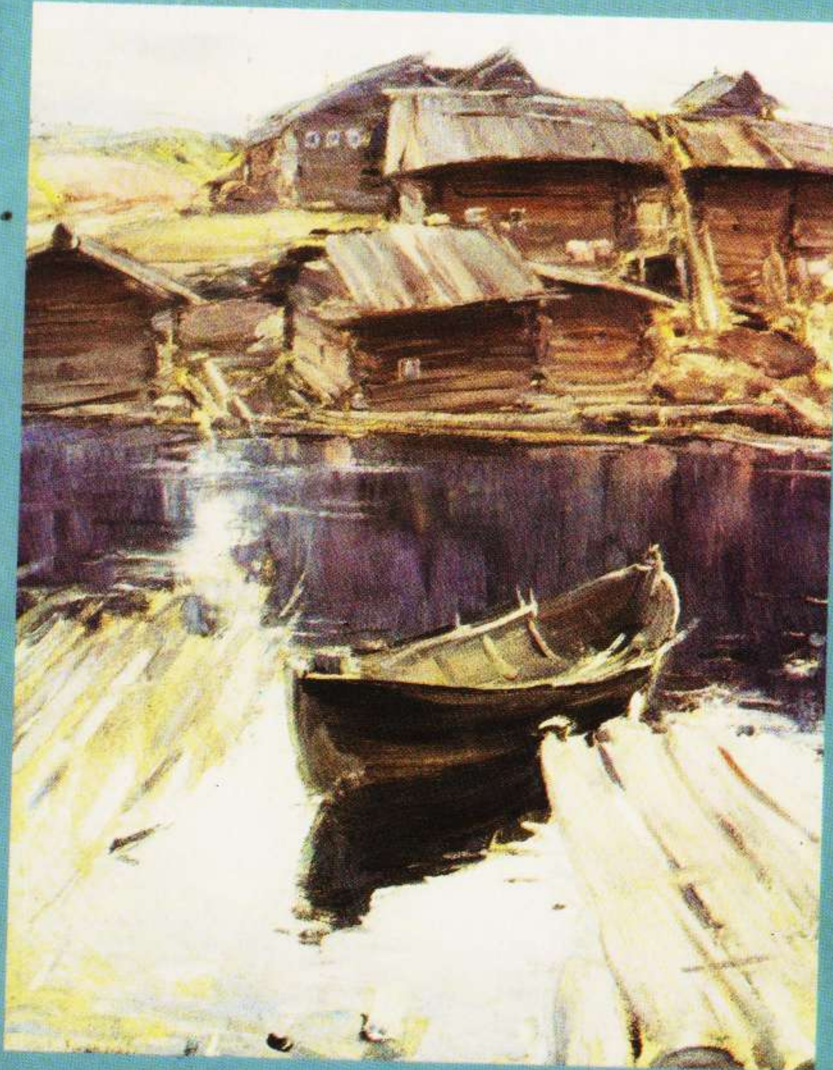
कुत्ते का दिल

मिखाईल बुल्गाकोव



कुत्ते का दिल

मिख़ाईल बुल्गाकोव की कहानियाँ

अनुवादक : विनय शुक्ला

मूल्य / रु. 70.00 (पेपर बैक)

प्रथम संस्करण / जनवरी, 2006

परिकल्पना प्रकाशन
द्वारा, जनचेतना, डी-68, निरालानगर,
लखनऊ–226 020 द्वारा प्रकाशित
क्रिएटिव प्रिन्टर्स 628/S-28, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित
आवरण-परिकल्पना एवं संयोजन / रामबाबू

KUTTE KA DIL *by* : **Mikhail Bulgakov**

संकलन के बारे में

मिख़ाईल बुल्गाकोव (1891-1940) की गणना बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के सर्वाधिक विलक्षण और विवादास्पद सोवियत लेखकों में की जाती है।

उनका जन्म कीव के एक कुलीन परिवार में हुआ। विश्वविद्यालय में चिकित्सा-विज्ञान की शिक्षा सम्पन्न करके वह डाक्टर बन गये। पहले विश्वयुद्ध के दौरान उन्होंने मोर्चे पर सैनिक अस्पतालों में काम किया। अक्टूबर क्रान्ति के बाद वह कीव लौटे और गृहयुद्ध के भँवर में फँस गये जो यहाँ परस्पर विरोधी पक्षों की बहुतायत के कारण विशेष रूप से प्रचण्ड था। 1920 के दशक में बुल्गाकोव ने डाक्टरी का पेशा छोड़ दिया और पूरी तरह से साहित्य-सृजन में लग गये।

बुल्गाकोव का यथार्थवाद कहीं अपनी व्यंग्यात्मक शैली कहीं नाटकीय आख्यानपरकता, तो कहीं फन्तासी जैसे शिल्प के इस्तेमाल के चलते अपने समकालीन समाजवादी यथार्थवाद की धाराओं और प्रवृत्तियों से काफ़ी अलग था। 1930 और 1940 के दशक में जब साहित्य, संगीत और चाक्षुष कलाओं के क्षेत्र में समाजवादी यथार्थवाद की एक हद तक यांत्रिक समझ का सोवियत संघ और यूरोप में काफ़ी प्रभाव था (जिसके कारण मेयेरहोल्ड, आइज़ेंस्ताइन, ब्रेष्ट जैसे लेखकों-कलाकारों तथा शास्ताकोविच जैसे संगीतकार को भी कटु आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था), उस समय बुल्गाकोव के लेखन की सोवियत संघ में आलोचना भी हुई थी। बुल्गाकोव ने जीवन के आत्मिक और भौतिक पक्षों की सूक्ष्मताओं के कलात्मक चित्रण के लिए जो विशिष्ट अभिव्यंजना शैली ईजाद की थी उसे कुछ आलोचकों ने समाजवादी यथार्थवाद से विपथगमन के रूप में देखा। बुल्गाकोव के जीवन-काल में उनकी रचनाएँ कम ही प्रकाशित हुईं, लेकिन आगे चलकर उन्हें व्यापक विश्वव्यापी लोकप्रियता मिली और उनके लेखन को भी समाजवादी यथार्थवाद की एक विशिष्ट शैली के रूप में मान्यता दी जाने लगी।

निस्सन्देह, बुल्गाकोव के चिन्तन और लेखन के कुछ अपने अन्तरविरोध भी थे जो कहीं-कहीं समाजवाद के प्रति संशय का भी रूप लेते प्रतीत होते थे। पर उनके इन अन्तरविरोधों को युगीन परिप्रेक्ष्य में समझा जाना चाहिये। बुल्गाकोव के सघन मानवीय सरोकार उनके अकुण्ठ मानवतावादी दृष्टिकोण के परिचायक हैं। उनकी कई रचनाएँ मानव-मुक्ति का प्रगीत प्रतीत होती हैं। साथ ही, वे पूँजीवादी युग के मनुष्य को चेतावनी भी देती हैं कि प्रकृति, स्वयं मानव की प्रकृति के प्रति हिंसा और स्वेच्छाचार

के कितने घातक कुपरिणाम हो सकते हैं।

लातिनी अमेरिकी साहित्य में प्रचलित यथार्थवाद की जिस प्रवृत्ति को जादुई यथार्थवाद का नाम दिया गया है, उस शैली की बहुत सारी अभिलाक्षणिकताएँ हमें बुल्गाकोव के लेखन में देखने को मिलती हैं। इस तथ्य को स्वयं गैब्रिएल गार्सिया मार्खेज़ ने भी रेखांकित किया है। बुल्गाकोव के उपन्यास 'मास्टर और मार्गरीता' से मिली प्रेरणा को भी उन्होंने मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है। व्यंग्य और फन्तासी के प्रयोग तथा मानवीय विडम्बनाओं के चित्रण की दृष्टि से बुल्गाकोव यथार्थवाद की गोगोलीय धारा के उत्तराधिकारी और आज के जादुई यथार्थवाद के पूर्वज कहे जा सकते हैं।

प्रस्तुत संकलन में बुल्गाकोव की आत्मकथात्मक रचनाओं—'यादों की चिन्दियाँ', 'यायावरी' और 'इक याद बसी है दिल में...' के अतिरिक्त उनकी दो व्यंग्यपूर्ण गल्पकथाओं—'घातक अण्डे' और 'कुत्ते का दिल' को शामिल किया गया है।

—कात्यायनी

अनुक्रम

यादों की चिन्दियाँ

समुद्रों में तैरते, यात्राएँ करते
और भटकते रूसी लेखकों को समर्पित

भाग एक

1

कोहकाफ़

. . . .

. . . .

2

मीआदी बुख़ार

भगवान को प्यारे हो चुके "रूस्सकोये स्लोवो" समाचारपत्र के गेटर पहने और सिगार थामे कर्मचारी ने मेज़ पर पड़े तार को लपककर उठाया और अपनी सधी व्यावसायिक आँखों से पल भर में उसे ऊपर से नीचे तक पढ़ डाला।

उसके हाथ ने हाशिये पर यंत्रवत लिख दिया : "दो कालमों में", पर अचानक उसके होंठ तुरही की तरह मुड़े और उसके मुँह से सीटी बजी।

कुछ देर तक वह मौन रहा, फिर उसने झटके से कागज़ का टुकड़ा फाड़कर लिख डाला :

तिफ़लीस का है सफ़र चालीस माइल..
कौन बेचेगा आटोमोबाइल?

ऊपर था : 'लघु व्यंग्यलेख', बगल में : 'लाँग प्राइमर'* और नीचे : 'कौआ'**।

अचानक वह डिकेन्स के एक नायक जिंगल की तरह बड़बड़ाने लगा :

"येस-स, येस-स!.. मुझे यह पता था! शायद, लंगर उठाना पड़ेगा। चलो, ठीक

* छपाई की एक टाइप।–सं.

** उपनाम।–स.

है! रोम में मेरे छह हज़ार लीरा हैं। Credito Italiano. क्या? छह... और वैसे भी देखा जाये तो मैं इटालियन सेनाधिकारी हूँ! हाँ-हाँ। Finita la comedia!"*

एक बार फिर से सीटी बजाकर उसने अपनी छज्जेदार टोपी को गुद्दी पर खिसकाया और तार व व्यंग्यलेख को उठाकर वह दरवाज़े की ओर लपका।

"रुकिये!" होश में आकर मैं चीख पड़ा। "रुकिये! कौन-सा Credito? Finita?! क्या? प्रलय?"

पर वह चम्पत हो गया।

मैं उसके पीछे दौड़ना चाहता था.. पर अचानक हाथ झाड़कर मैंने आलस्य के साथ नाक-भौं सिकोड़ी और सोफ़े पर बैठ गया। ठहरो, मुझे आख़िर सता क्या रहा है? अजीब-सा Credito? दौड़धूप की थकान? नहीं, यह नहीं... अरे हाँ, याद आया, सिर! दो दिन से दुख रहा है। परेशान करता है। सिर ही तो! अब यह देखो, पीठ पर अजीब-सी झुरझुरी दौड़ पड़ी। एक मिनट बाद उल्टे : शरीर शुष्क ताप से भर गया और माथा बड़ा अप्रिय-सा, नम है। कनपटियों पर हथौड़े बज रहे हैं। ठण्ड लग गयी है। फ़रवरी का नासपीटा कोहरा! बस, बीमार न पड़ जाऊँ... बस, बीमार न पड़ जाऊँ!...

सब पराया है, पर मतलब यह कि डेढ़ महीने में यहाँ का आदी हो गया हूँ। कोहरा छँटने पर कितना अच्छा लगता है। मकान दिखायी पड़ते हैं। समुद्र में खड़ी, सुनहरे चौखटे में जड़ी चट्टान। अलमारी में किताबें रखी हैं। तख़्त पर बिछा कालीन खुरदरा है, लेटना बड़ा दूभर है, तकिया बड़ा कड़ा है, कड़ा... पर किसी भी क़ीमत पर मैं नहीं उठूँगा। कितना आलस्य आ रहा है! हाथ उठाने की इच्छा नहीं होती। अब आधे घण्टे से लेटा सोच रहा हूँ कि हाथ बढ़ाकर कुर्सी पर रखी एस्पीरीन की पुड़िया उठा लेनी चाहिये, पर उठा ही नहीं रहा...

"मिख़ाईल प्यारे, थर्मामीटर लगा लो!"

"ओफ़, मैं यह सह नहीं सकता!... मुझे कुछ भी तो नहीं हुआ..."

हे भगवान, हे मेरे भगवान, हे भगवान मेरे! बुख़ार एक सौ दो है... कहीं यह मीआदी बुख़ार तो नहीं? अरे नहीं! नहीं हो सकता! कहाँ से होगा?! और अगर मीआदी बुख़ार ही हुआ?! चाहे जो भी हो, पर इस वक़्त न हो! यह तो बड़ी भयंकर बात होगी... कुछ नहीं हुआ। वहम ही है। ठण्ड लग गयी है और कुछ नहीं। इन्फ़्लुएंजा है, बस। रात को एस्पीरीन की खुराक लेकर सो जाऊँगा और सवेरे ऐसा भला-चँगा उठूँगा, मानो कुछ हुआ ही न हो!

* ख़त्म हुई कामेडी। (इटालवी)—सं.

एक सौ चार से ऊपर तक पहुँच गया बुख़ार!

"डाक्टर, यह मीआदी बुख़ार नहीं है न? मीआदी बुख़ार नहीं है? मैं सोचता हूँ कि बस इन्फ़्लुएंजा ही है, न? हुं? यह कोहरा..."

"हाँ, हाँ...कोहरा। गहरा साँस लीजिये...और गहरा...ऐसे ठीक है!..

"डाक्टर, मुझे ज़रूरी काम से जाना है... थोड़ी देर के लिए। जा सकता हूँ?"

"आप पागल हुए हैं क्या?!"

चट्टान गर्मी उगल रही है, समुद्र और तख़्त भी तपे हैं तकिये को पलटकर सिर टिकाने की देर है कि वह तपकर गर्म हो जाता है। कोई बात नहीं... इस रात को भी बिस्तर पर पड़ा रहूँगा और कल चला जाऊँगा, चला जाऊँगा! ज़रूरत हुई तो सफ़र पर रवाना हो जाऊँगा, सफ़र पर! मन छोटा नहीं करना चाहिये! मामूली इन्फ़्लुएंजा है...बीमार होना कितना अच्छा होता है। ताकि बदन खूब तपे। ताकि सब विस्मृत हो जाये। लेटकर आराम कर लिया जाये, पर भगवान बचाये, सिर्फ़ इस समय नहीं!... इस नारकीय दौड़धूप में कुछ पढ़ने-वढ़ने तक का समय नहीं... अब इतनी इच्छा हो रही है... आख़िर किस चीज़ की? अरे हाँ। जंगलों और पहाड़ों को देखने की। पर कोहकाफ़ के इन नामाक़ूल पहाड़ों को नहीं। बल्कि हमारे यहाँ के, दूरस्थ... मेल्निकोव-पेचेर्स्की*। हिमाच्छदित मठ। बत्ती टिमटिमा रही है और हमाम का धुआँ निकल रहा है... हाँ-हाँ, वन और पर्वतों को देखने की इच्छा होती है। गर्म हमाम में, टाण्ड पर लेटने के लिए मैं झट से आधा राज देने को तैयार हूँ। पलक झपकते ही चंगा हो जाता... और बाद में—नंग-धड़ंग दौड़कर बर्फ़ के ढेर से चिपक जाता... वन! देवदार के घने वन... जहाज़ बनाने के काम आनेवाले वन। पीटर महान हरा कफ़्तान पहनकर जहाज़ों के निर्माण के लिए पेड़ काटता था।... जंगल, बीहड़ फैले हैं, देवदार की पत्तियों का ग़लीचा बिछा है, बर्फ़ से ढका सफ़ेद मठ दिखायी पड़ रहा है। मठवासिनों का मंद्र, मधुर स्वर प्रभु की स्तुति कर रहा है।

"अरे नहीं! कैसी मठवासिनें! वे तो हैं ही नहीं! कहाँ गयीं मठवासिनें? काले लिबास पहने, गोरी-गोरी, सुडौल, वसनेत्सोव के चित्रों से उतरीं?..."

"ला-रीसा लेओन्त्येव्ना, मठवासिनें कहाँ हैं?!"

"...बुख़ार में बड़बड़ा रहा है... बेचारा बड़बड़ा रहा है!..."

"हरगिज नहीं। मैं बड़-बड़-आने की सोचता तक नहीं। मठवासिनें! आपको याद क्या नहीं? अच्छा, मुझे क़िताब दीजिये। वह, तीसरे शेल्फ़ पर रखी है, वह वाली। मेल्निकोव-पेचेर्स्की..."

* प. इ. मेल्निकोव (1818—1883)—रूसी लेखक जो आन्द्रेई पेचेर्स्की के नाम से वोल्गा पार के बीहड़, वन्य प्रदेशों के जीवन के विषय में उपन्यास लिखते थे।—सं.

"मिख़ाईल प्यारे, पढ़ने की मनाही है!..."

"क-क्या? क्यों मनाही है? अरे मैं तो कल ही चंगा होकर उठ जाऊँगा! पेत्रोव के पास जा रहा हूँ। आप समझती नहीं। मुझे छोड़ जायेंगे! छोड़ जायेंगे!"

"अच्छा-अच्छा, ठीक है, ठीक है, उठ जायेंगे! यह रही किताब।"

"प्यारी किताब। इसकी गन्ध भी पुरानी, जानी-पहचानी है। पर पंक्तियाँ उछलने लगीं, नाचने लगीं, टेढ़ी हो गयीं। याद आया। वहाँ उस मठ में जाली नोट छापे जाते थे रोमानोव वंश के। अरे मेरी याददाश्त को तो देखो! मठवासिनें कहाँ से आ गयीं, नोटों की जगह..."

अरे मेरे नोट-कोट!..

"लारीसा लेओन्त्येव्ना... लारा प्यारी! आपको जंगल और पहाड़ अच्छे लगते हैं? मैं सन्यास ले लूँगा। ज़रूर! बीहड़ जंगल में जाकर आश्रम में रहूँगा। दीवार की तरह जंगल खड़ा होगा, चिड़ियों की चहचहाहट होगी और लोग नहीं... इस मूर्खतापूर्ण युद्ध से मेरा जी उकता गया है! मैं पेरिस भाग रहा हूँ, वहाँ उपन्यास लिखूँगा और फिर सन्यास लेकर आश्रम में चला जाऊँगा। बस, कल आन्ना मुझे आठ बजे जगा दे। आप समझें तो, कल ही मुझे उससे मिल लेना चाहिये था... सम-झें तो!"

"समझती हूँ, मैं समझती हूँ, आप चुप रहिये!"

कोहरा छाया है। तपिश भरा लाल कोहरा। जंगल ही जंगल हैं...और हरे पत्थर की दरारों से आँसुओं की तरह पानी रिस रहा है। इतना निर्मल है, बिल्लौरी धारा गिर रही है। बस, रेंगकर उस तक पहुँचने की देर है। तब तो जी भर कर पी लूँगा और एकदम चंगा हो जाऊँगा। पर देवदार की पत्तियों पर रेंगना कितना यातनापूर्ण है, वे चिपचिपी, नुकीली हैं। आँख खोलके देखता हूँ तो ये देवदार की पत्तियाँ नहीं बल्कि चादर निकलती है।

"हे भगवान! यह भी कैसी चादर है... आपने इस पर क्या रेत बुरक रखी है? ..पा-नी!"

"अभी, अभी!"

"ओफ़, कितना गर्म, कितना सड़ा है!"

"...कितनी भयंकर बात है! फिर से एक सौ पाँच बुख़ार है!"

"....बर्फ़ की पोटली..."

"डाक्टर! मैं माँग करता हूँ... मुझे फ़ौरन पेरिस भेज दिया जाये! अब मैं रूस में नहीं रहना चाहता... अगर नहीं भेजेंगे तो मुझे मेरी पिस... पिस्तौल देने की कृपा करें! ला-लारा प्यारी! ज़रा देना!..."

"ठीक है, ठीक है। दे देंगे। आप घबराइये मत!..."

अन्धकार। प्रकाश। अन्धकार... चाहे कुछ कर लीजिये, पर मुझे याद नहीं...

सिर! मेरा सिर! प्रभु की स्तुति करनेवाली मठवासिनें नहीं हैं, बल्कि यमदूत तुरहियाँ बजा रहे हैं और लाल दहकते काँटों से खोपड़ी को नोच रहे हैं। मे-रा सि-र!..

प्रकाश... अन्धकार। प्रकाश...नहीं, अब वह नहीं रहा! अब कोई डर नहीं, अब कोई परवाह नहीं रही। सिर नहीं दुख रहा। अन्धकार और एक सौ छः बुख़ार ही है।

. . . .

3

हम करेंगे क्या?!

उपन्यासकार यूरी स्त्योज़्किन शानदार आरामकुर्सी पर बैठा था। वैसे तो कमरे में हर चीज़ ही शानदार, भव्य थी, इसलिए यहाँ बैठा यूरी बेहद बेतुका लगता था। मीआदी बुख़ार से झड़े बालोंवाला सिर हूबहू वैसा था जैसा कि मार्क ट्वेन ने लड़के के सिर का वर्णन किया था (काली मिर्च बुरके अण्डे जैसा)। ट्यूनिक को कीड़ों ने जगह-जगह से काट रखा था और बग़ल के नीचे पूरा छेद ही बना था। पैर सलेटी पायताबों में लिपटे थे। एक लम्बा था और दूसरा छोटा। मुँह में दो कोपेकवाला पाइप था। आँखों में भय और कुण्ठा आँख मिचौनी खेल रहे थे।

"अब ह-मारे साथ होगा क्या?" मैंने पूछा और अपनी आवाज़ को पहचान नहीं पाया। दूसरे दौर के बाद वह क्षीण, पतली और टूटी-टूटी थी।

"क्या? क्या"

मैंने पलँग पर करवट लेकर उदासी के साथ खिड़की में देखा जहाँ अभी पत्रविहीन टहनियाँ हौले-हौले हिल रही थीं। बुझती लालिमा के रंग में हल्के-से रंगे अद्भुत आकाश ने बेशक कोई उत्तर नहीं दिया। स्त्योज़्किन भी चुप हो गया, वह अपने विकृत सिर को हिला रहा था। बग़ल के कमरे में पोशाक की सरसराहट हुई। नारी स्वर फुसफुसाया :

"आज रात को इंगूश शहर को लूटेंगे..."

स्त्योज़्किन ने चौंककर उसकी बात ठीक की :

"इंगूश नहीं बल्कि ओसेटियाई। रात को नहीं, बल्कि कल, सुबह से।"

दीवार के पीछे से इत्र की बोतलों ने सिहरकर झंकार की।

"हे भगवान! ओसेटियाई! तब तो यह बहुत भयंकर बात है!"

"क-क्या फ़र्क पड़ता है?..."

"आप पूछते हैं क्या? ख़ैर छोड़ो, आख़िर आप तो हमारे यहाँ की रीतों को नहीं

जानते। इंगूश जब लूटते हैं तो... वे लूटते हैं। पर ओसेटियाई लूटते हैं और मारते भी हैं...''

''सबको मारेंगे?'' स्त्योज़्किन ने बदबूदार पाइप को खींचते हुये कामकाजी अन्दाज़ में पूछा।

''हे भगवान! आप भी कितने अजीब हैं! सब को नहीं... अरे, उनको, जो...अरे, मैं कर क्या रही हूँ, बिल्कुल भूल गयी! हम मरीज़ को परेशान कर रहे हैं।''

पोशाक सरसरायी। मकान-मालकिन मेरे ऊपर झुकी।

''मैं प-रेशान नहीं हो रहा...''

''बेकार की बात है,'' स्त्योज़्किन ने रुखाई के साथ कहा, ''बेकार की बात है!''

''क्या? बे-का-र की?''

''हाँ, यह सब... ओसेटियाई और बाक़ी सब। बेसिर-पैर की बात है,'' उसने मुँह से धुएँ का गुबार छोड़ते हुए कहा।

अचानक मेरा रुग्ण मस्तिष्क गा पड़ा :

अम्मा, मेरी अम्मा! हम करेंगे क्या?!

''सच में, हम करेंगे क्या?''

स्त्योज़्किन ने ऐसे मुँह बिचकाया कि उसका सिर्फ़ दायाँ गाल ही हिला। वह कुछ देर तक सोचता रहा। फिर उसमें प्रेरणा की जोत भभकी।

''कला उपविभाग खोल लेंगे!''

''यह... होता क्या है?''

''क्या?''

''अरे, यह... विभा?''

''समझे नहीं। उप-वि-भा-ग!''

''उप?''

''हुं!''

''उप ही क्यों?''

''यह इसलिए... देखो न,'' वह हिला, ''लोक शिक्षा महाविभाग या लो. शि. म. वि. है। महा, तुम समझे? उसका उपविभाग होता है। उप, समझे?!''

''लो-शि-म-वि। शि-वि-र। वर, वरदान।''

मकान-मालकिन। लपककर खड़ी हुई।

''भगवान के लिए इनके साथ बातचीत न करें! फिर से बड़बड़ाने लगेंगे...''

''बेकार की बात है!'' यूरी सख़्ती के साथ बोला, ''बेसिर-पैर की बात है! ये सब कोहकाफ़ के पहाड़ी.... क्या कहते हैं उन्हें? चेरकेस। निरे बेवक़ूफ़ हैं!''

''कै-कैसे?''

''बस, यूँ ही दौड़ते रहते हैं, गोली चलाते हैं। चाँद पर। लूटमार नहीं करेंगे...''

''पर हमारा क्या? हो-गा?''

''कुछ नहीं। हम खोल लेंगे...''

''कला का?''

''आहां। सब होगा। लकवि, सावि, रंगवि।''

''मैं नहीं स-म-झ-ता।''

''मिख़ाईल प्यारे, आप बोलिये नहीं! डाक्टर...''

''बाद में समझा दूँगा! सब होगा! मैं निर्देशन कर चुका हूँ। हमें क्या फ़र्क़ पड़ता है? हम राजनीति से परे हैं। हम–कला हैं!''

''पर पेट कैसे पालेंगे?''

''पैसे क़ालीन के पीछे ठूँसा करेंगे!''

''कौनसे क़ालीन के पीछे?''

''अरे, उस शहर में, जहाँ मैं निर्देशन करता था, दीवार पर क़ालीन टँगा था। मैं और मेरी बीवी जब तनख़ा मिलती तो क़ालीन के पीछे पैसे ठूँस देते। ख़तरा महसूस होता था। पर खाते ठीक-ठाक थे, अच्छा खाते थे। राशन मिलता था।''

''पर मैं?''

''तुम साविनिदेशक होगे। हाँ-हाँ।''

''क्या?''

''मिखाईल प्यारे! मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ!..''

4

चिराग़

अलक़तरे-सी काली रात तैरती जा रही थी। चिराग़ टिमटिमा रहा था। बाहर कहीं दूर गोलियाँ चल रही थी। और मस्तिष्क धधक रहा था, धुन्ध छाती जा रही थी।

अम्मा, मेरी अम्मा! हम करेंगे क्या?

स्त्योज़्किन वहाँ कुछ बना रहा है। उलट-पलटकर रहा है। लकवि। सावि। रंगवि। रंगवि कवित सालकवि। रंगलकवि। फ़ोटोग्राफी के बक्सों को एक के ऊपर एक रखता जा रहा है। किसलिए? सावि-साहित्यकार। कितने बदक़िस्मत हैं हम। लकवि। सावि। इंगूश आँखें चमकाते, अपने घोड़ों को दौड़ाते जा रहे हैं। बक्से छीन रहे हैं। कोहराम मचा है। वे चाँद पर गोलियाँ चला रहे हैं। कम्पाउण्डरनी पैरों में कैम्फ़र की सुइयाँ लगा रही है : तीसरा दौरा पड़ा है।

''ओ-ओफ़! आख़िर होगा क्या?! मुझे छोड़ दीजिये! मैं जाऊँगा, जाऊँगा, जाऊँगा।''

"बोलिये मत, मिखाईल प्यारे, चुप रहिये!"

मार्फ़िया के बाद इंगूश ग़ायब हो गये। मखमली रात हिलोरें ले रही है। चिराग़ दैवी प्रकाश फैला रहा है और निर्मल स्वर में गा रहा है :

अम्मा, अम्मा मेरी!

5

यह रहा वह उपविभाग

सूरज दमक रहा है। छकड़ों के पहिये धूल के बादल उड़ा रहे हैं...ढोल की तरह गूँजती इमारत में लोग अन्दर-बाहर आ जा रहे हैं... चौथी मंज़िल पर स्थित कमरे में उखड़े दरवाज़ोंवाली दो अलमारियाँ और लँगड़ी मेज़ें हैं। बैंगनी होंठोंवाली तीन मिसें कभी-कभी ज़ोर-ज़ोर से टाइपराइटरों पर ठक-ठक करने लगती हैं, कभी सिगरेट पीने लगती हैं।

सलीब से उतरा लेखक ऐन केन्द्र में बैठा आदि-गर्त से उपविभाग की सृष्टि कर रहा है। रंगवि। लकवि। अभिनेताओं के नीले-नीले चेहरे उसकी छाती पर चढ़ रहे हैं। और ऊपर से पैसे माँग रहे हैं।

मीआदी बुख़ार के बाद—हिल्लोलन व्याप्त है। पाँव लड़खड़ाते हैं और जी मिचलाता है। पर मैं निदेशन कर रहा हूँ। सावि का निदेशक हूँ। मैं अपने को इस माहौल में ढाल रहा हूँ।

"कउपवि। लोशि। साबोर्ड।"

कोई मेज़ों की भूलभुलैया में भटक रहा है। वह धूसर ट्यूनिक और वीभत्स बिरजिस पहने हुए है, वह लोगों के जमघटों में घुसता है और वे छँट जाते हैं। वह भीड़ को ऐसे चीरता चल रहा है जैसे टारपीडो नौका सागर की छाती को चीरती दौड़ती है। जिसकी ओर भी वह देखता है उसका चेहरा पीला पड़ जाता है। नज़रें मेज़ के नीचे जाकर छिप जाती हैं। बस मिसों को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता—चिकने घड़ों की तरह हैं! ये मिसें नहीं जानतीं कि डर किस चिड़िया का नाम है।

वह पास आया। नज़रों से बींधकर आत्मा को निकाला और हथेली पर रखकर उसे ग़ौर से देखने लगा। पर आत्मा तो बिल्लौरी काँच जैसी निर्मल निकली।

उसे वापस रखा और सद्भाव के साथ मुस्कराया।

"साविनिद हो?"

"निद, निद ही हूँ।"

वह आगे बढ़ गया। आदमी तो बुरा नहीं लगता। पर वह हमारे यहाँ कर क्या रहा है, यह समझ नहीं आता। लकवि जैसा तो लगता नहीं। सावि होने का सवाल ही नहीं

उठता।

कवयित्री तशरीफ़ लायी। सिर पर काली टोपी। बग़ल में खिसकी स्कर्ट और स्टाकिंग उसकी टाँगों पर बूढ़े की चमड़ी की तरह लटके हैं । कविता लायी है।

ता, ता, ताम, ताम
दिल में धड़कता है डायनामो
ता, ता, ताम।

कविता ठीक है... हम उसे... उसमें... क्या कहते हैं उसे... कन्सर्ट में पढ़कर सुनायेंगे।

कवयित्री की आँखों में खुशी चमक रही है। लड़की देखने में बुरी नहीं। पर स्टाकिंग अपने गोलिस से क्यों नहीं बाँधती?

6

शाही परिचर पुश्किन

सब ठीक था। सब बहुत बढ़िया था।

और बस पुश्किन की वजह से मारा गया। अलेक्सान्द्र सेर्गेयेविच पुश्किन की वजह से, भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे!

क़िस्सा यह था :

सम्पादकालय में घुमावदार ज़ीने के नीचे स्थानीय कवियों के जत्थे ने अपना घोंसला बुन डाला था। उनके बीच छात्रों की वर्दी की नीली पतलून पहनकर घूमनेवाला किशोर भी था और दिल में डायनामो मशीनवाला जर्जर बूढ़ा भी जिसने साठ साल की उम्र में कविताएँ लिखनी शुरू की थीं। और कई व्यक्ति भी थे।

उकाब जैसे चेहरेवाला यह दिलेर झुककर मंच पर आया, उसकी पेटी पर बड़ी-सी रिवाल्वर लटकी थी। सबसे पहले उसी ने अपनी स्याही में बुझी निब को पुरानी आदत के अनुसार ग्रीष्म पार्क सैर-तफ़रीह करनेवाले बचे-खुचे कुलीनों के कलेजे में आव-ताव देखे बिना झोंक दिया। मटमैले तेरेक दरिया की निरन्तर गरज की पृष्ठभूमि में उसने मनमोहक कमसिनों को शाप दिया और दहाड़ा :

बहुत गा चुके तुम्हारे लिए चाँद और तारों के बारे में!
अब मैं तुम्हें गा के सुनाऊँगा हवालात के बारे में!

०

क्या बात थी!

फिर दूसरे ने गोगोल और दोस्तोयेव्स्की के बारे में भाषण झाड़ा। दोनों की ही उसने ईंट से ईंट बजा दी, उन्हें नेस्तनाबूद कर डाला। पुश्किन के बारे में उसने नकारात्मक

विचार प्रकट किये, पर चलते-चलते। उसने इस विषय में अलग से व्याख्यान देने का वादा किया। जून की एक रात को पुश्किन की ऐसी गत बनायी कि कुछ पूछो मत। सफ़ेद पतलून के लिए, "देखता हूँ आगे निडर होकर" पंक्ति के लिए, "शाही चाकरी" के लिए, "कूटक्रान्तिकारिता और पाखण्ड" के लिए, अश्लील कविताओं और औरतों पर डोरे डालने के लिए उसने पुश्किन की ईंट से ईंट बजा दी...

मैं पसीने से सराबोर, घुटन में पहली क़तार में बैठा सुन रहा था कि वक्ता कैसे पुश्किन की सफ़ेद पतलून की धज्जियाँ उड़ा रहा था। और जब अपने सूखे गले को एक गिलास पानी से तरोताजा करके उसने अन्त में पुश्किन को भट्ठी में झोंकने का सुझाव दिया तो मैं मुस्करा पड़ा। पछतावा होता है। आ बैल मुझे मारवाली बात हो गयी, मेरी मुस्कान रहस्यमयपूर्ण जो थी। मुस्कान का तीर छूटने पर पकड़ में तो आता नहीं!

"मेरी बातों का खण्डन करेंगे।"

"इच्छा नहीं हो रही।"

"आप में नागरिक साहस नहीं।"

"यह बात है? ठीक है, मैं जवाब दूँगा।"

लानत है मुझ पर, पर मैंने जवाबी भाषण दे ही दिया। तीन दिन और तीन रात मैंने उसकी तैयारी की। मैं लाल शेडवाले लैम्प के पास खिड़की खोलकर बैठ जाता। मेरे घुटनों पर आतशी आँखोंवाले आदमी द्वारा लिखित पुस्तक रखी थी।

...अमर मेधा के सूर्य के समक्ष
टिमटिमाती है कूट बुद्धिमानी...

वह कह रहा था :

निन्दा के प्रति उदासीन हूँ मैं।

नहीं, मैं उदासीन नहीं! मैं उन्हें दिखा दूँगा! मैं दिखा दूँगा! मैं काली रात को अपना मुक्का दिखा रहा था।

और मैंने दिखा भी दिया। कवियों के जत्थे में तहलका मच गया। वक्ता चारों खाने चित्त पड़ा था। पब्लिक की आँखों में मैं यह मूक, चंचल भाव पढ़ सकता था :

"चटा दे धूल! चटा दे!.."

. . . .

पर बाद में!! बाद में...

मैं—"भेड़ की खाल में भेड़िया"। मैं—"नवाबजादा"। मैं—"बुर्जुआ दुमछल्ला" और न जाने क्या-क्या हो गया...

. . . .

मैं—अब साविनिद नहीं रहा। मैं—रंगविनिद न रहा।

मैं—अटारी पर दुबका आवारा कुत्ता हूँ। गठरी बनकर बैठा हूँ। रात को दरवाज़े पर दस्तक से थरथर काँप उठता हूँ।

. . . .

वे धूल भरी दोपहरें। वे घुटन भरी रातें...

और सम्वत 1920 ईसवी में तिफ़लीस से अवतार हुआ। टूटा-फूटा, ढीले अंजर-पंजरवाला नौजवान आया और उसने अपना परिचय दिया : कविता के अखाड़े का गुण्डा। अपने साथ वह छोटी-सी पुस्तिका लाया जो देखने में किसी मयख़ाने के मेन्यू जैसी लगती थी। पुस्तिका में थीं उसकी कविताएँ।

पुष्प की तुक उसने मिलायी थी : गुष्प।

पागल हो जाऊँगा। मैं, हाँ-हाँ...

नौजवान को पहली ही नज़र में मुझसे नफ़रत हो गयी। अख़बार के पृष्ठों पर (पृष्ठ 4, कालम 4) गुण्डा-गर्दी करता है। मेरे बारे में लिखता है। पुश्किन के बारे में भी। और किसी विषय में नहीं लिखता। पुश्किन से उसे मुझसे भी ज़्यादा नफ़रत है। पर पुश्किन को क्या फ़र्क़ पड़ता है! वह तो अपने पुरखों के पास पहुँच चुका है...

पर मैं तो मारा जाऊँगा कीड़े की तरह।

7

कांसे का कालर

तिफ़लीस भी क्या नामाकूल शहर है!

एक और वहाँ से आ धमका! कांसे के कालरवाला। हाँ-हाँ, कांसे का कालर था। इसी रूप में उसने मौखिक पत्रिका में भाषण दिया। मैं मजाक नहीं कर रहा!!

आप समझिये तो, कालर कांसे का था!..

. . . .

उपन्यासकार स्ल्योज़्किन को लात मार दी गयी, इसके बावजूद कि रूस भर में उसका नाम मशहूर था और उसकी बीवी को बच्चा होनेवाला था। और यह वाला उसकी कुर्सी पर जम गया। अब चाट लो अपने लकवि, मकवि को। ठूँस लो अब क़ालीन के पीछे पैसे...

. . . .

8

डिब्बे में बच्चे

पूर्णमासी का चाँद चमक रहा था। यूरी और मैं छज्जे पर बैठे हुए तारों के चन्दोवे को ताक रहे हैं। पर राहत नहीं मिल रही। कुछ घण्टों बाद तारे बुझ जायेंगे और हमारे सिरों के ऊपर आग का गोला धधक उठेगा। और हम फिर से पिनों से बिन्धे भृंगों की तरह दम तोड़ने लगेंगे।

छज्जे के दरवाज़े से निरन्तर क्रन्दन का तीखा स्वर सुनायी पड़ रहा है। धरती के छोर पर, पहाड़ों की तलहटी में, पराये शहर में, खिलौने जैसे, बेहद छोटे कोठरीनुमा कमरे में फ़ाक़ा करते स्त्योज़्किन के बेटा पैदा हुआ। उसे खिड़की पर गत्ते के डिब्बे में लिटा दिया गया जिस पर लिखा था :

"M-me Marie. Modes et Robes".

और वह डिब्बे में पड़ा रिरिया रहा था।

बेचारा बच्चा।

बच्चा नहीं। हम हैं बेचारे।

पहाड़ों ने हमें घेर रखा था। 'मेज़ पहाड़ी' चाँदनी में नहायी सोयी पड़ी थी।

दूर, बहुत दूर, उत्तर में असीम मैदान फैले थे...दक्षिण में–दर्रे, खड्ड और वहशी नदियाँ। पश्चिम में कहीं समुद्र था। उसके ऊपर गोल्डन हार्न दमक रहा था।

. . . .

....Tangle-foot में मक्खियों को देखा है?

जब टें-टें कम हो जाती है तो हम कोठरी में घुसते हैं।

टमाटर हैं। काली रोटी है, ज़्यादा नहीं। और है अराकी। कैसी घिनौनी है यह वोदका! ज़हर है! पर पीकर राहत मिलती है।

और जब चारों ओर सब निद्रा में लीन होता है, लेखक मुझे अपनी नयी कहानी पढ़कर सुनाता है। कोई और है नहीं, इसलिए मुझे पढ़कर सुनाता है। उससे सुननेवाला कोई और है ही नहीं। रात का सफ़र जारी है। कहानी समाप्त करके वह पाण्डुलिपि को सहेजकर समेटता है और तकिये के नीचे रख देता है। लिखने की मेज नहीं है।

पौ फटने तक हम आपस में फुसफुस करते रहते हैं।

हमारी सूखी जबानों पर कैसे-कैसे नाम आते हैं! क्या नाम हैं वे! पुश्किन की कविताओं में क्रुद्ध आत्माओं को नर्म बनाने की क्या ग़जब की ताक़त है। ओ रूसी लेखको, क्रोध की कोई ज़रूरत नहीं!...

. . . .

केवल कष्टों के माध्यम से सत्य की प्राप्ति होती है... यह सच है, इसमें सन्देह नहीं। पर सत्य के ज्ञान के लिए न पैसे मिलते हैं, न रसद दी जाती है। चाहे दुःख

की बात सही, पर यही तथ्य है।

9

आर-पार बहती हवा

येव्रेईनोव* आया। उसका कालर सामान्य, सफ़ेद था। काले सागर के तट से वह पीटर्सबर्ग जा रहा था।

उत्तर में कहीं इस नाम का शहर हुआ करता था।

क्या अब वह है? लेखक हँसता है : यकीन दिलाता है कि है। पर उसका सफ़र लम्बा है : यात्री डिब्बे में परिवर्तित मालगाड़ी के डिब्बे द्वारा तीन साल का सफ़र है। सफ़ेद कालर सारी शाम मेरी आँखों को राहत प्रदान करता रहा। सारी शाम मैं जोखिमी तजुर्बों के किस्से सुनता रहा।

लेखक बन्धुओ, आपकी किस्मत के...

कँगाल बैठा था। सामान चोरी हो गया...

....और अगली, स्त्योज़्किन के यहाँ अन्तिम शाम को मकान-मालकिन की मेहरबानी से मिले बैठक के, सिगरेटों के धुएँ से भरे कमरे में निकोलाई निकोलायेविच प्यानो बजाने के लिए बैठा। घूर-घूरकर देखे जाने की यंत्रणा को उसने लौह दृढ़ता के साथ झेल लिया। चार कवि, कवयित्री और चित्रकार (पूरी कार्यशाला) रौब के साथ उस पर नज़रें गड़ाये बैठे थे।

येव्रेईनोव बड़ा चतुर आदमी है, वह बोला : "और अब प्रस्तुत है : 'संगीत के ठहाके'"...

वह झट से प्यानो के की-बोर्ड की ओर मुड़कर बजाने लगा। सबसे पहले... सबसे पहले उसने दिखाया कि हाथी ने दावत में कैसे प्यानो बजाया, फिर प्रेम-दीवाने प्यानो ट्यूनर को, फौलाद और सोने का वार्तालाप तथा अन्त में पोल्का नृत्य की धुन बजायी।

दस मिनट में कार्यशाला पूरी तरह से निष्क्रिय की जा चुकी थी। वह अब बैठा. नहीं बल्कि एक ढेर में पड़ा था, हाथ हिला-हिलाकर कराह रहा था...

...सजीव आँखोंवाला आदमी चला गया। और कोई ठहाका नहीं!...

हवा आर-पार बह रही थी। झड़े पत्तों की तरह लोग उड़े जा रहे थे। एक केर्च से वोलोग्दा की ओर दूसरा–वोलोग्दा से केर्च की ओर। बदहवास ओसिप सूटकेस थामे नमूदार होता है और गुस्से में बोलता है :

"देख लेना, हम मुकाम तक नहीं पहुँच पायेंगे!

* येव्रेईनोव निकोलाई निकोलायेविच (1879-1953)–निर्देशक और नाटककार।

स्वाभाविक है कि नहीं पहुँच पाओगे जब तुम्हें यही मालूम नहीं कि तुम्हारा मुकाम क्या है!

कल र्यूरिक ईव्नेव* आया था। तिफ़लीस से मास्को जा रहा था।

"मास्को बेहतर है।"

सफ़र करते-करते यह हाल हो गया कि एक दिन नाली के पास लेट गया :

"नहीं उठूँगा! आख़िर कुछ न कुछ तो होना ही चाहिये!"

हो भी गया : संयोग से कोई परिचित नाली के पास आया और उसने खाना खिलवा दिया।

एक दूसरा कवि मास्को से तिफ़लीस जा रहा था।

"तिफ़लीस बेहतर है।"

तीसरा—ओसिप मन्देलश्ताम था। वह एक धुँधले दिन प्रकट हुआ, सिर उसने शहजादे की तरह तान रखा था। अपनी सूत्रशैली से तो उसने मुझे धराशायी कर दिया :

"क्रीमिया से। सड़ियल है। आपकी पाण्डुलिपियाँ ख़रीदते हैं?"

"...पर पैसों का भुगतान नहीं कर..." मैं बोला परन्तु इससे पहले कि अपना वाक्य पूरा करता, वह चला गया। भगवान जाने किधर...

उपन्यासकार पिलन्याक आटा ले जानेवाली मालगाड़ी में रोस्तोव जा रहा था, जनाना जाकेट पहनकर।

"रोस्तोव बेहतर है?"

"नहीं, मैं तफरीह के लिए जा रहा हूँ!!"

नमूना ही है यह सुनहरे चश्मेवाला।

सेराफिमोविच—उत्तर से आ रहा था।

आँखें थकीं-थकीं। आवाज फटी-फटी। कार्यशाला में भाषण दे रहा था।

"याद है, तोलस्तोयवाला डण्डे से बँधा रूमाल। कभी चिपक जाता तो कभी फड़फड़ाने लगता। रूमाल मानो सजीव था... एक बार मैं वोदका की बोतल के लेबल पर छापने के लिए शराबखोरी के ख़िलाफ़ वाक्य रच रहा था। मैंने वाक्य लिख डाला। एक शब्द काटकर ऊपर से दूसरा लिख दिया। कुछ सोचकर मैंने उसे भी काट दिया। कई बार ऐसा किया। पर वाक्य ऐसा बना जैसे डंके की चोट... और अब लिखते... क्या लिखते हैं! उठाकर पढ़ो। नहीं! नहीं आया समझ। दोबारा पढ़ो—फिर भी बात वही। बस, उठाकर पटक दो..."

* र्यूरिक ईव्नेव (उपनाम) —म. कोवाल्योव (1891-1981)—कवि।—सं.

स्थानीय कार्यशाला in corpore* दीवार के सहारे बैठी थी। आँखें उनकी ऐसी मानो यह उनके पल्ले न पड़ रहा हो। खैर, मामला उनका है!

सेराफ़िमोविच चला गया... इण्टरवल हो गया।

10

महान लेखकों का क़िस्सा

उपविभाग के सज्जाकार ने अन्तोन पाव्लोविच चेख़व का टेढ़ी नाक और ऐसे भंयकर चश्मे के साथ चित्र बनाया कि दूर से ऐसे लगता था कि चेख़व ने वेल्डिंग करने का चश्मा लगा रखा हो।

हमने चित्र को एक बड़े स्टैण्ड पर लगा दिया। मंच पर ललछौंही छटा थी, छोटी-सी मेज़ पर पानी का जग और मिट्टी के तेल का लैम्प रखा था।

मैं 'चेख़व के हास्यरस' के विषय में प्रस्तावना भाषण पढ़ रहा था। या तो इस वजह से कि मैंने तीन दिन से खाना नहीं खाया था, या किसी और वजह से मेरे सिर में कुछ धुँधलका-सा छाया हुआ था। थिएटर में तिल धरने की जगह न थी। कभी-कभी मैं गफलत में पड़ जाता था। थिएटर के गुम्बद तक सैकड़ों धुँधले-धुँधले चेहरे नज़र आ रहे थे। अरे, कोई तो मुस्करा देता। तालियाँ बजीं, वैसे काफ़ी ज़ोरदार थीं। झेंपकर मेरी समझ में आया कि वे इसलिए बजीं कि मैंने भाषण समाप्त किया था। हल्के मन से मैंने पार्श्व में मुँह छिपा लिया। दो हज़ार कमा लिये, अब दूसरे भुगतें।

स्मोकिंग रूम में जाते हुए मैंने एक लाल सैनिक को मन की भड़ास निकालते हुए सुना : "इन और इनके हास्यरस पर गोला गिरे! कोहकाफ तक मुंह उठाये पहुँच गये, यहाँ भी इनसे चैन नहीं!..."

सोलह आने सच थी, तूला के इस जवान की बात। मैं अपने प्रिय, ग्रीनरूम के पीछेवाले अँधियारे कोने में दुबक गया। मुझे हाल से शोर आता सुनायी पड़ा। हुर्रा! हँस रहे हैं। शाबाश एक्टरो। 'जर्राही'** और उस क़िस्से ने बचा लिया जिसमें एक अफ़सर छींका था।

किस्मत खुल गयी! सफलता मिल गयी! स्ल्योज्किन दौड़ा-दौड़ा मेरे बिल में आया और आनन्द के साथ फुफकार कर बोला :

"दूसरा कार्यक्रम तैयार करो!"

'चेख़व के हास्यरस' की संध्या के बाद हमने 'पुश्किन संध्या' करने का फ़ैसला किया।

* पूर्ण संख्या में। (लैटिन)—सं.

** चेख़व की हास्य कथा।—सं.

यूरी स्ल्योज्किन के साथ मिलकर हमने बड़े प्रेम से कार्यक्रम तैयार किया।

"इस काठ के उल्लू को तसवीर बनाना नहीं आता," स्ल्योज्किन आग-बबूला हो रहा था। "मारिया इवानोव्ना से बनवायेंगे!"

यह सुनते ही मेरा माथा ठनका। मेरे विचार से यह मारिया इवानोव्ना वैसी ही चित्रकार थी जैसा मैं वायलिनवादक... मैं तभी यह फौरन भाँप गया था जब उसने उपविभाग में आते ही घोषित किया था कि वह अमुक की चेली है। (उसे फौरन लकवि की संचालिका नियुक्त कर दिया गया था।) पर चूँकि चित्रकारी मेरे लिए काला अक्षर भैंस बराबर है, तो मैं कुछ नहीं बोला।

सन्ध्या की शुरुआत से ठीक आधा घण्टा पहले मैंने सज्जाकार के स्टूडियो में प्रवेश किया और मुझे मानो लकवा मार गया... सुनहरे चौखटे से मुझे नोज्द्रयोव* देख रहा था। वह लाजवाब था। फूली-फूली धृष्ट आँखें, एक गलमुच्छा तक दूसरे से कम घना था। ऐसा प्रतीत होता था कि बस अभी वह ठहाका लगायेगा और कहेगा :

"मैं तो, भइया, मेले से लौट रहा हूँ। बधाई दो मुझे : आख़िरी कौड़ी तक हार गया!"

पता नहीं मेरे चेहरे का भाव कैसा था, पर चितेरी बेहद बुरा मान बैठी। पाउडर की मोटी परत के नीचे उसके गालों की लाली दहक उठी, आँखें तरेरकर वह बोली :

"आपको शायद... अ... पसन्द नहीं आया?"

"नहीं-नहीं। आप भी क्या कहती हैं। ही-ही! बहुत... अच्छा है। बहुत अच्छा है। बस ये... गलमुच्छे..."

"क्या?...गलमुच्छे? अच्छा, मतलब यह कि आपने कभी पुश्किन को नहीं देखा! बधाई हो! ऊपर से साहित्यकार कहलाते हैं! हा-हा! आपके ख़्याल से क्या पुश्किन को सफाचट बनाना चाहिये?!"

"माफ़ कीजिये, गलमुच्छे तो ठीक हैं, पर पुश्किन तो ताश नहीं खेलते थे, अगर खेलते भी थे तो बिना धोखाधड़ी के!"

"कैसे ताश? मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा! आप मेरा मखौल उड़ा रहे हैं, मुझे तो यही लगता है!"

"मखौल तो आप ही कर रही हैं। आपके पुश्किन की आँखें तो डाकुओंवाली हैं!"

"अच्छा... तो यह बात है!"

कूची पटककर वह दरवाज़े से बोली :

"मैं उपविभाग में आपकी शिकायत कर दूँगी!"

यह मत पूछो कि क्या हुआ! क्या हुआ, यह मत पूछो!... जैसे ही पर्दा खुला और

* नोज्द्रयोव–गागोल के उपन्यास 'मृत आत्माएँ' का एक नकारात्मक पात्र।–सं.

धृष्टता के साथ मुस्कराते हुए नोज्द्रयोव ने अँधेरे में डूबे हाल को दर्शन दिये, हँसी का पहला फौवारा फूट पड़ा। हे भगवान, जनता यह सोच बैठी कि चेख़व के हास्य के बाद पुश्किन का हास्य दिखाया जायेगा! मेरा बदन ठण्डे पसीने से सराबोर हो गया, मैं "रूसी साहित्य के हिमानी मरुस्थल में ध्रुवीय ज्योति के प्रकाश" के विषय में बोलने लगा... हाल गलमुच्छों को देख-देख ही-ही कर रहा था, मेरी पीठ पीछे नोज्द्रयोव मँडरा रहा था, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह बुदबुदाकर मुझसे कह रहा हो :

"यदि मैं तेरा अफ़सर होता तो पहले ही पेड़ पर तुझे गले में फन्दा डालकर फाँसी दे देता!"

इसलिए मुझसे भी न रहा गया, मेरे मुँह से भी हँसी का फौवारा फूट पड़ा। क्या गजब की सफलता थी। न पहले कभी, न ही बाद में ही मेरे लिए तालियों की इतनी जबर्दस्त गड़गड़ाहट हुई। फिर तो सैलाब ही आ गया...जब नाटिका में सल्येरी ने मोजार्ट को जहर दिया* तो दर्शकों ने ठहाकों और "Once more!!!" की तूफ़ानी चीखों से अपना अनुमोदन प्रकट किया।

मैं चूहे की तरह दुबककर थियेटर से पलायन कर रहा था और अपने सामने हाथ में नोटबुक थामे कविता के अखाड़े के गुण्डे की सम्पादकालय की ओर उड़ती धुँधली छाया को देख रहा था...

मुझे पता था!... खम्भे पर अख़बार टँगा था और उसके चौथे पृष्ठ पर था :

फिर से पुश्किन!

स्थानीय कला उपविभाग में छिपे राजधानी के साहित्यकारों ने अपने देवड़े पुश्किन को प्रस्तुत करके, जनता को गुमराह करने का एक नया वस्तुगत प्रयास किया है। यही नहीं, उन्होंने इस देवड़े को एक गलमुच्छोंवाले भू-दास स्वामी जागीरदार के रूप में (जैसा वह, मान लेते हैं, वास्तव में था) चित्रित करने का साहस किया... इत्यादि-इत्यादि।

हे भगवान! ऐसा कर दे कि यह गुण्डा मर जाये! आख़िर चारों ओर इतने सारे लोग मीआदी बुखार से मर रहे हैं। पर उसे क्यों यह बीमारी नहीं लगती? यह जड़वामन तो मुझे गिरफ़्तार करवाके ही चैन लेगा!...

ओ, लकवि की पाउडरपुती जहर की गुड़िया!

डूब गयी लुटिया। सब तबाह हो गया! कल से मनाही कर दी गयी...

...पतझड़ का वीभत्स मौसम चल रहा है। तिरछी बारिश कोड़े बरसा रही है। समझ में नहीं आता कि हम आख़िर खायेंगे क्या? हम आख़िर खायेंगे क्या?

* पुश्किन की लघु ट्रेजेडी–'मोजार्ट और सल्येरी'।–सं.

11

पायताबे और काली चुहिया

. . . .

देर रात गये अँधेरे में पानी के डबरों में छप-छप करता मैं भूखा जा रहा हूँ। सब कपाटों पर तख्ते जड़े हैं। मेरे पाँवों में मोजों के चिथड़े और फटे जूते हैं। आसमान नदारद है। उसके स्थान पर विराट पायताबा टँगा है। निराशा से मैं महदोश हूँ और बड़बड़ा रहा हूँ :

"अलेक्सान्द्र पुश्किन। Lumen coeli Sancta rosa.* और धमकी उसकी गरज जैसी।"

मैं कहीं पागल तो नहीं हो गया?! सड़क की बत्ती से परछाई दौड़ पड़ी। जानता हूँ : यह मेरी ही परछाईं है। पर उसके सिर पर सिलिण्डर हैट है। मेरे सिर पर कैप है। अपना हैट मैं भुखमरी के कारण बाज़ार में बेच आया। भले लोगों ने उसे खरीदकर उसका कमोड बना लिया। चाहे मरना ही पड़ जाये पर दिल और दिमाग़ कभी भी बाज़ार में नहीं बेचूँगा।

घोर निराशा। सिर के ऊपर पायताबा टँगा है और दिल को काली चुहिया कुतर रही है...

12

क्नुट हमसुन से उन्नीस नहीं**

मैं भूखों मर रहा हूँ...

. . . .

. . . .

* पवित्र गुलाब की सौगन्ध, दिव्य आलोक। (लैटिन)–पुश्किन की कविता 'रहता था इक वीर ग़रीब...' की पंक्ति।–सं.

** क्नुट हमसुन (1859-1952)–सुप्रसिद्ध नार्वीजन लेखक। बुल्गाकोव का तात्पर्य उसके उपन्यास 'भुखमरी' से है।–सं.

13

भागो। भागो!

एक लाख... मैं लखपति हूँ!...

मैंने खुद कमाये हैं!

बैरिस्टर के मुंशी, यहाँ के मूलवासी ने मुझे यह सिखाया। जब मैं हाथों से सिर को थामे मौन बैठा था तब वह मेरे पास आकर बोला :

"मेरे पास भी पैसे नहीं हैं। एक ही रास्ता है–नाटक लिखना चाहिये। मूलवासियों के जीवन के बारे में। क्रान्तिकारी। उसे बेच देंगे..."

मैंने असमंजस में उसकी ओर देखा और उत्तर दिया :

"मैं मूलवासियों के जीवन के बारे में कुछ नहीं लिख सकता, न क्रान्तिकारी और न ही प्रतिक्रान्तिकारी। मैं उनके रहन-सहन के बारे में कुछ नहीं जानता। वैसे भी मैं कुछ नहीं लिख सकता। मैं थक गया हूँ, वैसे भी लगता है कि मुझे में साहित्यिक प्रतिभा नहीं है।"

उसने उत्तर दिया :

"आप बेकार की बातें कर रहे हैं। फ़ाक़ा करने के कारण यूँ कह रहे हैं। मर्दानगी दिखाइये। जहाँ तक रहन-सहन की बात है तो फ़िक्र मत करें। रहन-सहन को मैं आर-पार जानता हूँ। मिलकर लिखेंगे। पैसे आधे-आधे बाँटेंगे।"

तब से हमने लिखना शुरू किया। उसके यहाँ गोल तपती भट्ठी थी। उसकी बीवी कमरे में अलगनी पर सूखने के लिए कपड़े टाँगती, फिर हमें तेल के साथ उबली सब्जियाँ और सैकरीन के साथ चाय देती। वह मुझे लाक्षणिक नाम गिनाता, रीति-रिवाजों के बारे में बताता और मैं कथानक बुनता। वह भी बुनता। उसकी बीवी हमारे पास बैठकर मशविरा देती। मुझे फौरन यकीन हो गया कि उन दोनों में मुझसे कहीं अधिक साहित्यिक प्रतिभा थी। पर मुझे उनसे ईर्ष्या नहीं होती थी क्योंकि मन में मैं यह दृढ़ संकल्प कर चुका था कि यह नाटक मेरी अन्तिम रचना होगा...

और हम लिखते थे।

वह भट्ठी के पास सुस्ताता हुआ कहता रहता :

"मुझे सृजन करना बड़ा प्रिय है!"

मैं कलम घसीटता रहता...

सात दिन बाद तीन अंकोंवाला नाटक तैयार हो गया। जब मैंने अपने यहाँ, ठण्डे कमरे में रात को उसे फिर से पढ़ा तो, मुझे यह स्वीकार करने में शर्म नहीं आती, मैं रो पड़ा! निर्जीवता और नीरसता की दृष्टि से यह बिल्कुल खास, गजब की चीज़ थी!

इस सामूहिक रचना की एक-एक पंक्ति से मूढ़ता और धृष्टता झाँक रही थी। मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था! मैं, पागल, क्या आशा कर सकता हूँ जब मेरा लेखन ही ऐसा है?! हरी सीली दीवारों और काली भयावय खिड़कियों से शर्म मुझे घूर रही थी। मैं पाण्डुलिपि को फाड़ने लगा, पर रुक गया। क्योंकि अचानक, अत्यन्त अद्‌भुत स्पष्टता के साथ मैं समझ गया कि ठीक ही कहा जाता है : लिखी बात को नष्ट नहीं किया जा सकता! फाड़ा जा सकता है, जलाया जा सकता है...लोगों से छिपाया जा सकता है। पर अपने से—कभी नहीं! बेशक! इसे मिटाया नहीं जा सकता। इस अद्‌भुत चीज़ को मैंने ही रचा है। बेशक!...

स्थानीय उपविभाग में नाटक ने तहलका मचा दिया। उसे फौरन दो लाख में खरीद लिया गया। दो हफ़्ते बाद उसका मंचन किया गया।

हज़ारों साँसों की धुन्ध में कृपाण, कारतूसों के पट्टे और आँखें चमक रही थीं। जब तीसरे अंक में जाँबाज घुड़सवारों ने हल्ला बोलकर थानेदार और सिपाहियों को कैद कर लिया तो चेचेन, कबर्दाई और इंगूश दर्शक ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे :

"भई वहा! हरामी कहीं का! जैसे को तैसा!"

उपविभाग की नाजनीनों के बाद 'लेखक' को भी मंच पर बुलवाया गया।

पार्श्व में हाथ मिलाये गये।

"चोखा डिरामा है!"

और अपने गाँव में आने का न्योता दिया गया...

...भागो! भागो यहाँ से! एक लाख में यहाँ से जाने का प्रबन्ध हो सकता है। बस आगे बढ़ते जाओ। सागर की ओर। सागर के बाद सागर से होते हुए फ्रांस और फिर थल से—पेरिस!

...चेहरे पर तिरछी बारिश कोड़े बरसा रही थी और मैं छोटे-से बरानकोट में ठिठुरता हुआ आख़िरी बाद गलियों में दौड़ता हुआ जा रहा था—घर को...

...पेरिस, बर्लिन में बैठे आप उपन्यासकारों, नाटककारों, कोशिश करके तो देखिये! मजा लेने की खातिर ही सही, पर इससे गया-बीता कुछ लिखने की कोशिश तो कीजिये! अगर आप कुप्रीन, बूनिन या गोर्की जितने प्रतिभाशाली हों तो आपको इसमें सफलता नहीं मिलेगी। रिकार्ड मैंने तोड़ा है! सामूहिक सृजन के क्षेत्र में। तीन थे लिखनेवाले : मैं, बैरिस्टर का मुंशी और भुखमरी। सन इक्कीस में, उसके प्रारम्भ की बात है यह...

14

टेढ़े-मेढ़े अक्षर

. . . .

पहाड़ों की तलहटी में शहर ने दम तोड़ दिया। तेरा नास पिटे...

त्सीखीद्‌जीरी। माखिनजाउरी। हरित अन्तरीप! फूलों से लदे मैग्नोलिया के वृक्ष। सफ़ेद फूल तश्तरियों जितने बड़े हैं। केले और ताड़ के पेड़! कसम खाकर कहता हूँ, अपनी आँखों से मैंने देखा है : ताड़ के पेड़ ज़मीन पर उगते हैं। ग्रेनाइट की शिला के पास समुद्र निरन्तर अपना गीत गाता है। किताबों में झूठ नहीं लिखा : सूरज समुद्र में डूबता है। समुद्री रमणीयता। आकाश को चूमती ऊँचाई। सीना ताने खड़ी चट्टान और उस पर रेंगती चाक्वा बेलें। यह है त्सीखीद्‌जीरी—हरित अन्तरीप।

मैं किधर जा रहा हूँ? किधर? मैं अपनी आख़िरी क़मीज़ पहने हूँ। कमीज के कफों पर टेढ़े-मेढ़े अक्षर हैं और दिल में मेरे, पत्थरों जैसे भारी दुर्बोध चिह्न हैं। इनमें से बस एक ही कूट चिह्न को मैं सुलझा पाया। उसका अर्थ है—मेरी किस्मत फूटी है! बाकी का अर्थ मुझे कौन समझायेगा?

खारे पानी द्वारा तराशी गिट्टी पर मैं मुर्दे की तरह पड़ा हूँ। भूखमरी के कारण बिल्कुल कमज़ोर हो गया हूँ। सुबह से लेकर देर रात तक सिर में दर्द रहता है। अब सागर पर रात की चादर तन गयी। वह मुझे नहीं दिखायी दे रहा, बस उसकी गरज ही सुनायी दे रही है। वह थपेड़ा मारकर पीछे हट जाता है और देर से आयी कोई लहर फुफकारती है। अचानक, अँधियारे अन्तरीप के पीछे से तीन मंजिला दीपमालाएँ जगमगा उठीं।

'पोलात्स्की' गोल्डन हार्न की ओर जा रहा है।

. . . .

आँसू वैसे ही नमकीन हैं जैसे सागर का जल।

एक अप्रसिद्ध कवि मिला। वह नूरी बाजार में घूमता हुआ अपने सिर का हैट बेच रहा था। कात्सो* उस पर हँस रहे थे।

वह झेंपकर मुस्कराते हुए समझा रहा था कि वह मज़ाक नहीं कर रहा। हैट इसलिए बेच रहा था कि उसके पैसे चोरी हो गये। वह झूठ बोल रहा था! उसकी जेब अरसे से खाली थी। तीन दिन से उसके मुँह में एक दाना तक न गया था... बाद में, जब हम एक पौण्ड नान को आधा-आधा बाँटकर खा चुके थे, उसने यह स्वीकार किया। उसने बताया कि वह पेन्जा से याल्टा जा रहा था। मुझे हँसी आते-आते रह गयी। पर

* कात्सो—मित्र (जार्जियाई भाषा में), जार्जियाई लोग एक-दूसरे को इसी शब्द से सम्बोधित करते हैं।—सं.

अचानक याद आया : पर मैं क्या बेहतर हूँ?...

प्याला लबालब भर चुका था। बारह बजे 'नये निर्देशकर्ता' तशरीफ़ लाया। उसने घुसते ही एलान कर दिया :

"नवे रास्ते पर चलेंगे! हमें अब 'अक़्ल का नुकसान'*, 'इंस्पेक्टर जनरल'** जैसे इस अश्लील साहित्य, गोगोलों-मोगोलों की ज़रूरत नहीं। अपने नाटक लिख मारेंगे।"

फिर वह कार में बैठकर चला गया।

उसका चेहरा हमेशा-हमेशा के लिए मेरे दिमाग़ में अंकित हो गया।

एक घण्टे बाद मैंने बाज़ार में अपना बरानकोट बेच दिया। शाम को जहाज रवाना होनेवाला था। वह मुझे अपने पर सवार ही नहीं होने देना चाहता था। आप समझे? सवार ही नहीं होने देना चाहता था!...

बस, बहुत हो गया! चमकने दो गोल्डन हार्न को। मैं उस तक नहीं पहुँच पाऊँगा। शक्ति की भी एक सीमा होती है। वह अब बची नहीं। मैं भूखा हूँ, मैं टूट चुका हूँ! मेरे मस्तिष्क में खून का एक कतरा नहीं। मैं क्षीण और भीरु हूँ। पर यहाँ मैं अब नहीं रहनेवाला। अगर बात यह है...तो...तो...

15
घर चलो

घर चलो। समुद्र के रास्ते। फिर मालगाड़ी के डिब्बे में बैठकर। पैसे काफ़ी नहीं होंगे तो पैदल ही सही। पर घर चलो। ज़िन्दगी तबाह हो गयी। घर चलो!...

मास्को का रास्ता पकड़ो! मास्को का!!

. . . .

त्सीखीद्जीरी अलविदा। अलविदा माखिनजाउरी। हरित अन्तरीप!

---

* 'अक़्ल का नुकसान'—अ. स. ग्रिबोयेदोव (1795-1829) का हास्य-नाटक।—सं.

** 'इंस्पेक्टर जनरल'—नि. व. गोगोल का हास्य-नाटक। —सं.

भाग दो

1
मास्को का गर्त्त। व्लामाकीबाज

अथाह अन्धकार था। धातु की टंकार, घनघनाहट और गरज हुई। पहिये अभी भी लुढ़कते जा रहे थे पर वेग थमता जा रहा था। और फिर वे रुक गये। अन्त आ गया। सच्चे मायनों में अन्त, अन्तों में अन्त। और कहीं जाने को बचा न था। यह मास्को था। मा-स्-को।

अँधकार में—यात्रियों को ढोनेवाले माल के डिब्बों की कतार। छात्रों का डिब्बा मूक हो गया...

अन्ततः, हौसला जुटकार कूद गया नीचे। कराहकर कोई नर्म-सी चीज़ मेरे नीचे से रेंगी। फिर रेल की पटरी से ठोकर खाकर और भी गहराई में गिर पड़ा। हे भगवान, कहीं सचमुच ही पाँवों तले अथाह गर्त्त तो नहीं?...

धूसर शरीर कन्धों पर भयंकर बोझ लादकर धाराओं की तरह बहने लगे... महिला स्वर गूँजा :

"उफ... मुझमें ताक़त नहीं!"

काले कोहरे में मुझे मेडिकल कालिज की छात्रा दिखायी पड़ी। वह गठरी बनकर तीन दिन और तीन रातों तक मेरे साथ सफ़र करती रही थी।

"लाइये, मैं उठा लेता हूँ।"

क्षण भर को लगा मानो अँधियारा गर्त्त डोलकर हरा हो गया। अरे इसमें कितना वजन है?

"एक मन से ऊपर है... आटे को दबा-दबाकर भरा है।"

लड़खड़ाता हुआ मैं बत्तियों की ओर आड़ा-तिरछा बढ़ रहा था, आँखों के आगे चिंगारियाँ-सी तैर रहीं थीं।

उनसे टूट-टूटकर किरणें बिखर रही थीं। उन पर धूसर, अजीबोगरीब साँप रेंग रहा था। शीशे का गुम्बद। टिकट दिखाने की माँग। बाहर निकलने का फाटक। स्वरों का विस्फोट। धम्म से पड़ी गाली। फिर से अँधेरा। फिर से किरण चमकी। अँधेरा। मास्को! यह मास्को था।

छकड़े पर गिरजों के गुम्बदों तक, मखमल पर बिखरे तारों तक सामान लाद दिया गया। खड़खड़ाता हुआ वह चल रहा था और धूसर लबादों के दानवी स्वर छकड़े से चिपकनेवालों और उनको फटकार रहे थे जो घोड़े को पुचकारते थे। छकड़े के पीछे-पीछे पूरा झुण्ड चल रहा था। छात्रा का सफ़ेद-सा ओवरकोट कभी दायीं और दिखायी देता तो कभी बायीं। अन्ततः पहियों की भूलभुलैया से निकल आये, दढ़ियल मुखमण्डल

दिखायी देने बन्द हो गये। हम बटिया की जर्जर सड़क पर चल पड़े। अँधेरा ही अँधेरा छाया हुआ था। कहाँ हैं? यह क्या जगह है? कोई फर्क नहीं पड़ता। कोई परवाह नहीं। सारा मास्को काला ही काला था। मौन खड़े मकान सख़्त, सर्द नज़र से घूर रहे थे। ओ-हो-हो। एक गिरजा पास से तैरता हुआ गुजरा। देखने में वह धुँधला, बदहवास-सा लग रहा था। और वह अँधेरे में विलीन हो गया।

रात के दो बजे थे। कहाँ जाऊँ रात बिताने? घर देखो, कितने ढेर सारे हैं! परेशानी की क्या बात... किसी का भी दरवाज़ा खटखटा दो। यहाँ रात बिताने की अनुमति दे दीजिये। कल्पना कर सकता हूँ कि अन्जाम क्या होगा!

मेडिकल छात्रा का स्वर गूँजा :

"और आप को कहाँ जाना है?"

"पता नहीं।"

"क्या मतलब?"

...इस धरती पर नेक इंसान भी हैं। देखिये, बगल में किरायेदार का कमरा है। वह अभी गाँव से नहीं लौटा। एक रात वहाँ बिता लीजिये...

"मैं आपका बहुत शुक्रगुजार हूँ। कल मैं परिचितों को खोज लूँगा।" मन थोड़ा हल्का हो गया। बड़ी अजीब बात ही है, जैसे ही स्पष्ट हुआ कि रैन बसेरा मिल गया तो अचानक महसूस हुआ कि तीन रात से सोये नहीं।

पुल पर दो बत्तियाँ अँधेरे को चीर रही थीं। पुल पार करके हम फिर से अँधेरे में डूब गये। फिर खम्भे पर लगी बत्ती, और धूसर बाड़ दिखायी दीं। बाड़ पर था पोस्टर। बड़े-बड़े चमकीले अक्षर। एक शब्द लिखा था। हे भगवान! यह क्या शब्द है? व्लामाकीबाज। इसका अर्थ आख़िर क्या है? आख़िर है क्या अर्थ इसका?

व्लादीमीर मायकोव्स्की की बारहवीं जयन्ती।

छकड़ा रुक गया। सामान उतारा जा रहा था। मैं नाइट टेबल पर बैठकर मंत्रमुग्ध इस शब्द को ताक रहा था। वाह, क्या शब्द था! और मैं तो, तुच्छ गँवार, पहाड़ों में कलाउपविनिदे शब्द पर हँसता था! क्या औकात है मेरी खैर, मास्को इतना भंयकर नहीं जितना कि कहा जाता है। उस आदमी की कल्पना करने की यातनापूर्ण इच्छा हुई जिसकी जयन्ती मनायी जा रही थी। कभी भी मैंने उसे नहीं देखा था, पर उसे जानता हूँ... जानता हूँ। वह कोई चालीस साल का, बेहद नाटे कद का, गंजा-सा है, चश्मा लगाता है, बेहद फुर्तीला है। छोटी, पायंचे मुड़ी पतलून पहनता है। नौकरी करता है, सिगरेट नहीं पीता। उसके पास बड़ा क्वार्टर है, भारी-भारी पर्दोंवाला, उसके क्वार्टर में एक बैरिस्टर को भी बसा दिया गया है जो अब बैरिस्टर नहीं बल्कि किसी सरकारी इमारत का मैनेजर है। वह अध्ययन-कक्ष में रहता है जिसकी अँगीठी नहीं जलती। वह

मक्खन, हास्य कविताओं और कमरे में करीने का प्रेमी है। उसका प्रिय लेखक कानन डायल है। प्रिय आपेरा—'येव्गेनी ओनेगिन' है। खुद स्टोव पर कटलेट तलता है। उसे बैरिस्टर-मैनेजर फूटी आँखों नहीं सुहाता और वह देर-सवेर उसे अपने क्वार्टर से निकालकर शादी करने और मजे के साथ पाँच कमरों में रहने का सपना देखता है।

छकड़ा चरमराकर हिला और कुछ चलकर फिर से रुक गया। न आँधियाँ, न तूफ़ानही अमर नागरिक इवान इवानोविच इवानोव को धराशायी कर पाये। उस इमारत के सामने जो अँधेरे में डर के मारे कोई पन्द्रह मंजिला लगी, छकड़े का वजन काफ़ी घट गया। स्याह अँधेरे में छकड़े से फाटक की ओर दौड़ती हुई नन्ही-सी आकृति फुसफुसाकर पूछ रही थी : "पापा, और मक्खन होता है?... पापा, और बैकफैट?... पापा, और सफ़ेद मैदा?..."

पापा अँधेरे मे लिपटा बुदबुदा रहा था : "बैकफैट... हूँ, मक्खन... हूँ, सफ़ेद, काला... हूँ।"

फिर अन्धकार के गर्त्त से पापा की छोटी-सी उँगली निकली और उसने थूक से भीगकर 20 नोट गिने और गाड़ीवान को थमा दिये।

अभी और आँधी-तूफ़ान आयेंगे। हाँ, बड़े भयंकर तूफ़ान आयेंगे! और सब के सब मर सकते हैं। पर पापा नहीं मरेगा!

छकड़ा विराट प्लेटफार्म में बदल गया जिस पर छात्रा की बोरी और मेरी अटैची खो गयी। हम टाँगें लटकाकर उस पर बैठ गये और काली गहराई में रवाना हो गये।

2

बिल्डिंग नं. 4, गेट नं. 6, तीसरी मंजिल, क्वार्टर नं. 50, कमरा नं. 7

सच कहा जाये तो पता नहीं क्यों मैं सारे मास्को को पार करके इसी विराट इमारत में आया। वह काग़ज़ जिसे मैं पर्वतीय राज्य से इतना संजोकर लाया था सभी छह मंजिला इमारतों से वास्ता रख सकता था, अगर सही-सही कहा जाये तो उनमें से किसी से भी उसका वास्ता न था।

गेट नं. 6 में बेजान खड़ी लिफ्ट की जालीदार मीनार के पास खड़े होकर मैंने दम लिया। एक दरवाज़ा था, दरवाज़े पर दो तख्तियाँ थीं : "क्वार्टर नं. 50," और दूसरी रहस्यमय—"लवि"। दम ले लेना चाहिये। आख़िर भाग्य का फैसला जो होनेवाला है।

मैंने दरवाज़ा ठेला। अँधियारे-से प्रकोष्ठ में काग़ज़ों से भरा विशाल बक्सा और प्यानो का ढक्कन रखा था। एक कमरा, सिगरेट के धुएँ में लिपटी एक मोटी औरत दृष्टिगोचर हुई। टाइपराइटर तड़-तड़ बजा और शान्त हो गया। किसी ने भारी-भरकम

स्वर में कहा : "मेयरहोल्ड"।

"सावि कहाँ है?" लकड़ी के काउण्टर पर कोहनियाँ टिकाकर मैंने पूछा।

काउण्टर के पास बैठी औरत ने झुँझलाकर कन्धे उचका दिये। उसे नहीं पता। दूसरी को भी नहीं पता। पर उधर अँधियारा-सा गलियारा दिखायी पड़ा। मैं अन्दाज से उस ओर चल दिया। एक दरवाज़ा खोला—गुसलखाना निकला। दूसरे दरवाज़े पर छोटा-सा पर्चा टँगा था। वह टेढ़ा था और उसका एक कोना मुड़ा था जिस पर लिखा था 'सा'। अच्छा तो यह है, भगवान का शुक्र है। मिल गया सावि। दिल फिर से धुकधुकी मचाने लगा। बन्द दरवाज़े से बोलने की आवाजें सुनायी पड़ रही थीं : बू-बू-बू...

पल भर के लिए आँखें बन्द करके मैंने कल्पना की कि मैं वहाँ हूँ। वहाँ मैं देखता हूँ : पहले कमरे में विशाल कालीन बिछा है, लिखने की मेज़ और किताबों से भरी अलमारियाँ हैं। उल्लासपूर्ण नीरवता व्याप्त है। मेज़ पर सचिव है—शायद उनमें से एक है जिनके नामों से मैं पत्रिकाओं की बदौलत परिचित हूँ। आगे कई दरवाज़े हैं। निदेशक का कक्ष है। वहाँ और भी गहन नीरवता है। अलमारियाँ हैं। कुर्सी पर, बेशक... कौन बैठा है? साविनि? मास्को में? अरे, मक्सिम गोर्की ही तो। 'तलछट', 'माँ' वाले। उनके सिवा और कौन हो सकता है? बू-बू-बू....वार्तालाप सुनायी पड़ रहा है... क्या पता यह ब्र्यूसोव और बेली* आपस में बातें कर रहे हों?...और मैंने दरवाज़े को हौले से खटखटाया। बू-बू-बू बन्द हो गयी और मन्द्र स्वर गूँजा : "आ जाइये!" बाद में फिर से बू-बू-बू होने लगी। मैंने हैण्डल खींचा और वह मेरे हाथ में ही आ गया। मैं अवाक रह गया : मेरे कैरियर की अच्छी शुरुआत थी—तोड़ दिया! मैंने फिर से दस्तक दी। "हाँ-हाँ, आ जाइये!"

"अन्दर नहीं घुस पा रहा!" मैंने चिल्लाकर कहा।

ताली के छेद में से आवाज गूँजी :

"हैण्डल को लगाकर पहले दायें घुमाइये, फिर बायें, आपने हमें बन्द कर दिया है..."

दायें, बायें, दरवाज़ा हौले से खुल गया और...

3

गोर्की के बाद तो मेरा ही नम्बर आता है

अरे, मैं तो गलत जगह पहुँच गया! सावि? बेंत की कुर्सी। लकड़ी की खाली मेज़। खुली अलमारी। कोने में ऊपर को पाये किये छोटी-सी मेज़। और दो आदमी। एक ऊँचे कद का, बेहद जवान, बिना कमानी का चश्मा लगाये। आँखें उसके पायताबों

* रूसी कवि।—सं.

की ओर बरबस खिंच गयी। वे सफ़ेद थे, हाथों में वह फटा-सा बैग और झोला उठाये हुए था। दूसरा—खिचड़ी बालोंवाला बूढ़ा था, आँखें उसकी सजीव और किंचित विनोदपूर्ण थीं, उसने भेड़ की खाल की टोपी और फ़ौजी बरानकोट पहन रखा था। बरानकोट का एक भी हिस्सा न था जिसमें छेद न हो और जेबें चिथड़ों की तरह लटकी थीं। पैरों में उसके धूसर पायताबे और पेटेण्ट लैदर के 'बो' वाले बालरूम जूते थे।

बुझी नज़र को मैंने चेहरों, फिर आगे जानेवाले दरवाज़े को ढूँढ़ने के लिए दीवारों पर फिसलाया। पर और कोई दरवाज़ा था नहीं। कटे तारोंवाले कमरे से आगे का रास्ता बन्द था Tout*. मैंने किंचित हकलाते हुए पूछा :

"यह...सावि है?"

"हाँ।"

"क्या निदेशक से मिल सकता हूँ?"

बूढ़ा प्यार से बोला :

"मैं ही हूँ।"

फिर उसने मेज़ से मास्को के अख़बार का बड़ा-सा पन्ना उठाया, उसका एक चौथाई हिस्सा फाड़ा, उस पर देसी तम्बाकू डाला, मोड़कर चुरुट बनाया और मुझसे पूछा :

"माचिस नहीं है आपके पास?"

मैंने यंत्रवत माचिस जलायी और फिर बूढ़े की स्नेहिल, प्रश्नवाचक दृष्टि के उत्तर में जेब से संजोकर रखे काग़ज़ को निकाला।

बूढ़ा उसके ऊपर झुक गया और मैं इस दौरान पसोपेश में पड़कर सोच रहा था कि वह कौन हो सकता है... वह सफाचट दाढ़ीवाले एमिल जोला से ही मिलता-जुलता था।

जवान भी बूढ़े के कँधे के ऊपर से झुककर पढ़ रहा था। पढ़कर उन्होंने किंचित, असमंजस और आदर के साथ मेरी ओर देखा।

बूढ़ा :

"तो आप?..."

मैंने उत्तर दिया :

"मैं सावि में कोई पद पाना चाहूँगा।"

जवान उल्लास के साथ चिल्ला पड़ा :

"बहुत बढ़िया!.. पता है!..."

बूढ़े की कोहनी थामकर वह फुसफुसाने लगा : बू-बू-बू...

बूढ़े ने एड़ियों पर घूमकर मेज़ से पेन उठाया और जवान जल्दी-जल्दी बोला :

"अर्जी लिखिये।"

अर्जी मेरी आस्तीन में थी। मैंने बढ़ा दी।

* पूर्ण रूप से। (फ्रांसीसी)—सं.

बूढ़े ने पेन चलाया। उसने चरमराकर काग़ज़ फाड़ दिया। बूढ़े ने उसे दवात में घुसेड़ा पर वह सूखी थी।

"पेंसिल नहीं है आपके पास?"

मैंने पेंसिल निकाली और निदेशक ने तिरछा लिख डाला :

"सावि का सचिव नियुक्त करने का अनुरोध करता हूँ—हस्ताक्षर।"

मुँह खोले मैं कुछ क्षण तक जाँबाज लिखावट को देखता रहा।

जवान ने मेरी आस्तीन खींचकर कहा :

"ऊपर जाइये, जल्दी से, इससे पहले कि वह चला जाये। झटपट जाइये।"

और मैं तीर की तरह ऊपर उड़ चला। दरवाज़े में घुसा, औरतों से भरे कमरे से तबाड़तोड़ दौड़ता हुआ केबिन में घुस गया। केबिन में बैठे आदमी ने मेरा काग़ज़ लिया और घसीट दिया : "नियु. सचि.।" अक्षर और उससे जुड़ी घुण्डी। और उबासी लेकर बोला : नीचे जाओ।

मैं मानो धुन्ध में लिपटा फिर से नीचे दौड़ पड़ा। टाइपराइटर झिलमिलाया। भारी-भरकम नहीं बल्कि बड़ा मधुर स्वर गूँजा : "मेयरहोल्ड। रंगकला। अक्टूबर क्रान्ति..."

जवान बूढ़े के इर्द-गिर्द उछलता-कूदता ठहाके लगा रहा था :

"कर दी नियुक्ति? बहुत बढ़िया! हम ठीक कर देंगे! हम सब कुछ ठीक कर देंगे!"

और मेरा कन्धा थपथपा वह बोला :

"तू घबरा नहीं! सब कुछ हो जायेगा!"

मुझे बचपन से ही बेतकल्लुफी नापसन्द है और बचपन से ही मैं उसका शिकार बनता आया हूँ। पर इस बार मैं घटनाक्रम से इतना चूर हो चुका था कि बस क्लान्त स्वर में यही कह सका :

"मेज़ें... कुर्सियाँ... और अन्तत : स्याही भी!"

जवान जोश में चिल्लाया :

"होगा! शाबाश! सब होगा!"

वह बूढ़े की ओर मुड़ा और आँख मारकर मेरी ओर इशारा करके बोला :

"कामकाजी लौण्डा है! देखा, कैसे फौरन मेज़ों के बारे में बोला! यह हमारे यहाँ सब ठीक कर देगा!"

नियु. सचि.। हे भगवान! सावि। मास्को में। मक्सिम गोर्की... तलछट। शेहरजाद... माँ।

जवान ने झोला हिलाया, मेज़ पर अख़बार बिछाया और उस पर कोई पाँच पौण्ड

मटर डाल दिया।

"यह आपके लिए हैं। चौथाई राशन।"

4

मैंने सावि को चालू किया

साहित्य का इतिहासकार यह न भूले :

सन इक्कीस के अन्त में जनतंत्र में तीन व्यक्ति साहित्य की साधना करते थे : बूढ़ा (नाटक; वह बेशक, एमिल जोला नहीं निकला, मेरा परिचित भी नहीं), जवान (बूढ़े का सहायक, वह भी मेरा परिचित न था—कविता करता था) और मैं (कुछ भी नहीं लिखता था)।

इतिहासकार गौर करे : सावि में न कुर्सियाँ थीं, न मेंजें, न स्याही, न बिजली, न किताबें, न लेखक थे और न ही पाठक। संक्षेप में : कुछ भी न था।

और मैं। अरे, मैं शून्यता से महोगनी का डेस्क निकाल लाया, वह भी पुराना। उसमें मुझे पुराना, सुनहरी किनारीवाला पीला पड़ चुका कार्ड मिला जिस पर ये शब्द थे : "...लेडीज उघड़े कन्धोवाली बाल-रूम ड्रेस में। फ़ौजी सेरेमोनियल ड्रेस में; सिविलियन पट्टों साहित ट्यूनिकों में। छात्र यूनीफ़ार्म में। मास्को, 1899।"

और थी भीनी-भीनी, मादक खुशबू। कभी दराज में महँगे फ्रांसीसी इत्र की बोतल रही होगी। डेस्क के बाद कुर्सी आ गयी। स्याही और काग़ज़ और अन्ततः सुस्त, उदास-सी मिस भी प्रकट हो गयी।

मेरे हुक्म पर उसने मेज़ पर वह सब ढेरियाँ बनाकर रख दिया जो कुछ अलमारी में मिला : किन्हीं "हानिकरों" के बारे में पैम्फलेटों, पीटर्सबर्ग के अख़बार के बारह अंकों, प्रान्तीय विभागों के अधिवेशन के हरे और लाल निमंत्रण पत्रों की गड्डियों को। फौरन दफ़्तर का माहौल बन गया। बूढ़ा और जवान, दोनों ही उत्फुल्ल हो गये। स्नेह के साथ उन्होंने मेरा कन्धा थपथपाया और न जाने कहाँ गायब हो गये।

कई-कई घण्टे मैं और उदास मिस बैठे रहते। मैं डेस्क पर और वह मेज़ पर। मैं अप्रतिम ड्यूमा के 'थ्री मस्केटीयर्स' को पढ़ रहा था जो मुझे गुसलखाने के फ़र्श पर पड़ा मिला, मिस मौन बैठी रुक-रुककर भारी और गहरी उसाँस ले रही थी।

मैंने पूछा :

"आप रो क्यों रही हैं?"

उत्तर में वह रो पड़ी और बाहें मोड़ लीं। फिर बोली :

"मुझे पता चला है कि गलती से मैंने डाकू से शादी कर ली।"

पता नहीं कि दुनिया में कोई ऐसी चीज़ है भी जो मुझे इन दो सालों को देखने के बाद चकित कर सकती हो। परन्तु इस पर... मूर्खों की तरह मिस को ताकने

लगा...

"रोइये मत। हो जाती है ऐसी भी बात।"

मैंने उससे अपनी रामकहानी सुनाने का अनुरोध किया।

उसने रुमाल से आँसू पोंछते हुए बताया कि उसने एक छात्र से शादी की, उसके फ़ोटो को एनलार्ज करवाकर ड्राइंगरूम में टाँग दिया। इंस्पेक्टर आया और फ़ोटो को देखकर बोला कि यह कारास्योव नहीं बल्कि दोल्स्की, उर्फ ग्लूज्मान, उर्फ सेन्का मोमेंट है।

"मो-मेंट..." बेचारी मिस बोलते हुए काँप रही थी, आँसू पोंछ रही थी।

"वह नौ-दो-ग्यारह हो गया? मारिये उसे गोली।"

पर अब तो तीन दिन हो चुके थे। पर कुछ भी नहीं हो रहा था। कोई भी नहीं आ रहा था। कुल मिलाकर कुछ भी नहीं हो रहा था। मैं और मिस ही...

आज मेरी समझ में आया : सावि चालू नहीं हुआ है। हमारे ऊपर किसी जीवन के लक्षण थे। चलने की थप-थप सुनायी देती थी। दीवार की दूसरी ओर भी कुछ था। कभी टाइपराइटर ठक-ठक करने लगते तो कभी हँसने की आवाज आती। वहाँ दाढ़ी बनाये कई लोग आते थे। इस इमारत में मेइरहोल्ड को गजब की लोकप्रियता प्राप्त थी। पर खुद वह नमूदार न होता था।

पर हमारे यहाँ कुछ न था। न काग़ज़ थे। कुछ भी नहीं। मैंने सावि को चालू करने का फैसला कर डाला।

जीने पर अख़बारों का गड्डी उठाये एक औरत चढ़ रही थी। सबसे ऊपरवाले पर लाल पेंसिल से लिखा था : 'लकवि'।

"और सावि के लिए?"

उसने सहमकर मेरी ओर देखा पर उत्तर नहीं दिया। मैं ऊपर चढ़ा और उस पोस्टर के नीचे बैठी मिस के पास गया, जिस पर लिखा था : 'सेक्रेटरी'। मेरी बात सुनकर उसने घबराकर अपनी पड़ोसिन की ओर देखा।

"अरे, ठीक ही तो है, सावि..." पहली बोली।

दूसरी ने उत्तर दिया :

"लीदोच्का, उनके लिए एक काग़ज़ है।"

"आपने उसे भेजा क्यों नहीं?" मैंने सर्द लहजे में पूछा।

वे दोनों पसोपेश में पड़कर बोलीं :

"हमने सोचा–आप नहीं हैं।"

सावि चालू हो गया। आज ऊपरवाली मिसों के यहाँ से दूसरा काग़ज़ आया। सिर पर रुमाल बाँधे एक औरत लाती है और कापी में दस्तख़त करवाती है।

मैंने प्रबन्ध विभाग को काग़ज़ भेजा : टाइपराइटर दीजिये।

दो दिन बाद आदमी आया, और कन्धे उचकाकर बोला :

"भला आपको भी टाइपराइटर की ज़रूरत है?"

"मैं सोचता हूँ कि इस इमारत में बाकी सबसे ज़्यादा।"

बूढ़ा मिल गया। जवान भी। जब बूढ़े ने टाइपराइटर देखा और जब मैंने कहा कि उसे काग़ज़ात पर दस्तखत करने हैं तो वह बड़ी देर तक टकटकी लगाकर मुझे घूरने लगा और फिर होंठों को चबाकर बोला :

"आप में कुछ ऐसी बात है। आपके लिए अकादमीशियनोंवाला राशन बँधवाने की कोशिश करनी चाहिये।"

मैं और डाकू की बीवी पे बिल बनाने लगे। सावि चलती गाड़ी से जुड़ गया। मेरा भावी जीवनी लेखक ध्यान दे : यह मैंने किया था।

5

पहले पंछी

सवेरे के ग्यारह बजे नौजवान, शायद ठण्ड से बेहद ठिठुरा, कवि तशरीफ़ लाया। धीमे से उसने परिचय दिया : श्तोर्न।

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"मैं सावि में कोई पद पाने का इच्छुक हूँ।"

मैंने उस शीट को फैलाया जिस पर लिखा था 'पदनामों की सूची'। सावि में 18 पदों का प्रावधान था। मन ही मन मैं उनको निम्न रूप में आवंटित करने का सपना देखता था :

कविता निर्देशक :

ब्र्यूसोव, बेली इत्यादि।

कथाकार :

गोर्की, वेरेसायेव, श्मेल्योवे, जाइत्सेव, सेराफिमोविच इत्यादि।

परन्तु उपरोक्त में से कोई भी हाजिर नहीं हो रहा था।

और मैंने साहस के साथ श्तोर्न की अर्जी पर घसीट दिया : "कृ. निर्दे. पर नियु. क.–कार्य. निदे."* दस्तखत की जगह अक्षर लिखकर उससे लम्बी घुँघराली पूँछ जोड़ दी।

"ऊपर जाइये, इससे पहले कि वह कहीं चला न जाये।"

फिर घुँघराले बालों और लाल-लाल गालोंवाला, बड़ा विनोदी स्वभाव का कवि स्कार्त्सेव आया।

"ऊपर जाइये, इससे पहले कि वह कहीं चला न जाये।"

साइबेरिया से कोई 25 साल का बेहद विषण्ण चेहरेवाला चश्मू पधारा, उसका बदन

* कृपया निर्देशक के पद पर नियुक्त कर दिया जाये–कार्यवाहक निदेशक।–अनु.

इतना गठीला था मानो वह ताम्बे से ढला हो।

"ऊपर जाइये..."

पर उसने उत्तर दिया :

"मैं कहीं नहीं जानेवाला।"

वह कोने में पड़ी टूटी, लड़खड़ाती कुर्सी पर बैठ गया और काग़ज़ का टुकड़ा निकालकर छोटी-छोटी पँक्तियों में कुछ लिखने लगा। जाहिर था कि उसे बड़े पापड़ बेलने पड़े होंगे।

दरवाज़ा खुला और अच्छा-खासा, गर्म ओवरकोट और समूर की टोपी पहने कोई घूसा। यह कवि निकला। नाम था साशा।

बूढ़े ने जादुई शब्द लिख दिये। साशा ने गौर के साथ कमरे का मुआयना किया, सोच में डूबे हुए उसने लटकते कटे तार को छुआ, न जाने क्यों अलमारी में झाँका। उसाँस लेकर मेरे पास बैठ गया—चुपके से उसने पूछा :

"पैसे मिलेंगे?.."

6

हम अपनी सरगर्मी बढ़ाने लगे

मेज़ों पर बैठने की जगह न थी। सब लोग और एक और नया, सुनहरे फ्रेम का चश्मा लगानेवाला, चपल और हुल्लड़बाज भी जिसने अपने को रिपोर्टरों का सरताज बताया था—नारे लिख रहे थे। जिस दिन हमें अग्रिम राशि प्राप्त हुई थी उसके अगली सुबह, पौने नौ बजे सरताज तशरीफ़ लाया। उसके पहले शब्द थे :

"सुनिये, खबर है कि आपको यहाँ पैसे बाँटे गये?"

और उसने हमारे यहाँ नौकरी कर ली।

नारों का किस्सा यों था।

ऊपर से काग़ज़ आया :

सावि को फलाँ तारीख को दोपहर के 12 बजे तक तत्काल कई नारे पेश करने का सुझाव दिया जाता है।

सिद्धान्त में यह काम इस प्रकार निष्पादित होना चाहिये था : मेरी सहभागिता से बूढ़े को उन सभी दिशाओं में कोई आदेश या आह्वान प्रेषित करना चाहिये था जहाँ लेखक हैं। चारों ओर से तारों, पत्रों और मौखिक रूप से नारे भेजे जाने चाहिए थे। फिर आयोग को हज़ारों नारों में से श्रेष्ठों का चयन करके उन्हें फलाँ तारीख को दोपहर के बारह बजे पेश करना चाहिये था। तत्पश्चात मुझे और मेरे अधीनस्थ दफ़्तर (अर्थात डाकू की उदास बीवी) को पेमेण्ट के लिए बिल बनाना चाहिये था। और उसके अनुसार श्रेष्ठ नारों के प्रेषकों को पारितोषिक प्रदान करना चाहिये था।

पर यह तो सिद्धान्त था।

व्यवहार में यही हो सकता था :

1. कोई आह्वान करना असम्भव था चूँकि साहित्कारों में से ऐसा कोई था नहीं जिसका आह्वान किया जाता, उस समय तो सभी उपरोक्त लोग जमा सरताज ही नज़रों में थे।

2. मतलब, नारों की बाढ़ का सवाल ही नहीं उठता था, उपरोक्त सूत्र ने इसकी गुंजाइश ही नहीं छोड़ी थी।

3. फलाँ तारीख को दोपहर के बारह बजे तक नारे पेश करना असम्भव था क्योंकि काग़ज़ हमें इस फलाँ तारीख को दोपहर के एक बजकर छब्बीस मिनट पर मिला था।

4. पेमेण्ट का बिल बनाने की ज़रूरत भी न थी क्योंकि 'नारों के लिए' भुगतान का कोई प्रावधान ही न था। परन्तु—

बूढ़े ने थोड़ी-सी पूँजी सँजोकर रखी थी : दौरों के खर्च के लिए।

इसलिए : a) सभी उपलब्ध लोग फौरी तरह से नारे लिखें;

b) नारों पर निष्पक्ष रूप से विचार करने के लिए भी सभी उपलब्ध लोगों को शामिल करके आयोग का गठन किया जाये;

c) सर्वश्रेष्ठ नारों को चुनकर फी नारा 15 हज़ार की दर से भुगतान किया जाये।

हम एक बजकर पचास मिनट पर जुट गये और तीन बजे नारे तैयार थे। हरेक अपने को निचोड़कर 5–6 नारे निकाल पाया सिवाय सरताज के, जिसने गद्य और पद्य में 19 नारे लिखे।

आयोग न्यायप्रिय और कठोर था।

मुझ में—नारों के लेखक और नारों को मंजूरी देने और उनकी आलोचना करनेवाले—मुझ में एक भी समानता न थी।

परिणामस्वरूप स्वीकृत हुए :

बूढ़े के—3 नारे

जवान के—3 नारे

मेरे —3 नारे

इत्यादि, इत्यादि।

संक्षेप में : हरेक को 45-45 हज़ार मिले।

उफ, कैसी तेज़ हवा है... देखो तो, रिमझिम भी होने लगी। मांस का समोसा बारिश से भीगा है पर सवाद लाजवाब है, खानेवाला बस सुध खो बैठे। सैकरीन की शीशी और दो पौण्ड उम्दा मैदा की डबलरोटी भी है।

रास्ते में श्तोर्न मिला। वह भी कुछ चबा रहा था।

7

दु:स्वप्न

...कसम से, यह सपना ही था!!! यह क्या जादू-टोना है?!...

आज मैं दो घण्टे की देरी से काम पर पहुँचा।

दरवाज़े का हैण्डल घुमाकर खोला, कमरे में घुसा और देखा : वह खाली था। पर कितना खाली था! न केवल मेज़ें, उदास औरत, टाइपराइटर ही नहीं... बिजली के तार तक गायब थे। कुछ भी नहीं था।

मतलब यह सपना ही था...तो यह माज़रा है... यह माज़रा है...

बड़ी देर से मुझे लग रहा था कि मैं मृग-मरीचिका से घिरा हूँ। मायावी मरीचिका ही थी। वहाँ, जहाँ कल... वैसे, मैं पूछता हूँ, कल ही क्यों?! सौ साल पहले... चिरकाल में...क्या पता, कभी था ही नहीं... क्या पता, अब नहीं?...पागलखाने में पहुँच जाऊँगा!...

मतलब, नेक बूढ़ा...जवान... उदास श्तोर्न... टाइपराइटर... नारे... यह सब था ही नहीं? था। मैं पागल नहीं हूँ। था, शैतान की दुम की कसम!!!

पर तब सब गया कहाँ?...

ढुलमुल चाल से, पलकें झुकाकर अपनी नज़र को छिपाने का प्रयास करते हुए (ताकि फौरन पकड़कर पागलखाने में न छोड़ आयें) मैं अँधियारे गलियारे में चल पड़ा। बस, तभी मुझे पक्का विश्वास हो गया कि मेरे साथ कुछ गड़बड़ हो रही है। अँधेरे में, पड़ोस के रौशन कमरे के दरवाज़े के ऊपर वैसी ही दहकती तख्ती चमक उठी जैसी सिनेमा हाल के अन्दर लगी होती है, उस पर लिखा था :

1836

सेण्ट पीटर्सबर्ग में 25 मार्च को एक अत्यन्त असाधारण घटना हुई। वोज्नेसेंस्की एवेन्यू में रहनेवाला हज्जाम इवान याकोव्लेविच...

मुझसे आगे नहीं पढ़ा गया और भयाक्रान्त होकर मैं वहाँ से खिसक गया। काउण्टर के पास रुककर मैनें आँखों को और गहराई में छिपाया और धीरे से पूछा :

"आपको पता है कि सावि कहाँ चला गया?"

काले बालों में जहरीले गुलाबी रंग का रिबन बाँधे मनहूस चेहरेवाली औरत झुँझलाकर बोली :

"अरे, कैसा सावि... मुझे नहीं पता।"

मेरी आँखें मिच गयीं। दूसरे महिला स्वर ने सहानुभूति के साथ कहा :

"पर वह तो यहाँ है ही नहीं। आप ग़लत जगह आ गये हैं। वह तो वोल्खोन्का सड़क पर है।"

मेरे बदन में झुरझुरी दौड़ गयी। बाहर निकलकर माथे का पसीना पोंछा। मैंने मास्को के दूसरे छोर पर राजुमीखिन के यहाँ जाने, और सब कुछ भूल जाने का फैसला किया। आख़िर अगर मैं चुप रहा, कुछ नहीं बताया तो किसी को भी कभी भी पता नहीं चलेगा। राजुमीखिन के यहाँ फ़र्श पर सोया करूँगा। वह मुझे—एक मानसिक रोगी को नहीं खदेड़ेगा।

पर मन में अभी भी आशा की हल्की-सी चिन्गारी सुलगी हुई थी। और मैं चल दिया। चल पड़ा। यह छमंजिला इमारत बिला शक बड़ी खौफ़नाक थी। एक बाँबी की तरह एक सिरे से दूसरे तक गलियारों का ऐसा जाल बिछा था कि बाहर निकले बिना पूरी इमारत को पार किया जा सकता था। मैं अँधियारी भूलभुलैया में चलता जा रहा था, बार-बार मैं लकड़ी की आड़ों से बन्द आलों में पहुँच जाता। लाल-लाल-सी बत्तियाँ जल रही थीं। सामने से चिन्तित-से लोग आते दिखायी दे रहे थे जो कहीं जाने की जल्दी में थे। दर्जनों औरतें बैठी थीं। टाइपराइटर ठकठका रहे थे। तख्तियाँ झिलमिला रही थीं। लेखा विभाग। जातीय अल्पसंख्यक। रोशन जीनों पर निकलकर मैं फिर से अँधेरे में चला जाता था। अन्तत : मैं एक जीने पर पहुँचा और मूर्खों की तरह इधर-उधर नज़रें दौड़ाने लगा। यहाँ कोई बिल्कुल दूसरी ही दुनिया थी...मूर्खता ही तो थी। मैं जितना आगे चलता जा रहा थी मायावी सावि के मिलने की सम्भावना उतनी ही घटती जा रही थी यह निरर्थक था। मैं नीचे उतरकर बाहर निकल आया। मुड़कर देखा तो यह गेट नं. 1 था...

...हवा का प्रचण्ड झोंका आया। आसमान फिर से ठण्डी झड़ियाँ बरसाने लगा। मैंने कसकर धूप का हैट सिर पर बिठाया, बरानकोट का कालर उठाया। कुछ मिनट बाद तलवे के पास की बड़ी दरार में से बूटों में पानी भर गया। इससे मुझे कुछ राहत महसूस हुई। मैंने अपने मन में यह विचार पाला ही नहीं था कि मैं भीगे बिना सूखा घर पहुँच जाऊँगा। मैं एक पत्थर से दूसरे पर न कूदता हुआ, अपने रास्ते को लम्बा किये बिना सीधा पानी के डबरों में छप-छप करता चला जा रहा था।

8

गेट नं. 2, पहली मंज़िल,
क्वार्टर नं. 23, कमरा नं. 40

चमकता लेख :

ज़िन्दगी में बेहद ऊटपटाँग बातें होती रहती हैं। कभी-कभी तो वे सम्भावना

के किसी भी कायदे-क़ानून की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं : एक दिन हुआ यह कि वही नाक जो स्टेट काउंसिलर का भेस बनाये गाड़ी पर घूमती फिर रही थी और जिसने शहर में इतना तहलका मचा रखा था फिर प्रकट हो गयी, मानो कुछ हुआ ही न हो : अपने उचित स्थान पर...

सुबह हमेशा रात से बेहतर होती है। यह एक मूल सत्य है। जब सुबह को ठण्ड के मारे मेरी आँख खुली और सोफे पर बैठकर मैंने बालों में उँगलियाँ फेरीं तो सिर काफ़ी साफ़ लगा!

तर्क का सहारा लें : भई आख़िर वह था भी? बेशक, था। मुझे तो आख़िर यह भी याद है कि आज तारीख क्या है, मेरा नाम क्या है। कहीं तो गया होगा... मतलब, तब उसको ढूँढ़ना चाहिये। पर बगल के कमरे की औरतों को क्यों नहीं पता? कहती हैं वोल्खोन्का सड़क पर... बकवास है! ये औरतें हैं न, अरे, उनकी तो नाक के नीचे से कुछ भी चुराकर ले जाओ पर उन्हें खबर तक न होगी। मैं पूछता हूँ कि उन्हें, इन औरतों को रख क्यों रखा है। आफ़त की पुड़िया हैं।

कपड़े पहनकर और कल शाम को गिलास में भरे पानी को पीकर मैंने डबलरोटी का टुकड़ा और एक उबला आलू खाया तथा एक योजना बना डाली।

6 गेटों में 6-6 मंजिलें=36। 36 को 2 क्वार्टर फी मंजिल से गुणा करने पर होता है 72। 72 को 6 कमरों से गुणा करने पर कुल मिलाकर 432 कमरे होते हैं। ढूँढ़ पाना सम्भव है? सम्भव है। कल बिना किसी व्यवस्था के मैंने दो-तीन मंजिलों को छाना था। आज क्रमबद्ध रूप से मैं पूरी इमारत को चौड़ाई और ऊँचाई में छान मारूँगा। ढूँढ़ के रहूँगा। एक शर्त पर कि वह चौथे आयाम में विलीन न हो गया हो। अगर चौथे आयाम में चला गया, तो–तब्र तो समझो खेल खत्म।

गेट नं. 2 के पास मैं टकरा गया–श्तोर्न से!

भगवान तेरी माया है! सगे भाई की तरह उससे मिला...

पता चला कि कल मेरे पहुँचने से कोई एक घण्टा पहले बिल्डिंग मैनेजर दो मजदूरों के साथ आया और उसने सावि का गेट नं. 2, पहली मंजिल, क्वार्टर नं. 23, कमरा नं. 40 में तबादला कर दिया।

हमारे जगह संवि का सैक्शन आनेवाला था।

"यह किसलिए?!"

"मुझे नहीं पता। पर आप कल क्यों नहीं आये? बूढ़ा फिक्र कर रहा था।"

"आप भी कैसी बातें करते हैं! मुझे कहाँ से पता था कि आप किधर चले गये? दरवाज़े पर कम से कम नोट ही टाँग जाते।"

"अरे, हमने सोचा कि आपको बता देंगे..."

मैंने दाँत पीसे।

"आपने उन औरतों को देखा है? जो बगल के कमरे में..."

श्तोर्न बोला :

"हाँ, यह सच है।"

9

पूरी रफ़्तार से

... कमरा पाकर मैंने महसूस किया कि मुझ में जीवन का संचार हो गया। सावि में बिजली का लट्टू लग गया। मैं टाइपराइटर के लिए रिबन ढूँढ़ लाया। फिर एक और मिस आ गयी। कृ. क्लर्क नियु.।

प्रान्तों से पाण्डुलिपियाँ भेजी जाने लगीं। फिर एक और भव्य मिस आयी। पत्रकार। हँसने-हँसानेवाली, अच्छी सहयोगी थी, कृ. ललि. व्यंग्य लेखों का ब्यूरो सचि. नियु.।

अन्तत : दक्षिण से नवयुवक तशरीफ लाया। और उसके लिए अन्तिम 'कृ.' लिख दिया गया। अब और पद नहीं बचे थे। सावि भर गया था और काम ने रफ्तार पकड़ ली।

10

पैसा! पैसा!

सैकरीन की 12 गोलियों के सिवा कुछ न बचा था...

...चादर या कोट?...

तनखा मिलने का कोई आसार ही न नज़र आता था।

...आज ऊपर गया था। मिसों ने बड़ी रुखाई से मेरी अगवानी की। न जाने क्यों सावि उन्हें फूटी आँख नहीं सुहाता।

"ज़रा हमारा बिल तो दिखाइये।"

"आपको क्यों चाहिये?"

"देखना चाहता हूँ कि सब के नाम शामिल है या नहीं।"

"Madame क्रीत्स्काया से बात कीजिये।"

Madame क्रीत्स्काया उठी, उसने अपने खिचड़ी बालों का गुच्छा हिलाया, उसके चेहरे का रंग उड़ गया जब वह बोली :

"वह खो गया।"

मौन।

"और आप चुप रहीं?"

Madame क्रीत्स्काया रुआँसे स्वर में बोली :

"ओफ, मेरा तो सिर चकरा रहा है। यहाँ क्या हो रहा है, मेरे पल्ले नहीं पड़ता। सात बार पे बिल बनाया था—हर बार लौटा दिया। कहते हैं गलती रह गयी। अरे, आपको तो वैसे भी तनखा नहीं मिलेगी। आपके बिल में कोई ऐसा है जिसकी नियुक्ति का आदेश नहीं है।"

भाड़ में जायें सब! मैं खुद जुट गया। फिर से गलियारे। अंधकार। प्रकाश। प्रकाश। अन्धकार। मेइरहोल्ड। कार्मिक विभाग। दिन में जलती बत्तियाँ। सलेटी बरानकोट। नमदे के गीले बूटों में बैठी औरत। मेज़ें-मेज़ें।

"हमारे यहाँ किस की नियुक्ति का आदेश नहीं जारी हुआ?!"

उत्तर :

"किसी की भी नहीं।"

सबसे मजे की बात तो यह थी कि सावि के संस्थापक—बूढ़े की नियुक्ति का आदेश नहीं था! "क्या? मेरी भी नियुक्ति का आदेश नहीं? यह माज़रा क्या है?!"

"आपने शायद फार्म नहीं भरा होगा?"

"मैनें नहीं भरा? मैंने आपके यहाँ चार अदद फार्म भरे थे। और आपके ही हाथों में थमाये थे। पहले भरे फार्मों साहित मैं कुल मिलाकर 113 फार्म भर चुका हूँ।"

"मतलब, खो गया होाग। फिर से भरिये।"

तीन दिन इसी में लग गये। तीन दिन बाद सब के सब बहाल हो गये। नये पे बिल बना दिये गये।

मैं मृत्यु दण्ड का विरोधी हूँ। पर अगर Madame क्रीत्स्काया को गोली मारने की सजा हुई तो मैं देखने जाऊँगा। समूर की टोपीवाली और सेक्रेटरी की असिस्टेण्ट लीदोच्का के मामले में भी यही करूँगा।

...इनका पत्ता काटना चाहिये! लात मारकर निकाल देना चाहिये!...

पे बिल Madame क्रीत्स्काया के पास पहुँच गये पर मैं विधिवत घोषणा करता हूँ : वह उन्हें आगे नहीं बढ़ानेवाली। मेरी समझ में यह नहीं आता कि यह राक्षसनी यहाँ आयी कैसे। किसने उसे काम पर भरती किया है! सचमुच, अपना तो भाग्य ही फूटा है!

एक हफ़्ता बीत गया। पाँचवीं मंजिल पर गया, गेट नं. 4 में। वहाँ मुहर लगायी जाती थी। एक और की ज़रूरत थी, दो दिन हो गये पर दर-वैतन निर्धारण आयोग का अध्यक्ष पकड़ में नहीं आ रहा।

चादर बेच दी।

दो हफ़्ते से पहले पैसे नहीं मिलनेवाले।

अफ़वाह है कि इमारत में सबको पाँच-पाँच सौ का अग्रिम भुगतान किया जायेगा।

अफ़वाह सच निकली। सब बैठे पे बिल बना रहे थे। पूरे चार दिन तक।

मैं पे बिल लेकर अग्रिम भुगतान लाने जा रहा था। सब जुटा लिया था। सारी मुहरें हाजिर थीं। पर मेरी हालत ऐसी थी कि दूसरी से पाँचवीं मंजिल पर जाते समय रास्ते में मैंने कारीडोर की दीवार से निकले किसी सरिये को गुस्से में मोड़ दिया।

पे बिल मैंने जमा कर दिये। उन्हें मास्को के दूसरे छोर पर किसी दूसरी इमारत में भेजा जायेगा... वहाँ उनको पास किया जायेगा। फिर वापस भेजा जायेगा। तब पैसे...

आज मुझे पैसे मिले। पैसे!

कैशियर के पास जाने से दस मिनट पहले, पहली मंजिल पर उस औरत ने जिसे आख़िरी मुहर लगानी थी, कहा :

"बिल ऐसे नहीं बनता है। रोकना पड़ेगा।"

मुझे ठीक से याद नहीं कि हुआ क्या। धुन्ध-सी छा गयी।

शायद मैं तिलमिलाकर कुछ चिल्लाया था। कुछ ऐसे :

"आप मेरी हँसी उड़ाती हैं?"

औरत का मुँह फटा :

"अ-च्छा, आप ऐसे बात..."

तब मैं शान्त हो गया। मैंने हथियार डाल दिये। बोला कि मैं नर्वस हूँ। माफ़ी माँगी। अपनी बात वापस ली। वह लाल स्याही से बिल ठीक करने को राजी हो गयी। बिल पर घसीट दिया गया : भुगतान कर दिया जाये। और नीचे घुण्डी जैसे हस्ताक्षर।

कैशियर के पास चलो। बड़ा जादुई है शब्द : कैशियर। जब कैशियर ने नोट निकाले तब भी यकीन नहीं हुआ।

बाद में होश आया : अरे, ये तो पैसे हैं!

पे बिल बनाने की शुरुआत से लेकर पैसे मिलने के क्षण तक 22 दिन और 3 घण्टे लग गये।

घर पर सब साफ़ था। न जैकेट बची थी, न चादर, न किताबें।

11

.खाना खाओ तो कैसे खाओ

बीमार पड़ गया। असावधानी की वजह से। आज बन्दगोभी का शोरबा खाया था, खूब लाल-लाल, मांस के साथ। प्लेट में नन्ही-नन्ही सुनहरी तश्तरियाँ (चर्बी की) तैर

रही थीं। तीन प्लेट खाया। एक दिन में तीन पौण्ड डबलरोटी खा डाली। खीरों का अचार खाया। छक के खाकर मैंने चाय बनायी। चीनी डालकर मैं चार गिलास पी गया। नींद-सी आने लगी। मैं सोफे पर लेट गया और आँख लग गयी...

सपने में देखा मानो मैं यास्नाया पोल्याना जागीर में लेव तोल्स्तोय हूँ। और सोफिया आन्द्रेयेव्ना मेरी पत्नी है। मैं ऊपर अपने अध्ययन-कक्ष में बैठा हूँ। कुछ लिखना चाहिये। पर क्या लिखूँ मुझे पता नहीं। बार-बार लोग आकर कह रहे हैं :

"खाना खाने के लिए तशरीफ लाइये।"

पर मुझे नीचे जाने में डर लग रहा है। वैसे भी स्थिति फूहड़ है : महसूस कर रहा हूँ कि यह भयंकर ग़लतफ़हमी का मामला है। आख़िर 'युद्ध और शान्ति" मैंने तो नहीं लिखा। फिर भी मैं यहाँ बैठा हूँ। खुद सोफिया आन्द्रेयेव्ना लकड़ी के जीने पर चढ़कर ऊपर आयी और बोली :

"चलो। शाकाहारी खाना बना है।"

मुझे अचानक गुस्सा आ गया।

"क्या? शाकाहारी? मांस मँगवाओ! कबाब बनवाओ! वोदका का गिलास लाओ!"

वह रो पड़ीं और चौड़ी ललौंही दाढ़ीवाला दुखाबोर* दौड़ा-दौड़ा आया और मुझे उलाहना देकर बोला :

"वोदका? आपको शर्म आनी चाहिये! आप भी कैसी बातें करते हैं, लेव इवानोविच?"

"मैं लेव इवानोविच कब से हुआ? मैं निकोलायेविच हूँ! निकल जाओ मेरे घर से! नापो रास्ता अपना! मेरे घर में दुखाबोरों का नाम तक नहीं लिया जाना चाहिये!"

बड़ी शर्मनाक बात हो गयी।

आँख खुली तो तबीअत ढीली थी और बदन टूटा-टूटा। साँझ का झुटपुटा था। पड़ोस में कहीं से अकार्डियन बजने की आवाज आ रही थी।

शीशे के पास गया। क्या सूरत थी। ललौंही दाढ़ी, गाल गोरे, पलकें लाल। यह तो कुछ नहीं था आँखों के मुकाबले में। वे खराब थीं। फिर से उनमें चमक थी।

मेरी सलाह : इस चमक से सावधान रहें। जैसे ही वह दिखायी पड़े फौरन किसी बुर्जुआ से उधार लें (चुकायें नहीं), खाने-पीने का सामान खरीदें और खाइये। पर एकदम सारा माल न खा डालें। पहले दिन मांस की अखनी पीजिये और थोड़ी-सी डबलरोटी खायें। क्रमश : खुराक बढ़ाते जायें, क्रमश :।

सपना भी मुझे जँचता नहीं। यह बुरा सपना था।

---

* दुखाबोर—रूसी सम्प्रदाय का प्रतिनिधि जो धार्मिक आडम्बर का विरोध करता था। जारशाही सरकार उनका दमन करती थी। तोलस्तोय की मध्यस्थता के फलस्वरूप इस सम्प्रदाय के लोग 19 वीं सदी के अन्त में कनाडा में जा बसे थे।—सं.

फिर से चाय पी। पिछले हफ्ते की याद की। सोमवार को मैंने तेल के साथ उबले आलू और 1/4 पौण्ड डबलरोटी खायी थी। सैकरीन के साथ दो गिलास चाय पी थी। मंगलवार को खाया कुछ नहीं, पाँच गिलास चाय पी। बुधवार को मिस्तरी से दो पौण्ड डबलरोटी उधार ली। चाय पी, पर सैकरीन खत्म हो गयी थी। बृहस्पतिवार को मैंने दोपहर का खूब बढ़िया खाना खाया। दो बजे मैं अपने परिचितों के यहाँ गया। सफ़ेद ऐप्रनवाली नौकरानी ने दरवाज़ा खोला।

बड़ी अजीब-सी अनुभूति हुई। मानो बात दस साल पहले की हो। तीन बजे मुझे सुनायी पड़ा कि नौकरानी डायनिंग रूम में खाना लगाने लगी। हम बैठे गपशप कर रहे थे (मैंने सुबह दाढ़ी बना ली थी)। वे बोल्शेविकों को कोस रहे थे और अपना दुखड़ा सुना रहे थे। मैं देख रहा था कि वे मेरे जाने का इन्तज़ार कर रहे थे। पर मैं तो नहीं जा रहा था।

अन्ततः मालकिन बोली :

"आप हमारे साथ खाना खायेंगे? या नहीं?"

"धन्यवाद। बड़ी खुशी से।"

हमने खाया : डबलरोटी के साथ मैकारोनी का सूप, मेन डिश थी—खीरों के साथ कटलेट, फिर मुरब्बे के साथ खीर और चाय के साथ जैम।

मैं अपने पाप को स्वीकार करता हूँ। जब मैं वहाँ से जा रहा था तो मैं इस घर पर छापा पड़ने की कल्पना करने लगा। वे आते हैं। पूरी तालाशी लेते हैं। उन्हें अलमारी में पजामे में छिपाकर रखे गये सोने के सिक्के मिल गये। स्टोर रूम में आटा और बेकन। मकान मालिक को गिरफ्तार कर लिया...

ऐसा सोचना कितनी घिनौनी बात है, पर मैं सोचता था।

अटारियों पर भूखे बैठे व्यंग्य लेख लिखनेवालो, उस नवाबजादे क्नूट हामसून का अनुसरण मत करो। इन लोगों के पस जाओ जो सात-सात कमरों के मकानों में रहते हैं और छककर खाओ। शुक्रवार को कैण्टीन में आलू की टिकिया के साथ शोरबा खाया था और आज, शनिवार को, पैसे मिले, खूब छककर खाया और बीमार पड़ गया।

12

बिजली भी गिरी और बर्फ़ भी

हवा में बिजली की-सी कड़क है। मेरी इन्द्रियाँ पहले से भाँप लेती हैं। हमारे सावि की नींव चटकने लगी।

आज बूढ़ा आया और छत की ओर उँगली उठाकर, जिसके ऊपर मिसें छिपी हैं, बोला :

"मेरे ख़िलाफ़ साजिश बुनी जा रही है।"

मेरे लिए इतना ही काफ़ी था और मैंने झट से हिसाब लगाया कि मेरे पास सैकरीन की कितनी गोलियाँ बची हैं... 5-6 दिन के लिए काफ़ी होंगी।

बूढ़ा बड़ा खुश-खुश आया।

"मैंने उनकी साजिश को नाकाम कर दिया," वह बोला। उसने बस इतना ही कहा था कि दरवाज़े में सिर पर रूमाल बाँधे लुगाई का सिर घुसा और फट से बोला :

"कोई है? दस्तख़त कर दीजिये।"

मैंने दस्तखत कर दिये।

काग़ज़ में लिखा था :

फलाँ तारीख से सावि बन्द किया जा रहा है।

...डूबते जहाज के कप्तान की तरह मैं भी आख़िर में उतरा। नेक्रासोव, पुनर्जीवित शराबी, भूखे संग्रहों,* कविताओं, जिला सावियों के निर्देशों को मैंने फाइलों में बाँधकर जमा करने का आदेश दिया। खुद बत्ती बुझायी और बाहर निकला। फौरन आसमान से बर्फ़ गिरने लगी। फिर बारिश। इसके बाद, बर्फ़ कहूँ या बारिश, बस यूँ ही कुछ चारों आरे से चेहरे को छेदने लगा।

छँटनी के दिनों और ऐसे मौसम में मास्को बड़ा विकराल होता है। हाँ-हाँ, यह छँटनी ही थी। खौफ़नाक इमारत के अन्य क्वार्टरों में भी किसी को लात मारकर निकाला गया था।

परन्तु मादाम क्रीत्स्काया, लीदोच्का और समूर की टोपी अपनी-अपनी जगह बना रहीं।

---

* लेखक का तात्पर्य कवि नेक्रासोव की कविताओं के संग्रह, जिसके प्रकाशन की तैयारी हो रही थी तथा नाटक 'पुनर्जीवित शराबी' व भूख पीड़ितों की सहायतार्थ लिखी गयी रचनाओं से है।—सं.

यायावरी

1

साहित्य से पेट कैसे पालें।
ड्रामे पर सवार होकर तिफ़लीस का सफ़र

अगर कोई मुझसे पूछे कि मैं किस चीज़ के काबिल हूँ तो मैं साफ़-साफ़ कहूँगा मैं बामशक्कत क़ैद के काबिल हूँ।

वैसे यह तिफ़लीस के लिए नहीं, तिफ़लीस में मैंने कोई बुरा काम नहीं किया। व्लादीकवकाज के लिए मैं इसके काबिल हुआ हूँ।

व्लादीकवकाज में मैं अपने आख़िरी दिन काट रहा था और भुखमरी की काली छाया (पिष्टोक्ति! पिष्टोक्ति ही है!... 'काली छाया'... खैर, मारो गोली! ये नोट कभी प्रकाशित न होंगे!), हाँ तो मैं कह रहा था—भुखमरी की काली छाया ने मेरे, एलाटमेंट द्वारा प्राप्त हुए निहायत मामूली क्वार्टर के दरवाज़े पर दस्तक दी। और काली छाया के बाद ब्रुश जैसी मूंछों और प्रेरणा से ओतप्रोत चेहरेवाले ओजस्वी व्यक्ति—बैरिस्टर गेन्जुलायेव ने मेरा दरवाज़ा खटखटाया।

हमारे बीच वार्तालाप हुआ। मैं उसे यहाँ अक्षरशः उद्धरित कर रहा हूँ।

"अरे, आपका मुंह क्यों ऐसा लटका है?" (गेन्जुलायेव ने यह कहा।)

"आपके इस सड़ियल व्लादीकवकाज में भूखों मरना पड़ेगा..."

"आप से बहस नहीं करूँगा। व्लादीकवकाज सड़ियल शहर है। दुनिया में इससे सड़ियल शायद ही कोई दूसरा शहर मिले। पर मरने की क्या ज़रूरत?"

"कोई चारा ही नहीं बचा। मैं सभी सम्भावनाओं को टटोल चुका हूँ। कला उपविभाग के पास पैसे नहीं हैं और वेतन वे नहीं देंगे। नाटकों से पहले प्रस्तावना-भाषण खत्म हो गये। व्लादीकवकाज के स्थानीय अख़बार में मेरा व्यंग्यलेख छपा, उसके लिए मुझे 1200 रूबल और यह वायदा मिला कि अगर आइंदा कभी मैंने इस पहले व्यंग्यलेख जैसा कुछ लिखा तो मुझे जेल में बन्द करवा दिया जायेगा।"

"क्यों?" (गेन्जुलायेव डर गया। बात स्वाभाविक थी। जेल में बन्द करवाना चाहते हैं तो इसका मतलब मैं संदिग्ध व्यक्ति हूँ।)

"हँसी उड़ाने के लिए।"

"अरे, छोड़िये। इन लोगों को व्यंग्यलेखों की समझ कहाँ। मेरी बात सुनिये..."

और गेन्जुलायेव ने यह कर डाला। उसने मुझे उसके साथ मिलकर मूलवासियों के रहन-सहन के आधार पर क्रान्तिकारी ड्रामा लिखने के लिए भड़काया। यहाँ मैं गेन्जुलायेव पर झुठा आरोप मढ़ रहा हूँ। उसने मुझे सीख दी और मैं अपनी जवानी और नादानी के कारण कहने में आ गया। ड्रामे लिखने से गेन्जुलायेव का क्या वास्ता है? जाहिर है, कोई नहीं। उसने खुद तभी मेरे सामने स्वीकार कर लिया था कि वह सच्चे दिल से साहित्य से नफरत करता है; यह सुनकर मेरे मन में उससे सहानुभूति का विस्फोट हुआ। मुझे भी साहित्य से नफरत है, वह भी गेन्जुलायेव से कहीं ज़्यादा, आप यकीन कीजिये मेरी बात पर। पर गेन्जुलायेव मूलवासियों के रहन-सहन को मुँह-जबानी जानता है, अगर आप दुनिया के सबसे मनहूस पहाड़ों की पृष्ठभूमि में टिक्का कबाब से नाश्ता करने को, घटिया फौलाद की कटारों, दुबले घोड़ों, ढाबों और ऐसे घिनौने संगीत को रहन-सहन मानें, जिससे सुननेवाले को मतली आ जाये।

हाँ, तो मैं रचना करूँगा और गेन्जुलायेव उसमें यह रहन-सहन घोलेगा।

"पागल ही इस ड्रामे को खरीदेंगे।"

"हम पागल होंगे, अगर इस ड्रामे को नहीं बेचेंगे।"

हमने साढ़े सात दिन में उसे लिख डाला, इस प्रकार उस पर विश्व की सृष्टि की अपेक्षा डेढ़ दिन ज़्यादा लगा। इसके बावजूद वह विश्व से भी खराब निकला।

सिर्फ़ इतना कह सकता हूँ : अगर कभी सबसे निरर्थक, घटिया और धृष्ट ड्रामे की प्रतियोगिता होगी तो हमारेवाले को प्रथम पुरस्कार मिलेगा (वैसे... वैसे तो... 1921-24 के कुछ ड्रामों को याद करके मुझे इसमें शक होने लगा...), चलो प्रथम नहीं तो द्वितीय या तृतीय पुरस्कार तो मिल ही जायेगा।

संक्षेप में : इस ड्रामे को लिखने के बाद मेरे मुँह पर कालिख पुत गयी जिसे धोना असम्भव है, मुझे बस यही एकमात्र आशा है कि यह ड्रामा आदिवासी कला उपविभाग के उदर में गलकर पच गया होगा। ससुरी रसीद को रहने दो। वह दो लाख रूबल की थी। एक लाख मुझे। एक लाख—गेन्जुलायेव को। ड्रामा तीन बार दिखाया गया (कीर्तिमान था) और हर बार लेखकों को मंच पर बुलवाया जाता। गेन्जुलायेव मंच पर निकलता और हँसली पर हाथ रखकर झुकता। मैं भी निकलता और मुँह बनाता ताकि फ़ोटो में मेरा चेहरा न पहचाना जा सके (मैग्नीशियन का चूर्ण जलाकर स्टेज का फ़ोटो लिया जाता था)। मेरे इस मुँह बनाने की बदौलत जनता में यह अफ़वाह फैल गयी कि मैं प्रतिभाशाली होने के साथ-साथ पागल भी हूँ। यह बड़ा अखरता, विशेषकर इसलिए कि मुँह बनाने की कोई ज़रूरत थी ही नहीं : हमारा फ़ोटो जो फ़ोटोग्राफर खींचता था उसका स्टूडियो जब्त करके उसकी ड्यूटी थियेटर में लगा दी गयी थी, इसलिए सिवाय एक बन्दूक और "...की जय!" और कोहरे की पट्टी के अलावा फ़ोटो में और कुछ नहीं आया।

7 हज़ार मैं दो दिन में खा गया और बाकी बचे 93 हज़ार मैंने व्लादीकवकाज से

जाने पर खर्च करने का फैसला किया।

आख़िर क्यों? आख़िर तिफ़लीस ही क्यों? अब मैं यह समझ नहीं पाता, आप चाहे जो कर लें मेरे साथ। ठहरिये, कुछ याद-सा आता है। कहते थे कि :

1) तिफ़लीस में सभी दुकानें खुली हैं;

2) तिफ़लीस में शराब मिलती है;

3) तिफ़लीस में खूब गर्मी पड़ती है और फल सस्ते होते हैं;

4) तिफ़लीस में ढेरों अख़बार निकलते हैं आदि-आदि।

मैंने जाने का फैसला कर डाला। सबसे पहले मैंने सामान बाँधा। सामान था—कम्बल, थोड़े-से कपड़े और तेल का स्टोव।

सन 1921 में हालत 1924 की अपेक्षा कुछ भिन्न थी। फर्क यही था कि बोरिया-बिस्तर बाँधा और जिधर चाहो उधर मुँह उठाकर नहीं जा सकते थे। वे लोग जो नागरिकों की आवाजाही के ठेकेदार थे शायद कुछ ऐसे सोचते होंगे :

"अगर हरेक सफर करने लगेगा तो नतीजा क्या होगा?"

इसलिए इसकी अनुमति लेना ज़रूरी था। मैंने फौरन सम्बन्धित विभाग को अर्जी दे दी और उस खाने में जहाँ यह सवाल पूछा गया था :

"पर यात्रा का कारण क्या है?"

मैंने गर्व के साथ लिख दिया :

"तिफ़लीस में अपने क्रान्तिकारी ड्रामे के मंचन के लिए।"

पूरे व्लादीकवकाज में सिर्फ़ एक आदमी ऐसा था जो मेरा चेहरा नहीं पहचानता था, यह वही बाँका तरुण था जिसने कूल्हे पर पिस्तौल लटका रखी थी और जो उस मेज़ के पास चिपका खड़ा था जहाँ तिफ़लीस की यात्रा के दस्तावेज दिये जा रहे थे।

जब मेरी बारी आयी और मैंने दस्तावेज लेने के लिए हाथ बढ़ाया तो तरुण ने उसे बीच में ही रोक दिया और खनकती आवाज में सख़्ती से पूछा :

"किसलिए जा रहे हैं?"

"अपने क्रान्तिकारी ड्रामे के मंचन के लिए।"

तब तरुण ने मेरे दस्तावेज को लिफाफे में बन्द किया और लिफाफे को, साथ में मुझे भी एक रायफलधारी के सुपुर्द कर दिया और बोला :

"विशेष विभाग ले जाओ।"

"पर किसलिए?" मैंने पूछा।

इसका तरुण ने उत्तर दिया।

जब मैं सड़क पर चल रहा था और मेरी बायीं ओर रायफलधारी था तो बेहद चमकीला सूरज (व्लादीकवकाज में बस यही अकेली अच्छी बात थी) मुझे अपनी धूप में नहला रहा था। रायफलधारी ने बातों से मेरा मन बहलाने का फैसला किया और बोला :

"अब हम हाट से गुजरेंगे इसलिए तुम भागने की मत सोचना। नहीं तो पाप कर बैठूँगा।"

"अगर आप मुझसे इसका अनुरोध भी करते तब भी मैं ऐसा न करता," मैंने बिल्कुल सच्चे दिल से उत्तर दिया और उसे सिगरेट पीने को दी।

प्रेम से सिगरेट पीते हुए हम विशेष विभाग में पहुँच गये।

अहाते को पार करते समय मैंने झटपट अपने सभी अपराधों को याद कर लिया। तीन निकले।

1) सन 1907 में फिजिक्स की पाठ्य-पुस्तक खरीदने के लिए मिले 2 रूबल 50 कोपेक–मैंने बाइस्कोप देखने पर खर्च कर दिये थे;

2) सन 1913 में अपनी माँ की इच्छा के विरुद्ध मैंने शादी कर ली;

3) सन 1921 में वह विलक्षण व्यंग्यलेख लिखा।

और ड्रामा? पर भई, यह रहने दीजिये, हो सकता है कि ड्रामा कोई अपराध ही न हो? इसका उलट ही हो।

उन सज्जनों की सूचनार्थ जिन्होंने विशेष विभाग का मुँह नहीं देखा : बड़ा कमरा, फ़र्श पर कालीन बिछा है, भीमकाय, बेहद ही बड़ी मेज़ पर आठ अदद नाना प्रकार के टेलीफ़ोन हैं जो हरे, नारंगी और सलेटी रंगों के तारों से जुड़े हैं और इस मेज़ पर फ़ौजी वर्दी में नाटा आदमी बैठता है जिसका चेहरा बड़ा आकर्षक है।

खुली खिड़कियों में चेस्टनेट के वृक्षों की घनी फुनगियाँ झाँक रही हैं। मेज़ पर बैठे आदमी ने मुझे देखकर अपने चेहरे को आकर्षक से सख़्त और अनाकर्षक बनाना चाहा, खैर इसमें वह पूरी तरह कामयाब न हो पाया।

उसने दराज से फ़ोटो निकाला और बारी-बारी से मुझे और उसे घूरकर देखने लगा।

"अरे नहीं। यह मैं नहीं हूँ," मैं झट से बोला।

"मूँछें तो मुँड़वायी भी जा सकती है," विचारों में मग्न आकर्षक व्यक्ति ने प्रत्युत्तर दिया।

"अरे, आप ज़रा गौर से देखिये," मैं बोला, "इसके बाल बूट पालिश की तरह काले हैं और उसकी उम्र भी पैंतालीस की होगी। पर मेरे बाल सुनहरे हैं और मैं अट्ठाईस का हूँ।"

"खिजाब नहीं हो सकता?" नाटा ढुलमुल स्वर में बोला।

"और गंजी टाँट? इसके अलावा नाक पर गौर करें। मैं आपकी मिन्नत करता हूँ, नाक पर गौर कीजिये।"

नाटे ने मेरी नाक पर गौर किया। उस पर हताशा हावी हो गयी।

"ठीक है। शक्ल नहीं मिलती।"

सन्नाटा छा गया और स्याही की दवात से सूर्य की किरणों का पुंज फूटा।

"आप एकाउण्टेंट हैं"

"भगवान बचाये।"

सन्नाटा। चेस्टनेट की फुनगियाँ खिड़कियों में झाँक रही हैं। छत पर कामदेव विराजमान हैं।

"पर आप तिफ़लीस क्यों जा रहे हैं? जल्दी से जवाब दीजिये, सोचिये नहीं," नाटा सर्राटे से बोला।

"अपने क्रान्तिकारी ड्रामे का मंचन करने के लिए," मैंने फटाक से उत्तर दे डाला।

नाटे का मुँह खुला का खुला रह गया, वह पीछे को हटा और किरण पुँज में दहक उठा।

"ड्रामे लिखते हैं?"

"हाँ। लिखने पड़ते हैं।"

"अच्छा। बढ़िया ड्रामा लिखा है?"

उसके लहजे में कुछ ऐसी बात थी जो किसी भी मर्म को स्पर्श कर सकती थी पर सिर्फ़ मेरे को नहीं। मैं फिर से कहता हूँ कि मैं बामशक्कत कैद के काबिल हूँ। नज़रें चुराकर मैं बोला :

"हाँ, बढ़िया है।"

हाँ। हाँ। हाँ। यह चौथा अपराध था और सबसे जघन्य। अगर मैं विशेष विभाग के समक्ष निर्दोष रहना चाहता था तो मुझे यह उत्तर देना चाहिये था :

"नहीं। वह अच्छा ड्रामा नहीं है। वह सड़ियल है। बस मुझे तिफ़लीस जाने की बेहद चाह है।"

मैं अपने फटे बूटों की चोंचों पर नज़रें गड़ाये चुप खड़ा था। होश मुझे तब आया जब नाटे ने मुझे एक सिगरेट और यात्रा का परमिट थमाया।

नाटे ने उस रायफलधारी से कहा :

"साहित्यकार को बाहर तक छोड़ आओ।"

विशेष विभाग! भूल जाओ इसके बारे में! तुम देखते हो कि मैंने कबूल कर लिया। मैंने तीन सालों का बोझ उतार डाला। विशेष विभाग में मैंने जो हरकत की वह मेरे लिए तोड़फोड़, प्रतिक्रान्ति और पद के दुरुपयोग जैसे अपराधों से भी बदतर है।

पर भूल जाओ!!!

2

चिर यायावर

कहते हैं कि सन 1924 में व्लादीकवकाज से तिफ़लीस जाना बड़ा आसान था : व्लादीकवकाज में भाड़े पर मोटर लेकर सैन्य-जार्जियाई राजमार्ग से चल देना जो बहुत

ही खूबसूरत है। सिर्फ़ 140 मील का सफ़र है। पर 1921 में व्लादीकवकाल में "भाड़ा" शब्द किसी विदेशी भाषा के शब्द के समान था।

यात्रा की विधि यह थी : कम्बल और तेल का स्टोव उठाओ और स्टेशन पर पहुँच जाओ। वहाँ पटरियों पर मालगाड़ी के डिब्बों की अन्नत कतारों को छान मारो। पसीना पोंछते हुए सातवें प्लेटफार्म पर मालगाड़ी के डिब्बे के खुले दरवाज़े पर मुझे स्लीपर पहने, मोर की दुम की तरह फैली दाढ़ीवाला आदमी दिखायी पड़ा। वह केतली खंगाल रहा था और बार-बार घिनौना शब्द "बाकू-बाकू" कह रहा था।

"मुझे भी अपने साथ ले जाइये," मैंने अनुनय की।

"नहीं ले जाऊँगा," दाढ़ीवाले ने उत्तर दिया।

"कृपया ले जाइये, क्रान्तिकारी ड्रामे के मंचन के लिए," मैं बोला।

"नहीं ले जाऊँगा।"

दाढ़ीवाला केतली उठाये तख्ते पर चढ़कर डिब्बे में घुस गया। मैं गर्म पटरी के पास अपने कम्बल पर बैठ गया और सिगरेट पीने लगा। डिब्बों के बीच से खूब घनी गर्मी बहती आ रही थी और मैंने पटरी के पास लगे नल से जी भरकर पानी पिया। मैं फिर बैठ गया और मैंने महसूस किया कि डिब्बा मानो बुखार में तप रहा था। दाढ़ी बाहर झाँकी।

"कौन-सा ड्रामा है?" उसने पूछा।

"अभी दिखाता हूँ।"

मैंने कम्बल खोला और ड्रामा निकाला।

"आपने खुद लिखा है?" अविश्वास के साथ डिब्बे के मालिक ने पूछा।

"गेल्जुलायेव के साथ मिलकर।"

"मैं उसे नहीं जानता।"

"मुझे ज़रूर जाना है।"

"अगर दो लोग नहीं आये तब शायद ले जाऊँ। पर देखो, बर्थ पर दावा नहीं करना। आप यह मत सोचिये कि आपने ड्रामा लिखा है तो चोचले कर सकते हैं। सफर तो लम्बा है, हम खुद राजनीतिक प्रचारवाले हैं।"

"मैं चोचले नहीं करूँगा," तपिश के समुद्र में आशा के झोंके को महसूस करके मैं बोला, "फ़र्श पर भी बैठ सकता हूँ।"

बर्थ पर बैठे दाढ़ीवाले ने पूछा :

"आपके पास खाने का सामान है?"

"थोड़े-से पैसे हैं।"

दाढ़ीवाला कुछ देर सोचकर बोला :

"अच्छा तो ऐसा करते हैं... मैं सफर में आपका नाम अपनी राशन लिस्ट में लिख

लूँगा। पर आपको हमारे अख़बार के लिए कुछ करना होगा। अख़बार के लिए आप क्या लिख सकते हैं?"

"जो कहेंगे," राशन पाकर डबलरोटी की ऊपरी पपड़ी को चबाते हुए मैंने आश्वासन दिलाया।

"व्यंग्यलेख तक?" उसने पूछा, उसके चेहरे पर साफ़ लिखा था कि वह मुझे गप्पी मानता है।

"व्यंग्यलेख लिखने में तो मैं माहिर हूँ।"

बर्थ की छाया में तीन चेहरे और एक जोड़ी नंगे पाँव प्रकट हुए। सब टकटकी लगाकर मुझे घूर रहे थे।

"फ़्योदोर! यहाँ एक बर्थ खाली है। हरामजादा स्तेपानोव नहीं आयेगा," पाँव गरजकर बोले, "मैं कामरेड व्यंग्यलेखक को दे दूँगा।"

"ठीक है, दे दो," दाढ़ीवाला फ़्योदोर दुविधा में पड़कर बोला। "आप कौन-सा व्यंग्यलेख लिखेंगे?"

"चिर यायावर।"

"शुरू कैसे करेंगे?" बर्थों ने पूछा। "अरे, आप अन्दर तो आइये चाय पियेंगे।"

"बहुत अच्छा—चिर यायावर," बूट उतारते हुए फ़्योदोर बोला, "दो घण्टे तक पटरी पर बैठने से तो अच्छा यही होता कि आप फौरन व्यंग्यलेख का जिक्र कर देते। हमारे यहाँ काम कर लीजिये।"

व्लादीकवकाज में धधकते दिन का स्थान विराट अद्‌भुत साँझ ने ले लिया। नीले पहाड़ साँझ की किनारी बन गये। उनके ऊपर गोधूलि का कुहासा छाया है। घाटी—कटोरे की पेंदी कर तरह है। और पेंदी पर ठकठकाते हुए पहिये चल पड़े। चिर यायावर। अलविदा गेन्जुलायेव। अलविदा व्लादीकवकाज!

* नेदेज्दा कोंस्तान्तीनोव्ना क्रूपस्काया (उल्यानोवा), लेनिन की धर्मपत्नी, उपरोक्त काल में वह रूस के शिक्षा मंत्रालय की राजनीतिक शिक्षण समिति की अध्यक्षा थीं। उनकी सहायता से बुल्गाकोव को 1921 में रहने के लिए कमरा मिला था।—सं.

इक याद बसी है दिल में

बहुत-से लोगों के दिलों में, बहुत अधिक लोगों के दिलों में व्लादीमीर इल्यीच लेनिन से जुड़ी यादें बसी हैं, मेरे दिल में भी इक याद बसी है। वह मेरे मन की इतनी गहराई में बसी है कि मैं उससे जुदा नहीं हो सकता। जुदा हो भी कैसे सकता हूँ अगर रोज़ शाम को जैसे ही हीटिंग रेडियेटर की धूसर पाइपों में गर्मी भरती है और कमरे में सुखद लहर दौड़ जाती है, मुझे अपनी अनोखी अर्जी के पीले पन्ने और नदेज्दा कोंस्तान्तीनोव्ना* की पुरानी घिसी समूर की जाकेट की याद आ जाती है...

कैसे जुदा हो सकता हूँ अगर शाम को जैसे ही 50 वाट के बल्ब का फिलामेण्ट चमकने लगता है मैं शेड की हरी छाया में सुखद गर्मी में बैठकर लिख और पढ़ सकता हूँ और मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं होती कि बाहर शून्य से 18 डिग्री नीचे के शीतमान में तेज़ हवा चल रही है।

भला जुदा होने का ख़्याल आ भी कैसे सकता है अगर ऊपर को सिर उठाते ही मुझे छत दिखायी पड़ती है। हाँ, यह सच है कि यह बड़ी घिनौनी—नीची, कालिख से ढकी और दरारों से पटी छत है। पर है तो छत न कि प्रेचीस्तेन्स्की बुल्वार के ऊपर तारों से पटा आसमान, जहाँ विज्ञान के सूक्ष्मतम तथ्यों के अनुसार 18 डिग्री का नहीं बल्कि 271 डिग्री का शीतमान है, हर डिग्री शून्य से नीचे है। मेरे साहित्यिक और श्रमिक जीवन का अन्त करने के लिए तो इससे काफ़ी कम ही पर्याप्त होगा। मकड़ी के कालिख से ढके जालों के फानूसोंवाली मेरी छत के नीचे तापमान शून्य से 12 डिग्री ऊपर है, बिजली है, किताबें भी हैं और एलाटमेंट का काग़ज़ भी है। इसका मतलब यह है कि जब तक यह सारी बिल्डिंग रहेगी तब तक मैं भी रहूँगा। आग नहीं लगी तो मैं जिन्दा रहूँगा।

पर आइये, शुरू से किस्सा सुनाता हूँ।

1921 का साल खत्म हो रहा था और मैं मास्को पहुँचा। यात्रा मेरे लिए इतनी कठिन नहीं रही क्योंकि सामान मेरा बहुत कम था। मेरी सारी चल-अचल सम्पत्ति छोटी-सी अटैची में थी। इसके अलावा मेरे कन्धों पर भेड़ की खाल का लबादा था। मैं उसका वर्णन नहीं करूँगा। नहीं करूँगा ताकि पाठक के मन में भी वैसी घिन न पैदा हो जैसी उस चीकट गूदड़ को याद करते ही मेरे मन में भर जाती है।

यही कहना काफ़ी है कि पहले ही दिन त्वेर्स्काया सड़क पर मुझे छः बार पीछे से वाहवाही की फुसफुसाहट सुनायी पड़ी :

"भई वाह, लबादे का जवाब नहीं!"

आप सोचिये, दो दिन मास्को के चक्कर काटकर मुझे नौकरी मिल गयी। वह कोई खास बढ़िया तो नहीं थी, पर औरों से उन्नीस भी न थी : यहाँ भी दलिये का राशन और दिसम्बर में अगस्त की तनखा मिलती थी। और मैं नौकरी करने लगा।

बस तभी तो मेरे सामने अपने विकराल रूप में प्रश्न खड़ा हो गया... कमरे का। आदमी को कमरे की ज़रूरत होती है। कमरे के बिना आदमी जी नहीं सकता। मेरा लबादा मेरे लिए ओवरकोट, रजाई, मेज़पोश और बिस्तर का काम देता था। पर अटैची की तरह वह भी कमरे का काम तो दे नहीं सकता था। अटैची बहुत छोटी थी। इसके अलावा गर्मी के लिए उसमें अँगीठी नहीं डाली जा सकती। इसके सिवा मुझे लगता था कि नौकरी-पेशा आदमी को यह शोभा नहीं देता कि वह अटैची में रहे।

मैंने आवास विभाग का रास्ता पकड़ा और छः घण्टे तक लाइन में अपनी बारी की प्रतीक्षा करता रहा। जब सातवाँ घण्टा शुरू हुआ और मैंने अपने जैसों के पीछे-पीछे दफ़्तर में प्रवेश किया, वहाँ बताया गया कि दो महीने बाद मुझे कमरा मिल सकता है।

दो महीनों में लगभग 60 दिन होते हैं और मुझे इस प्रश्न में बेहद दिलचस्पी थी कि मैं उन्हें कहाँ बिताऊँगा। खैर, इनमें से पाँच रातों को घटाया जा सकता था : मास्को में मेरा पाँच परिवारों से परिचय था। दो बार मैं ड्योढ़ी में बेंच पर सोया था, दो बार कुर्सियों पर और एक बार गैस के चूल्हे पर। और छठी रात को मैं प्रचीस्तेन्स्की बुल्वार पर सोने के लिए चला गया। वह बहुत सुन्दर है, यह तरुपथ, खासकर नवम्बर के महीने में, पर इस मौसम में वहाँ एक से ज़्यादा रात नहीं बितायी जा सकती। हर कोई जो चाहे, इसे आजमाकर देख सकता है। सुबह-सवेरे जैसे ही विशाल गुम्बदों पर लटके आसमान का रंग फीका पड़ा, मैंने रुपहले पाले की परत से ढकी अपनी अटैची उठायी और ब्र्यान्स्की स्टेशन की ओर चल पड़ा। सड़क पर रात बिताने के बाद मुझे सिर्फ़ एक इच्छा थी—मास्को से भागने की। मुझे ललौंहे दलिये की बोरी और नवम्बर की तनखा का कोई मलाल न था जो मुझे फरवरी में मिलनेवाली थी। मुझे गुम्बदों, छतों, खिड़कियों और मास्को के लोगों से नफरत थी, मैं ब्र्यान्स्की स्टेशन जा रहा था।

बस तभी कुछ ऐसा हुआ जिसे अजूबे के अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता। ब्र्यान्स्की स्टेशन के बिल्कुल पास मुझे अपना दोस्त मिला। मैं सोचता था कि उसकी मौत हो चुकी है।

पर वह नहीं मरा, यही नहीं वह मास्को में रहता था और उसके पास अपना अलग कमरा था। ओ मेरे जिगरी यार! एक घण्टे बाद मैं उसके कमरे में बैठा था।

वह बोला :

"सो सकते हो। पर रहने की तुम्हें इजाजत नहीं देंगे।"

रात को मैं सोता और दिन में बिल्डिंग कमेटी में जाकर मिन्नत करता कि मुझे दोस्त के कमरे में रहने की इजाजत दे दी जाये।

मोटा, ताँबे के पतीले जैसा लाल बिल्डिंग कमेटी का चेयरमैन मेमने की खाल की टोपी पहने, कोहनियों को टिकाकर बैठा होता और अपनी अँगारों जैसी आँखों से मेरे लबादे के छेदों को घूरता। मेमने की टोपियों मे कमेटी के मेम्बर अपने सरगने को घेरकर बैठे होते।

"मेहरबानी करके मुझे यहाँ रहने की इजाज़त दे दीजिये," मैं कहता, "आख़िर कमरे के मालिक को इस पर कोई एतराज नहीं कि मैं उसके कमरे में रहूँ। मैं बहुत शान्त आदमी हूँ। किसी को परेशानी नहीं होगी। शराबखोरी नहीं करूँगा और ठकठक भी..."

"नहीं," चेयरमैन उत्तर देता, "नहीं दूँगा। आप इस बिल्डिंग में नहीं रह सकते।"

"पर मैं आख़िर रहूँ कहाँ," मैं पूछता, "कहाँ? सड़क पर तो मैं रह नहीं सकता।"

"मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं," चेयरमैन उत्तर देता।

"ग़ायब हो जाओ, जैसे गधे के सिर से सींग!" चेयरमैन के गुर्गे फौलादी आवाज़ों में चिल्लाते।

"मैं सींग नहीं हूँ....मैं सींग नहीं हूँ," मैं हताश होकर बड़बड़ाता, "मैं कहाँ गायब हूँ। मैं इंसान हूँ।"

निराशा मुझे घुन की तरह खा रही थी।

पाँच दिन तक यह सिलसिला चलता रहा और छठे दिन एक लँगड़ा आया हाथ में मिट्टी के तेल की कुप्पी उठाये और उसने घोषणा की कल अगर मैं खुद नहीं गया तो मिलीशिया मुझे पकड़कर ले जायेगी।

तब मैं तिलमिला गया।

रात को मैंने सुनहरी किनारीवाली मोटी विवाह की मोमबत्ती जलायी। एक हफ्ते से बिजली खराब थी और मेरा दोस्त रोशनी के लिए वे मोमबत्तियाँ जलाता था जिनकी रोशनी में उसकी बुआ ने उसके फूफा को अपना तन-मन अर्पित किया था। मोमबत्ती मोम के आँसू बहा रही थी। मैंने काग़ज़ का बड़ा-सा पन्ना फैलाया और उस पर कुछ लिखने लगा जो इन शब्दों से शुरू होता था : मंत्रीपरिषद के अध्यक्ष व्लादीमीर इल्यीच लेनिन की सेवा में। मैंने इस पन्ने पर सब, सब कुछ लिख डाला : कि कैसे मैं नौकरी पर भरती हुआ, कैसे मैं आवास विभाग गया, कैसे क्राइस्ट सेवियर के गुम्बदों के ऊपर 270 डिग्री के पाले में चमकते तारे देखे और कैसे मुझसे चिल्ला-चिल्लाकर कहा जाता था :

"गायब हो जाओ जैसे गधे के सिर से सींग!"

कोयले की तरह काली-कलूटी रात को, ठण्ड में (हीटिंग व्यवस्था भी खराब थी) मैं फटे-पुराने सोफे पर सो गया और सपने में मुझे लेनिन दिखायी दिये। वह अपनी मेज़ के पास आरामकुर्सी पर टेबुल लैम्प की रोशनी के घेरे में बैठे हुए मेरी ओर देख रहे थे। मैं अपना लबादा पहने उनके सामने कुर्सी पर बैठा उन्हें सड़क पर चमकते

सितारों, विवाह की मोमबत्ती और चेयरमैन के बारे में बता रहा था।

"मैं सींग नहीं हूँ गधे के, नहीं, मैं, व्लादीमीर इल्यीच, सींग नहीं हूँ।"

मेरी दोनों आँखों से आंसुओं की मोटी-मोटी धाराएँ बह रही थीं।

"ठीक... ठीक... ठीक..." लेनिन बोल रहे थे।

फिर उन्होंने फ़ोन मिलाया।

"इन्हें अपने दोस्त के साथ रहने का परमिट दे दिया जाये। हमेशा-हमेशा के लिए कमरा दे दिया जाये और इन्हें आराम से बैठकर तारों-वारों के बारे में कविताएँ लिखने दो। और उस हरामी मेमने की टोपीवाले को मेरे पास भेजो। मैं उसे मजा चखाऊँगा।"

चेयरमैन को लाया गया। मोटा चेयरमैन रोता हुआ गिड़गिड़ा रहा था :

"मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा।"

मोमबत्ती की रोशनी में रंगे पन्ने को देखकर काम पर सब लोग ठहाके लगाने लगे।

"तुम उन तक नहीं पहुँच पाओगे, प्यारे," निदेशक सहानुभूति के साथ बोला।

"तो ठीक है, मैं नदेज्दा कोंस्तान्तीनोव्ना तक पहुँच जाऊँगा," मैंन हताशा होकर कहा, "मुझे अब कोई फ़र्क नहीं पड़ता। प्रेचीस्तेन्स्की बुल्वार पर मैं नहीं जानेवाला।"

और मैं नदेज्दा कोंस्तान्तीनोव्ना के पास पहुँच गया।

दोपहार के तीन बजे मैं उनके कमरे में दाखिल हुआ। मेज़ पर टेलीफ़ोन रखा था। नदेज्दा कोंस्तान्तीनोव्ना ने समूर की पुरानी-सी घिसी जाकेट पहन रखी थी। वह उठीं और मेरे लबादे की ओर देखा।

"आप क्या चाहते हैं?" मेरे हाथ में उपरोक्त पन्ने को देखकर उन्होंने पूछा।

"मुझे इस दुनिया में कुछ नहीं चाहिये, सिवाय साथ रहने के परमिट के। मुझे निकालना चाहते हैं। जन-कमिसारों की परिषद के अध्यक्ष के सिवा मुझे किसी पर भरोसा नहीं। आपसे गिड़गिड़ाकर मिन्नत करता हूँ कि आप उन्हें यह अर्जी दे दें।"

यह कहकर मैंने उन्हें अपना काग़ज़ थमा दिया।

उन्होंने उसे पढ़ डाला।

"नहीं," वह बोलीं, "भला यह जन-कमिसारों की परिषद के अध्यक्ष को देने लायक है?"

"पर मैं आखिर करूँ क्या?" मैंने पूछा, हाथों से मेरी टोपी गिर गयी।

नदेज्दा कोंस्तान्तीनोव्ना ने मेरी अर्जी पर एक कोने में लाल स्याही से लिख दिया :

"कृपया संयुक्त निवास का परमिट दे दिया जाये।"

और नीचे दस्तखत कर दिये :

उल्यानोवा।

और पूर्णविराम लगा दिया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि मैं उनका शुक्रिया अदा करना ही भूल गया।

भूल गया। जैसे-तैसे टोपी पहनकर बाहर निकल गया।

शाम के चार बजे मैं बिल्डिंग कमेटी के सिगरेट के धुएँ से भरे दफ़्तर में दाखिल हुआ। सब वहाँ मौजूद थे।

"क्या?" सबके सब चिल्लाये। "आप अभी यहीं हैं?"

"गायब..."

"जैसे गधे के सिर के सींग?" मैंने तैश में आकर पूछा। "जैसे सींग? यही ना?"

मैंने काग़ज़ का पन्ना निकाला और उसे खोलकर मेज़ पर रख दिया। उँगली से मैंने मनोवांछित शब्दों की ओर इशारा किया।

मेमने की खाल की टोपियाँ काग़ज़ के ऊपर झुकीं और तत्क्षण उन्हें लकवा मार गया। दीवार पर टिक-टिक करती घड़ी के आधार पर कह सकता हूँ कि उसका असर कितनी देर रहा।

पूरे तीन मिनट।

फिर चेयरमैन की जान में जान आयी और उसने अपनी बुझती आँखों को मेरी ओर मोड़ा :

"उल्या?..." उसने फीकी-फीकी आवाज में पूछा।

फिर से सन्नाटे में घड़ी की टिक-टिक सुनायी पड़ रही थी।

"इवान इवानिच," मेमनेवाला चेयरमैन पस्त आवाज में बोला, "यार, इनको संयुक्त निवास का परमिट बनाकर दे दे।"

यार इवान इवानिच ने रजिस्टर उठाया और परमिट बनाने लगा, मरघट जैसे सन्नाटे में उसकी निब की सरसराहट ही सुनायी पड़ रही थी।

मैं उसी कालिख से ढकी छतवाले कमरे में रहता हूँ। मेरे पास किताबें हैं और टेबल लैम्प से मेज़ पर रोशनी का घेरा बना है। 22 जनवरी* को वह लाल हो गया और इस लाल रोशनी में मेरे समक्ष वही चेहरा प्रकट हुआ जिसे मैंने सपने में देखा था–तिकोनी फ्रेंचकट दाढ़ी और चौड़ा ललाट, उसके पीछे था शोक और हताशा में डूबे खिचड़ी बाल, घिसे समूर की जाकेट और लाल स्याही से लिखा शब्द–

उल्यानोवा सबसे बड़ी बात तो यह है कि तब मैं शुक्रिया अदा करना भूल गया। कितनी खराब बात है...

नेदज्दा कोंस्तान्तीनोव्ना, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ।

* 21 जनवरी 1924 को लेनिन का देहान्त हो गया था। इसकी सरकारी सूचना 22 जनवरी को जारी की गयी थी।–सं.

घातक अण्डे

अध्याय 1

प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव का संक्षिप्त जीवन-चरित

16 अप्रैल 1928 की शाम को चतुर्थ राजकीय विश्वविद्यालय के प्राणीविज्ञान के प्रोफ़ेसर और मास्को के प्राणीविज्ञान संस्थान के निदेशक पेर्सिकोव ने गेर्त्सन सड़क पर स्थित प्राणीविज्ञान संस्थान में अपनी प्रयोगशाला में प्रवेश किया। प्रोफ़ेसर ने छत से लटके दूधिया गोले का स्विच दबाया और कमरे में नज़र दौड़ायी।

इसी अभागी शाम को उस भयानक विपदा का प्रारम्भ हुआ और इसी प्रकार प्रोफ़ेसर व्लादीमीर इपात्येविच पेर्सिकोव को इस महाविपदा का मूल कारण माना जाना चाहिये।

उनकी आयु ठीक 58 वर्ष की थी। सिर जबरदस्त, उन्नत भाल, गँजी टाँट की बगलों पर पीले-से बोलों के गुच्छे। सफाचट चेहरा, नीचेवाला होंठ आगे को निकला हुआ। इसकी वजह से पेर्सिकोव के चेहरे पर हमेशा कुछ-कुछ नखरे का सा भाव रहता। लाल नाक पर टिका चाँदी के पुराने फैशनवाले छोटे-से फ्रेम का चश्मा, आँखें चमकीली और छोटी, कद ऊँचा, कन्धे झुके हुए। वह चरचमराती, पतली टर्राती आवाज में बोलते थे, उनकी अन्य विचित्रताओं में एक यह भी थी : जब वह विश्वास के साथ कोई वजनी बात कहते तो अपने दायें हाथ की तर्जनी को हुक की तरह मोड़ लेते और आँखें मिचमिचाते। और चूँकि वह हमेशा विश्वास के साथ बोलते थे, क्योंकि अपने क्षेत्र में उनका पाण्डित्य अत्यन्त विलक्षण था तो यह हुक अक्सर प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव के सम्भाषी की आँखों के सामने प्रकट हो जाता था। और अपने क्षेत्र के बाहर अर्थात प्राणीविज्ञान, भ्रूणविज्ञान, शरीर-रचना विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और भूगोल के अलावा प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव किसी और विषय पर लगभग बोलते ही नहीं थे।

अख़बार प्रो. पेर्सिकोव पढ़ते नहीं थे, थियेटर देखने भी न जाते थे, प्रोफ़ेसर की बीवी 1913 में आपेरा गायक जीमिन के साथ भाग गयी, कुछ इस प्रकार का नोट छोड़कर :

"तुम्हारे मेंढकों से मुझे असहनीय घिन आती है। उनकी वजह से मैं सारी ज़िन्दगी अभागी रहूँगी।"

प्रोफ़ेसर ने दूसरी शादी नहीं कि और उनके बच्चे भी न थे। वह बड़े गुस्सैल थे, पर गुस्सा उनका जल्दी ठण्डा हो जाता था, उन्हें बेरियों के मुरब्बे के साथ चाय पसन्द थी। रहते वह प्रेचीस्तेन्का सड़क पर थे, 5 कमरों के फ्लैट में, जिनमें से एक को सूखी

बुढ़िया, उनकी नौकरानी मार्या स्तेपानोव्ना ने घेर रखा था जो आया की तरह प्रोफ़ेसर की देखभाल करती थी।

सन 1919 में प्रोफ़ेसर के 5 कमरों में से 3 छीन लिये गये। तब उन्होंने मार्या स्तेपानोव्ना के सामने यह घोषण की :

"मार्या स्तेपानोव्ना, अगर उन्होंने इस तरह की बेहूदगियाँ बन्द नहीं कि तो मैं विदेश चला जाऊँगा।"

इसमें कोई शक नहीं कि अगर प्रोफ़ेसर ने इस योजना पर अमल किया होता तो वह बड़ी आसानी से दुनिया के किसी भी विश्वविद्यालय के प्राणीविज्ञान विभाग में लग जाते, क्योंकि वह बिल्कुल अव्वल दर्जे के वैज्ञानिक थे और उस क्षेत्र में जो किसी न किसी तरह से उभयचरों या रेंगनेवाले जानवरों से सम्बन्धित था तो केम्ब्रिज के प्रो. विलियम वेक्केल और रोम के प्रो. जिआकोमो बार्तोरलोम्यो बेक्कारी के सिवा उनकी टक्कर का कोई नहीं था। प्रोफ़ेसर 4 भाषाओं में पढ़ते थे, अपनी मातृभाषा रूसी के अलावा, तथा फ्रेंच और जर्मन में वह वैसे ही बोलते थे जैसे रूसी में। विदेश के सम्बन्ध में पेर्सिकोव ने अपने इरादों पर अमल नहीं किया और सन 20 का साल सन 19 से भी बुरा निकला। कई घटनाएँ हुईं, एक के बाद एक लगातार। बोल्शाया निकीत्स्काया सड़क का नाम बदलकर गेर्त्सन सड़क कर दिया गया। इसके बाद गेर्त्सन और मोखोवाया सड़कों के नुक्कड़ पर खड़े मकान की दीवार में जड़ी घड़ी सवा ग्यारह बजे रुक गयी और अन्ततः प्राणीविज्ञान संस्थान की थलजीवशालाओं में उपरोक्त साल की सम्पूर्ण उथल-पुथल को न झेल पाने के कारण पहले 8 अदद उम्दा वृक्ष मण्डूकों, फिर 15 साधारण भेकों और अन्ततः सूरीनामी भक के अनुपमतम नमूने ने दम तोड़ दिया।

मेंढकों के एकदम बाद, जिन्होंने उभयचरों की उस श्रेणी को सूना कर दिया जिसे ठीक ही अपुच्छ परिवार कहा जाता है, संस्थान का आजीवन चौकीदार बूढ़ा व्लास, जो उभयचरों की श्रेणी में नहीं आता था, परलोक में जो बसा। खैर जो भी हो, उसकी मौत का कारण वही था जो बेचारे मेंढकों की मौत का था, पेर्सिकोव ने फौरन उसे निश्चित कर दिया था :

"भुखमरी!"

वैज्ञानिक की बात सोलह आने सच थी : व्लास को आटा मिलना चाहिये था और मेढकों को आटे में पड़नेवाले कीड़े, पर चूँकि पहली वस्तु गायब हो गयी तो दूसरी भी लुप्त हो गयी। पेर्सिकोव ने बाकी बचे 20 वृक्ष मण्डूकों को तिलचट्टों का आहार देने का प्रयास किया पर तिलचट्टे भी सैन्य कम्युनिज्म के प्रति अपना दुर्भावनापूर्ण रवैया दिखाकर न जाने कहाँ नदारद हो गये। इस प्रकार बचे-खुचे नमूनों को भी संस्थान के कम्पाउण्ड में बने मलकुण्डों में फेंकना पड़ गया।

इन मौतों का और विशेषकर सुरीनामी भेक की मौत का पेर्सिकोव पर क्या असर हुआ, इसका वर्णन करना असम्भव है। न जाने क्यों उन्होंने तत्कालीन शिक्षा मंत्री को

ही पूर्ण रूप से इन मौतों का दोषी ठहराया।

ठण्डे होते संस्थान के गलियारे में सिर पर समूर की टोपी लगाये और जूतों पर गैलोश चढ़ाये पेर्सिकोव ने अपने असिस्टेंट, नुकीली सुनहरी दाढ़ीवाले नफीस जेण्टलमैन इवानोव से कहा था :

"प्योत्र स्तेपानोविच, आख़िर इसके लिए तो उसे जान से मारना भी कम है! वे आख़िर कर क्या रहे हैं? वे तो संस्थान का भट्टा ही बिठा देंगे! क्यों? क्या लाजवाब नर था सूरीनामी, 13 सेण्टीमीटर लम्बा..."

इसके बाद क्या हुआ यह मत पूछो। व्लास की मौत के बाद खिड़कियों के काँच पर अन्दर से बेल-बूटेदार पपड़ी जम गयी। खरगोशों, लोमड़ियों, भेड़ियों, मछलियों और सारे के सारे साँपों ने दम तोड़ दिया। पेर्सिकोव दिन भर चुप रहने लगे, फिर उन्हें निमोनिया हो गया, पर वे मरे नहीं। जब वे ठीक हो गये तो सप्ताह में दो बार संस्थान आते और गोल हाल में, जहाँ बाहर जितना भी तापमान हो, न जाने क्यों हमेशा शून्य से 5 डिग्री कम का शीतमान होता था, 8 शिक्षुओं को कनटोप लगाये, मफलर बाँधे और गैलोश पहने हुए वह : 'उष्ण देशों के सरीसृप' विषय पर व्याख्यान देते, उनके मुँह से भाप के बादल फूटते। बाकी समय पेर्सिकोव प्रेचीस्तेन्का सड़क पर अपने घर में छत तक किताबों से अटे अपने कमरे में कम्बल ओढ़कर अपने सोफ़े पर लेटे हुए खाँसते और धधकती अँगीठी का मुँह देखते रहते जिसे मार्या स्तेपानोव्ना सुनहरी कुर्सियों को तोड़कर जलाती और सूरीनामी भेक को याद करते।

पर दुनिया में हर चीज़ का अन्त आता है। सन 20 का और सन 21 का साल भी खत्म हो गया और सन् 22 में कोई उल्टी गति शुरू हुई। सर्वप्रथमः दिवंगत व्लास की जगह पानक्रात ने ली, वह जवान था पर अभी से कहा जा सकता था कि बड़ा नामी प्राणीविज्ञानी चौकीदार बनेगा। संस्थान की इमारत की थोड़ी-बहुत हीटिंग की जाने लगी। और गर्मियों में पेर्सिकोव ने पानक्रात की मदद से क्ल्याज्मा में 14 अदद मामूली मेंढक पकड़े। थलजीवशालाएँ फिर से आबाद हो गयीं... सन 23 में सप्ताह में 8 व्याख्यान देने लगे—3 संस्थान में और 5 विश्वविद्यालय में, सन 24 में सप्ताह में 13 बार, इसके अलावा वह मजदूरों के लिए गठित संकायों में भी व्याख्यान देने लगी और सन 25 में उन्होंने मौखिक परीक्षाओं में 76 अदद छात्रों को फेल करके नाम

"अरे, आप इतना भी नहीं जानते कि उभयचरों और रेंगनेवालों में क्या अन्तर है?" पेर्सिकोव पूछते। "नौजवान, मुझे यह सुनकर बड़ी हँसी आती है। उभयचरों के गुर्दे नहीं होते। वे होते ही नहीं। हुंह। शर्म आनी चाहिये। आप शायद मार्क्सवादी हैं?"

"हाँ, मार्क्सवादी," मलिन स्वर में फेल होनेवाला उत्तर देता। "तो ठीक है, कृपया शरत् में सप्लीमेंटरी परीक्षा देने आयें," पेर्सिकोव शिष्टाचार के साथ कहते और ज़ोर से चिल्लाकर पानक्रात को आदेश देते : "अगले को भेजो!"

जिस प्रकार दीर्घकालीन सूखे के बाद की पहली वर्षा से उभयचर जाग पड़ता हैं उसी प्रकार 1926 में प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव में नये जीवन का संचार हो गया जब संयुक्त अमरीकी-रूसी कम्पनी ने मास्को के केन्द्र में गजेत्नी गली और त्वेरस्काया सड़क के नुक्कड़ पर शुरू होनेवाली पन्द्रह मंजिला मकानों की शृंखला और नगर के आँचलों पर 8-8 फ्लैटोंवाली 300 मजदूर काटेजों का निर्माण करके हमेशा के लिए उस भयंकर और हास्यास्पद आवासीय संकट का अन्त कर डाला जो 1919-1925 में मास्कोवासियों को इतना सताता था।

कुल मिलाकर यह पेर्सिकोव के जीवन का अनुपम ग्रीष्म था, कभी-कभी वह सन्तुष्ट मुस्कान के साथ चटकारा लेकर याद करते कि कैसे मार्या स्तेपानोव्ना के साथ वे दो कमरों में इतनी घिचपिच में रहते थे। अब प्रोफ़ेसर को पाँचों कमरे वापस मिल गये थे, उन्हें पाकर उन्होंने अपने अध्ययन कक्ष को ढाई हज़ार पुस्तकों, भुस भरे जानवरों, चार्टों, स्प्रिट में सुरक्षित जीवों से सजाया और मेज़ पर हरे शेडवाला टेबुल लैम्प जलाया।

संस्थान को भी पहचाना बड़ा मुश्किल था : उसकी इमारत को मोतियाई रंग के डिस्टैम्पर से पोत डाला गया, खास नलके बिछाकर रेंगनेवालों और उभयचरों के लिए पानी का प्रबन्ध किया गया, सभी मामूली काँचों की जगह आइने लगाये गये, 5 नये माइक्रोस्कोप, चीर-फाड़ के लिए काँच की मेज़ें, 2000 वाट के दूधिया बल्ब, रिफ्लेक्टर और संग्रहालय के लिए अलमारियाँ लायी गयी।

पेर्सिकोव अनुप्राणित हो गये और सारी दुनिया को अनायास ही यह ज्ञात हुआ जब 1926 के दिसम्बर में जाकर ही "चतुर्थ विश्वविद्यालय की पत्रिका" ने उनकी 126 पृष्ठ की पुस्तिका के प्रकाशन की सूचना छापी।

और 1927 के शरत् में उनकी 350 पृष्ठों की मूल रचना छपी जिसका जापानी सहित छः विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ। 'सूरीनामी भेकों, खनित्र-पद भेकों और मेंढकों का भ्रूणविज्ञान'। मूल्य 3 रूबल। राजकीय प्रकाशन गृह।

और 1928 की गर्मियों में वह आश्चर्यजनक और भयानक किस्सा हुआ...

अध्याय 2

रंगीन कुण्डल

हाँ, तो प्रोफ़ेसर ने गोला जलाया और नज़रें दौड़ायीं। परीक्षणों की लम्बी मेज़ पर रिफ्लेक्टर जलाया, सफ़ेद चोगा पहना, मेज़ पर कई औजार खनके...

सन 28 में मास्को में दौड़ती 30 हज़ार मोटरों में से बहुत-सी गेर्त्सन सड़क पर फर्राटे से गुजरती थीं और एक-एक मिनट बाद गेर्त्सन सड़क से मोखोवाया सड़क की ओर 16, 22, 48 या 53 नं. की ट्राम गड़गड़ और खड़खड़ करती हुई जाती।

बहुत दूर ऊँचाई पर क्राइस्ट सेवियर के गिरजे की विराट टोपी के पास धुँध में लिपटा, चाँद का पीला हंसिया लटका था जो प्रयोगशाला के काँचों पर रंग-बिरंगी झिलमिलाहट कर रहा था।

पर प्रो. पेर्सिकोव को न उसमें रुचि थी और न ही वसंतकालीन मास्को के कोलाहल में। वह रिवाल्विंग तिपाई पर बैठे तम्बाकू से कत्थई अपनी उँगलियों से उम्दा जेइस माइक्रोस्कोप की नाब को घुमा रहे थे, जिसमें ताजे अमीबों का रंगविहीन घोल रखा था। उस क्षण जब पेर्सिकोव पाँच हज़ार से दस हज़ार गुना विवर्द्धन कर रहे थे, दरवाज़ा थोड़ा-सा खुला और नुकीली दाढ़ी, चमड़े की ऐप्रन दिखायी दी और असिस्टेंट बोला :

"व्लादीमीर इपात्येविच, मैंने आन्त्रयोजनी लगायी है, आप देखना चाहेंगे?"

पेर्सिकोव नाब को बीच ही में छोड़कर झट से तिपाई से उठे और सिगरेट को उँगलियों से मसलते हुए असिस्टेंट के कमरे में चले गये। वहाँ, काँच की मेज़ पर भय और पीड़ा से अधमरा मेंढक कार्क के मैट पर पिनों से जड़ा था और उसकी अभ्रक जैसी पारदर्शी अन्तड़ियों लहू-लुहान पेट से निकालकर माइक्रोस्कोप के तले रखी थीं।

"बहुत बढ़िया," पेर्सिकोव बोले और माइक्रोस्कोप के नेत्रक पर आँख टिका ली।

शायद मेंढक की आंत्रयोजनी में, जहाँ वाहिकाओं की नदियों में सजीव रक्त कण तेज़ी से बह रहे थे ज़रूर कुछ दिलचस्प बात दिखायी दे रही होगी। पेर्सिकोव अपने अमीबों के बारे में भूल गये और इवानोव के साथ बारी-बारी से डेढ़ घण्टे तक माइक्रोस्कोप पर आँख टिकाते। इस दौरान दोनों वैज्ञानिक आपस में सजीव वार्तालाप करते रहे जो हम-आप जैसे नश्वरों की समझ के परे की बात है।

अन्ततः पेर्सिकोव माइक्रोस्कोप से यह कहकर हटे :

"खून जम रहा है, इसका कोई इलाज नहीं!"

मेंढक ने दर्द में सिर हिलाया और उसकी बुझती आँखों में ये शब्द साफ़-साफ़ लिखे थे : "आप हरामजादे हैं और कुछ नहीं..."

सोये पैरों को हिलाकर पेर्सिकोव उठे और अपने कक्ष में लौट आये। उबासी लेकर उन्होंने अपनी सदा सूजी पलकों को मसला और तिपाई पर बैठकर माइक्रोस्कोप पर आँख टिकायी, उँगलियाँ उन्होंने नाब पर रखीं और उसे घुमाने ही वाले थे, पर नहीं घुमाया। अपनी दायीं आँख से पेर्सिकोव धुँधली-सी सफ़ेद चकती और उसमें धुँधले और पीले-से अमीबों को देख रहे थे। चकती के केन्द्र में रंगीन कुण्डल था औरत की जुल्फ जैसा। खुद पेर्सिकोव और उनके सैकड़ों शिष्य अनेक बार उसे देख चुके थे और किसी ने भी उसमें रुचि नहीं ली और इसमें ऐसा था भी क्या। प्रकाश का रंगीन पुँज बस तंग ही करता था और यह दर्शाता था कि फोकस ठीक नहीं। इसलिए उसे पेंच घुमाकर बेरहमी से हटा दिया जाता था। प्राणीविज्ञानी की लम्बी उँगलियाँ कसकर नाब पर टिक

गयीं पर अचानक काँपकर वे पीछे हट गयीं।

पेर्सिकोव की दायीं आँख इसका कारण थी, वह अचानक चौकस, चकित हो गयी, उसमें आशँका तक उमड़ आयी। कोई ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा तो माइक्रोस्कोप पर बैठा नहीं था। नहीं-नहीं, यह प्रो. पेर्सिकोव थे! जीवन भर उनके विचार दायीं आँख में ही केन्द्रित होते आये थे। कोई पाँच मिनट तक कठोर मौन की हालत में उच्च श्रेणी का जीव फोकस के बाहर रखे स्लाइड पर पड़े निम्न श्रेणी के जीव का आँखों पर ज़ोर डाल-डालकर पर्यवेक्षण करता रहा। चारों ओर मौन व्याप्त था। पानक्रात प्रवेश द्वार के पास अपने कमरे में कब का सोया पड़ा था, बस एक बार कहीं दूरी पर अलमारियों में काँच की मधुर झँकार हुई थी—यह इवानोव घर जाते समय अपने कमरे को बन्द कर रहा था। फिर उसके निकलने पर प्रवेश द्वार आह लेकर चरमराया। इसके बाद ही प्रोफ़ेसर का स्वर सुनायी पड़ा। किस से उन्होंने पूछा यह हमें पता नहीं।

"क्या है यह? कुछ नहीं समझ में आता।"

संस्थान की पुरानी दीवारों को झकझोरता एकाकी ट्रक गेर्त्सन सड़क से गुज़रा। मेज़ पर काँच का सपाट पेंदीवाला प्याला खनका जिसमें चिमटियाँ रखी थीं। प्रोफ़ेसर के चेहरे का रंग उड़ गया और उन्होंने माइक्रोस्कोप को हाथों से ऐसे ओट दी जैसे कोई माँ अपने बच्चे को किसी आफत से बचाती है। अब तो इसकी कोई बात ही नहीं उठती कि पेर्सिकोव नाब को हिलाते, अरे नहीं, अब तो वह यह भी नहीं चाहते थे कि कोई अलौकिक शक्ति उस चीज़ को उनकी दृष्टि से अगोचर कर दे जिसे उन्होंने देखा था।

जब प्रोफ़ेसर माइक्रोस्कोप को छोड़कर अपने सोये पाँवों पर चलकर खिड़की के पास गये तो शुभ्र भोर हो चुकी थी, सुनहरे फीते ने संस्थान के मोतियाई ओसारे को दो हिस्सों में बाँट दिया था। उन्होंने काँपती उँगलियों से बटन दबाया और काले-काले मोटे परदों ने भोर को बाहर निकाल दिया, कक्ष में प्रज्ञ और विदुषी रात्रि देवी पुनर्जीवित हो गयी। पीले चेहरेवाले, अनुप्रेरित पेर्सिकोव टाँगें चौड़ी करके खड़े हो गये और अपनी नम आँखों को लकड़ी के फ़र्श पर गड़ाकर बोलने लगे :

"पर यह हो कैसे सकता है? आखिर यह तो बहुत खौफनाक बात है!... यह बहुत खौफनाक बात है, सज्जनो," थलजीवशालाओं में मेंढकों को सम्बोधित करके वह बोले, पर मेंढक सो रहे थे इसलिए किसी ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया।

वह कुछ देर मौन खड़े रहे, फिर बटन दबाकर उन्होंने पर्दे खोले, सारी बत्तियाँ बुझायीं और माइक्रोस्कोप में झाँके। उनके चेहरे पर तनाव छा गया, उन्होंने अपनी पीली-सी भौंहों के गुच्छों को सिकोड़ा।

"हूँ, हूँ," वह बुदबुदाये, "गायब हो गया। समझा। सम-झा," सिर के ऊपर लटके, बुझे गोले को प्रेरणा के उत्साह में पागलों की तरह देखकर वह बोले, "बात सीधी-सादी है।"

उन्होंने फिर से फुफकारते पर्दों को गिराया और फिर से गोले को जलाया। माइक्रोस्कोप में झाँककर उनके होंठों पर हर्ष की और किंचित हिंस्र मुस्कान आ गयी।

"मैं उसे पकड़कर रहूँगा," उँगली को ऊपर उठाकर वह उल्लास और गरिमा के साथ बोले, "पकड़कर रहूँगा। क्या पता सूरज से भी पकड़ा जा सकता हो।"

पर्दे फिर उठ गये। अब धूप नमूदार हो गयी थी। संस्थान का भवन धूप में नहा रहा था, गेर्त्सन सड़क पर तिरछी धूप पड़ रही थी। प्रोफ़ेसर खिड़की में देखकर यह अनुमान लगा रहे थे कि दिन में धूप कहाँ आयेगी। वह कभी खिड़की के पास आते तो कभी फुदकते हुए उसके पास से जाते, अन्ततः वह पेट के बल खिड़की के दासे पर लेट गये।

उन्होंने महत्वपूर्ण और रहस्यमय काम शुरू किया। माइक्रोस्कोप को काँच के बेलजार से ढका। गैस बर्नर की नीली-सी लौ पर लाख का टुकड़ा पिघलाया और बेलजार के किनारों को मेज़ से चिपका दिया और लाख के थक्कों पर अपने अँगूठे की छाप लगा दी। गैस बुझाकर वह बाहर निकले और अपने कक्ष को आटोमैटिक ताले से बन्द कर दिया।

संस्थान के गलियारों में झुटपुटा छाया हुआ था। प्रोफ़ेसर पानक्रात के कमरे तक गये और बड़ी देर तक उसके दरवाज़े को खटखटाते रहे। अन्ततः दरवाज़े के पीछे से खूंख्वार कुत्ते की-सी गुर्राहट, गला खंखारने और मिमियाने की आवाज सुनायी पड़ी और धारीदार पाजामा पहने पानक्रात रोशन धब्बे में प्रकट हुआ। वह आँखें फाड़कर वैज्ञानिक का मुँह ताकने लगा, नींद में वह अभी तक कुछ बड़बड़ा रहा था।

"पानक्रात," चश्मे के ऊपर से उसे घूरते हुए प्रोफ़ेसर बोले, "माफ़ करो कि मैंने तुम्हें जगा दिया। हाँ तो दोस्त, बात यह कि कल सुबह मेरे कमरे में मत घुसना। मैं वहाँ ऐसा काम छोड़कर जा रहा हूँ जिसे हिलाया नहीं जाना चाहिये। समझे?"

"हूँ ऽऽ, स-स-समझ गया," पानक्रात बोला हालाँकि उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ा। वह डगमगाता हुआ गुर्रा रहा था।

"अरे नहीं, पानक्रात, तुम जागकर सुनो मेरी बात," प्राणीविज्ञानी बोले और उन्होंने पानक्रात की पसलियों को हल्के-से कोंचा, इसकी वजह से पानक्रात के चेहरे पर किंचित भय और आँखों में विवेक की हल्की-सी छाया प्रकट हुई। "अपना कमरा मैंने बन्द कर दिया है," पेर्सिकोव बोले, "तुम मेरे आने तक उसकी सफाई मत करना। समझे?"

"जो हुक्म," पानक्रात बैठी आवाज में बोला।

"यह हुई न बात, जाओ, सो जाओ।"

पानक्रात मुड़कर दरवाज़े में गायब हो गया और फौरन बिस्तर पर ढह गया, प्रोफ़ेसर प्रवेश-कक्ष में कपड़े पहनने लगे। उन्होंने सलेटी रंग का हल्का ओवरकोट और फेल्ट का हैट पहना, फिर माइक्रोस्कोप में देखे दृश्य को याद करके अपने गैलोशों को ताकने लगे और कुछ देर तक उन्हें ऐसे देखने लगे मानो पहली बार देखा हो। फिर उन्होंने

जूते को बायें पैर के गैलोश में डाला और बायें पर ही दायाँ पहनना चाहते थे, पर वह आया नहीं।

"कैसा भयंकर संयोग है कि उसने मुझे बुला लिया," वैज्ञानिक बोले, "नहीं तो मैं उस पर ध्यान ही न देता। पर यह देता क्या है?... अरे शैतान ही जाने कि यह क्या देता है!..."

प्रोफ़ेसर ने खीसें निपोरी, आँखें तरेरकर गैलोशों की ओर देखा, बायें पैर का गैलोश उन्होंने उतार दिया और दायाँ पहन लिया।

"हे भगवान! सारे परिणामों की कल्पना करना तक असम्भव है..." प्रोफ़ैसर ने झुंझलाहट में घृणा के साथ बायें गैलोश को लात मार दी क्योंकि वह दायें पैर में आ ही नहीं रहा था और वह एक ही जूते पर गैलोश चढ़ाये दरवाज़े की ओर चल दिये। तत्क्षण उन्होंने अपना रूमाल खो डाला और भारी दरवाज़े को धड़ाक से बन्द करके बाहर निकल गये। ओसारे पर खड़े होकर वह बड़ी देर तक बग़लों पर हाथ मार-मारकर जेबों में माचिस की डिबिया ढूँढ़ते रहे, फिर उसे खोजकर वह मुँह में अनसुलगी सिगरेट दबाये सड़क पर चल दिये।

गिरजे तक वैज्ञानिक को एक भी राहगीर नहीं मिला। वहाँ प्रोफ़ेसर सिर उठाकर सोने के गुम्बद को देखते खड़े रह गये। सूरज चटकारे ले-लेकर उसे एक ओर से चाट रहा था।

"मैंने पहले उसे क्यों नहीं देखा, कैसा संयोग है यह?.. धत्त तेरे की, कैसा उल्लू हूँ," प्रोफ़ेसर ने सिर झुकाया और जूतों में अन्तर को देखकर सोच में डूब गये, "हुं. .. क्या किया जाये? पानक्रात के पास लौटा जाये? नहीं, उसे जगाना नामुमकिन है। इस नामाकूल को फेंकते हुए मलाल होता है। हाथ में उठाकर ले जाना होगा।" उन्होंने गैलोश उतारा और घिन के साथ उसे उठाकर चल पड़े।

प्रेचीस्तेन्का से फटीचर मोटर में सवार तीन जने मुड़े। दो नशे में धुत्त थे और उनके घुटनों पर भड़कीला साज-सिंगार किये सन 28 के फ़ैशन की रेशमी पतलून पहने एक औरत बैठी थी।

"ओ, ताऊ," वह अपनी भारी फटी-सी आवाज़ में चिल्लायी, "तू क्या दूसरा गैलोश बेचके दारू पीकर आ रहा है!"

"लगता है 'अलकाज़ार' रेस्तराँ में पीकर आया है बुड्ढा," बायेंवाला शराबी चिल्लाया, दायेंवाले ने मोटर से सिर निकालकर ज़ोर से पूछा :

"बप्पा, क्या बोल्ख़ोन्का पर नाइट बार खुली है? हम उधर ही जा रहे हैं!"

प्रोफ़ेसर ने चश्मे के ऊपर से उनकी ओर सख़्ती के साथ देखा, मुँह से उनके सिगरेट गिर पड़ी और तत्क्षण वह उनके अस्तित्व के बारे में भूल गये। प्रेचीस्तेन्का बुलवार पर सूर्य की धूप झाँक रही थी और क्राइस्ट सेवियर गिरजे का शिरस्त्राण दहकने लगा। सूरज उग गया था।

अध्याय 3

पेर्सिकोव ने पकड़ लिया

असल में बात यह थी। जब प्रोफ़ेसर अपनी मेधावी आँख को नेत्रक के पास लाये तो उन्होंने अपने जीवन में पहली बार इस ओर ध्यान दिया कि रंगबिरंगे कुण्डल में एक किरण अलग ही दिखायी पड़ रही थी, वह अधिक चमकीली और मोटी थी। किरण यह चटक लाल रंग की थी और कुण्डल से नन्ही-सी नोक की तरह, शायद कह सकते हैं कि सूई की तरह निकली हुई थी।

इसे बस दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है कि कुछ पलों के लिए इस किरण ने सांइसदाँ की सधी आँख को जकड़ लिया।

उसमें, अर्थात किरण में प्रोफ़ेसर ने जो देखा वह माइक्रोस्कोप के दर्पण और अभिदृश्यक की गति से संयोगवश उत्पन्न सुकुमार शिशु, इस किरण से भी हज़ार गुना अधिक महत्वपूर्ण था। इसके फलस्वरूप कि असिस्टेण्ट ने प्रोफ़ेसर को बुला लिया, अमीबे डेढ़ घण्टे तक इस किरण के प्रभाव में पड़े रहे और हुआ यह : उस समय जब चकती पर इस किरण के बाहर दवेदार अमीबे सुस्त और असहाय पड़े थे, तो उस स्थान पर जहाँ यह पैनी लाल तलवार तनी थी अजीबोगरीब परिघटनाएँ हो रही थीं। लाल पट्टी में जीवन का फ़ौवारा फूट रहा था। धूसर अमीबे अपने कूट पदों को फैलाकर पूरे ज़ोर के साथ लाल पट्टी की ओर रेंग रहे थे और उसमें (मानो जादुई छड़ी से) जीवित हो रहे थे। किसी शक्ति ने उसमें जान फूँक दी थी। वे झुण्ड बनाकर रेंग रहे थे और किरण में स्थान पाने के लिए गुत्थम-गुत्था कर रहे थे। प्रचण्ड, दूसरा शब्द शायद ही इसे व्यक्त कर सके, वंशवृद्धि हो रही थी। पेर्सिकोव को मुँह-ज़बानी याद सभी नियमों को तोड़ते उनका खण्डन करते हुए वे देखते-देखते बिजली की तेज़ी से बढ़ रहे थे।

किरण में पहुँचकर वे हिस्सों में बँट जाते और हर हिस्सा दो सेकेण्ड में नया-ताज़ा अमीबा बन जाता। ये जीव पल भर में बड़े जो जाते और नयी पीढ़ी को जन्म देने लगते। लाल पट्टी में और फिर सारी चकती पर घिचपिच हो गयी और अवश्यम्भावी संघर्ष प्रारम्भ हों गया। नवजात अमीबे एक-दूसरे पर टूटकर बोटियाँ नोच रहे थे, एक-दूसरे को हड़प कर रहे थे। नवजातों के बीच अस्तित्व के लिए संघर्ष में मारे गये जीवों के शव पड़े थे। श्रेष्ठ और शक्तिशाली ही विजेता होते हैं। और ये श्रेष्ठ बड़े भयंकर थे। सबसे पहले तो वे साधारण अमीबों से दुगुने बड़े थे, और फिर वे कुछ ज़्यादा ही क्रोधी और तेज़-तर्रार थे। उनकी हरक़तें बड़ी तेज़ थीं, उनके कूट पद सामान्य से काफ़ी लम्बे थे, यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि वे अष्टभुजों की तरह उनका उपयोग कर रहे थे।

दूसरी शाम को प्रोफ़ेसर ने अमीबों की दूसरी पीढ़ी का अध्ययन किया, उनके चेहरे की रंगत उड़ गयी थी, पेट में कुछ डाला नहीं, वह बस काग़ज़ में ढेर सारा तम्बाकू

लपेटकर मोटे-मोटे चुरुट पीकर ही ज़िन्दा थे। तीसरे दिन उन्होंने इसकी जड़ अर्थात लाल किरण का अध्ययन शुरू किया।

बर्नर में गैस धीरे-धीरे फुफकार रही थी, सड़क पर फिर से यातायात का कोलाहल था और प्रोफ़ैसर सौवीं सिगरेट का ज़हर पीकर रिवाल्विंग चेयर पर पीठ टिकाकर बैठ गये और आँखें मूँद लीं।

"हाँ, अब सब साफ़ है। किरण ने उन्हें ज़िन्दा कर दिया। यह नयी किरण है, जिसका न किसी ने अध्ययन किया, न किसी ने उसकी खोज ही की। उसबसे पहले यह पता लगाना है कि वह केवल बिजली की रोशनी से ही पैदा होती है या धूप से भी," पेर्सिकोव बुदबुदाते हुए अपने से बातें कर रहे थे।

एक और रात के दौरान यह भी स्पष्ट हो गया। तीन माइक्रोस्कोपों में पेर्सिकोव ने तीन किरणें पकड़ लीं पर धूप में कुछ नहीं पकड़ पाये और उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला :

"अर्थ यह हुआ कि सूर्य के वर्णक्रम में वह नहीं है...हुं...मतलब यह कि वह सिर्फ़ बिजली की रोशनी से मिल सकती है।"

उन्होंने छत से लटके दूधिया गोले पर स्नेह की दृष्टि डाली, उत्साहित होकर कुछ सोचा और इवानोव को अपने कमरे में बुलवाया। उन्होंने उसे सब बता दिया और अमीबा दिखाये।

रीडर इवानोव स्तब्ध रह गया, वह बिलकुल टूट गया : यह आख़िर हुआ कैसे, यह पतला-सा तीर पहले कैसे नज़र में न आया, लानत है! औरों की तो छोड़ो, उसकी, इवानोव की नज़र उस पर पहले क्यों न पड़ी, सचमुच में, यह तो बड़ी ख़ौफ़नाक बात है! आप देखिये तो...

"आप देखिये तो, व्लादीमीर इपात्येविच!" इवानोव विस्मित होकर माइक्रोस्कोप में देखते हुए कह रहा था, "क्या हो रहा है?! वे देखते-देखते बढ़ रहे हैं... देखिये... देखिये तो..."

"मैं तीन दिन से उनका निरीक्षण कर रहा हूँ," उत्साहित होकर पेर्सिकोव बोले।

फिर दो वैज्ञानिकों का वार्तालाप हुआ जिसका संक्षिप्त सार यह था : रीडर इवानोव लैंसों और दर्पणों की मदद से ऐसा कक्ष बनायेगा जहाँ माइक्रोस्कोप के बिना यह किरण परिवर्द्धित रूप में प्राप्त की जा सकेगी। इवानोव को आशा है, यही नहीं, उसे पक्का विश्वास है कि यह बहुत आसान काम है। किरण वह पाकर रहेगा, व्लादीमीर इपात्येविच को इसमें तनिक भी सन्देह नहीं होना चाहिए। बस, यहीं एक छोटी-सी रुकावट आ गयी।

"प्योत्र स्तेपानोविच, जब मैं लेख प्रकाशित करवाऊँगा, तो लिखूँगा कि कक्ष आपने बनाये हैं, "रुकावट को दूर करने की आवश्यकता को महसूस करके पेर्सिकोव बोले।

"अरे, इसकी ज़रूरत नहीं... वैसे, ख़ैर ठीक है..."

और रुकावट फ़ौरन दूर हो गयी। उस क्षण से किरण ने इवानोव को भी निगल लिया। उस समय जब पेर्सिकोव पूरे-पूरे दिन और आधी-आधी रात को माइक्रोस्कोप से चिपके, सूखकर काँटा हो रहे थे, इवानोव बिजलियों से जगमगाती भौतिक प्रयोगशाला में लैंसों और दर्पणों को जोड़-तोड़ करता था। एक मैकेनिक उसकी मदद करता था।

शिक्षा मंत्रालय की मार्फ़त भेजे गये आर्डर पर पेर्सिकोव को जर्मनी से तीन पार्सल मिले जिनमें दर्पण, कान्केव, कान्वेक्स और कान्केव-कान्वेक्स तक पालिश किये हुए काँच थे। इस सबका अन्त यह हुआ कि इवानोव ने कक्ष बना डाला और उसमें वास्तव में लाल किरण को पकड़ डाला। और मानना पड़ेगा कि उसने पकड़ भी उसे बड़ी चतुराई से : किरण मोटी, कोई चार सेण्टीमीटर चौड़ी, पैनी और तेज़ निकली।

एक जून को इस कक्ष को पेर्सिकोव के कमरे में फ़िट कर दिया गया और उन्होंने बेताबी के साथ मेंढक के अण्डों पर इस किरण से प्रयोग शुरू कर डाले।

दो दिन में अण्डों से हज़ारों टेडपोल निकल आये। पर यही नहीं, एक दिन में ही टेटपोल असाधारण तेज़ी से बढ़कर मेंढक बन गये, और-तो-और इतने प्रचण्ड और पेटू थे कि उनमें से आधों को दूसरे आधे हज़म कर गये। पर जो ज़िन्दा बचे वे बेमौसम ही अण्डे देने लगे और दो दिन में, किरण की मदद के बिना ही उन्होंने नयी पीढ़ी को जन्म दिया, वह भी बेशुमार तादाद में। शैतान ही जाने वैज्ञानिक के कमरे में क्या हो रहा था : टेडपोल उनके कमरे से सारी इमारत में फैल रहे थे, थल जीवशालाओं और फ़र्श पर भी, कोने-कोने में ऐसी ज़बर्दस्त टर्र-टर्र हो रही थी मानो यह संस्थान नहीं दलदल हो। पानक्रात जो वैसे भी, पेर्सिकोव से आग की तरह डरता था, अब उनको देखकर उसकी जान ही सूख जाती थी। एक हफ़्ते बाद स्वयं वैज्ञानिक ने भी महसूस किया कि उनका दिमाग़ चकराने लगा। संस्थान की इमारत में ईथर और पोटाशियम साइनाइड की बू भर गयी जिसकी वजह से पानक्रात अपनी जान से हाथ धोते-धोते बचा क्योंकि उसने बेवक़्त मास्क उतार डाला था। अन्ततः दलदली पीढ़ी का तरह-तरह के ज़हरों से सफ़ाया करने और कमरों से उनकी बू भगाने में सफलता मिल ही गयी।

इवानोव से पेर्सिकोव यह बोले :

"प्योत्र स्तेपानोविच, आप जानते हैं, डेइटर प्लाज़्मा और वैसे सारे अण्डकोश पर किरण का प्रभाव आश्चर्यजनक है।"

इवानोव, जो भावशून्य और संयत जेण्टलमैन था, प्रोफ़ेसर की बात को असामान्य लहजे में काअकर बोला :

"व्लादीमीर इपात्येविच, आप भी क्या मामूली चीज़ों की बात करते हैं, साफ़-साफ़ कहना आपने अनोखा अविष्कार किया है।" शायद बड़ा ज़ोर लगाकर ही सही, पर फिर भी इवानोव ने अपने मुँह से ये शब्द निकाल ही दिये : "प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव, आपने

जीवन की किरण की खोज की है!"

पेर्सिकोव के पीले दाढ़ीवाले कपोलों पर हलकी-सी रंगत आ गयी।

"अरे, छोड़िये भी," वह बुदबुदाये।

"आपको," इवानोव बोलता जा रहा था, "आपको ऐसी प्रसिद्धि मिलेगी... मेरा तो सिर चकरा रहा है। आप समझे," वह जोश में आकर बोला, "व्लादीमीर इपात्येविच, वेल्स के नायक तो आपके सामने कुछ नहीं... मैं तो सोचता था कि यह सब कहानियां ही हैं... आपको उसके 'फ़ीस्ट आफ़ गॉड्स' की याद है?",

"यह उपन्यास," पेर्सिकोव बोले।

"अरे हाँ, बहुत प्रसिद्ध है!"

"मैं भूल गया उसे," पेर्सिकोव ने उत्तर दिया, "यह याद है कि पढ़ा था पर भूल गया।"

"आपको याद कैसे नहीं, अरे आप देखिये," इवानोव ने भरे फूले पेटवाले भीमकाय मेंढक को काँच की मेज़ से टाँग पकड़कर उठाया। मौत के बाद भी उसके चेहरे पर दुष्ट भाव अंकित था। "आख़िर यह कितनी भयंकर बात है!"

अध्याय 4

पुजारिन द्रोज़्दोवा

यह तो भगवान ही जाने कि इसमें इवानोव का दोष था या यह सनसनीखेज ख़बरों की खासियत है कि वे अपने आप फैलने लगती हैं, खैर जो भी हो, पर खदबदाते विराट मास्को में अचानक किरण और प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव की चर्चा होने लगी। हाँ यह सच है कि वह कोई खास ज़ोर से नहीं, बस यूँ ही, बात ही बात में होती थी। जुलाई के मध्य तक, जब तक 'इज्वेस्तिया' समाचारपत्र के 20वें पृष्ठ पर किरण के बारे में छोटी-सी टिप्पणी नहीं छपी तब तक यह खबर जगमगाती राजधानी में घायल पक्षी की तरह कभी ओझल हो जाती तो कभी फिर से उड़ने लगती। उसमें दबी ज़बान से बस यही कहा गया था कि चतुर्थ विश्वविद्यालय के एक प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर ने एक किरण की खोज की है जो निम्न जीवों की जीवन-क्रिया को बढ़ा देती है और इस किरण की अभी जाँच होनी बाकी है। नाम बेशक गलत छपा था : "पेव्सिकोव"।

इवानोव ने अख़बार लाकर प्रोफ़ेसर को टिप्पणी दिखायी।

"पेव्सिकोव," अपने कमरे में किरणवाले कक्ष में जुटे पेर्सिकोव बड़बड़ाकर बोले, "इन कलमघसीटुओं को कहाँ से पता चला?"

पर क्या किया जाये, गलत छपा नाम भी प्रोफ़ेसर को घटनाओं के चक्कर से नहीं बचा पाया, वे अगले ही दिन शुरू हो गयीं और उन्होंने फौरन पेर्सिकोव के सम्पूर्ण

जीवन को अस्त-व्यस्त कर डाला।

दरवाज़ा खटखटाकर पानक्रात कमरे में दाखिल हुआ और उसने पेर्सिकोव को बेहतरीन चिकने काग़ज़ पर छपा विज़िटिंग कार्ड थमा दिया।

"वो बाहिर खड़ा है," पानक्रात सहमकर बोला।

कोर्ड पर सुन्दर टाइप में छपा था।

अल्फ़्रेड अर्कादृयेविच ब्रोन्स्की

मास्को की "लाल ज्योति", "लाल मिर्च", "लाल पत्रिका", "लाल मशाल" पत्रिकाओं और "लाल सांध्य मास्को" समाचारपत्र का संवाददाता।

"भाड़ में भेज दो," पेर्सिकोव ने ऊब के साथ कहा और विज़िटिंग कार्ड को मेज़ के नीचे फेंक दिया।

पानक्रात मुड़कर चला गया और पाँच मिनट बाद फिर वैसा ही दूसरा विज़िटिंग कार्ड लेकर आया, उसके चेहरे पर यातना की छाप थी।

"तुम क्या मेरा मजाक़ उड़ा रहे हो?" पेर्सिकोव ने दाँत पीसकर कहा और रौद्र रूप धारण कर लिया।

"वे कहते हैं कि ग. प. उ.* से आये हैं," पानक्रात ने उत्तर दिया, उसके होश फाख्ता हो रहे थे।

पेर्सिकोव ने झपटकर एक हाथ से कार्ड खींचा, वह बीच से फटते-फटते बचा और दूसरे हाथ से मेज़ पर चिमटी पटकी। कार्ड पर घुँघराली लिखावट मे लिखा था : "आदरणीय प्रोफ़ेसर जी, मैं आपसे बेहद माफ़ी माँगता हूँ और विनम्र अनुरोध करता हूँ कि ग. प. उ. द्वारा प्रकाशित व्यंग्य पत्रिका "लाल कौआ" के कर्मचारी को सार्वजनिक प्रेस की खातिर सिर्फ़ तीन मिनट का समय दें।"

"ज़रा लाओ तो उसे बुलाकर," पेर्सिकोव बोले और उनकी साँस चढ़ गयी।

पानक्रात की पीठ के पीछे से तुरन्त एक चिकने-चुपड़े चेहरेवाला नौजवान प्रकट हुआ। उसकी चीनियों जैसी सदा चढ़ी रहनेवाली भौंहें और पल भर को भी अपने सम्भाषी की आँखों से न मिलनेवाली कोयले जैसी काली-काली आँखें थीं। नौजवान के फ़ैशनेबल कपड़ों में तनिक भी नुख्स नहीं निकाला जा सकता था। उसने कसा घुटनों तक लम्बा कोट, बेलबाटम की चौड़ी पतलून और बेहद चौड़े पेटेण्ट लैदर के जूते पहन रखे थे जो खुरों जैसे दिखते थे। नौजवान के हाथों में छड़ी, नुकीला हैट और नोटबुक थी।

"आपको क्या चाहिये?" पेर्सिकोव ने ऐसे स्वर में पूछा कि पानक्रात पलक

* ग. प. उ.–ग्लाव्नोये पोलितीचेस्कोये उप्राव्लेनिये (मुख्य राजनीतिक विभाग)।–सं.

झपकते ही दरवाज़े से बाहर हो गया, "आपसे कहा तो है कि मैं व्यस्त हूँ?"

जवाब के बदले नौजवान ने दो बार दायें-बायें झुककर प्रोफ़ेसर का अभिवादन किया, फिर उसकी आँखें लट्टू की तरह सारे कमरे में घूम गयीं और नौजवान ने अपनी नोटबुक में कोई चिह्न बनाया।

"मेरे पास समय नहीं है," घिन के साथ मेहमान की आँखों में झाँकते हुए प्रोफ़ेसर बोले, पर कुछ कर नहीं पाये चूँकि आँखें अपने में झाँकने कहाँ दे रही थीं।

"प्रोफ़ेसर साहब, हज़ार-हज़ार बार माफ़ी माँगता हूँ," नौजवान पतले स्वर में बोला, "इस तरह आपके पास आकर आपका वक्त बरबाद करने के लिए, आपकी विश्वव्यापी खोज की खबर ने, जिसने सारी दुनिया में तहलका मचा दिया है, हमारी पत्रिका को आपसे कुछ स्पष्टीकरण पाने को मजबूर कर डाला है।"

"सारी दुनिया में कैसा स्पष्टीकरण हो रहा है?" पेर्सिकोव चीखकर बोले, उनके चेहरे का रंग पीला पड़ गया, "आप कौन होते हैं मुझसे स्पष्टीकरण माँगनेवाले और ऐसा कुछ है ही नहीं...मैं व्यस्त हूँ...मैं भयंकर रूप से व्यस्त हूँ।"

"आप किस विषय पर काम कर रहे हैं?" मिठास घोलकर नौजवान ने पूछा और नोटबूक में दूसरा चिह्न बनाया।

"अरे, मैं...आप क्या चाहते हैं? कुछ छापना चाहते हैं?"

"हाँ," नौजवान ने उत्तर दिया और अचानक उसका कलम नोटबुक पर दौड़ने लगा।

"सबसे पहले तो यह कि जब तक मैं काम पूरा नहीं कर लेता तब तक कुछ नहीं छपवाना चाहता....खासकर आपके इन अख़बारों में...दूसरे, यह बताइये कि आपको इसके बारे में कहाँ से पता चला?..." अचानक पेर्सिकोव को लगा कि वह उलझते जा रहे हैं।

"यह खबर सही है कि आपने नये जीवन की किरण की खोज की है?"

"कैसे नये जीवन की?" प्रोफ़ेसर कुढ़कर बोले, "आप क्या बकवास कर रहे हैं! उस किरण का जिस पर मैं काम कर रहा हूँ अभी बिल्कुल भी अध्ययन नहीं किया गया है, वैसे अभी कुछ भी नहीं कहा जा सकता! हो सकता है कि वह प्रोटोप्लाज्मा की जीवन-क्रिया को बढ़ाती है..."

"कितने गुना?" नौजवान ने झट से पूछ डाला।

पेर्सिकोव अब बिल्कुल उलझ चुके थे...'किस बला से पाला पड़ा है। आख़िर क्या बकवास करता है!'

"ये क्या लुगाइयोंवाले सवाल पूछ रहे हैं? मान लो, अगर मैं कहूँ कि हज़ार गुना!..."

नौजवान की आँखों में वहशी खुशी चमकी।

"भीमकाय जीव मिलते हैं?"

"अरे नहीं, ऐसी कोई बात नहीं! हाँ, यह सच है कि मुझे प्राप्त जीव सामान्य से बड़े थे... हाँ, और उनमें कुछ नये गुण होते हैं...पर इसमें आकार का इतना नहीं जितना कि वंशवृद्धि की आश्चर्यजनक गति का महत्व है," पेर्सिकोव ने यह कहकर अपने सिर पर बला को बुला लिया, वह सिहर उठे। नौजवान ने पूरा पृष्ठ रंग डाला और उसे पलटकर आगे कलम घसीटने लगा।

"अरे, आप लिखिये मत!" अब प्रोफ़ेसर ने हथियार डाल दिये, उन्हें महसूस हुआ कि अब वह नौजवान के चंगुल में फँस गये, हाथ-पाँव मारते हुए पेर्सिकोव ने फटी आवाज में पूछा, "आप ऐसा भी क्या लिख रहे हैं?"

"क्या यह सच है कि दो दिन में मेंढक के अण्डों से बीस लाख टेडपोल उगाये जा सकते हैं?"

"कितने अण्डों से?" फिर से आग-बबूला होकर पेर्सिकोव चिल्लाये, "आपने कभी मेंढक का अण्डा देखा भी है?"

"आधा पौण्ड से?" नौजवान ने बिना संकोच पूछा।

पेर्सिकोव का चेहरा तमतमा गया।

"ऐसा कौन मापता है? आप क्या बक रहे हैं? हाँ, वैसे अगर मेंढक के आधा पौण्ड अण्डे लिये जायें... तब, शायद... हाँ, कुछ इतनी ही संख्या में, हो सकता है इससे भी बहुत अधिक निकलें!"

नौजवान की आँखों में हीरे दमक उठे और उसने एक ही झटके में एक और पन्ना रंग डाला।

"क्या यह सच है कि इससे विश्व में पशुपालन के क्षेत्र में क्रान्ति आ जायेगी?"

"यह क्या अख़बारी सवाल पूछ रहे हैं," पेर्सिकोव रिरियाकर बोले, "वैसे भी मैं आपको बकवास लिखने की अनुमति नहीं दे रहा हूँ। आप के चेहरे से ही दीखता है कि आप बेहूदा बातें लिख रहे हैं!"

"आपसे अपना फ़ोटोग्राफ देने का नम्र निवेदन करता हूँ," नौजवान बोला और उसने फट से अपनी नोटबुक बन्द की।

"क्या? मेरा फ़ोटो? आपके इन रिसालों में छापने के वास्ते? उस अण्ट-शण्ट बकवास के साथ जो आप लिखते हैं? नहीं, नहीं, नहीं... वैसे भी मेरे पास समय नहीं... कृपया अपना रास्ता नापें!..."

"कोई पुराना ही दे दें। हम उसे फौरन लौटा देंगे।"

"पानक्रात!" प्रोफ़ेसर आगबबूला होकर चिल्लाये।

"अच्छा, अब आज्ञा चाहता हूँ," यह कहकर नौजवान गायब हो गया।

पानक्रात की जगह बाहर से किसी यंत्र की अजीब-सी एकरस खर्र-खर्र, और फ़र्श पर होती नाल की ठक-ठक सुनायी पड़ी और कमरे में एक बेहद मोटे आदमी ने प्रवेश किया। उसने कम्बल के कपड़े से सिली जैकेट और पतलून पहन रखी थी। उसकी

बायीं, यांत्रिक टाँग खर्र-खर्र, ठक-ठक कर रही थी, उसके सफाचट, पीली जैसी मैले चेहरे पर मुस्कान फैली थी, हाथों में वह बैग थामे हुए था। उसने फ़ौजियों की तरह झुककर प्रोफ़ेसर का अभिवादन किया और तनकर खड़ा हो गया जिसके कारण उसकी टाँग की कोई कमानी चटखी। पेर्सिकोव अवाक् रह गये।

"प्रोफ़ेसर महाशय," अजनबी फटी-सी पर मधुर आवाज में बोला, "आपके एकान्त को भंग करनेवाले इस नाचीज़ बन्दे को माफ़ कर दीजिये।"

"आप रिपोर्टर हैं?" प्रोफ़ेसर ने पूछा, "पानक्रात!!"

"बिल्कुल नहीं, प्रोफ़ेसर साहब," मोटे ने उत्तर दिया, "अपना परिचय देने की अनुमति दीजिये–जहाज का कप्तान और मंत्री परिषद के अधीन "उद्योग समाचार" का कर्मी।"

"पानक्रात!!" पेर्सिकोव बावलों की तरह चिल्लाये, उसी क्षण कोने में लाल सिग्नल देकर टेलीफाने ने अपनी मधुर घण्टी बजायी। "पानक्रात!" प्रोफ़ेसर फिर से चिल्लाये, "हेलो।"

"फेर्त्साइयेन जी बिट्टे, हेर्र प्रोफ़ेसर," टेलीफ़ोन जर्मन भाषा में घरघराया, "डास श्ट्योरे। इख बीन मिटार्बाइटर डेस बर्लिनर टागेब्लाट्स..."*

"पानक्रात!" प्रोफ़ेसर चोंगे में चिल्लाये, "बीन मोमेंटाल जेर बेशेफ्टिग्ट उण्ड कान जी डेस्खाल्ब येत्सट् निख्ट येमप्फ़ान्गेन!.."** पानक्रात!!"

और तभी संस्थान के प्रवेश द्वार पर एक के बाद एक घण्टियाँ बजने लगीं।

* * *

"ब्रोन्नाया सड़क पर खौफनाक हत्या!!" जून की तपी सड़क पर पहियों और बत्तियों की जगमगाहट के यूथ में अजीब-सी आवाज़ें बोलियाँ लगाती फेरे लगा रही थीं। "विधवा पुजारिन द्रोज्दोवा के फ़ोटो सहित उसकी मुर्ग़ियों की खौफ़नाक बीमारी!..प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव की जीवन की किरण की खौफ़नाक खोज!!"

पेर्सिकोव ऐसे लपके कि मोखोवाया सड़क पर मोटर के नीचे आते-आते बचे और उन्होंने झपटकर अख़बार ले लिया।

"नागरिक, 3 कोपेक निकालिये!" लड़का चिल्लाया और फुटपाथ की भीड़ में धँसकर फिर से चिल्ला-चिल्लाकर बोली लगाने लगा : "लाल सांध्य मास्को", अज्ञात किरण की खोज!!"

हक्के-बक्के पेर्सिकोव ने अख़बार खोला और बिजली के खम्भे से सटकर खड़े हो गये। दूसरे पेज पर बायें कोने में बिगड़े चौखटे से गँजा, वहशी और अँधी आँखों, लटके

* "प्रोफ़ेसर साहब, कष्ट के लिए क्षमा चाहता हूँ। मैं "बर्लिन डेली" अख़बार का संवाददाता हूँ..."। (जर्मन)–सं.

** "इस समय मैं बहुत व्यस्त हूँ और आपसे बिल्कुल नहीं मिल सकता।" (जर्मन)–सं.

हुए निचले जबड़ेवाला आदमी उनकी ओर देख रहा था, यह अल्फ्रेड ब्रोन्स्की की कला-साधना का फल था। चित्र के नीचे लिखा था : "रहस्यमय लाल किरण के खोजी, व. इ. पेर्सिकोव"। इसके नीचे 'विश्वव्यापी पहेली' सुर्खी से लेख था जो इन शब्दों से शुरू होता था :

" 'बैठिये,' मूर्द्धन्य विद्वान पेर्सिकोव ने शिष्टता के साथ हमसे कहा..."

लेख के अन्त में था लेखक का नाम : 'अल्फ्रेड ब्रोन्स्की (आलोन्जो)'।

विश्वविद्यालय की छत के ऊपर हरे-से प्रकाश का फौवारा फूटा, आकाश में दहकते उजागर हुए "बोलता अख़बार" और झट से मोखोवाया पर भीड़ जमा हो गयी।

"बैठिये!!" अचानक छत पर लगे लाउड-स्पीकर से बेहद बेसुरा पतला स्वर सुनायी पड़ा जो हूबहू एक हज़ार गुना परिवर्द्धित अल्फ्रेड ब्रोन्स्की जैसा था, "मूर्द्धन्य विद्वान पेर्सिकोव ने शिष्टता के साथ हमसे कहा! मैं अर्से से मास्को के सर्वहारा को अपनी खोज के परिणामों से अवगत कराना चाहता था..."

पेर्सिकोव की पीठ से धीमी-सी यांत्रिक चरमराहट सुनायी पड़ी और किसी ने उनकी आस्तीन खींची। मुड़कर उन्हें यांत्रिक टाँग के मालिक का गोल-मटोल पीला चेहरा दिखायी पड़ा। उसकी आँखें आँसुओं से नम थीं और होंठ काँप रहे थे।

"प्रोफ़ेसर साहब, आपने मुझे अपनी आश्चर्यजनक खोज के परिणामों से अवगत कराने की इच्छा नहीं की," वह उदास स्वर में बोला और गहरी उसाँस ली। "मुझे तो पन्द्रह रूबल का चूना लग गया।"

वह उदास नज़र से विश्वविद्यालय की छत को ताक रहा था जहाँ काली गुहा में अदृश्य अल्फ्रेड उत्पात मचा रहा था। न जाने क्यों पेर्सिकोव को मोटे पर दया आ गयी।

"मैंने", आकाश से बरसते शब्दों को घृणा के साथ लपकते हुए वह बड़बड़ाये, "उसे कोई "बैठिये-वैठिये" नहीं कहा था। यह तो बड़ा ढीठ किस्म का आदमी है! कृपया आप मुझे क्षमा कर दीजिये, आप ही सोचिये जब काम के वक्त मुँह उठाये चले आते हैं तो...मैं, बेशक, आपके बारे में नहीं कह रहा..."

"प्रोफ़ेसर साहब, आप कम से कम मुझे अपने कक्ष कर विवरण ही क्यों नहीं दे देते?" चापलूसी और रंज के साथ यांत्रिक मानव बोला, "आख़िर अब तो आपको क्या फर्क पड़ता है...."

"मेंढकों के आधा पौण्ड अण्डों से तीन दिन में इतने टेडपोल निकलते हैं कि उनको गिनना असम्भव है।"

अदृश्य अल्फ्रेड लाउडस्पीकर से चिल्ला रहा था।

"पों-पों," मोखोबाया पर मोटरें फटी आवाजों में चीख रही थीं।

"ओ-हो-हो...देखो तो, ओ-हो-हो," सिर उठाये भीड़ कोलाहल कर रही थी।

"कैसा नीच है? क्यों?" पेर्सिकोव क्रोध में फुफकारकर यांत्रिक आदमी से बोले, "आपको यह कैसा लग रहा है? अरे, मैं तो इसकी शिकायत करके ही दम लूँगा!"

"शर्मनाक बात है!" मोटे ने सहमति व्यक्त की।

बेहद चमकीली बैंगनी किरण से प्रोफ़ेसर की आँखें चौंधिया गयीं और आस-पास सब कुछ जगमगा उठा—बिजली का खम्बा, सड़क का एक टुकड़ा, पीली दीवार, तमाशबीनों के चेहरे।

"प्रोफ़ेसर साहब, यह आपका फ़ोटो खिंच रहा है," गदागद होकर मोटा फुसफुसाया और बाट की तरह प्रोफ़ेसर की बाँह पर लटक गया। हवा में कुछ खड़खड़ाया।

"भाड़ में जायें सब के सब!" बाट के साथ भीड़ को चीरते हुए पेर्सिकोव कुढ़कर चिल्लाये। "ओ टैक्सी! प्रेचीस्तेन्का चलो!"

सन 24 के माडल की पुरानी फटीचर मोटर फुटपाथ के किनारे खड़ी हाँफने लगी और प्रोफ़ेसर मोटे से पिण्ड छुड़ाने की कोशिश करते हुए लैण्डों में चढ़ गये।

"आप मुझे नाहक परेशान कर रहे हैं," वह फुफकारकर कह रहे थे और मुट्ठियों से ढककर अपने चेहरे को बैंगनी रोशनी से छिपा रहे थे।

"पढ़ा?! क्या कहते हैं?...मालाया ब्रोन्नाया सड़क पर प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव का बाल-बच्चों समेत क़त्ल हो गया!..." भीड़ में चारों ओर से यही सुनायी पड़ रहा था।

"मेरे कोई बाल-बच्चे नहीं हैं, हरामजादो!" पेर्सिकोव चिल्लाये और अचानक काले कैमरे के फोकस में आ गये और उसने खुले मुँह, वहशी आँखों के साथ बगल से उन्हें खींच लिया।

"खड़...खड़...खड़-खड़" टैक्सी चिल्लायी और भीड़ में घुस गयी।

मोटा लैण्डों में बैठा प्रोफ़ेसर की बगल गर्मा रहा था।

अध्याय 5

क़िस्सा मुर्ग़ियों का

कोस्त्रोमा प्रान्त स्तेक्लोव्स्क जिले के फटीचर कस्बाई शहर भूतपूर्व त्रोइत्स्क और आज के स्तेक्लोव्स्क में भूतपूर्व कैथीड्रल मार्ग और आज की कार्ल रादेक सड़क के एक मकान के ओसारे पर सलेटी छींट की पोशाक पहने और सिर पर रूमाल बाँधे एक औरत निकली और रो पड़ी। औरत यह, भूतपूर्व कैथीड्रल गिरजे के भूतपूर्व पुजारी द्रोज्दोव की विधवा, इतनी ज़ोर से रो रही थी कि शीघ्र ही सामनेवाले मकान की खिड़की से रोयेंदार शाल में लिपटा जनाना सिर बाहर निकला और चिल्लाया :

"तू क्यों रो रही है, स्तेपानोव्ना, क्या और?"

"सत्रहवीं!" फूट-फूटकर रोते हुए भूतपूर्व द्रोज्दोवा ने उत्तर दिया।

"आय-हाय-हाय," शाल में लिपटी औरत ने रिरियाते हुए सिर हिलाया, "यह क्या ग़ज़ब हो रहा है? भगवान नाराज़ हो गये, कसम से! क्या मर तो नहीं गयी?"

"अरे तू देख, देख, मत्र्योना," पुजारिन ज़ोर-ज़ोर से गहरी सुबकियाँ लेती हुई बुदबुदा रही थी, "तू देख तो उसे हुआ क्या!"

धूसर-सा टेढ़ा फाटक धड़ाक से बन्द हुआ, एक जोड़ी जनाना नंगे पाँवों ने सड़क के धूल से ढके कूबड़ों को पार किया और पुजारिन मत्र्योना को अपने दड़बे में लिवा ले गयी।

यह कहना पड़ेगा कि सन 26 में धर्मविरोधी प्रचार से भगवान को प्यारे हुए पुजारी फादर सव्वाती द्रोज्दोव की विधवा ने हिम्मत नहीं हारी बल्कि बेहद उम्दा मुर्ग़ीपालन की स्थापना की। जैसे ही विधवा के धन्धे में तेज़ी आयी कि उस पर ऐसा भारी टैक्स ठोक दिया गया कि समझो मुर्ग़ीपालन बन्द ही हो जाता अगर भलेमानस मदद न करते। उन्होंने विधवा को स्थानीय शासकों को इस आशय की अर्जी लिखने की राय दी कि वह, अर्थात विधवा श्रमिक मुर्ग़ीपालन सहकारिता की स्थापना कर रही है। सहकारिता में शामिल हुए—स्वयं द्रोज्दोवा, उसकी स्वामिभक्त नौकरानी मत्र्योश्का और विधवा की बहरी भानजी। विधवा का टैक्स माफ़ हो गया और उसका मुर्ग़ीपालन इतना फला-फूला कि सन 28 तक विधवा के दड़बों से घिरे धूल भरे अहाते में 250 तक मुर्ग़ियाँ घूमती थीं जिनके बीच कोखिनखिनकी नस्ल तक की थीं। हर इतवार को विधवा के अण्डे स्तेक्लोव्स्क की हाट में आते थे, विधवा के अण्डों का तांबोव में व्यापार होता था, यहाँ तक होता था कि मास्को में भूतपूर्व "चीच्किन का पनीर और मक्खन" की दुकान के काँच के शो-केसों में भी विधवा के अण्डे दिखायी दे जाते थे।

और अब सुबह से सत्रहवीं ब्रह्मपुत्रा, लाडली मुर्ग़ी अहाते में घूम-घूमकर उल्टी कर रही थी। मुर्ग़ी "ऐ-ऐ...उ ऽऽ र-र...उर ऽऽ.. को-को-को," कर रही थी और सूरज की ओर आँखें ऐसे चढ़ाती मानो उसे आख़िरी बार देख रही हो। मुर्ग़ी की नाक के सामने सहकारिता-सदस्य मत्र्योश्का पानी के प्याले के साथ नाच रही थी।

'प्यारी-प्यारी मुर्ग़ी रानी...पुच-पुच-पुच... पी ले पानी," मत्र्योश्का मिन्नत कर रही थी और मुर्ग़ी की चोंच का प्याले से पीछा कर रही थी, पर मुर्ग़ी को पीने की इच्छा ही न थी। वह चोंच को चौड़ा खोलकर ऊपर की ओर सिर उठा रही थी। फिर उसे खून की उल्टियाँ होने लगीं।

"हे भगवान!" अतिथिन अपने कूल्हों पर हाथ पटककर चिल्ला पड़ी, "यह हो क्या रहा है? खून ही खून बहे जा रहा है। कसम से, मैंने कभी नहीं देखा कि आदमी की तरह मुर्ग़ी का पेट भी खराब हुआ हो।"

परलोक की यात्रा से पहले बेचारी मुर्ग़ी ने यही आख़िरी नसीहत सुनी। वह अचानक लुढ़की और उसकी आँखें चढ़ गयीं। फिर वह करवट बदलकर पीठ पर लेट गयी, दोनों टाँगें ऊपर उठा लीं और पत्थर की तरह पड़ी रह गयी। प्याला छलकाकर मत्र्योश्का गला फाड़के रो पड़ी और सहकारिता की अध्यक्षा पुजारिन भी, अतिथिन उसके कान पर झुककर फुसफुसायी :

"स्तेपानोव्ना, मिट्टी की सौगन्ध खाके कहती हूँ कि तेरी मुर्ग़ियों पर टोना हुआ है। ऐसा कभी हुआ है! मुर्ग़ियों की ऐसी कोई बीमारी नहीं होती। तेरी मुर्ग़ियों पर तो टोना किया गया है।"

"मेरे जानी दुश्मनो!" आसमान की दुहाई देकर पुजारिन चीखी, "वे क्या मेरी जान लेना चाहते हैं?"

उसकी बातों का जवाब मुर्ग़े की ज़ोरदार बाँग ने दिया और फिर दड़बे से एक नुचे परोंवाला सींखची मुर्गा ऐसे बाहर नमूदार हुआ जैसे किसी मयखाने से कोई उन्मादी शराबी लड़खड़ाकर निकलता है। उसने औरतों को आँखें फाड़कर देखा, कदम-ताल की, उकाबों की तरह डैने फैलाये पर उड़ा नहीं, बल्कि अहाते में खूँटे से बँधे घोड़े की तरह दौड़ने लगा। तीसरा चक्कर लगाते हुए वह रुक गया और उसे उल्टी आ गयी, फिर वह खँखारने और घरघर करने लगा, अपने चारों ओर उसने खून के धब्बे थूके, वह उलटकर गिर पड़ा और उसकी टाँगें मस्तूलों की तरह सूरज की ओर उठ गयीं। अहाता औरतों के क्रन्दन से मुखरित हो उठा। इसके उत्तर में मुर्ग़ियों के घरों से बेचैन कुड़-कुड़, फड़-फड़ और दौड़-धूप की आवाजें आयीं।

"देखा, टोना नहीं तो क्या है?" अतिथिन ने विजयोल्लास में पूछा, "फादर सेर्गी को बुलवाओ, पूजा करने के लिए।"

शाम के छः बजे जब सूरज का लाल दहकता मुख जवान सूरजमुखियों के बीच लटका था, कैथीड्रल गिरजे का प्रधान पादरी फादर सेर्गी, कुक्कुटपालन अहाते में पूजा अनुष्ठान सम्पन्न करके अपना चोगा उतार रहा था। लकड़ी की बाड़ के ऊपर और उसके बीच के झरोखों से तमाशबीनों के सिर दिखायी पड़ रहे थे। शोकमग्न पुजारिन ने सलीब चूमकर एक रूबल के पीले फटे नोट को आँसुओं से तर किया और उसे फ़ादर सेर्गी को थमा दिया, इसके उत्तर में फादर सेर्गी ने उसाँस लेकर ऐसा कुछ कहा कि भगवान हमसे रुष्ट हैं। फादर सेर्गी ने यह ऐसे आवाज़ में कहा मानो उन्हें यह भली-भाँति मालूम था कि भगवान क्यों रुष्ट हैं, पर वह बताने वाला नहीं हैं।

तदुपरान्त सड़क से भीड़ छँट गयी, और चूँकि मुर्ग़ियाँ बड़ी जल्दी सो जाती हैं तो किसी को यह पता न था कि पुजारिन द्रोज्दोवा के पड़ोसी के दड़बे में एक साथ तीन मुर्ग़ियों और एक मुर्ग़े ने दम तोड़ दिया। उन्हें भी वैसी ही उल्टियाँ हुईं जैसी द्रोज्दोवा की मुर्ग़ियों को, बस फर्क इतना था कि मौतें ये दड़बे में हुईं और शान्ति के साथ। मुर्ग़ा डांड से सिर के बल गिरा और इसी मुद्रा में भगवान को प्यारा हो गया। जहाँ तक विधवा की मुर्ग़ियों का सवाल है तो पूजा के फौरन बाद उनका अन्त हो गया और शाम तक दड़बों में मौत का सन्नाटा छा गया, मुर्ग़ियों का सवाल है तो पूजा के फौरन बाद उनका अन्त हो गया और शाम तक दड़बों में मौत का सन्नाटा छा गया, मुर्ग़ियों की अकड़ी लाशों के ढेर पड़े थे।

अगली सुबह शहर ऐसा स्तब्ध रह गया मानो उस पर गाज गिरी हो, क्योंकि इस

किस्से ने अजीबोग़रीब और खौफ़नाक पैमाना अख़्तियार कर लिया। कार्ल रादेक सड़क पर दोपहर तक सिर्फ़ तीन मुर्ग़ियाँ ज़िन्दा बची थीं, किनारेवाले घर में, जहाँ जिला टैक्स इंस्पेक्टर किराये के मकान में रहता था, पर वे भी एक बजे तक मर गयीं। और शाम तक स्तेक्लोव्स्क मधुमक्खी के छत्ते की तरह भिनभिना रहा था और उसकी सड़कों पर भयानक शब्द 'महामारी' गूँज रहा था। द्रोज्दोवा का नाम स्थानीय अख़बार "लाल योद्धा" में 'क्या सचमुच मुर्ग़ियों का प्लेग है?' शीर्षक लेख में पहुँच गया और वहाँ से उड़ता हुआ मास्को आ धमका।

* * *

प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव के जीवन की रंगत बदलकर बड़ी अजीब, बेचैन और व्याकुलता हो गयी। संक्षेप में, ऐसी हालत में काम करना असम्भव ही था। अल्फ्रेड ब्रोन्स्की से पिण्ड छुड़ाने के बाद अगले दिन उन्हें संस्थान में अपने कमरे में टेलीफ़ोन का चोंगा उतारकर काटना पड़ा, और शाम को ट्राम में ओखोत्नी र्‍याद सड़क से गुजरते समय प्रोफ़ेसर ने अपने को एक विशाल भवन की छत पर देखा जिस पर काला साइनबोर्ड टँगा था : "मज़दूर समाचारपत्र"। वह, यानी प्रोफ़ेसर, थरथराते हुए, हरे-पीले पड़ते हुए और आँखें मिचमिचाते हुए टैक्सी में बैठ रहे थे और उनके पीछे-पीछे, उनकी आस्तीन थामे कम्बल में लिपटा यांत्रिक गोला भी घिसटता जा रहा था। छत के ऊपर सफ़ेद पर्दे पर प्रोफ़ेसर मुट्ठियों से अपने चेहरे को बैंगनी किरण से छिपा रहे थे। इसके बाद पर्दे पर यह अनुशीर्षक चमका : "प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव मोटर में जाते हुए हमारे सुप्रसिद्ध रिर्पोटर कप्तान स्तेपानोव को इण्टरव्यू दे रहे हैं।" और फिर : क्राइस्ट सेवियर के गिरजे के पास से वोल्खोन्का सड़क पर एक जर्जर मोटर गुजरी और उसमें प्रोफ़ेसर डूबते-उतराते जा रहे थे, उनके मुखमण्डल पर वही भाव था जैसा शिकारियों से घिरे भेड़िये का होता है।

"ये राक्षस हैं, इंसान नहीं," दाँत मींजकर प्राणीशास्त्री बुदबुदाये और उनकी ट्राम आगे बढ़ गयी।

उसी तारीख़ की शाम को प्रेचीस्तेन्का पर अपने घर लौटकर प्राणीशास्त्री को अपनी नौकरानी मार्या स्तेपानोव्ना से टेलीफ़ोन नम्बरोंवाली 17 पर्चियाँ मिलीं, ये उन लोगों के नम्बर थे जिन्होंने प्रोफ़ेसर को उनकी अनुपस्थिति में फ़ोन किया था, साथ ही मार्या स्तेपानोव्ना ने मौखिक घोषणा की कि वह इनसे तंग आ गयी है। प्रोफ़ेसर पर्चियों को फाड़ना चाहते थे पर रुक गये, क्योंकि एक नम्बर के आगे उन्होंने लिखा देखा : "स्वास्थ्य-रक्षा जन"।

"यह क्या है?" विद्वान झक्की सचमुच ऊहापोह में पड़ गये, "इन सबको हुआ क्या है?"

उसी रात को सवा दस बजे दरवाज़े की घण्टी बजी और प्रोफ़ेसर को तड़क-भड़कवाले

एक सज्जन से वार्तालाप करने को विवश होना पड़ा। उस विजिटिंग कार्ड की बदौलत प्रोफ़ेसर उससे मिलने को राजी हुए जिस पर (नाम के बिना) लिखा था : "सोवियतों के जनतंत्र के अन्तर्गत विदेशी प्रतिनिधि कार्यालयों के व्यापार विभाग का पूर्णाधिकारी प्रधान।"

"उसे साँप ने क्यों नहीं डस लिया," पेर्सिकोव गुर्राये, हरी बनात के मेज़पोश पर आतशी शीशा और कोई डायाग्राम पटककर मार्या स्तेपानोव्ना से बोले, "यहीं बुलाइये उसे, इसी कमरे में, इस पूर्णाधिकारी के बच्चे को।"

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" पेर्सिकोव ने ऐसे लहजे में पूछा कि प्रधान किंचित सकपका गया। पेर्सिकोव ने चश्मे को नाक से उठाकर माथे पर चढ़ाया और उसे फिर से वापस अपनी जगह पर टिकाकर आगंतुक का गौर से मुआयना किया। वह सिर से लेकर पैर तक बेशकीमती नगीनों और पेटेण्ट लैदर से चमचमा रहा था, उसकी दायीं आँख पर एक शीशेवाला मोनोकल टिका था।

"क्या कमीनी सूरत है," न जाने क्यों पेर्सिकोव ने सोचा।

अतिथि ने दूर से बात शुरू की, वह यह कि उसने सिगार पीने की अनुमति माँगी। पेर्सिकोव को मज़बूरन उसे बैठने को कहना पड़ा। आगे अतिथि ने देर से आने के लिए लम्बी-चौड़ी माफ़ी माँगी : "पर.... प्रोफ़ेसर साहब तो दिन में किसी भी तरह पकड़ में... ही-ही... पार्डन... मिलते ही नहीं।" (हँसते हुए अतिथि लकड़बग्घे की तरह सुबकियाँ ले रहा था।)

"हाँ, मैं व्यस्त हूँ!" पेर्सिकोव के इस संक्षिप्त उत्तर से मेहमान के बदन में फिर से कँपकँपी दौड़ गयी।

फिर भी उसने अपने को विख्यात विज्ञानी को कष्ट देने की छूट दी :

"कहते हैं न, समय ही पैसा है... प्रोफ़ेसर साहब को सिगार के धुएँ से तो तकलीफ़ नहीं हो रही?"

"ब्ला-ब्ला-ब्ला," पेर्सिकोव ने उत्तर दिया। उन्होंने आपत्ति नहीं की...

"प्रोफ़ेसर साहब ने तो जीवन की किरण खोजी है?"

"छोड़िये भी, ऐसे कैसे जीवन की बात करते हैं?! यह सब अख़बारवाले के दिमाग़ की उपज है!" पेर्सिकोव कुछ जोश में आकर बोले।

"अच्छा, नहीं, ही-ही-हे-हे..." वह उस विनम्रता को बखूबी समझता है जो सभी असली वैज्ञानिकों की असली शोभा होती है... आप भी कैसी बातें करते हैं... आज तार मिले हैं.... दुनिया के प्रमुख शहरों, जैसे : वार्सा और रीगा को किरण के बारे में सब पता चल चुका है। सारी दुनिया की जुबान पर प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव का नाम है... सारी दुनिया साँस रोककर प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव के काम पर नज़रें टिकाये हुए हैं... पर सब भली-भाँति जानते हैं कि सोवियत रूस में वैज्ञानिकों की स्थिति कितनी दयनीय है। एंत्र नु सुआ दी... यहाँ कोई पराया तो नहीं?... अफ़सोस है कि यहाँ वैज्ञानिक

के श्रम की कोई कद्र नहीं की जाती, हाँ, तो प्रोफ़ेसर के साथ इस विषय में बात करना चाहता था.... एक विदेशी राज्य प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव को उनके शोधकार्य में बिल्कुल निःस्वार्थ सहायता की पेशकश करती है। यहाँ अदरक का स्वाद चखाने की उन्हें क्या पड़ी है। विदेशी राज्य को पता है कि सन 19 और सन 20 में इस, ही-ही... क्रान्ति के दौरान प्रोफ़ेसर को कितनी मुसीबतें झेलनी पड़ीं। बेशक यह, अतिगोपनीय है... प्रोफ़ेसर विदेशी राज्य को अपने काम के परिणामों से अवगत करा देंगे और इसके बदले में वह प्रोफ़ेसर की वित्तीय मदद करेगी। उन्होंने तो कक्ष बनाया है न, बस, इस कक्ष के नक्शे का परिचय बड़ा रोचक होगा...

और तभी मेहमान ने कोट की अन्दरूनी जेब से नोटों की सफ़ेद-झक गड्डी निकाली....

"बस कोई मामूली-सी राशि, उदाहरण के लिए 5000 रूबल प्रोफ़ेसर इसी वक्त पेशगी के रूप में ले सकते हैं... और रसीद की भी ज़रूरत नहीं... पूर्णाधिकारी व्यापार प्रधान को इससे बड़ी ठेस पहुँचेगी अगर प्रोफ़ेसर रसीद लिखने की बात भी करेंगे।"

"निकलो यहाँ से!" अचानक प्रोफ़ेसर इतने ज़ोर से दहाड़े कि ड्राइंग रूम में रखे प्यानो के तार झंकार उठे।

मेहमान ऐसा गायब हुआ कि क्रोध से काँपते पेर्सिकोव को खुद यह शक होने लगा कि वह सचमुच आया भी था या यह कोई बुरा सपना था।

"उसके गैलोश?!" एक मिनट बाद पेर्सिकोव ड्योढ़ी से चिल्लाये।

"वह भूल गये," थरथर काँपती मार्या स्तेपानोव्ना ने उत्तर दिया।

"फेंक दो इन्हें बाहर!"

"मैं कहाँ फेकूँ? वह लेने के लिए वापस लौटेंगे।"

"इन्हें बिल्डिंग कमेटी में जमा करवा दीजिये। रसीद कटवा कर। इन गैलोशों की छाया तक न पड़े यहाँ! कमेटी में जाइये! कह दीजिये कि जासूस के गैलोश जमा कर लें!..."

मार्या स्तेपानोव्ना ने उम्दा चमड़े के गैलोशों को उठाया और पिछले दरवाज़े से बाहर निकल गयी। वहाँ वह कुछ देर तक दरवाज़े के बाहर खड़ी रही फिर गैलोशों को उसने कोठरी में छिपा दिया।

"जमा करा आयीं?" प्रचण्ड पेर्सिकोव ने पूछा।

"करा दिये।"

"रसीद लाइये।"

"अरे, व्लादीमीर इपात्येविच, चेयरमैन तो अनपढ़ है न!..."

"इसी वक्त, रसीद आ जानी चाहिये। उसकी जगह कोई दूसरा पढ़ा-लिखा हरामजादा दस्तख़त कर सकता है!"

मार्या स्तेपानोव्ना बस मुण्डी हिलाकर चली गयी और सवा घण्टे बाद पर्ची लेकर

लौटी :

"प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव से फण्ड में 1 (एक) जो. गैलो. प्राप्त हुए। कोलेसोव।"

"और यह क्या है?"

"टोकन।"

पेर्सिकोव ने पैरों से टोकन को रौंद डाला और रसीद को पेपरवेट के नीचे छिपा दिया। फिर किसी विचार से उनके उन्नत भाल पर बल पड़ गये। वह टेलीफ़ोन की ओर लपके, संस्थान में उन्होंने टेलीफ़ोन की घण्टी बजा-बजाकर पानक्रात को उठाया और उससे पूछा : "सब ठीक तो है न?" पानक्रात चोंगे में कुछ ऐसा मिमियाया जिसका यह अर्थ निकाला जा सकता था कि उसके विचार से सब ठीक है। पर पेर्सिकोव केवल मिनट भर ही शान्त रहे। भौंहें सिकोड़कर उन्होंने टेलीफ़ोन थामा और चोंगे में यह कह डाला :

"मुझे उसका, क्या कहते हैं उसे, लुब्यान्का* का नम्बर दीजिए। थैंक यू... आपमें से किसे बताना है... मेरे यहाँ गैलोश पहने कोई सन्देहजनक शख़्स आ रहे हैं, हाँ... चतुर्थ विश्वविद्यालय का प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव हूँ..."

चोंगे ने अचानक झट से वार्तालाप को काट दिया, पेर्सिकोव दाँत भींचकर कोई गालियाँ देते हुए टेलीफ़ोन के पास से हट गये।

"व्लादीमीर इपात्येविच, आप चाय पियेंगे?" कमरे से झाँककर मार्या स्तेपानोव्ना से सहमे स्वर में पूछा।

"मैं कोई चाय-वाय नहीं पिऊँगा... ब्ला-ब्ला-ब्ला, सब भाड़ में जायें... पागल हो गये हैं सब के सब।"

ठीक दस मिनट बाद प्रोफ़ेसर अपनी प्रयोगशाला में नये अतिथियों से वार्तालाप कर रहे थे। उनमें से एक भला-सा, गोल-मटोल और बेहद शिष्ट था, वह सादी खाकी फ़ौजी वर्दी पहने हुए था। उसकी नाक पर बिल्लौरी तितली की तरह बिना कमानी की ऐनक टिकी हुई थी। कुल मिलाकर वह पेटेण्ट लैदर के बूट पहने फरिश्ता लग रहा था। दूसरा, नाटा-सा, बेहद मनहूस चेहरेवाला था, वह सादे कपड़े पहने था, पर उस पर सिविलियन कपड़े ऐसे लग रहे थे मानो उन्होंने उसकी स्वतंत्रता छीन ली हो। तीसरे मेहमान का आचरण खास था, वह प्रोफ़ेसर की प्रयोगशाला में नहीं घुसा, बल्कि झुटपुटे गलियारे में रुक गया। पर वहाँ से भी उसे जगमगाता, सिगरेट के धुएँ की तैरती धाराओं से भरी प्रयोगशाला आर-पार दिखायी दे रहा था। इस तीसरेवाले ने भी सिविलियन कपड़े पहन रखे थे, काले शीशेवाला बिना कमानी का चश्मा उसके चेहरे पर शोभायमान था।

प्रयोगशाला में घुसे दोनों जनों ने विजिटिंग कार्ड जाँच करते हुए पाँच हज़ार के बारे में पूछ-पूछकर और अतिथि का हुलिया बयान करने को मजबूर करके पेर्सिकोव

* लुब्यान्का–मास्को का एक चौक जहाँ राजकीय सुरक्षा विभाग की इमारत स्थित है।–सं.

को बिल्कुल सता डाला।

"शैतान ही उसे जानें," पेर्सिकोव बुदबुदा रहे थे, "अरे, बड़ी घिनौनी सूरत थी उसकी। लफँगा था।"

"उसकी आँख काँच की तो नहीं थी?" नाटे ने कर्कश स्वर में पूछा।

"शैतान ही जाने। वैसे हाँ, नहीं-नहीं, काँच की नहीं थी, आँखें भटक रही थीं।"

"रूबिनश्तेन?" फरिश्ते ने धीमे-से सिविलियन नाटे से पूछा। पर उसने मुँह बनाया और सिर हिलाकर न कर दी।

"रूबिनश्तेन बिना रसीद को नहीं देनेवाली, हरगिज नहीं," वह बड़बड़ाया," "यह रूबिनश्तेन का काम नहीं। यहाँ कोई बड़ा खिलाड़ी है।"

गैलोशों के किस्से में अतिथियों ने बेहद रुचि दर्शायी। फरिश्ते ने बिल्डिंग के दफ़्तर को फ़ोन करके यह चन्द शब्द ही कहे : "राजकीय राजनीतिक विभाग इसी पल बिल्डिंग कमेटी के सचिव कोलेसोव को गैलोशों के साथ प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव के क्वार्टर में हाजिर होने की हिदायत देता है," और कोलेसोव तुरन्त हाथों में गैलोश उठाये प्रयोगयशाला में हाजिर हो गया, उसे काटो तो खून नहीं।

"वासेन्का!" फरिश्ते ने धीरे से उसवाले को बुलाया जो गलियारे में बैठा था। वह सुस्ती के साथ उठा और प्रयोगशाला की ओर ऐसे बढ़ा मानो उसका अंजर-पंजर ढीला हो। काले चश्मे ने उसकी आँखों को बिल्कुल हज़म कर डाला था।

"क्या?" उसने उनींदी आवाज में यह संक्षिप्त प्रश्न किया।

"गैलोश।"

काली आँखें गैलोशों पर फिसलीं, पेर्सिकोव को लगा कि पल भर को चश्मे की बगल से उनींदी नहीं बल्कि बेहद पैनी, चुभती आँखें चमकीं। पर वे तत्क्षण बुझ गयीं।

"बोलो, वासेन्का?"

उसने, जिसका नाम वासेन्का था, सुस्त आवाज़ में उत्तर दिया :

"बोलना क्या है। पोलेन्झकोव्स्की के गैलोश हैं।"

तत्काल फण्ड प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव के उपहार से वंचित हो गया। गैलोश अख़बार के काग़ज़ में विलीन हो गये। फ़ौजी वर्दीधारी फरिश्ता बेहद खुश होकर उठा और उसने तपाक से प्रोफ़ेसर से हाथ मिलाया और छोटी-सी स्पीच तक दे डाली जिसका सार कुछ यों था : यह प्रोफ़ेसर के लिए शोभनीय है... प्रोफ़ेसर चैन से रह सकते हैं... अब कोई उन्हें नहीं परेशान करेगा, न घर पर, न काम पर... उचित उपाय किये जायेंगे, उनके कक्ष पूर्णरूप से सुरक्षित हैं...

"आप क्या सभी रिपोर्टरों को गोली नहीं मार सकते?" चश्मे के ऊपर से देखते हुए पेर्सिकोव ने पूछा।

यह सवाल सुनकर मेहमानों का जी हरा हो गया। न केवल नकचढ़ा नाटा बल्कि काला चश्मा भी गलियारे में खड़ा मुस्करा दिया। फरिश्ते ने चमचमाते हुए समझाया...

कि अभी, हुं... बेशक यह अच्छा ही होता... पर आप देखिये मामला प्रेस का है... खैर, वैसे श्रम और प्रतिरक्षा परिषद में ऐसी योजना बन रही है... अब आज्ञा चाहते हैं।

"यह कौन हरामी मेरे यहाँ आया था?"

बस, सबकी मुस्कानें बुझ गयीं, फरिश्ते ने टाल-मटोल के अन्दाज़ में कहा, ऐसे ही, कोई मामूली ठग होगा, इस पर ध्यान देने की भी ज़रूरत नहीं है... फिर भी वह नागरिक प्रोफ़ेसर से विनम्र निवेदन करता है कि आज शाम की घटना को पूर्ण रूप से गुप्त रखें, और इतना कहकर मेहमान चले गये।

पेर्सिकोव अपने अध्ययन-कक्ष में डायाग्रामों के पास लौट आये, पर उन्हें काम करने का मौक़ा मिला ही नहीं। टेलीफ़ोन की लाल आँख चमकी और महिला स्वर ने प्रोफ़ेसर के समक्ष प्रस्ताव रखा कि अगर वह रोचक और कमनीय विधवा से शादी करना चाहता हैं तो उन्हें सात कमरोंवाला मकान मिलेगा।

पेर्सिकोव चोंगे में चीखे :

"मैं आपको प्रोफ़ेसर रोस्सोलिमो से इलाज करवाने की सलाह दूँगा..." और फिर एक और फ़ोन आ गया।

अब पेर्सिकोव के हाथ-पाँव कुछ फूल गये क्योंकि एक काफ़ी प्रसिद्ध व्यक्ति क्रेमलिन से फ़ोन कर रहा था, वह बड़ी देर तक सहानुभूति के साथ पेर्सिकोव से उनके काम के बारे में पूछता रहा, उसने उनकी प्रयोशाला देखने की इच्छा व्यक्त की। टेलीफ़ोन के पास से हटकर पेर्सिकोव ने माथा पोंछा और फिर चोंगे को उतारकर रख दिया। तब ऊपरवाले क्वार्टर में भयंकर बाजे चिंघाड़ उठे और ज़ोर-ज़ोर से गाने की आवाज़ सुनायी पड़ी—यह ऊनी कपड़ा मिल के डायरेक्टर के रेडियों ने बोल्शोई थियेटर से आता संगीत पकड़ लिया था। छत से बरसती चिल्ल-पों की पृष्ठभूमि में पेर्सिकोव ने मार्या स्तेपानोव्ना के समक्ष घोषणा की कि वह डायरेक्टर पर नालिश करेंगे, कि वह उसके इस रेडियो को चकनाचूर कर डालेंगे, कि वह मास्को से नाक की सीध में चले जायेंगे, क्योंकि यह साफ़ है कि उनका जीना हराम करने की ठानी गयी है। उन्होंने आतशी शीशे को फोड़ दिया और प्रयोगशाला में सोफे पर लेट गये और बोल्शाई थियेटर से आते मधुर प्यानो संगीत को सुनते-सुनते नींद में डूब गये।

अगले दिन भी अप्रत्याशित घटनाएँ जारी रहीं। ट्राम से संस्थान पहुँचकर पेर्सिकोव को ओसारे पर हरा फैशनेबल हैट पहने एक अपरिचित नागरिक दिखायी पड़ा। उसने घूरकर पेर्सिकोव को देखा पर उनसे कोई प्रश्न नहीं पूछा इसलिए पेर्सिकोव ने उसके प्रति सहिष्णुता दर्शायी। पर संस्थान के स्वागत-कक्ष में बदहवास पानक्रात के अलावा दूसरे हैट ने भी उनकी अगवानी की और शिष्टता से उनका अभिवादन किया :

"नमस्ते, नागरिक प्रोफ़ेसर।"

"आपको क्या चाहिये?" पानक्रात की मदद से अपने तन से ओवरकोट को अलग करते हुए प्रोफ़ेसर ने आवेश में पूछा। पर हैट ने अत्यन्त मधुर स्वर में यह फुसफुसाकर

कि प्रोफ़ेसर व्यर्थ ही चिन्ता कर रहे हैं जल्दी ही पेर्सिकोव को शान्त कर दिया। वह, मतलब हैट, इसीलिए तो यहाँ उपस्थित है कि प्रोफ़ेसर को हर तरह के अवांछित आंगतुकों से बचा सके.... कि प्रोफ़ेसर को संस्थान के दरवाज़ों की ही नहीं बल्कि उसकी खिड़कियों की भी कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिये। पदोपरान्त अजनबी ने पल भर के लिए अपने कोट का कालर मोड़कर प्रोफ़ेसर को कोई बिल्ला दिखाया।

"हाँ.... आपके यहाँ काम का बन्दोबस्त बड़ा बढ़िया है," पेर्सिकोव मिमियाये और भोलेपन के साथ उन्होंने पूछ डाला, "पर आप यहाँ खायेंगे क्या?"

इसके उत्तर में हैट ने खींसे निपोरकर कहा कि उसकी ड्यूटी बदलती रहेगी।

इसके बाद तीन दिन बहुत बढ़िया कटे। दो बार क्रेमलिन से प्रोफ़ेसर से मिलने आये और एक बार छात्र आये थे जिनका पेर्सिकोव ने इम्ताहन लिया। एक-एक करके उन्होंने सभी छात्रों को फेल कर दिया और उनके चेहरों से दिखता था कि अब वे पेर्सिकोव से भूत की तरह डरते हैं।

"कण्डक्टर की नौकरी कर लीजिये! प्राणीविज्ञान पढ़ना आपके बस का नहीं है," प्रोफ़ेसर के कमरे से सुनायी पड़ रहा था।

"सख़्त है?" हैट ने पानक्रात से पूछा।

"अरे, भगवान ही बचाये," पानक्रात ने उत्तर दिया, "अगर कोई पास हो भी जाता है, तो लौण्डा लड़खड़ाता हुआ निकलता है, पसीने से तर-ब-तर और सीधे शराबखाने की राह पकड़ता है।"

इन सभी छोटे-छोटे काम-काजों की बदौलत प्रोफ़ेसर को पता ही नहीं चला कि तीन दिन कैसे बीत गये, पर चौथे दिन उन्हें फिर से जीवन की असलियत में पहुँचा दिया गया और कारण इसका था सड़क से आती पतली, रिरियाती आवाज़।

"व्लादीमीर इपात्येविच!" गेर्त्सन सड़क की ओर खुली खिड़की से आवाज़ चिल्लायी। भाग्य ने आवाज़ का साथ दिया : पिछले कुछ दिनों में पेर्सिकोव थककर बेहद चूर हो चूके थे। उसी क्षण वह आराम कर रहे थे, आराम कुर्सी पर बैठे वह अपनी लाल-लाल घेरों से घिरी आँखों से सुस्ती के साथ ताक़ते हुए सिगरेट पी रहे थे। वह उकता गये थे। इसलिए वे किंचित कौतूहल के साथ खिड़की से झाँके और उन्हें फुटपाथ पर अल्फ्रेड ब्रोन्स्की दिखायी पड़ा। नुकीली टोपी और नोटबुक की बदौलत प्रोफ़ेसर ने फौरन विजिटिंग कार्ड के विलक्षण स्वामी को पहचान लिया। ब्रोन्स्की ने स्नेह और आदर के साथ झुककर खिड़की का आदाब बजाया।

"अच्छा, तो यह आप हैं?" प्रोफ़ेसर ने पूछा। उनमें गुस्सा होने तक की शक्ति न थी, उनमें यह देखने का कौतूहल जागा कि आगे होगा क्या? खिड़की की ओट में वह अपने को अल्फ्रेड से सुरक्षित महसूस कर रहें थे। चिर-उपस्थित हैट ने फौरन ब्रोन्स्की की ओर अपना कान मोड़ा। उसके चेहरे पर सौम्यतम मुस्कान खिल उठी।

"प्रोफ़ेसर साहब, बस साढ़े एक-दो मिनट का वक्त दीजिये," आवाज़ पर ज़ोर

डालकर ब्रोन्स्की फुटपाथ से बोला, "बस, एक छोटा-सा सवाल पूछना है, वह भी खास प्राणीविज्ञान का है। पेश करने की इजाज़त देंगे?"

"कीजिये पेश," व्यंग्य के साथ पेर्सिकोव ने संक्षिप्त उत्तर दिया और सोचा : "कुछ भी कहो, इस कमीने में ज़रूर कुछ अमरीकनों जैसी बात है।"

"आप मुर्ग़ियों के लिए क्या कहेंगे, प्रोफ़ेसर साहब?"

पेर्सिकोव को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह खिड़की के सिल पर बैठे, फिर उतरकर उन्होंने घण्टी बजायी और खिड़की की ओर उँगली उठाकर चिल्लाये :

"पानक्रात, इस पटरीवाले को अन्दर आने दो।"

जब ब्रोन्स्की कमरे में प्रकट हुआ तो पेर्सिकोव की कृपादृष्टि इतनी विहंगम हो चुकी थी कि वह डपटकर बोले :

"बैठ जाइये!"

और ब्रोन्स्की गदगद होकर मुस्कराता हुआ रिवाल्विंग स्टूल पर बैठ गया।

"कृपया मुझे समझाइये," पेर्सिकोव बोले, "आप खुद अपने इन अख़बारों में लिखते हैं?"

"जी, बिल्कुल सही।"

"पर मेरी समझ में यह नहीं आता कि आप लिख कैसे सकते हैं जब आपको बोलना तक नहीं आता। यह 'साढ़े एक-दो' और 'मुर्ग़ियों के लिए' क्या बला है? आप शायद 'मुर्ग़ियों के बारे में' पूछना चाहते थे?"

ब्रोन्स्की खिसियाकर हौले से हँस दिया :

"वलेन्तीन पेत्रोविच ठीक करते हैं।"

"यह कौन है वलेन्तीन पेत्रोविच?"

"साहित्य-विभाग के सम्पादक।"

"अच्छा ठीक है। खैर, मैं भी वैसे भाषाशास्त्री नहीं हूँ। आप मुर्ग़ियों के बारे में क्या खास बात जानना चाहते हैं?"

"सब कुछ जो आप बतायें, प्रोफ़ेसर साहब।"

और बस ब्रोन्स्की पेन्सिल से लैस हो गया। पेर्सिकोव की आँखों में विजय की चिंगारियों का फौव्वारा फूटा।

"आप व्यर्थ ही मेरे पास आये हैं, मैं पक्षियों का विशेषज्ञ नहीं हूँ। बेहतर होगा कि आप प्रथम विश्वविद्यालय के येमेल्यान इवानोविच पोर्तुगालोव के पास जायें। मैं खुद बहुत कम जानता हूँ..."

ब्रोन्स्की प्रशंसा भाव के साथ मुस्करा पड़ा, इस प्रकार उसने यह संकेत दिया कि वह प्रोफ़ेसर साहब के मजाक को समझ गया। "मजाक—कम!" उसने नोटबुक में घसीटा।

"खैर, अगर आपको दिलचस्पी ही है तो सुनिये। मुर्ग़ियाँ या कलगीधारी... पक्षियों

के कुल के कुक्कुट वंश की हैं। फेजेण्ट गण की..." पेर्सिकोव ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगे, वह ब्रोन्स्की की ओर नहीं बल्कि कहीं दूर देख रहे थे जहाँ उनके लिए स्वाभाविक ही था कि हज़ारों श्रोता बैठे उन्हें सुन रहे थे... "फेजेंट गण की... फाजिआनीडे हैं। वे मांस और खाल की कलगी और निचले जबड़े के नीचे दो दाढ़ियोंवाले पक्षी होते हैं. .. हुं... खैर, वैसे ठोड़ी के बीच में एक दाढ़ी भी देखने में आती है... हाँ, तो और क्या। पँख छोटे और गोलाकार होते हैं.... पूँछ औसत लम्बाई की, किंचित सीढ़ीनुमा, मैं तो उसे छप्परनुमा कहूँगा, बीच के पंख हँसिया की तरह मुड़े होते हैं... पानक्रात... पानक्रात... ज़रा माडलों के कमरे से माडल नं. 705 लाना, कटा मुर्ग़ा... खैर, आपको तो इसकी ज़रूरत नहीं?.... पानक्रात, माडल नहीं लाना... मैं आपसे फिर कहता हूँ कि मैं विशेषज्ञ नहीं हूँ, पोर्तुगालोव के पास जाइये। वैसे मैं छः प्रकार की जंगली मुर्ग़ियों को जानता हूँ... हुं... पोर्तुगालोव को ज़्यादा पता है... भारत में और मलाया द्वीप-समूह में। उदाहरण के लिए बाँकी मुर्ग़े, या काजिन्तू को लें, वह हिमालय की तलहटी में, पूरे भारत में, आसाम में, बर्मा में मिलता है... द्विपुच्छी मुर्गा या गाल्लस वेरियस, लोम्बोका, सुम्बावा और फ्लोरेस में मिलता है। और जावा द्वीप पर विलक्षण मुर्गा गाल्लुस एनेयूस होता है, भारत के दक्षिण-पूर्व में मिलनेवाले बेहद सुन्दर जोन्नेरेट मुर्ग के बारे में आपको बता सकता हूँ... बाद में मैं आपको उसकी तस्वीर दिखाऊँगा। जहाँ तक श्रीलंका का सवाल है तो वहाँ हमें स्टेनली मुर्ग मिलेगा, वह और कहीं नहीं होता।"

ब्रोन्स्की आँखें फाड़े बैठा पेन्सिल घसीट रहा था।

"और कुछ आपको बताऊँ?"

"मैं मुर्ग़ियों की बीमारियों के बारे में कुछ जानना चाहूँगा," अल्फ्रेड धीरे से फुसफुसाया।

"हुं... भई, मैं विशेषज्ञ नहीं हूँ... आप पोर्तुगालोव से पूछिये... खैर, वैसे... टेपवर्म, तरह-तरह के कीड़े, जुएँ, पिस्सु, कुक्कुट हैजा, डिप्थीरिया... निमोनिया, टी. बी., खाज... और न जाने क्या-क्या बीमारियाँ हो सकती हैं... (पेर्सिकोव की आँखों से फुलझड़ियाँ छूट रही थीं)... तरह-तरह की गिल्टियाँ, अर्बुद, तथाकथित इंग्लिश रोग, पीलिया, बाय, एकोरिअन, शेनल्याइनी पादप... बड़ी रोचक बीमारी होती है। इस बीमारी में कलगी पर फफूंद जैसे धब्बे पड़ जाते हैं।"

ब्रोन्सकी ने रंग बिरंगे रूमाल से माथे का पसीना पोंछा।

"प्रोफ़ेसर साहब, और अब की विपदा का आपके विचार से क्या कारण हैं?"

"कैसी विपदा?"

"क्या, भला आपने पढ़ा नहीं, प्रोफ़ेसर संाहब?" ब्रोन्स्की ने हैरानी के साथ पूछा और अपने बैग से, "इज्वेस्तिया" समाचारपत्र का मुसा अंक निकाला।

"मैं अख़बार नहीं पढ़ता," पेर्सिकोव ने उत्तर दिया और नाक-भौंहें सिकोड़ी।

"पर क्यों, प्रोफ़ेसर साहब?" स्नेह मिश्रित स्वर में अल्फ्रेड ने पूछा।

"क्योंकि वे बकवास लिखते हैं," बिना सोचे पेर्सिकोव ने उत्तर दिया।

"प्रोफ़ेसर साहब, आप भी क्या बात करते हैं?" ब्रोन्स्की हौले से फुसफुसाया और उसने अख़बार खोला।

"यह क्या है?" पेर्सिकोव ने पूछा और लगभग उछल ही पड़े।

अब फुलझड़ियाँ ब्रोन्स्की की आँखों से छूट रही थीं। उसने अपनी पैनी बेहद लम्बी चमचमाती उँगली से सारे पेज पर फैली सुर्खी को रेखांकित किया : 'जनतंत्र में मुर्ग़ियों की महामारी'।

"कैसे?" पेर्सिकोव ने चश्मे को माथे पर खिसकाकर पूछा।

अध्याय 6

1928 के जून में मास्को

वह जगमगाता था, बिजलियाँ नाचतीं, झिलमिलातीं। थियेटर चौक पर बसों की सफ़ेद और ट्रामों की हरी बत्तियाँ लट्टुओं की तरह नाचतीं; भूतपूर्व म्यूर और मेरीलिज डिपार्टमेण्ट स्टोर के ऊपर, उसके ऊपर बनायी गयी दसवीं मंजिल की छत पर बिजली की रंग-बिरंगी औरत कूद-कूदकर अक्षर बिखेर कर रंग-बिरंगे शब्द बना रही थी : "मज़दूरों के लिए ऋण योजना।" बोल्शोई थियेटर के सामनेवाले पार्क में जहाँ रात को रंग-बिरंगा फौवारा चलता था, धक्कामुक्की करती भीड़ का कोलाहल होता और बोल्शोई थिएटर पर लगा विराट लाउडस्पीकर क्रन्दन करता :

"लेफोर्तोवो पशुचिकित्सा इंस्टीट्यूट में बनाये गये मुर्ग़ी विरोधी टीके के विलक्षण परिणाम प्राप्त हुए हैं। आज की तारीख में... मुर्ग़ियों की मौतों की तादाद आधी रह गयी है..."

फिर लाउडस्पीकर अपनी आवाज बदलता, उसमें कोई गुर्राता, थिएटर के ऊपर हरी धारा जगमगाकर बुझती और लाउडस्पीकर भारी आवाज में शिकवा करने लगता :

"मुर्ग़ियों के प्लेग से संघर्ष का आपात आयोग गठित किया गया है जिसमें स्वास्थ्य मंत्री, पशुपालन निदेशक कामरेड चिड़ा-सूअरोव, प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव और पोर्तुगालोव. .. और कामरेड राबिनोविच शामिल हैं!... हस्तक्षेप के नये प्रयास!..." लाउडस्पीकर गीदड़ की तरह ठहाके लगाता और रोता, "मुर्ग़ियों के प्लेग के सम्बन्ध में!"

थियेटर लेन, नेग्लीन्नी सड़क और लुब्यान्का चौक सफ़ेद और बैंगनी धारियों से दमकते, किरणों के पुंज बिखरते, भोंपुओं की चीखों और धूल के बादलों से भरे होते। लोगों के झुण्ड तीखी लाल सर्चलाइटों से आलोकित नोटिसों के दीवार पर लगे बड़े-बड़े काग़ज़ों के सामने जमा होते :

"कड़ी से कड़ी जिम्मेदारी की चेतावनी देते हुए आम जनता को भोजन में मुर्ग़ी का मांस और अण्डे खाने की मनाही की जाती है। मण्डियों में उन्हें बेचने की कोशिश करते प्राइवेट व्यापारियों के ख़िलाफ़ फ़ौजदारी का मुक़दमा दायर किया जायेगा और उनकी जायदाद ज़ब्त कर ली जायेगी। सभी नागरिकों को जिनके पास अण्डे हैं, फौरन उन्हें अपने इलाके में थाने में जमा कर देना चाहिये।"

"मज़दूर समाचारपत्र" की छत पर लगे पर्दे पर आसमान तक मुर्ग़ियों का ढेर लगा था और हरे-हरे-से फायरमैन, टूटते-बिखरते, चिंगारियाँ उड़ाते, पाइपों से उन पर मिट्टी के तेल का छिड़काव करते। फिर पर्दे पर लाल लहरें तैरने लगतीं, निर्जीव धुआँ फैलता और चिथड़े-चिथड़े होकर एक धारा में तैरने लगता और पर्दे पर जगमगाता उपशीर्षक चमकता : "खोदीन्का मैदान में मुर्ग़ियों के शवों का दाह-संस्कार।"

दो बार, दोपहर और शाम के खाने के लिए बन्द होनेवाली, रात के तीन बजे तक खुली दुकानों के जगमगाते, दहकते शो केसों के बीच—"अण्डों की दुकान। गारण्टीशुदा माल"—के बोर्डों के नीचे की तख्तों से जड़ी खिड़कियाँ अन्धे की फूटी आँखों जैसी लगती थीं। अक्सर, खतरे की आभास देनेवाली भोंपू बजाती, भारी बसों को पीछे छोड़ती, मिलिशिया के सिपाही के पास सरसराती गाड़ियाँ गुजरती जिन पर लिखा होता : "स्वास्थ्य विभाग, मास्को। एम्बुलेंस।"

"एक और ने सड़े अण्डे भकोसे हैं," भीड़ में फुसफुसाहट फैल जाती।

पेत्रोवस्की बाजार में विश्वप्रसिद्ध रेस्तराँ "अम्पीर" हरी और नारंगी बत्तियों से जगमगाता, उसकी मेज़ों पर, लम्बे तारवाले टेलीफ़ोनों के पास शराब के धब्बों से मैले गत्ते के नोटिस पड़े होते : "आदेशानुसार आमलेट नहीं है। ताजे ओएस्टर स्टाक में हैं।"

एर्मिताज में जहाँ मनकों की तरह चीनी कण्डीलें निर्जीव घुटी हरियाली में अपना दीन प्रकाश जलाती आँखों को चकाचौंध करनेवाले मंच पर कलाकार श्राम्स और करमान्चिकोव क़वि आर्दो और आर्गूएव की तुकबन्दियाँ गाते :

ओ मेरी अम्मा,
करूँगा क्या मैं बिना अण्डों के??—

और पैरों से ताल निकालते।

दिवगन्त व्सेवोलोद मेइरहोल्द के थियेटर ने बिजली का रंग-बिरंगा इश्तहार लगाया जो बताता था कि थियेटर में लेखक एरेनदोर्ग का नाटक 'मुर्ग़ी की मौत' दिखाया जा रहा है जिसका मेइरहोल्द के शिष्य, जनतंत्र के सम्मानित दिग्दर्शक कुख्तेरमान ने मंचन किया है, जैसा कि विदित है 1927 में पुश्किन के नाटक 'बोरिस गोदुनोव' के मंचन के समय उन हिण्डोलों के गिरने से, जिन पर नंगे दरबारी बैठे थे, मेइरहोल्द की मृत्यु हो गयी थी। पास ही में रंग-बिरंगे इश्तहारों से झिलमिलाते और अधनंगी नारी देहों से जगमगाते "अक्वारिउम" में मुक्ताकाश मंच पर तालियों की गड़गड़ाहट के

बीच लेखक लेनीवत्सेव की रचना 'मुर्गी के बच्चे' चल रही थी। और त्वेरस्काया पर थोबड़ों की बगल में लालटेनें लटकाये सर्कस के गधों की क़तार चल रही थी, वे चमचमाते विज्ञापन ढोकर ले जा रहे थे। कोर्श के थियेटर में फिर से रोस्तान का 'शंटेक्ले' दिखाया जाने लगा था।

मोटरों के बीच घुसकर अख़बार बेचनेवाले लड़के चिल्ल-पों मचाते चीखते थे :

"तहखाने में खौफ़नाक खोज! पोलैण्ड द्वारा खौफ़नाक जंग की तैयारी!! प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव के खौफ़नाक प्रयोग!!"

भूतपूर्व निकीतिन के सर्कस में लीद की मोहक गन्धवाले कत्थई चिकने रिंग पर मुर्दे जैसे सफ़ेद चेहरेवाला जोकर बोम चारखाने में फूले मोटे बिम से कहता :

"मैं जानता हूँ कि तुम इतने उदास क्यों हो!"

"कों?" बिम पूछता।

"तुमने अण्डे ज़मीन में गाड़े थे पर पन्द्रह नम्बर थाने के सिपाहियों ने उन्हें ढूँढ़ लिया।"

"हा-हा-हा," सर्कस ऐसे ठहाकों से भर जाता कि रगों में हर्ष और विषाद के कारण खून पतला हो जाता, सर्कस के पुराने पण्डाल में लटके झूले और मकड़ी के जाले लहलहाने लगते।

"हो-प्प!" जोकर गला फाड़कर चिल्लाते और सफ़ेद उम्दा घोड़ा किरमिजी रंग के कसे कपड़ों में सुघड़ टाँगों पर खड़ी अद्‌भुत सुन्दरतावाली औरत को बाहर उठाकर लाता।

सब कुछ से बेखबर, किसी की ओर देखे बिना, वेश्याओं की फुसलाहट का कोई उत्तर दिये बिना, प्रेरणा से ओतप्रोत एकाकी, ख्याति का अप्रत्याशित ताज पहने पेर्सिकोव मोखोवाया सड़क से मानेज की बिजली की घड़ी की ओर रास्ता बनाते चल रहे थे। यहाँ अपने विचारों में खोये, अपने गिर्द देखे बिना चलते पेर्सिकोव एक अजीब, पुराने फैशन के आदमी से टकरा गये, उस आदमी की कमर पर लटके रिवाल्वर के लकड़ी के कबूर से टकराकर उनकी उँगलियों को बड़ी चोट लगी।

"उफ़!" पेर्सिकोव के मुँह से आह निकली, "माफ़ कीजिये।"

"माफ़ी माँगता हूँ," टकरानेवाले ने अप्रिय स्वर में उत्तर दिया और जैसे-तैसे वे लोगों की खिचड़ी में पीछे हटे। प्रेचीस्तेन्का की राह पकड़कर प्रोफ़ेसर फौरन अपनी टक्कर के बारे में भूल गये।

अध्याय 7
रोक

पता नहीं, क्या लेफोर्तोवो के टोके सचमुच अच्छे, या समारा के दस्ते कुशल थे, या कलूगा और वोरोनेझ में अण्डे खरीदनेवाले व्यापारियों के ख़िलाफ़ उठाये गये कड़े कदम सही निकले, या मास्को का आपात आयोग सफलता से काम कर रहा था, पर यह सुविदित है कि अल्फ्रेड के साथ पेर्सिकोव की पिछली भेंट के दो सप्ताह बाद, मुर्ग़ियों के मामले में जनतंत्रों के संघ में सब बिल्कुल साफ़ हो चुका था। कहीं-कहीं दूर-दराज कस्बाई शहरों में मुर्ग़ियों के यतीम पंख पड़े थे, जिन्हें देखकर आँखों में आँसू भर आते, हाँ, और अस्पतालों में आख़िरी लालची खून की कै और दस्त बन्द करके स्वास्थ्य-लाभ कर रहे थे। सौभाग्य से सारे जनतंत्र में आदमियों की मौतें हज़ार से ज़्यादा नहीं हुई होंगी। व्यापक दंगे भी नहीं हुए। हाँ, यह सच है कि वोलोकोलाम्स्क में एक पैगम्बर प्रकट हुआ था जिसने घोषणा की थी कि मुर्ग़ियों की महामारी यह सिर्फ़ कमिसारों की करतूत है, पर उसे खास लोकप्रियता नहीं मिली। वोलोकोलाम्स्क के बाज़ार में लुगाइयों से मुर्ग़ियाँ छीनते कुछ मिलीशियावालों की धुनाई कर दी गयी और स्थानीय डाकतार घर की खिड़कियों के शीशे फोड़ दिये गये। सौभाग्य से वोलोकोलाम्स्क के मुस्तैद ग. प. उ. ने कार्रवाई की जिसके फलस्वरूप, सबसे पहले तो पैगम्बर ऐसा ग़ायब हुआ कि उसका नामोनिशान न बचा और दूसरे, तारघर की खिड़कियों में शीशे लग गये।

उत्तर में अर्खान्गेल्स्क और स्यूम्किन वीसेल्की तक पहुँचकर महामारी अपने आप रुक गयी, इस वजह से कि आगे जाने का रास्ता ही नहीं था—श्वेत सागर में, सुविदित है, मुर्ग़ियाँ होती ही नहीं। व्लादीवोस्तोक में भी वह रुक गयी, क्योंकि आगे महासागर फैला था। सुदूर दक्षिण में वह ओर्दूबात, जुल्फा और काराबुलाक के झुलसी मरुभूमि तक पहुँचकर लुप्त हो गयी। और पश्चिम में—बड़ी हैरानी की बात है, वह पौलेण्ड और रोमानिया की ऐन सीमाओं पर जाकर रुक गयी।

आबोहवा वहाँ की भिन्न थी या इसमें पड़ोसी सरकारों द्वारा सीमा बन्द किये जाने ने भूमिका निभायी, पर तथ्य यह है कि महामारी आगे नहीं गयी। विदेशी प्रेस बड़े ज़ोर-शोर से, चस्के ले-लेकर इतिहास में अब तक अनसुनी महामारी पर वाद-विवाद कर रहा था और सोवियत जनतंत्रों की सरकार, बिना शोर-शराबे के, कमर कसकर काम कर रही थी। कुक्कुट प्लेग से संघर्ष के आपात आयोग का नाम बदलकर अब जनतंत्र में कुक्कुट पालन के विकास और पुनर्स्थापना का आपात आयोग कर दिया गया, उसमें सोलह कामरेडों की आपात तिकड़ी भी शामिल कर दी गयी। "मुर्ग समाज" की स्थापना की गयी, पेर्सिकोव और पोर्तुगालोव उसके मानद उपाध्यक्ष बनाये

गये। अख़बारों में उनकी तस्वीरों के नीचे ये सुर्खियाँ छपीं : "विदेशों से अण्डों का व्यापक आयात।" और "मिस्टर यूज अण्डा अभियान को विफल करने पर उतारू।" मास्को में पत्रकार कोलेच्किन के व्यंग्यलेख ने धूम मचा दी जो इन शब्दों से समाप्त होता था : "हमारे अण्डों पर न ललचाइये, मिस्टर यूज–आपके पास तो अपने हैं!"

पिछले तीन सप्ताहों में प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव काम कर-करके बिल्कुल चूर हो गये थे। मुर्ग़ियों की घटनाओं ने उनके सामान्य जीवन को भंग रक दिया और उनके कन्धों पर दोहरा बोझ लाद दिया। पूरी की पूरी शामें उन्हें मुर्ग़ी आयोगों की बैठकों में काम करना पड़ता और समय-समय पर कभी अल्फ्रेड ब्रोन्स्की से और कभी यांत्रिक मोटे से लम्बी बातचीतों को सहना पड़ता। प्रोफ़ेसर पोर्तुगालोव और रीडर इवानोव तथा बोर्नगार्त के साथ उन्हें प्लेग के विषाणुओं की खोज के लिए मुर्ग़ियों की चीर-फाड़ करनी पड़ी और तीन शामों में उन्होंने झटपट एक पुस्तिका लिख डाली : "प्लेग प्रभावित मुर्ग़ियों के जिगर में परिवर्तन।"

मुर्ग़ियों के क्षेत्र में पेर्सिकोव बिना किसी खास उत्साह के काम कर रहे थे, यह समझा भी जा सकता है–उनके दिमाग़ में कुछ और ही भरा था–प्रमुख और महत्वपूर्ण–वह, जिससे मुर्ग़ियों की विपदा ने उन्हें जुदा कर दिया, अर्थात लाल किरण। अपने वैसे भी खराब स्वास्थ्य को बिगाड़ते हुए, नींद और भोजन के समय में कटौती करके, कभी-कभी घर जाये बिना ही संस्थान की प्रयोगशाला में बिछे मोमजामे से मढ़े सोफे पर ही सोकर, पेर्सिकोव रात-रात जागकर कक्षों और माइक्रोस्कोपों में व्यस्त रहते।

जुलाई के अन्त तक दौड़धूप कुछ कम हो गयी। नामान्तरित आयोग का काम सामान्य प्रवाह में चल पड़ा और पेर्सिकोव अपने भंग काम में जुट गये। माइक्रोस्कोपों में नये स्लाइड लगाये गये, कक्ष में लाल किरण की रोशनी में मछलियों और मेंढकों के अण्डे दिन दूने रात चौगुने बढ़ रहे थे। विमान द्वारा केनिग्सबर्ग से खास आर्डर पर बनाये गये शीशे लाये गये और जुलाई के अन्तिम दिनों में इवानोव के निर्देशन में मैकेनिकों ने नये बड़े कक्ष बनाये जिनमें सिगरेट के पैकेट जितनी मोटी किरण फूटकर पूरे एक मीटर तक चौड़ी हो जाती थी। पेर्सिकोव ने खुश होकर हाथ मसले और किन्हीं रहस्यमय और जटिल प्रयोगों की तैयारी करने लगे। सबसे पहले उन्होंने शिक्षा मंत्री को फ़ोन किया और चोंगे ने उन्हें बड़ी शिष्टता से हर प्रकार की सहायता का आश्वासन दिलाया, फिर पेर्सिकोव ने टेलीफ़ोन पर सर्वोच्च आयोग के अधीन पशुपालन विभाग के निदेशक कामरेड चिड़ा-सूअरोव को बुलाया। चिड़े की ओर से पेर्सिकोव को बेहद हार्दिक ध्यान मिला। बात प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव के लिए विदेशों में बड़े-बड़े आर्डर करने की चल रही थी। चिड़े ने टेलीफ़ोन में कहा कि वह फौरन बर्लिन और न्यूयार्क तार भेज रहा है। इसके बाद क्रेमलिन से फोन करके पूछा गया कि पेर्सिकोव का काम कैसे चल रहा है, रोबीली और स्नेहिल आवाज ने पूछा कि पेर्सिकोव को मोटर गाड़ी की तो ज़रूरत नहीं।

"नहीं, शुक्रिया। मैं ट्राम में सफर करना बेहतर समझता हूँ," पेर्सिकोव ने उत्तर दिया।

"पर क्यों?" रहस्यमय आवाज ने पूछा और कृपापूर्वक मुस्करा दिया।

आम तौर पर पेर्सिकोव के साथ सब या तो आदर और भय के साथ, या हालाँकि बड़े ही सही पर अभी बच्चे की तरह स्नेहिल मुस्कान के साथ बात करते थे।

"वह तेज़ चलती है," पेर्सिकोव ने उत्तर दिया, जिसके बाद टेलीफ़ोन में भारी आवाज बोली :

"जैसी आपकी मर्जी।"

एक और सप्ताह बीत गया, निःस्पंद होती कुक्कुट समस्याओं से अधिकाधिक दूर होते हुए, वह पूरी तरह किरण के अध्ययन में लीन हो गया। अनिद्रा और थकान के कारण उनका सिर उजला, एक तरह से पारदर्शी और हल्का हो गया। अब लाल घेरे उनकी आँख से उतरते ही नहीं थे, लगभग हर रात वह अब संस्थान में ही बिताते। बस एक बार वह अपने प्राणीवैज्ञानिक आश्रय से निकले थे, प्रेचीस्तेन्का पर वैज्ञानिक भवन के बड़े हाल में अपनी किरण और अण्डकोश पर उसके प्रभाव के बारे में रिपोर्ट देने के लिए। यह सनकी प्राणीविज्ञानी की विशाल विजय थी। तालियों की गड़गड़ाहट से स्तम्भोंवाले सभागार की छतों से झड़कर कुछ गिर रहा था, फुफकारते आर्क लैम्पों की रोशनी की बाढ़ वैज्ञानिकों के काले स्मोकिंग सूटों और महिलाओं के शुभ्र परिधानों को धो रही थी। मंच पर भाषण-पीठ के पास काँच की मेज़ पर बिल्ली जितना बड़ा मेंढक तश्तरी में बैठा हाँफ रहा था। मंच पर पर्चियाँ फेंकी जा रही थीं। उनके बीच सात प्रेम के बारे में थीं और उन्हें पेर्सिकोव ने फाड़ दिया। वैज्ञानिक के आयोग का अध्यक्ष उन्हें जबर्दस्ती खींचकर मंच पर ले जाता ताकि वह झुककर श्रोताओं के अभिनन्दन का उत्तर दें। पेर्सिकोव झुँझलाहट के साथ झुक रहे थे, उनके हाथ पसीने से तर थे और काली टाई की गाँठ ठोड़ी के नीचे नहीं बल्कि बायें कान के पीछे थी। उनके सामने साँसों के कोहरे में लिपटे सैकड़ों पीले चेहरे और मर्दों की सफ़ेद छातियाँ थीं और अचानक पिस्तौल का पीला कबूर चमका और श्वेत स्तम्भ के पीछे ओझल हो गया। पेर्सिकोव ने उस पर कोई खास ध्यान नहीं दिया और वे उसके बारे में भूल गये। पर रिपोर्ट के बाद, जीने के किरमिजी कालीन पर उतरते हुए अचानक उनकी तबीयत खराब हो गयी। पल भर के लिए स्वागत-कक्ष में लटके जगमगाते फानूस को किसी काली छाया ने ढक दिया और पेर्सिकोव पर बेहोशी छाने और मितली आने लगी... उन्हें लगा कि कहीं कुछ जल रहा है और उनकी गर्दन पर चिपचिपा और गर्म लहू बह रहा है... काँपते हाथ से प्रोफ़ेसर ने जीने की रेलिंग पकड़ ली।

"आपकी तबीयत खराब हो गयी, व्लादीमीर इपात्येविच?" चारों ओर चिन्तित स्वर लपके।

"नहीं-नहीं," पेर्सिकोव होश सम्भालते हुए बोले, "बस, थकान की वजह से... हाँ.

कृपया एक गिलास पानी दे दीजिये।"

* * *

अगस्त का खूब चटकीली धूपवाला दिन था। वह प्रोफ़ेसर के काम में विघ्न डाल रहा था इसलिए पर्दे बन्द थे। एक लचीले डण्डेवाला लैम्प औजारों और शीशों से भरी काँच की मेज़ पर प्रकाश का चुभता पुँज बिखेर रहा था। रिवाल्विंग चेयर की पीठ पर बोझ डालकर निढाल पेर्सिकोव सिगरेट फूँक रहे थे और धुएँ के बादलों के पार से थकान से निःस्पंद परन्तु सन्तुष्ट आँखों से कक्ष के अधखुले दरवाज़े को ताक रहे थे, जहाँ प्रयोगशाला की वैसे भी घुटन भरी, बासी हवा को कुछ और गर्म करती लाल किरण का पुंज पड़ा था।

दरवाज़े पर दस्तक हुई।

"क्या?" पेर्सिकोव ने पूछा।

दरवाज़ा हौले से चरमराकर खुला और पानक्रात अन्दर आया। वह सावधान की मुद्रा में खड़ा हो गया, देवता के समक्ष आकर उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं और वह यह बोला :

"वहाँ, प्रोफ़ेसर साहब, रोक आपसे मिलने आया है।"

वैज्ञानिक के कपोलों पर मुस्कान जैसी कुछ चीज़ प्रकट हुई। वह आँखें मिचमिचाकर बोले :

"बड़ी दिलचस्प बात है। पर मैं व्यस्त हूँ।"

"वह कहते हैं कि क्रेमलिन का सरकारी काग़ज़ लाये हैं।"

"काग़ज़ के साथ रोक? बड़ी विरली बात है," पेर्सिकोव के मुँह से निकला और वह यह बोले, "अच्छा, लाओ उसे यहाँ!"

"जैसा हुक्म," पानक्रात ने उत्तर दिया और साँप की तरह चुपचाप दरवाज़े के बाहर खिसक गया।

मिनट भर बाद वह फिर चरमराया और देहरी पर एक आदमी प्रकट हुआ। पेर्सिकोव रिवाल्विंग चेयर पर चरमराये और मुड़कर कन्धे के ऊपर से उन्होंने आंगतुक पर चश्मे के ऊपर से नज़र डाली। पेर्सिकोव का ज़िन्दगी से कोसों दूर का रिश्ता था—उन्हें उसमें कोई रुचि थी ही नहीं, पर इस समय पेर्सिकोव तक का ध्यान कमरे में घुसे आदमी की प्रमुख और अहम खासियत की ओर खिंचा। वह अजीब पुराने फ़ैशन का था। 1919 में राजधानी की सड़कों पर ऐसा आदमी बिल्कुल समसामयिक हो सकता था, 1924 में, उसके प्रारम्भ में भी उसे सहा जा सकता था, पर 1928 में वह विचित्र लगता था। उस जमाने में जब सर्वहारा का सबसे पिछड़ा तबका—नानबाई तक कोट पहनता था, जब पुराने फैशन की बन्द गले की ट्यूनिक भी विरली थी जिसे 1924 के अन्त में तिलांजलि दी जा चुकी थी, आगंतुक ने चमड़े का डबल ब्रेस्ट

जाकेट, हरी पतलून पहन रखी थी, पाँवों में पायताबे और देसी जूते थे तथा कूल्हे पर पीले टूटे-फूटे कबूर में बड़ी-सी पुराने डिजाइन की "मौजर" पिस्तौल थी। आगंतुक के चेहरे का पेर्सिकोव पर वही प्रभाव हुआ, जो सब पर होता था—अत्यन्त नकारात्मक प्रभाव। छोटी-छोटी आँखें सारी दुनिया को हैरानी पर साथ ही आत्मविश्वास के साथ देखती थीं, चपटे पाँवोंवाली छोटी-छोटी टाँगों में किंचित लम्पटता थी। खुरच-खुरचकर दाढ़ी बनाने के कारण चेहरा नीला-सा था। फौरन पेर्सिकोव की नाक-भौं चढ़ गयी। उन्होंने बेरहमी से रिवाल्विंग चेयर को घुमाया और आगंतुक को अब चश्मे के ऊपर से नहीं बल्कि उसके अन्दर से देखा और बोले :

"आप काग़ज़ लाये हैं? कहाँ है वह?"

जो कुछ यहाँ था उसे देखकर आगंतुक शायद स्तब्ध रह गया था। वैसे तो उसमें झिझकने की क्षमता कम ही थी, पर यहाँ वह झिझक गया। उसकी आँखें बताती थीं कि सबसे पहले उसे 12 खानों की छत तक ऊँची अलमारी ने चकित किया जो पूरी की पूरी किताबों से खचाखच भरी थी। इसके बाद, बेशक उसे कक्षों ने चकित किया जिनमें, नर्क की तरह शीशों में पनपकर मोटी हुई सिन्दूरी किरण लपलपा रही थी। और पेर्सिकोव ने भी जो झुटपुटे में लैम्प से निकलते प्रकाश के पैने पुंज के पास रिवाल्विंग चेयर पर बैठे काफ़ी विचित्र और भव्य लग रहे थे। आगंतुक ने उन पर नज़र गड़ायी, जिसमें आत्मविश्वास को भेदती हुई आदर की चिंगारियाँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही थी, उसने कोई काग़ज़ नहीं दिया बल्कि बोला :

"मैं अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच रोक हूँ!"

"अच्छा? तो क्या हुआ?"

"मुझे आदर्श राजकीय फार्म 'लाल किरण' का निदेशक नियुक्त किया गया है," आगंतुक ने स्पष्ट किया।

"तो?"

"और मैं, कामरेड, आपके पास सीक्रेट चिट्ठी लेकर आया हूँ।"

"बड़ी दिलचस्प बात है। अगर सम्भव है तो संक्षेप में बताइये।"

"कामरेड" शब्द से पेर्सिकोव इतने अनाभ्यस्त हो चुके थे कि अब वह उनके कान को नहीं सुहाया। वह प्रकट रूप से झुंझला उठे।

आगंतुक ने जाकेट के बटन खोलकर उम्दा मोटे काग़ज़ पर छपा आदेश बाहर निकाला। उसे उसने पेर्सिकोव की ओर बढ़ा दिया। फिर निमंत्रण के बिना स्टूल पर बैठ गया।

"मेज़ को मत हिलाइयेगा," घृणा के साथ पेर्सिकोव बोले।

आगंतुक ने सहमकर मेज़ पर नज़र डाली जिसके दूसरे छोर पर नम काले छेद पन्नों की तरह किसी की हरी निर्जीव-सी आँखें टिमटिमा रही थीं। वे शीत लहर फैला रही थीं।

काग़ज़ को पढ़ते ही पेर्सिकोव कुर्सी से उठे और टेलीफ़ोन की ओर लपके। कुछ सेकेण्ड बाद वह जल्दी-जल्दी और बेहद झुंझलाहट में कह रहे थे :

"माफ़ कीजिये.... मैं यह नहीं समझ पाता... यह कैसे हो सकता है? मैं... मेरी सलाह, सहमति के बिना... शैतान ही जाने कि वह क्या कर बैठे!!"

यह सुनते ही आगंतुक बुरा मानकर स्टूल पर घूमा।

"मैं माफ़ी चाहता हूँ," उसने बोलना शुरू किया, "मैं निदेश..."

पर पेर्सिकोव ने उँगली का हुक झाड़कर उसे चुप करा दिया और बोलते गये :

"माफ़ कीजिये पर मेरी समझ में यह नहीं आता... मैं, अन्तत : इसका कड़ा विरोध करता हूँ। मैं अण्डों पर प्रयोग करने की अनुमति नहीं देता... जब तक मैं उन्हें नहीं कर लेता..."

चोंगे में कुछ टर्र-टर्र, खट-खट हो रही थी, दूरी तक से यह स्पष्ट था कि चोंगे से सुनायी देती आवाज, कृपाभाव के साथ किसी छोटे बच्चे से बोल रही थी। अन्त यह हुआ कि लाल पेर्सिकोव ने धड़ाक से चोंगा टाँग दिया और उसके पास दीवार से बोले :

"मेरे हाथ साफ़ हैं।"

वह मेज़ के पास लौटे, काग़ज़ उठाया, चश्मे के ऊपर से उसे फिर से ऊपर से नीचे तक पढ़ डाला, फिर चश्मे से नीचे से ऊपर तक और अचानक चीखे :

"पानक्रात!"

पानक्रात दरवाज़े में ऐसे प्रकट हुआ मानो नाटक मंच पर चढ़ा हो। पेर्सिकोव उसकी ओर देखकर चिल्लाये :

"पानक्रात, बाहर जाओ!"

और पानक्रात चेहरे पर तनिक भी आश्चर्य दर्शाये बिना ग़ायब हो गया।

फिर पेर्सिकोव आगंतुक की ओर मुड़े और बोले :

"जैसी आपकी इच्छा... मुझे स्वीकार है। मेरा इससे कोई वास्ता नहीं। वैसे भी मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं।"

आगंतुक को प्रोफ़ेसर से इतनी ठेस नहीं पहुँची जितनी कि हैरानी हुई।

"माफ़ी चाहता हूँ। उसने बोलना शुरू किया, "कामरेड आप भी?..."

"आपने क्या कामरेड-कामरेड लगा रखा है..." कुढ़कर पेर्सिकोव बड़बड़ाये और चुप हो गये।

"देखो तो इसे," रोक के चेहरे पर लिखा था।

"माफ़..."

"हाँ, तो कृपया देखिये," पेर्सिकोव ने टोककर कहा। यह आर्क लैम्प है। नेत्रक को आगे-पीछे करके इससे आपको," पेर्सिकोव ने कैमरे जैसे कक्ष के ढक्कन को खटाक से खोला, "मिलेगा किरण पुँज जिसे आप लैंसों को आगे-पीछे करके संकेन्द्रित कर सकते हैं, यह रहा नं. 1... और दर्पण नं. 2," पेर्सिकोव ने किरण बुझा दी, फिर

उसे एस्बेस्टस के कक्ष के फ़र्श पर जलाया, "और फ़र्श पर किरण के प्रकाश में आप जो चाहे रखकर अपने प्रयोग कर सकते हैं। बेहद आसान है न?"

पेर्सिकोव व्यंग्य और तिरस्कार व्यक्त करना चाहते थे पर आगंतुक ने उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया, वह चमकती आँखों से गौर के साथ कक्ष का बारीकी से मुआयना कर रहा था।

"बस यह चेतावनी देता हूँ," पेर्सिकोव आगे बोले, "किरण से हाथों को बचाना चाहिये, क्योंकि मेरे निरीक्षणों के अनुसार, उससे एपीथीलियम का फैलाव होता है.. और वह घातक होता है या नहीं, खेद है कि यह मैं अभी नहीं निश्चित कर पाया हूँ।"

यह सुनते ही आगंतुक ने झट से अपने हाथों को पीठ पीछे छिपा लिया और प्रोफ़ेसर के हाथों पर नज़र डाली। वे पूरे के पूरे टिंक्चर आयोडिन से जले हुए थे, और दायें हाथ की कलाई पर तो पट्टी भी बँधी हुई थी।

"पर प्रोफ़ेसर, आपने यह क्या कर डाला?"

"आप कुजनेत्स्की पुल पर श्वाबे की दुकान से रबड़ के दस्ताने खरीद सकते हैं," प्रोफ़ेसर ने झुंझलाकर कहा। "इसकी चिन्ता करना मेरा फर्ज नहीं है।"

बस, तभी पेर्सिकोव ने आगंतुक को ऐसे देखा मानो आतशी शीशे से मुआयना कर रहे हों।

"आप टपके कहाँ से? वैसे... आप ही क्यों?.."

अन्ततः रोक बेहद बुरा मान ही गया।

"माफ़..."

"आख़िर जानना तो चाहिये कि माज़रा क्या है?!... आप इस किरण के पीछे क्यों पड़े हैं?.."

"क्योंकि यह राजकीय महत्व का मामला है..."

"अच्छा। राजकीय? तब... पानक्रात!" और जब पानक्रात हाजिर हुआ :

"ठहरो, मैं सोचके बताता हूँ।"

और पानक्रात चुपचाप गायब हो गया।

"मैं," पेर्सिकोव बोले, "एक बात नहीं समझ पा रहा : इतनी जल्दबाजी और गोपनियता की ज़रूर क्यों है?"

"आपने, प्रोफ़ेसर, मेरी मत मार दी," रोक ने उत्तर दिया, "आप तो जानते ही हैं कि सारी मुर्ग़ियाँ मर गयीं, एक भी नहीं बची।"

"तो क्या हुआ?" पेर्सिकोव चीखकर बोले, "क्या आप उन्हें पल भर में पुनर्जीवित करना चाहते हैं? और उस किरण की मदंद से ही क्यों जिसका अभी ठीक से अध्ययन भी नहीं हुआ?"

"कामरेड प्रोफ़ेसर," रोक ने उत्तर दिया, "कसम से, आप मुझे गड़बड़ा रहे हैं। मैं

आप से कहता हूँ कि राज्य के लिए यह ज़रूरी है कि वह अपने यहाँ फिर से मुर्ग़ीपालन शुरू करे क्योंकि विदेशों में हमारे बारे में तरह-तरह की बेहूदी बातें लिखी जा रही हैं। हाँ-हाँ।"

"लिखने दो उन्हें..."

"आप भी कैसे बातें करते हैं," रोक ने सिर हिलाकर रहस्यपूर्ण लहजे में उत्तर दिया।

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि अण्डों से मुर्ग़ियाँ पैदा करने का ख़्याल किस को सूझा..."

"मुझे," रोक ने उत्तर दिया।

"आ-हा... ठी ऽऽक... पर क्यों अगर आपको इसका उत्तर देने में आपत्ति नहीं? किरण के गुणों के बारे में आपको पता कहाँ से चला?"

"प्रोफ़ेसर, मैं आपकी रिपोर्ट सुनने गया था।"

"मैंने अण्डों के साथ अभी कुछ नहीं किया!... बस तैयारी ही कर रहा हूँ!"

"भगवान की कसम, सफल होगा," अचानक रोक विश्वास और हार्दिकता के साथ बोला, "आपकी किरण इतनी प्रसिद्ध है कि चूज़ों को ही नहीं चाहो तो हाथियों को भी पैदा कर डालो।"

"अच्छा, सुनिये," पेर्सिकोव बोले, "आप प्राणीविज्ञानी तो नहीं हैं? नहीं? बड़े दुःख की बात है... आप बड़े साहसिक प्रयोगकर्ता बन सकते थे... हाँ... आप बस जोखिम उठा रहे हैं... असफलता का मुँह देखने का... और मेरा समय बरबाद कर रहे हैं..."

"हम आपको कक्ष वापस कर देंगे। और क्या चाहिये?"

"कब?"

"अरे, बस पहली खेप पैदा होते ही।"

"आप कितने विश्वास के साथ यह कह रहे हैं! ठीक है। पानक्रात!"

"मैं अपने साथ आदमी लाया हूँ," रोक बोला, "पहरेदारों को भी..."

शाम तक पेर्सिकोव की प्रयोगशाला यतीम हो गयी... मेज़ें खाली हो गयीं। रोक के आदमी तीन बड़े कक्ष उठाकर ले गये, प्रोफ़ेसर के लिए वे केवल पहलेवाला, उनका छोटा-सा कक्ष छोड़ गये जिससे उन्होंने अपने प्रयोग शुरू किये थे।

जुलाई का दिन ढलता जा रहा था, संस्थान पर कब्ज़ा करके साँझ का झुटपुटा गलियारों से भरता जा रहा था। प्रयोगशाला में क़दमों की एकरस आहट सुनायी पड़ रही थी—यह पेर्सिकोव, बिजली जलाये बिना, खिड़की से दरवाज़े तक उस बड़े कमरे को नाप रहे थे... बड़ी अजीब बात थी : उस शाम को न जाने क्यों संस्थान में रहनेवाले लोगों और जीवों पर विषादपूर्ण उदासी छा गयी। न जाने क्यों भेकों ने इतना मातंमी सहगान छेड़ा और खौफ़नाक व चेतावनी भरी टर्र-टर्र की। पानक्रात को गलियारों में दौड़-दौड़कर विषहीन साँप को पकड़ना पड़ा तो अपनी पेटी से भाग निकला था और

जब उसने उसे पकड़ लिया तो साँप का हुलिया ऐसा था कि वह, बस नाक की सीध में यहाँ से कहीं भी भागने को तैयार था।

गहरे झुटपुटे में पेर्सिकोव के कमरे से घण्टी बजने की आवाज सुनायी पड़ी। पानक्रात देहरी पर प्रकट हुआ और उसे विचित्र दृश्य दिखायी पड़ा। प्रयोगशाला के बीचोंबीच एकाकी वैज्ञानिक मेज़ों को ताक रहा था। पानक्रात खाँसकर निश्चल खड़ा हो गया।

"देखा, पानक्रात," खाली मेज़ की ओर इशारा करके पेर्सिकोव बोले।

पानक्रात के बदन में सिहरन दौड़ गयी। उसे लगा कि झुटपुटे में प्रोफ़ेसर की आँखें रो-रोकर लाल हो गयीं। यह कितना असामान्य, कितना खौफ़नाक था।

"जी हाँ," रुआँसे स्वर में पानक्रात ने उत्तर दिया और सोचा :

"बेहतर होगा कि तू मुझ पर चिल्ला ही पड़ता!"

"देखो," पेर्सिकोव फिर से बोले और उनके होंठ उस बच्चे की तरह काँपे जिसका कोई प्रिय खिलौना बिना बात छीन लिया गया हो।

"तुम्हें पता है, प्यारे पानक्रात," पेर्सिकोव खिड़की की ओर मुँह मोड़कर बोले, "बीवी मेरी, जो पन्द्रह साल पहले मुझे छोड़कर चली गयी थी, वह ड्रामा कम्पनी में भरती हो गयी थी, और पता चला अब मर गयी... किस्सा यह है, पानक्रात प्यारे.. मुझे चिट्ठी मिली है..."

भेक करुण क्रन्दन कर रहे थे और झुटपुटा प्रोफ़ेसर को अपनी चादर में लपेट रहा था, और लो आ गयी वह...रात। मास्को... कहीं-कहीं खिड़कियों में सफ़ेद गोले जलने लगे थे... दुविधा में पड़ा पानक्रात डर के मारे सावधान की मुद्रा में उदास खड़ा था...

"पानक्रात, जाओ," मुश्किल से प्रोफ़ेसर बोले और उन्होंने हाथ हिला दिया, "जाओ, सो जाओ प्यारे, दुलारे पानक्रात।"

और रात छा गयी। न जाने क्यों पानक्रात पँजों के बल दौड़कर प्रयोगशाला से निकला और दौड़ा-दौड़ा अपनी कोठरी में पहुँचा, कोने में पड़े गूदड़ों को टटोलकर उसने कड़वी रूसी दारू की खुली बोतल निकाली और एक ही साँस में कोई गिलास भर पी डाली। ऊपर से उसने नमक के साथ रोटी खायी और आँखों में उसकी हल्की-सी खुशी उतर आयी।

बहुत रात को, आधी रात के आसपास टिमटिमाती रोशनी से भरे स्वागत कक्ष में बेंच पर नंगे पाँव बैठा पानक्रात छींट की कमीज के नीचे अपनी छाती को खुजाते हुए जागते ड्यूटीवाले हैट को बता रहा था :

"बेहतर होता कि जान से ही मार डालता, कसम से..."

"क्या सचमुच रो रहा था?" कौतूहल कें साथ हैट पूछ रहा था।"

"कसम भगवान की," पानक्रात यकीन दिला रहा था।

"महान वैज्ञानिक है," हैट ने सहमति व्यक्त की, "जाहिर है मेंढक बीवी की जगह

नहीं ले सकता।"

"हरगिज नहीं," पानक्रात ने अपनी सहमति व्यक्त की।

फिर कुछ सोचकर वह बोला :

"मैं अपनी लुगाई को यहाँ बुलवाने की सोच रहा हूँ... गाँव में बैठी वह क्या करेगी। हाँ, वह इन जानवरों से बहुत डरती है..."

"यह भी कोई कहने की बात है, बेहद घिनौने हैं," हैट ने सहमति व्यक्त की।

वैज्ञानिक की प्रयोगशाला से एक भी आहट नहीं सुनायी पड़ रही थी। और रोशनी भी वहाँ नहीं थी, दरवाज़े के नीचे से उसकी पट्टी नहीं दिख रहा थी।

अध्याय 8

राजकीय फ़ार्म की घटनाएँ

नहीं, स्मोलेन्स्काया प्रान्त को ही लें, चढ़े अगस्त से बढ़िया मौसम आपको नहीं मिलेगा। सुविदित है, 1928 का ग्रीष्म लाजवाब था, बारिशें वसन्त में समय पर हुई थीं, खूब गर्म धूप खिलती थी, उम्दा फसल हुई... शेरेमेत्येव वंश की भूतपूर्व जागीर में सेब पक रहे थे... वनों पर हरियाली छायी थी, खेत पीले चौखानों की तरह बिछे थे... प्रकृति की गोद में तो मानव उन्नत हो जाता है। अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच भी वहाँ इतना अप्रिय न लगता जितना कि वह शहर में लगता था। वह घिनौनी जाकेट भी उसने नहीं पहन रखी थी। चेहरा उसका धूप में सँवलाकर ताम्बे जैसा हो गया था, छींट की कमीज़ के खुले बटनों के नीचे से घने बालों से ढकी छाती दिखायी दे रही थी, टाँगों पर कैनवेस की पतलून चढ़ी थी। उसकी आँखें भी प्रशान्त और नेक लग रही थीं।

अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच स्तम्भोंवाले ओसारे से झटपट दौड़ता हुआ उतरा जिस पर सितारे के नीचे तख़्ती ठुकी थी :

"लाल किरण" राजकीय फार्म–

और सीधा उस ट्रक के पास गया जो पहरे के साथ तीन काले कक्ष लाया था।

दिन भर अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच अपने सहायकों की मदद से भूतपूर्व शीत उद्यान–शेरेमेत्येव वंश के गर्मघर में कक्षों को लगाने में व्यस्त रहा... शाम तक सब तैयार था। काँच की छत पर दूधिया गोला जल गया, ईंटों पर कक्ष रख दिये गये और उनके साथ आये मैकेनिक ने खटके दबाकर और चमचमाते पेच घुमाकर काली पेटियों के एस्बेस्टस के फ़र्श पर रहस्यमय लाल किरण जला दी।

अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच दौड़धूप कर रहा था, उसने खुद सीढ़ी पर चढ़कर बिजली के तारों की जाँच की।

अगले दिन वही ट्रक स्टेशन से लौटा और उसने अपने उदर से उम्दा, चिकने प्लाइवुड की तीन पेटियों को उगला जिन पर तरह-तरह के लेबल चिपके थे और सफ़ेद पृष्ठभूमि पर काले अक्षरों से लिखा था :

<<VORSICHT: EIER!!>> "सावधान : अण्डे!!"

"अरे इतने कम क्यों भेजे हैं?" अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच ने हैरानी के साथ पूछा पर फौरन अण्डों को खोलने में जुट गया। खोलने का काम उसी गर्मघर में हो रहा था और उसमें भाग ले रहे थे : स्वयं अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच, उसकी असम्भाव्य रूप से मोटी बीवी मान्या, भूतपूर्व शेरमेत्येवों का भूतपूर्व माली और अब राजकीय फार्म में चौकीदार, पहरेदार की नौकरी करनेवाला काना और जमादारनी दून्या। यह मास्को नहीं था, यहाँ सब कुछ सीधा-सादा, एक परिवार की तरह दोस्ताना ढंग से होता था। अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच गर्मघर की ऊपरवाले काँचों से छनकर आती सूर्यास्त की कोमल लालिमा में इतने सुन्दर उपहार की तरह रखी पेटियों को प्रेम से देखता हुक्म चला रहा था। चौकीदार जिसकी बन्दूक दरवाज़े के पास चैन की नींद सो रही थी, संड़सी से पेटियों पर कसी लोहे की पत्तियों को उखाड़ रहा था। टूटने-चटखने की आवाज़ें आ रही थीं... धूल झड़ रही थी। सैण्डलों से छप-छप करता अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच पेटियों के इर्द-गिर्द दौड़धूप कर रहा था।

"आप कृपया आराम से खोलिये," वह चौकीदार से कह रहा था। "सावधानी से। आप क्या देखते नहीं कि अण्डे हैं?.."

"कोई बात नहीं," कस्बाई योद्धा छेद करते हुए घरघराता, "अभी.."

ट्र-ट्र... और धूल झड़ती।

अण्डों की पैकिंग बहुत बढ़िया निकली : लकड़ी के ढक्कन के नीचे आयल पेपर की परत थी, फिर ब्लाटिंग पेपर की, इसके बाद लकड़ी की छीलन की मोटी परत थी और फिर बुरादा, उसी में अण्डों के सफ़ेद-सफ़ेद सिरे चमके।

"विदेशी पैकिंग है," बुरादे को कुरेदते हुए अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच कह रहा था, "अरे, हमारे यहाँ जैसी नहीं है। मान्या, देखके, तुम उन्हें फोड़ दोगी।"

"अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच, तुम्हारा भी दिमाग़ खराब हो गया लगता है," पत्नी उत्तर देती, "सोना थोड़े ही है। क्या मैंने कभी अण्डे नहीं देखे? अरे!.. कितने बड़े हैं!"

"विदेशी हैं," अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच अण्डों को लकड़ी की मेज़ पर रखता हुआ बोल रहा था, "हमारे देहातियों के अण्डों जैसे थोड़े ही हैं... सब के सब ब्रह्मपुत्र नसल के हैं! जर्मन..."

"ज़ाहिर है," अण्डों को तारीफ़ भरी नज़र से देखता चौकीदार कह रहा था।

"बस एक बात समझ में नहीं आती कि ये गन्दे क्यों हैं," अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच सोच में डूबा हुआ कहा रहा था... "मान्या, तुम ज़रा नज़र रखना। निकालने का काम जारी रखो, मैं अभी टेलीफ़ोन करने जा रहा हूँ।"

और अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच आँगन पार करके राजकीय फार्म के दफ़्तर में चला गया।

शाम को प्राणीविज्ञान संस्थान की प्रयोगशाला में टेलीफ़ोन की घण्टी झनझनायी। प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव बालों को सहलाकर टेलीफ़ोन के पास गये।

"कौन?" उन्होंने पूछा।

"आपके साथ देहात बात करेगा," धीमे-से, सरसराहट के साथ चोंगा महिला स्वर में बोला।

"ठीक है। मैं सुन रहा हूँ," घिन के साथ पेर्सिकोव टेलीफ़ोन के काले मुँह में बोले... उसमें कुछ खड़-खड़ हुई और फिर दूर से आता चिन्तित पुरुष स्वर कान में बोला :

"अण्डे धोने हैं, प्रोफ़ेसर?"

"क्या? क्या? आप क्या पूछ रहे हैं?" पेर्सिकोव ने झुँझलाकर पूछा, "कौन बोल रहा है?"

"निकोलस्की से, स्मोलेन्स्क प्रान्त से," चोंगे ने उत्तर दिया।

"मेरी समझ में नहीं आया। मैं किसी निकोलस्की को नहीं जानता। कौन बोल रहा है?"

"रोक," चोंगा सख़्ती से बोला।

"कौन-सी रोक? आ-हा... यह आप हैं... हाँ, तो आप क्या पूछ रहे हैं?"

"उन्हें धोना चाहिये या नहीं?... विदेश से मुझे मुर्ग़ियों के अण्डे मिले हैं..."

"तो?"

"... वे किसी गू में हैं..."

"आप को कुछ ग़लतफ़हमी है... बकौल आपके वे 'गू' में कैसे हो सकते हैं? हाँ, थोड़ी बहुत बीट लगी हो सकती है... सूखी.... या कुछ और... "

"तो नहीं धोयें?"

"हाँ-हाँ, कोई ज़रूरत नहीं... आप क्या अभी से कक्षों में अण्डे भरना चाहते हैं?"

"हाँ, भर रहा हूँ," चोंगे ने उत्तर दिया।

"हुंह," पेर्सिकोव उपेक्षा के साथ बोले।

"अगली बार तक के लिए," यह बोलकर चोंगा चुप हो गया।

"अगली बार तक के लिए," घृणा के साथ दोहराकर पेर्सिकोव ने रीडर इवानोव ने कहा, "आप, प्योत्र स्तेपानोविच, क्या कहेंगे इस नमूने के बारे में?"

इवानोव हँस पड़ा।

"उसका फ़ोन था? सोच सकता हूँ कि उन अण्डों से वह क्या पका डालेगा।"

"ब... ब... ब..." पेर्सिकोव कुढ़कर बोले, "आप सोच सकते हैं, प्योत्र स्तेपानोविच... चलो, ठीक है... काफ़ी सम्भव है कि मुर्ग़ी के अण्डे के डेइटरोप्लाज्मा पर किरण का

वैसा ही प्रभाव होगा जैसा उभयचरों के प्लाज़्मा पर। यह काफ़ी सम्भव है कि उसके यहाँ अण्डों से मुर्ग़ियाँ निकल सकती हैं। पर न आप और न ही मैं यह कह सकते हैं कि वे कैसी मुर्ग़ियाँ होंगी... क्या पता वे बिल्कुल बेकार हों। क्या पता कि वे दो दिन बाद मर जायें। क्या पता वे खाने लायक ही न हों! भला मैं यह गारण्टी दे सकता हूँ कि वे अपनी टाँगों पर खड़ी हो सकेंगी। क्या पता उनकी हड्डियाँ मुलायम हों," पेर्सिकोव जोश में आ गये, वह हाथ हिला-हिलाकर उँगलियाँ मोड़ रहे थे।

"आपकी बात सोलह आने सच है," इवानोव ने सहमति व्यक्त की।

"प्योत्र स्तेपानोविच, आप गारण्टी दे सकते हैं कि वे अगली पीढ़ी को जनेंगी? हो सकता है कि यह नमूना नपुन्सक मुर्ग़ियों को जन्म दे। उनको कुत्ते जितना बड़ा बना देगा और फिर ज़िन्दगी भर इन्तज़ार करो कि कब वे अण्डे देना शुरू करें।"

"गारण्टी नहीं दी जा सकती," इवानोव ने सहमति व्यक्त की।

"देखिये तो कितनी बदतमीजी है," पेर्सिकोव स्वयं अपने को परेशान कर रहे थे, "कितनी धृष्टता है! आप ग़ौर कीजिये कि मुझे इस हरामी को निर्देश देने का जिम्मा सौंपा गया है।" पेर्सिकोव ने उस काग़ज़ की ओर इशारा किया जिसे रोक लाया था (वह चीर-फाड़ की मेज़ पर पड़ा था)। पर मैं इस कूढ़मगज को निर्देश कैसे दूँगा जब मैं खुद इस प्रश्न पर कुछ नहीं कह सकता।"

"मना नहीं किया जा सकता था?" इवानोव ने पूछा।

पेर्सिकोव का चेहरा लाल हो गया, उन्होंने काग़ज़ उठाकर इवानोव को दिखाया। उसे पढ़कर उसके चेहरे पर व्यंग्य की मुस्कान प्रकट हुई।

"हुं... हाँ..." वह अर्थपूर्ण अन्दाज़ में बोला।

"और आप देखिये... मैं दो महीने से अपने आर्डर की प्रतीक्षा कर रहा हूँ पर उसके आने का नामोनिशान नहीं। उसको झट अण्डे भेज दिये गये और हर तरह की मदद दी जा रही है..."

"अरे, उसके हाथ कुछ नहीं लगनेवाला। बस, अन्त में यह होगा कि आपको कक्ष वापस कर दिये जायेंगे।"

"अगर जल्दी से यह हो तो अच्छा है, वे तो आख़िर मेरे प्रयोगों में देर करवा रहे हैं।"

"हाँ, यह बहुत खराब बात है। मैं पूरी तैयारी कर चुका हूँ।"

"आपको गोताखोरों की पोशाकें मिल गयीं?"

"हाँ, आज ही।"

पेर्सिकोव कुछ शान्त और सजीव हो गये।

"अच्छा... मेरा विचार है, हम ऐसा करेंगे। आपरेशन रूम का दरवाज़ा कसकर बन्द किया जा सकता है और खिड़कियाँ हम खोल देंगे।"

"हाँ, ठीक है," इवानोव ने सहमति व्यक्त की।

"हेल्मेट तीन हैं?"

"तीन। हाँ।"

"हाँ, तो... मतलब आप हुए और मैं, किसी छात्र को और बुलवा लेंगे। उसे तीसरा हेल्मेट दे देंगे।"

"ग्रीनमुत को बुला सकते हैं।"

"वह जो आपके अधीन सैलामैण्डरों पर काम कर रहा है?... हुं... वह बुरा नहीं. .. हालाँकि वसन्त में वह यह नहीं बता सका कि मेंढकों की थैली की रचना कैसी होती है," पेर्सिकोव विद्वेष के साथ बोले।

"नहीं, वह बुरा नहीं है... वह अच्छा छात्र है," इवानोव ने हिमायत की।

"एक रात सोना नहीं पड़ेगा," पेर्सिकोव आगे बोले, "हाँ, प्योत्र स्तेपानोविच, आप बस ज़रा गैस की जाँच कर लीजियेगा, इनके इन स्वयंसेवी रसायन शास्त्रियों को कुछ भरोसा नहीं। भिजवा देंगे कोई सड़ियल माल।"

"नहीं-नहीं," इवानोव हाथ हिला-हिलाकर बोला, "कल मैं जाँच कर चुका हूँ। उनके साथ इन्साफ़ की ख़ातिर मानना पड़ेगा कि गैस उम्दा है।"

"आपने किस पर जाँच की?"

"मामूली भेकों पर। थोड़ी-सी छोड़ते ही मर जाते हैं। हाँ, व्लादीमीर इपात्येविच, हम यह और करेंगे। आप ग. प. उ. को चिट्ठी लिखें कि वे आपको विद्युत रिवाल्वर भेज दें।"

"पर मैं तो उसे चलाना नहीं जानता..."

"यह मेरा जिम्मा होगा," इवानोव ने उत्तर दिया, "हमने क्ल्याज्मा में उसे चलाया था, मजा लेने के लिए... वहाँ एक गपउवाला मेरा पड़ोसी था... लाजवाब चीज़ है। और बेहद आसान... सौ गज की दूरी बिना शोर के, अचूक मार करती है। हमने कौए मारे थे... मेरे विचार से तो गैस की भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

"हुं... यह बड़ा बढ़िया विचार है... बहुत बढ़िया," पेर्सिकोव ने कोने में जाकर टेलीफ़ोन का चोंगा उठाया और टर्राये...

"मुझे उसका, क्या कहते हैं उसे... लुबयान्का का नम्बर दीजिये..."

* * *

बेहद गर्मी पड़ रही थी। खेतों के ऊपर पारदर्शी घनी तपिश झिलमिलाती थी। पर रातें अनुपम, मायावी हरी होती थीं। चाँद दमक रहा था और उसने शेरेमेत्येवों की भूतपूर्व जागीर पर ऐसी अनुपम छटा बिखेर दी थी कि उसका वर्णन शब्दों में करना असम्भव है। महल—राजकीय फार्म मिसरी के डले की तरह दमक रहा था, उद्यान में परछाइयाँ थिरक रही थीं और सरोवर दो रंगों में विभाजित हो गये थे—चाँदनी का तिरछा रजत पथ और अथाह स्याह गहराई। चाँदनी के धब्बों में बैठकर आराम से "इज्वेस्तिया" पत्र पढ़ा जा सकता था, सिवाय शतरंज के स्तम्भ के जो अप्रतिम टाइप में छपता था।

पर साफ़ है कि ऐसी रातों को कोई "इज्वेस्तिया" नहीं पढ़ता था... जमादारनी दून्या राजकीय फार्म के पिछवाड़े के कुंज में पहुँच गयी, सयोंगवश सामूहिक फार्म के फटीचर ट्रक का ललछौंही मूछोंवाला ड्राइवर भी वहीं था। वे वहाँ क्या कर रहे थे— यह हमें पता नहीं। वे विलो वृक्ष की भंगुर छाया में ड्राइवर के ज़मीन पर बिछे चमड़े के ओवरकोट पर विराजमान थे। रसोई की बत्ती जली हुई थी, वहाँ दो माली खाना खा रहे थे और मैडम रोक सफ़ेद बोनेट पहने स्तम्भोंवाले बरामदे में बैठी चाँद के सलोने मुखड़े को निहारती, सपने बुन रही थी।

रात के दस बजे जब राजकीय फार्म के पीछे स्थित कोन्त्सोव्का गाँव में नीरवता छा गया तो ग्राम्य दृश्य बंसी के मनमोहक सुरों से मुखरित हो गया। इसका वर्णन करना असम्भव है कि शेरेमेत्येवों के महल के कुंजों और भूतपूर्व स्तम्भों के वातावरण में यह मधुर लहरी कितनी स्थानोचित थी। 'हुकुम की बेगम' की कोमल लीजा भावप्रवण पोलीना के साथ सुर में सुर मिलाकर युगलगान करती पुरानी पर अत्यन्त प्रिय और आकर्षक व्यवस्था के छलावे की तरह ऊँचाइयों पर तैरती चाँदनी आँखों को नम कर रही थी। बंसी गाती-चहचहाती आहें भर रही थी।

कुंज साँस रोके निश्चल खड़े थे और वन परी की तरह मोहक दून्या ड्राइवर के कड़े, ललछौंहे, पौरुषमय गाल से गाल सटाकर सुन रही थी।

"बढ़िया बजाता है, हरामजादा," अपनी मर्दानगी भरी बाँहों में दून्या की कमर को भरते हुए ड्राइवर बोला।

बंसी स्वयं राजकीय फार्म का निदेशक अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच रोक बजा रहा था, इन्साफ़ की ख़ातिर कहना पड़ेगा कि बजाता वह वास्तव में बहुत बढ़िया था। 1917 तक वह ओडेस्सा के शानदार सिनेमा हाल "जादुई सपनों" में रोज़ शाम को दर्शकों को संगीत का रसपान करानेवाले मास्टर पेतुखोव के प्रसिद्ध आर्केस्ट्रा में नौकरी करता था। पर बहुत-से लोगों के कैरियर को भंग करनेवाला 1917 महान साल अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच को भी नयी राहों पर ले चला। उसने "जादुई सपनों" और हाल में तनी सितारोंवाली धूल भरी साटिन को छोड़कर बाँसुरी की जगह घातक पिस्तौल उठाकर युद्ध और क्रान्ति के असीम सागर में छलाँग लगा दी। वह बड़ी देर तक लहरों के थपेड़े खाता रहा, कई बार उन्होंने उसे क्रीमिया में, कभी मास्को में, कभी तुर्किस्तान में और व्लादोवोस्तोक तक में पहुँचा दिया। अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच की प्रतिभा को पूरी तरह निखारने के लिए क्रान्ति की ही आवश्यकता थी। पता चला कि यह आदमी वास्तव में महान था और बेशक "सपनों" के हाल में उसका स्थान न था। लम्बे-चौड़े ब्योरों के चक्कर में पड़े बिना हम कहेंगे कि 1927 के पिछले साल और 1928 के शुरू में अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच तुर्किस्तान में था जहाँ वह पहले विशाल राजनीतिक-साहित्यिक समाचारपत्र का सम्पादन करता था, तदोपरान्त सर्वोच्च सामुदायिक-आर्थिक आयोग के स्थानीय सदस्य के रूप में उसने तुर्किस्तान प्रदेश की सिंचाई के क्षेत्र में अपने

आश्चर्यजनक कार्यों के लिए ख्याति प्राप्त की। 1928 में रोक मास्को पहुँचा और उसने आराम की ज़िन्दगी पायी जिसके लिए वह पूरी तरह योग्य था। उस संगठन के सर्वोच्च आयोग ने जिसकी सदस्यता का कार्ड यह पुराने फैशन का कस्बाई आदमी गर्व के साथ जेब में डालकर घूमता था, उसका उचित मूल्याँकन किया और उसे चैन और सम्मान के पद पर नियुक्त कर दिया। खेद की बात है! कितने खेद की बात है! जनतंत्र के लिए यह आफत ही थी कि अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच का उफनता-उमड़ता दिमाग़ शान्त नहीं हुआ, मास्को में पेर्सिकोव की खोज से रोक की मुठभेड़ हो गयी, और त्वेरस्काया सड़क पर स्थित "लाल पेरिस" होटल में अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच के मन में विचार उपजा कि कैसे पेर्सिकोव की किरण की मदद से एक महीने में ही जनतंत्र में मुर्ग़ियों को फिर से पैदा किया जा सकता है। क्रेमलिन ने अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच से भेंट की, क्रेमलिन ने उससे सहमति व्यक्त की और रोक मोटा काग़ज़ लेकर सनकी प्राणीविज्ञानी के पास गया।

काँच के सरोवरों और कुंजों पर तैरता संगीत कार्यक्रम समाप्ति की ओर अग्रसर था कि अचानक कुछ ऐसा हुआ जिसने उसे समय से पहले भंग कर दिया। कोन्त्सोव्का के कुत्तों ने जिन्हें समय देखते हुए कब का सो जाना चाहिये था, अचानक इतनी ज़ोर-ज़ोर से भौंकना शुरू किया कि धीरे-धीरे उनकी भूंक यातनापूर्ण सामूहिक क्रन्दन में बदल गयी। क्रन्दन फैलता हुआ खेतों पर तैरने लगा, अचानक सरोवरों से मेंढकों के कोटि-कोटि स्वरों के टर्र-टर्र सहगान ने इस क्रन्दन का उत्तर दिया। यह सब इतना खौफ़नाक था कि पल भर को लगा कि मानो तिलस्मी, जादुई रात अन्धकार में लिपट गयी।

अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच बाँसुरी रखकर बरामदे में निकला।

"मान्या, तुम सुन रही हो? स्साले कुत्तों को देखो... क्यों वे बावले हो गये, तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

"मैं कहाँ से जानूँ?" चाँद को निहारते हुए मान्या बोली।

"मान्या, चलो, चलकर अण्डों को देखते हैं," अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच ने सुझाव दिया।

"कसम से, अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच, तुम तो अपने अण्डों और मुर्ग़ियों की सोच-सोचकर पागल हो गये हो। कुछ आराम कर लो!"

"नहीं, मान्या, चलो।"

गर्मघर में चमकीला गोला जल रहा था। तमतमाये चेहरे और दमकती आँखोंवाली दून्या भी आ पहुँची। अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच ने प्यार के साथ निरीक्षण कपाट को खोला और सब कक्षों के भीतर झाँकने लगे। एस्बेस्टस के सफ़ेद फ़र्श पर सीधी-सीधी क़तारों में चित्तियों से ढके चटक-लाल अण्डे रखे हुए थे, कक्षों में निःस्तब्धता व्याप्त थी... पर 15000 वाट का ऊपर लटका गोला धीमे-धीमे फुफकार रहा था...

"अरे, मैं चूजे पैदा करके ही रहूँगा!" निरीक्षण के लिए बनी झिरियों और हवा के लिए बने छेदों में से झाँक-झाँककर अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच जोश में आकर कह रहा था, "देखते रहना... क्या? नहीं निकलेंगे?"

"अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच, आपको पता है," दून्या मुस्कराते हुए बोली, "कोन्त्सोव्का के किसान कह रहे थे कि आप अधर्मी हैं। कहते हैं कि आपके अण्डे राक्षसी हैं। मशीन से अण्डे सेना पाप हैं। आप की हत्या करना चाहते थे।"

अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच सिहरकर पत्नी की ओर मुड़ा। उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

"आप क्या कहेंगी? क्या लोग हैं! ऐसी जनता के साथ आप कर क्या सकते हैं? क्यों? मान्या, उनकी सभा बुलवानी पड़ेगी... कल शहर से कार्यकर्ताओं को बुलवाऊँगा। मैं खुद भाषण दूँगा। वैसे यहाँ प्रचार कार्य की ज़रूरत है... ये तो वहशियों की तरह हैं..."

"अँधेरे में रहते हैं," गर्मघर के दरवाज़े पर अपने बरानकोट पर लेटा चौकीदार बोला।

अगले दिन बड़ी अजीब और अव्याख्येय घटनाएँ घटित हुईं। सुबह को, जब पहली किरण पड़ते ही जो कुंज प्रायः पक्षियों की घनी चहचहाहट से सूर्य का स्वागत करते थे बिल्कुल मूक खड़े थे। एक-एक आदमी ने इस पर ग़ौर किया। मानो तूफ़ान से पहले की नीरवता छायी हुई थी। पर तूफ़ान का कोई नामोनिशान तक न था। राजकीय फार्म में अजीबोग़रीब और अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच के लिए अर्थपूर्ण चर्चे छिड़ गये, खासकर इसलिए कि बकौल चचा-बकरे की दाढ़ी नाम से विख्यात कोन्त्सोव्का के शरारती हाज़िरजवाब आदमी के, सारे पक्षी सुबह को डारें बनाकर शेरेमेत्येवो से उड़कर कहीं उत्तर की दिशा में चले गये, यह बेहूदा दावा ही था। अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच बड़ा परेशान हुआ और सारा दिन उसने ग्राचोव्का की कमेटी को टेलीफ़ोन करने पर गँवा दिया। वहाँ से अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच से कोई दो दिन बाद दो व्याख्याताओं को दो विषयों पर भाषण देने के लिए भेजने का वादा किया गया—अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर और मुर्ग-समाज के प्रश्न पर।

शाम भी अप्रत्याशित घटनाओं के बिना नहीं बीती। जहाँ सुबह को कुंज स्पष्ट रूप से यह दर्शाते हुए मूक हो गये कि वृक्षों के बीच नीरवता कितनी संदिग्ध और अप्रिय होती है, और दोपहर को राजकीय फार्म के अहाते से गौरैया कहीं गायब हो गयीं, तो शाम तक शेरेमेत्येवो का सरोवर भी चुप हो गया। यह वास्तव में बड़ी हैरानी की बात थी क्योंकि चालीस मील के दायरे में यहाँ के मेंढकों की टर्र-टर्र दूर-दूर तक प्रसिद्ध थी। और अब वे मानो मर गये थे। सरोवर से एक भी आवाज नहीं आ रही थी, सरकण्डे मौन खड़े थे। यह मानना पड़ेगा कि अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच अन्त में बेहद परेशान हो गया। इन घटनाओं के बारे में तरह-तरह की बातें गढ़ी जाने लगीं और वे भी काफ़ी

कड़वी-कड़वी, मतलब वे अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच की पीठ पीछे होती थीं।

"सचमुच यह बड़ी अजीब बात है," दोपहर के खाने के वक्त अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच ने अपनी बीवी से कहा, "यह समझ में नहीं आता कि इन चिड़ियों को उड़कर जाने की ज़रूरत क्या थी?"

"मैं कैसे जानूँ?" मान्या ने उत्तर दिया। "कहीं तुम्हारी किरण की वजह से तो नहीं?"

"तुम भी मान्या, बिल्कुल बुद्धू हो," चम्मच पटककर अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच बोला, "तुम–तुम, गँवारों की तरह हो। किरण का इससे क्या वास्ता?"

"मैं नहीं जानती। तुम मुझे मत परेशान करो।"

शाम को तीसरी अप्रत्याशित घटना हो गयी–कोन्त्सोव्का के कुत्ते फिर से क्रन्दन करने लगे और वह भी ऐसे कि पूछो मत! चाँदनी में नहाये खेतों-मैदानों पर क्रुद्ध, मनहूस क्रन्दन और कराहें तैर रही थीं।

एक और अप्रत्याशित घटना हुई पर थी वह प्रीतिकर, वह गर्मघर में हुई और उससे अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच ने अपने को कुछ हद तक पुरस्कृत महसूस किया। कक्षों में रखे लाल अण्डों से निरन्तर ठक-ठक सुनायी देने लगी थी। टुक-टुक-टुक... कभी एक अण्डे से सुनायी पड़ता तो कभी दूसरे से तो कभी तीसरे से।

अण्डों में होती ठक-ठक अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच के लिए विजय की ठक-ठक थी। तत्क्षण कुंज और सरोवर की विचित्र घटनाएँ विस्मृत हो गयीं। सब गर्मघर में एकत्र हो गये : मान्या भी और दून्या भी, पहरेदार भी और दरवाज़े के पास बन्दूक छोड़कर आया चौकीदार भी।

"क्यों? अब क्या कहोगे?" विजय भाव के साथ अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच पूछ रहा था, सब कौतूहल के साथ पहले कक्ष के कपाट पर कान लगाकर झुके हुए थे, "वे अपनी चोंचों से ठक-ठक कर रहे हैं, चूजे नन्हे-नन्हे," खुशी से दमकता अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच बोले जा रहा था। "आप कहते हैं चूजे नहीं पैदा कर सकता? नहीं, मेरे प्यारो," भावातिरेक में चौकीदार का कन्धा थपथपाकर वह बोला। "ऐसे चूजे पैदा करूँगा कि आप दाँतों तले उँगली दबा लेंगे। अब पहरे में कोई कमी नहीं रहनी चाहिये," सख़्ती के साथ उसने जोड़ दिया। "जैसे ही निकलने लगें मुझे फ़ौरन खबर कर देना।"

"ठीक है," चौकीदार, दून्या और पहरेदार ने समवेत स्वर में उत्तर दिया।

ठक... ठक... ठक... पहले कक्ष के कभी एक अण्डे से सुनायी पड़ता तो कभी दूसरे से। वास्तव में, पतले चमकीले छिलके में देखते-देखते जन्म लेता नया जीवन इतना रोचक था कि सारी की सारी मण्डली खाली पेटियों को उल्टा करके उन पर बड़ी देर तक बैठी, टिमटिमाती तिलस्मी रोशनी में पकते सिन्दूरी अण्डों को देखती रही। वे काफ़ी रात गये सोने के लिए अपने-अपने घर गये, जब राजकीय फार्म और

आस-पास के इलाके में हरित रात फैलकर बिछ चुकी थी। वह बड़ी रहस्यमय, और यह तक कहा जा सकता है, खौफ़नाक लग रही थी। शायद इसलिए कि उसकी पूर्ण नीरवता को रुक-रुककर अकारण शुरू होनेवाला मनहूस श्वान क्रन्दन को भंग कर देता था। क्यों ये कुत्ते बावले हो गये थे–यह बिल्कुल पता नहीं।

अगली सुबह एक अप्रिय घटना अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच की बाट जोह रही थी। चौकीदार बेहद घबराया हुआ था, दिल पर हाथ रख-रखकर कसम खा रहा था कि वह बिल्कुल भी नहीं सोया था, पर कुछ भी उसने नहीं देखा।

"बड़ी अजीब बात है," चौकीदार यक़ीन दिला रहा था, "मेरा कोई दोष नहीं, कामरेड रोक।"

"धन्यवाद, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया," अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच उसे फटकार रहा था, "आप कामरेड सोचते क्या हैं? आपकी ड्यूटी क्यों लगायी गयी? देखने के लिए। तो आप ही मुझे बताइये कि वे कहाँ गये? आख़िर अण्डों से तो वे निकले हैं? मतलब भाग गये। यानी आप दरवाज़ा खुला छोड़कर चले गये। चूजे मेरे सामने हाजिर होने चाहिये!"

"जाने के लिए कोई जगह नहीं मेरे पास। क्या मैं अपना काम नहीं जानता?" योद्धा बुरा मानकर बोला, "आप क्यों बिना बात के मुझे ताना मार रहे हैं, कामरेड रोक!"

"तो वे गये कहाँ?"

"मैं कैसे जानूँ," अन्ततः तैश में आकर चौकीदार बोला, "भला मैं उन सब पर नज़र रख सकता हूँ? मेरी ड्यूटी क्यों लगायी गयी है? देखने के लिए कि कक्षों को कोई लेकर न चलता बने और मैं अपनी ड्यूटी निभाता हूँ। ये देखो कक्ष सही-सलामत हैं। और कानूनन आपके चूजों को पकड़ने का काम मेरा नहीं है। कौन जाने आपके चूजें कैसे निकलें, क्या पता साइकिल पर बैठकर भी उनको न पकड़ा जा सके!"

अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच किंचित झेंप गया। उसने कुछ और बड़बड़ाकर कहा और आश्चर्य में पड़ गया। बात तो वास्तव में बड़ी अजीब थी। पहले कक्ष में जिसे सबसे पहले भरा गया था, किरण के आधार के बिल्कुल पास पड़े दो अण्डे टूटे पड़े थे। उनमें से एक तो एक ओर लुढ़का पड़ा था। अण्डों के छिलके एस्बेस्टस के फ़र्श पर किरण के प्रकाश में पड़े थे।

"शैतान ही जाने," अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच बड़बड़ा रहा था, "खिड़कियाँ बन्द हैं, छत के रास्ते तो वे उड़े नहीं!"

उसने सिर उठाया और उस ओर देखा जहाँ काँच की छत में कई बड़े-बड़े छेद थे।

"अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच, आप भी कैसी बातें करते हैं," बेहद हैरान होकर दून्या बोली, "चूजे कहीं उड़ेंगे थोड़े ही। वे यहीं कहीं होंगे... पुच... पुच... पुच... " वह चिल्लाने लगी और गर्मघर के कोनों में झाँककर देखने लगी जहाँ धूल भरे गमले, तख़्ते

और कबाड़ भरा था। पर कहीं से किसी चूजे ने जवाब नहीं दिया।

सभी कर्मचारीगण दो घण्टे तक राजकीय फार्म के परिसर में दौड़-दौड़ तक चण्ट चूजों को ढूँढ़ते रहे, पर उनके हाथ कुछ न गला। दिन बेहद उत्तेजना में बीता। चौकीदार के साथ पहरेदार को भी लगाकर कक्षों के पहरे को कड़ा कर दिया गया और उसे कड़ा आदेश दिया गया : एक हर पन्द्रह मिनट के बाद कक्षों की झिर्रियों में झाँककर देखे और कुछ होते ही फौरन अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच को खबर करे। चौकीदार घुटनों के बीच बन्दूक को टिकाये मुँह फुलाकर बैठा था। अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच दौड़-भाग में इतना व्यस्त रहा कि कहीं दो बजे जाकर ही उसने खाना खाया। खाने के बाद वह ठण्डी छाया में शेरेमेत्येव के भूतपूर्व दीवान पर कोई घण्टा भर सोया, राजकीय फार्म की सूखी डबलरोटी से बना खट्टा पेय पिया, गर्मघर जाकर देखा और उसे पूरा विश्वास हो गया कि अब वहाँ सब कुछ ठीक था। बूढ़ा चौकीदार पेट के बल चटाई पर लेटा, आँखें मिचमिचाता प्रथम कक्ष के निरीक्षण झरोखे में देख रहा था। पहरेदार दरवाज़े पर मुस्तैद खड़ा था।

पर नयी खबर भी थी : तीसरे कक्ष में, सबसे बाद में भरे गये अण्डों से ऐसी आवाजें आने लगीं मानो उनके अन्दर बैठा कोई सुबकियाँ ले रहा हो।

"ओह, पक रहे हैं," अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच ने कहा, "यह हुई न बात, अब देखा कि कैसे पकते हैं। देखा तुमने?" उसने चौकीदार को सम्बोधित करके पूछा।

"हाँ, बड़ी अनोखी बात है," उसने सिर हिलाते हुए अर्थपूर्ण लहजे में उत्तर दिया।

अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच कुछ देर तक कक्षों के पास उकड़ूँ बैठा रहा पर उसके सामने अण्डों से कोई नहीं निकला, वह उठा और अँगड़ाई लेकर बोला कि वह कहीं बाहर नहीं जा रहा, बस तालाब तक नहाने जायेगा, अगर कोई बात हुई तो उसे फौरन बुलवा लिया जाये। वह दौड़ा-दौड़ा महल में अपने शयनागार में गया जहाँ मुसे बिस्तरवाली दो संकरी स्प्रिंगदार चारपाइयाँ थीं और फ़र्श पर हरे सेबों का ढेर और भावी मुर्ग़ियों के लिए दाने के पहाड़ थे। वह झबरीले तौलिये से लैस हुआ और कुछ सोचकर उसने सरोवर के तट पर बैठके फुरसत में बजाने के लिए बाँसुरी भी उठा ली। वह फुर्ती के साथ महल से दौड़ता निकला, राजकीय फार्म के अहाते को पार करके बेदों के तरुपथ से तालाब की ओर चल पड़ा। बगल में बाँसुरी दबाये और तौलिये को हिलाता हुआ रोक बड़ी फुर्ती से चल रहा था। आकाश पेड़ों के बीच से तपिश बरसा रहा था और तन पानी में जाने को मचल रहा था। रोक की दायीं ओर गोखरू के पौधों का झुरमुट शुरू हुआ जिसमें उसने पास से गुजरते हुए थूक दिया। और तभी बड़े-बड़े पत्तों के बीहड़ में ऐसी सरसराहट सुनायी पड़ी मानो कोई पेड़ के लट्ठे को घसीटकर ले जा रहा हो। दिल में क्षणिक हौल को महसूस करके अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच ने हैरानी के साथ झाड़ियों के झुरमुट की ओर मुड़कर देखा। दो दिन से तालाब से कोई ध्वनि नहीं सुनायी पड़ रही थी। सरसराहट थम गयी, गोखरू के झाड़ों के ऊपर से

तालाब की आकर्षक सतह और उसके तट पर बने स्नानालय की सलेटी छत दृष्टिगोचर हुईं। दो-तीन चिउरे अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच के सामने थिरके। वह पटरों के पुल की ओर मुड़ना चाहता ही था कि अचानक हरियाली में फिर से सरसराहट हुई और साथ ही में ऐसी अल्प फुफकार हुई मानो रेल के इंजन से तेल और भाप का गुबार छूटा हो। अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच चौकन्ना होकर जंगली झाड़-झंखाड़ की घनी हरी दीवार को गौर से ताकने लगा।

"अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच," उसी क्षण रोक की बीवी की आवाज गूँजी और उसका सफ़ेद ब्लाउज बेरियों की झाड़ियों के बीच झिलमिलाकर अदृश्य हो गया, वह फिर से झिलमिलाया, "रुको, मैं भी नहाने चल रही हूँ।"

बीवी जल्दी-जल्दी डग भरती हुई तालाब की ओर आ रही थी, पर अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया, उसका तन-मन गोखरू के झाड़ों पर टिका था। धूसर और हरा लट्ठा उनके बीच से उठा और देखते-देखते बढ़ने लगा। अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच को लगा कि तना किन्हीं नम पीले-से धब्बों से ढका था। वह हिलता-डुलता बल खाता तनने लगा और इतना ऊँचा तन गया कि बेद का टेढ़ा-मेढ़ा नाटा पेड़ भी छोटा रह गया... फिर लट्ठे का ऊपरी हिस्सा मुड़कर कुछ झुका और अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच के सामने कुछ ऐसी चीज़ खड़ी हो गयी जो देखने में मास्को की सड़कों पर लगे बिजली के खम्भों जैसी थी। पर यह कुछ खम्बे से कोई तीन गुना मोटा और केंचुली जैसी डिजाइन की बदौलत उसकी उपेक्षा बहुत सुन्दर था। अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच के पल्ले अभी कुछ नहीं पड़ा था, पर उसके हाथ-पाँव अभी से ठण्डे हो गये थे और जब उसने इस भयंकर स्तम्भ के ऊपर देखा तो उसका दिल कुछ क्षणों तक धड़कना ही भूल गया। उसे लगा कि अचानक अगस्त के गर्म दिन में पाला पड़ गया और आँखों के आगे ऐसा अँधेरा छा गया मानो वह ठण्डी पतलून से आँखों को ढककर सूरज की ओर देख रहा हो।

लट्ठे के ऊपरी सिरे पर निकला सिर। वह चपटा, नुकीला था और हरी पृष्ठभूमि में पीले गोल दाग से अलंकृत था। पलकोंरहित खुली सर्द चुँधी आँखें सिर की छत पर टिकी थीं और इन आँखों में अकल्पनीय दृष्टता चमक रही थी। सिर ने ऐसी हरकत की मानो उसने हवा चुगी, सारा का सारा स्तम्भ झाड़ों में विलीन हो गया, बस आँखें ही नज़र आ रही थीं जो अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच को अपलक घूर रही थीं। उसका बदन लिपलिपे पसीने से ढक गया और वह भय से पागल होकर चार शब्द बोला जो अत्यन्त विचित्र लग रहे थे। क्या खूबसूरत थीं पत्तों के बीच से दिखती ये आँखें।

"यह क्या मज़ाक है.."

फिर उसे याद आया कि फकीर... हाँ... हाँ... भारत... पिटारी और बीन... सपेरों का जादू।

सिर फिर से उन्नत हुआ और धड़ भी बाहर निकलने लगा। अलेक्सान्द्र

सेम्योनोविच ने बाँसुरी को होंठों से लगाया, चूँ करके हाँफता हुआ 'यूजीन ओनेगिन' आपेरा से वाल्ट्ज नृत्य की धुन बजाने लगा। हरियाली में बैठी आँखों में तत्क्षण इस आपेरा से अशाम्य घृणा दहक उठी।

"तुम क्या पागल हो गये कि इतनी गर्मी में बजा रहे हो?" मान्या का चंचल स्वर सुनायी पड़ा और अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच को आँख की कोर से कहीं दायीं ओर सफ़ेद धब्बा नज़र आया।

फिर सारे राजकीय फार्म में आर्तनाद गूँजकर फैल गया और वाल्ट्ज लँगड़ाकर फुदकने लगा। हरियाली से निकलकर सिर आगे को झपटा, उसकी आँखें अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच को अपनी खैर मनाने के लिए छोड़कर चली गयीं। कोई पन्द्रह गज लम्बा और आदमी जितना मोटा साँप स्प्रिंग की तरह झाड़ों से झपटा। सड़क से धूल का गुबार फूटा और वाल्ट्ज नृत्य समाप्त हो गया। राजकीय फार्म के निदेशक के पास से साँप सीधा उस ओर लपका जहाँ सड़क पर सफ़ेद ब्लाउज था। रोक को बिल्कुल साफ़-साफ़ दिखायी दे रहा था : मान्या के चेहरे पर हल्दी पुत गयी और उसके लम्बे बाल तारों की तरह कड़े होकर सिर के ऊपर कोई आधा गज की ऊँचाई तक खड़े हो गये। रोक के देखते-देखते साँप ने पल भर के लिए अपना मुँह खोला और उसमें से पांचे जैसा कुछ लपलपाया और धूल में ढहती मान्या के कन्धे को दाँतों से दबोच लिया और उसे झपटकर ज़मीन से कोई एक गज की ऊँचाई पर उठा दिया। तब मान्या ने अपनी मौत की तीखी चीख को दोहराया। साँप दस गज के लट्टू की तरह नाचा, उसकी पूँछ से धूल का बवण्डर उठा और उसने लिपटकर मान्या को जकड़ लिया। उसके मुँह से फिर एक भी आवाज न निकली बस रोक ही उसकी हड्डियों के टूटने की आवाजें सुन रहा था। साँप के गाल पर स्नेह के साथ टिका मान्या का सिर ऊँचाई पर उठा। मान्या के मुँह से खून की धारा फूटी, टूटा हाथ गिर पड़ा और नाखूनों के नीचे से खून के फौवारे छूटे। फिर साँप ने जबड़ों के जोड़ ढीले करके मुँह खोला और अपने सिर को मान्या के सिर पर पहना दिया और उस पर ऐसे चढ़ने लगा जैसे उँगली पर दस्ताना। साँप के चारों ओर ऐसी भभक फैल रही थी कि वह रोक के चेहरे तक को छू गयी और साँप की पूँछ ने उसे लगभग सड़क से बुहारकर कसैली धूल में ही पटक दिया। बस तभी तो रोक के बाल सफ़ेद हो गये। उसके बूट जैसे काले सिर का पहले बायाँ हिस्सा चाँदी से ढका और फिर दायाँ। मौत की मतली से जूझते हुए वह अन्ततः सड़क से हिला और किसी को भी देखे बिना वहशी चीख के साथ भाग खड़ा हुआ...

अध्याय 9

ज़िन्दा खिचड़ी

दूगिनो स्टेशन पर राजकीय विभाग (ग. प. उ.) का एजेण्ट श्चूकिन बहुत बहादुर आदमी था। वह सोच में डूबा अपने साथी ललछौंहे पोलाइतिस से बोला :

"हाँ, तो चलें। क्यों? लाओ मोटर साइकिल।" फिर कुछ देर चुप रहकर, बैंच पर बैठे आदमी को सम्बोधित करके बोला : "बाँसुरी तो रख दीजिये।"

दूगिनों में ग. प. उ. के दफ़्तर में बैंच पर बैठे सफ़ेद बालोंवाले थर थर काँपते आदमी ने बाँसुरी नहीं रखी बल्कि मिमियाकर रो पड़ा। तब श्चूकिन और पोलाइतिस समझ गये कि बाँसुरी को खुद ले लेना चाहिये। उँगलियाँ उस पर चिपक गयी थीं। श्चूकिन जो लगभग सर्कस के पहलवान जैसा बलशाली था एक-एक करके उँगलियाँ खोलने लगा और उसने सबकी सब खोल डालीं। तब बाँसुरी को मेज़ पर रख दिया गया।

यह मान्या की मौत के अगले दिन की चमचमाती धूपवाली सुबह-सुबह की बात है।

"आप हमारे साथ चलेंगे," अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच को सम्बोधित करते हुए श्चूकिन बोला, "हमें दिखायेंगे कि क्या कहाँ है।" पर रोक ने डर के मारे पीछे हटकर हाथों से मुँह को ऐसे छिपा लिया मानो वह किसी दुःस्वप्न को न देखना चाहता हो।

"दिखाना ज़रूरी है," पोलाइतिस भी सख़्ती से बोला।

"नहीं, छोड़ दो इसे। देखते नहीं कि होशो-हवास इसके दुरुस्त नहीं।"

"मुझे मास्को भिजवा दीजिये," रोते हुए अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच ने अनुनय-विनय की।

"क्या आप फिर राजकीय फार्म में लौटकर नहीं आयेंगे?"

पर रोक ने जवाब देने की जगह फिर से मुँह ढक लिया, उसकी आँखों से भय टपक रहा था।

"अच्छा ठीक है," श्चूकिन ने फैसला किया, "आपमें सचमुच इतनी ताक़त नहीं... मैं देख सकता हूँ। अभी मेल ट्रेन गुजरनेवाली है, उसी से चले जाइये।

फिर जब स्टेशन का चौकीदार अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच को पानी पिलाकर होश में ला रहा था और वह टूटी-फूटी किनारीवाले नीले मग को दाँतों से किटकिटा रहा था, श्चूकिन और पोलाइतिस की मंत्रणा हुई। पोलाइतिस का मत था कि ऐसा कुछ नहीं हुआ था, रोक बस मानसिक रोगी है और उसे ऐसा भयंकर मतिभ्रम ही हुआ। पर श्चूकिन का मत था कि ग्राचोव्का शहर से जहाँ उस समय सर्कस आया हुआ था, सर्कस का अजगर भाग गया है। उनकी सन्देहपूर्ण फुसफसाहट सुनकर रोक उठा। वह कुछ-कुछ होश सम्भाल चुका था और बाइबिल के मसीहा की तरह हाथ फैलाकर वह

बोला :

"मेरी बात सुनिये। सुनिये मेरी बात। आप क्यों विश्वास नहीं करते? वह था। मेरी बीवी आख़िर कहाँ है?"

श्चूकिन घुन्ना और गम्भीर हो गया और उसने फौरन ग्राचोव्का को कोई तार रवाना कर दिया। तीसरा एजेण्ट हर पल अलेक्सान्द्र सेम्योनोविच पर नज़र रखे हुए था और श्चूकिन के आदेशनुसार उसे उसके साथ मास्को जाना था। श्चूकिन और पोलाइतिस अभियान की तैयारी करने लगे। उनके पास केवल एक विद्युत पिस्तौल थी पर वह भी सुरक्षा के अच्छे प्रबन्ध के लिए काफ़ी थी। यह पचास राउण्ड का सन 27 का माडल था, निकट युद्ध के लिए फ्रांसीसी तकनीकी का आला कमान, उसकी मार केवल सौ कदम तक ही सीमित थी, पर उसके प्रभाव क्षेत्र का व्यास दो मीटर का था और इस क्षेत्र में वह हरेक प्राणी को तबाह कर देती थी। निशाना चूकना बहुत कठिन था। श्चूकिन ने इस चमचमाते विद्युत खिलौने को लटका लिया और पोलाइतिस ने 25 राउण्ड की मामूली लाइट मशीनगन को, अतिरिक्त मैगजीनें साथ लीं और एक ही मोटरसाइकिल पर सवार होकर सुबह की नम ठण्डक में राजकीय फार्म को रवाना हो गये। स्टेशन से राजकीय फार्म की 20 मील की दूरी को मोटरसाइकिल ने सवा घण्टे में तय कर लिया (रोक मौत के घातक भय के दौरों के कारण सड़क किनारे की घास में छिपता-छिपता रात भर चलकर आया था), और जब सूरज काफ़ी गर्मी बरसाने लगा, उस टीले पर जिसकी तलहटी में बल खाती तोप नदी बह रही थी, हरियाली से घिरा स्तम्भोंवाला मिसरी का महल दिखायी पड़ा। चारों ओर मातमी नीरवता छायी हुई थी। राजकीय फार्म के फाटक से कुछ पहले ही छकड़े पर जा रहे किसान को पीछे छोड़कर एजेण्ट आगे बढ़ गये। वह आराम से छकड़े पर बोरियाँ लादे चला जा रहा था और शीघ्र ही बहुत पीछे छूट गया। मोटरसाइकिल ने दौड़ते हुए पुल पार किया और पोलाइतिस ने हार्न बजाया, ताकि कोई बाहर आये। बस दूर से कोन्त्सोव्का के पगलाये कुत्तों के अलावा, कहीं से भी किसी ने हार्न का जवाब नहीं दिया। मोटरसाइकिल रफ़्तार कम करके हरी काई से ढके शेरोंवाले फाटक पर रुकी। पीले गेटरोंवाले धूल से ढके एजेण्टों ने उतरकर मोटरसाइकिल को जंजीर के साथ जंगले से बाँधकर ताला लगा दिया और अहाते में प्रवेश किया। सन्नाटे ने उन्हें हैरान कर दिया।

"अरे, कोई है!" श्चूकिन ज़ोर से चिल्लाया।

पर किसी ने भी उसकी दहाड़ का उत्तर नहीं दिया। एजेण्टों ने अहाते की परिक्रमा की, उनकी हैरानी बढ़ती जा रही थी। श्चूकिन गम्भीर लगने लगा, उसकी सुनहरी भौंहें अधिकाधिक सिकुड़ती जा रही थीं, वे रसोई की बन्द खिड़की में झाँके और उन्होंने देखा कि वहाँ कोई नहीं था पर फ़र्श प्लेटों के सफ़ेद ठीकरों से पटा था।

"यहाँ सचमुच कुछ हुआ है। अब मैं देखता हूँ। दुर्घटना," पोलाइतिस बोला।

"अरे कोई है! ओ!" श्चूकिन चिल्ला रहा था पर रसोई की छत से टकराकर आती

प्रतिध्वनि ही उसका जवाब दे रही थी।

"शैतान ही जाने कि माज़रा क्या है!" श्चूकिन बड़बड़ा रहा था। "आख़िर वह सबको एकसाथ तो हड़प नहीं सकता। या वे भाग गये। चलो, अन्दर चलते हैं।"

स्तम्भों के बरामदेवाले महल का दरवाज़ा पूरा खुला था पर वह बिल्कुल सूना था। एजेण्ट अटारी तक चढ़े, उन्होंने एक-एक दरवाज़े को खटखटाकर खोला पर उनके हाथ कुछ भी तो नहीं लगा, और मरघट-से सूने ओसारे से वे फिर से अहाते में निकल आये।

"चलो एक चक्कर लगाते हैं। गर्मघरों की तरफ़ चलो," श्चूकिन ने आदेश दिया, "सब छान मारेंगे, बाद में टेलीफ़ोन कर सकते हैं।"

खड़ंजे की पगडण्डी से फुलवारियों के पास से होते एजेण्ट पिछवाड़े के अहाते में पहुँचे। उसे पार करके उन्हें गर्मघर के चमकते शीशे दिखायी पड़े।

"ज़रा ठहरो," श्चूकिन फुसफुसाया और उसने पेटी पर बँधी पिस्तौल निकाली। पोलाइतिस ने चौकस होकर मशीनगन तैयार कर ली। गर्मघर और उसके कहीं पीछे से अजीब व तेज़ आवाज आ रही थी। लगता था कि कहीं पास से भाप का इंजन खड़ा है। साँय-साँय... साँय.... सू-सू-सू... गर्मघर फुफकार रहा था।

"ज़रा, सावधानी से चलो," श्चूकिन फुसफुसाया और एड़ियों से ठक-ठक न करने की कोशिश करते हुए एजेण्ट शीशों के बिल्कुल पास जाकर अन्दर झाँके।

पोलाइतिस झट से पीछे हटा और उसका चेहरा पीला पड़ गया। श्चूकिन का मुँह खुला का खुला रह गया और वह हाथ में पिस्तौल उठाये बुत बनकर खड़ा हो गया।

सारा गर्मघर सड़ी, कोड़ों से भरी खिचड़ी जैसा लग रहा था। गर्मघर का फ़र्श फुफकारते, बल खाते, कुण्डलियाँ बनाते, रेंगते, कुलबुलाते भीमकाय साँपों से पटा था। फ़र्श पर पड़े फूटे अण्डों के छिलके उनके बोझ से कड़ककर चूरा बन रहे थे। ऊपर बिजली का अतिशक्तिशाली गोला मद्धिम प्रकाश बरसा रहा था जिसकी वजह से गर्मघर के अन्दर सब कुछ किसी सिनेमा जैसा लग रहा था। फ़र्श पर विशाल कमरों जैसी तीन बड़ी-बड़ी काली पेटियाँ दिखायी दे रही थीं, उनमें से दो अपनी जगह से हिलीं, टेढ़ी पड़ी थीं, वे बुझ चुकी थीं और तीसरी में प्रकाश का छोटा-सा सिन्दूरी बिन्दु चमक रहा था। विभिन्न आकारों के साँप तारों पर रेंग रहे थे, खिड़कियों की चौखटों पर चढ़कर छत में बने छेदों से बाहर निकल रहा थे। बिजली के गोले पर कई गज लम्बा बिल्कुल स्याह चित्तीदार साँप लटका था और उसका फन गोले के पास लोलक की तरह झूल रहा था। फुफकारों के बीच कोई झुनझुने-से बज रहे थे, गर्मघर से तालाब जैसी गली सड़ान्ध फैल रही थी। एजेण्टों को धूल भरे कोनों में सफ़ेद अण्डों के ढेर और पेटियों के पास निर्जीव पड़ा लम्बी टाँगोंवाला भीमकाय पक्षी और दरवाज़े पर सलेटी कपड़ों में एक आदमी का शव और उसके पास पड़ी बन्दूक भी धुँधले से दिखायी दिये।

"वापस लौटो," श्चूकिन चिल्लाया और बायें हाथ से पोलाइतिस को धकेलता हुआ तथा दायें हाथ से पिस्तौल तानता हुआ पीछे हटने लगा। वह कोई नौ बार गर्मघर के

पास फुफकारती हरी-सी बिजली बरसा चुका था। आवाजें भयंकर होती जा रही थीं, श्चूकिन की गोलाबारी के उत्तर में सारे के सारे गर्मघर में प्रचण्ड गति आ गयी और सभी छेदों से चपटे सिर झाँकने लगे। तत्क्षण सारे राजकीय फार्म में गरजन गूँजने लगी और दीवारों पर उसकी चमक झिलमिलाने लगी। ठाँय-ठाँय-ठाँय—उल्टे पाँव पीछे हटता पोलाइतिस गोलियाँ चला रहा था। पीछे से किसी चौपाये की विचित्र-सी सरसराहट सुनायी पड़ी, अचानक पोलाइतिस के मुँह से भयंकर चीख निकली और वह औंधा गिर पड़ा। कोठरी के पीछे से निकले मुड़े पँजों, कत्थई-हरे रंग के विराट छिपकली जैसे, लम्बे पैने जबड़ों और कण्टीली पूँछवाले दैत्य ने झपटकर पोलाइतिस की टाँग चबा डाली और उसे धराशाही कर दिया।

"बचाओ!" पोलाइतिस चिल्लाया और तत्क्षण उसका बायाँ हाथ जबड़े में पहुँचकर कुरकुराया, दायें हाथ से उसने मशीनगन को ज़मीन पर घसीटकर उठाने का निष्फल प्रयास किया। श्चूकिन ने मुड़कर देखा और सकपका गया। वह एक बार गोली चला पाया, पर निशाना काफ़ी हटकर लगाया, क्योंकि उसे डर था कि कहीं साथी को न लग जाये। दूसरी गोली उसने गर्मघर की दिशा में चलायी क्योंकि वहाँ से सांपों के छोटे-छोटे सिरों के बीच से एक विशाल, हरे रंग का बाहर निकला और उसका धड़ सीधा श्चूकिन की ओर लपका। इस गोली से उसने भीमकाय साँप को मार डाला, फिर मगरमच्छ के जबड़े में अधमरे पोलाइतिस के इर्द-गिर्द कूदते-फाँदते हुए वह ऐसा स्थान चुन रहा था ताकि एजेण्ट को कोई नुकसान पहुँचाये बिना भयंकर दैत्य को मार सके। अन्ततः वह इसमें सफल हो ही गया। विद्युत पिस्तौल से दो बार पटाखे-से छूटे जिन्होंने चारों ओर हरी-सी रोशनी फैला दी और मगरमच्छ उछलकर ठण्डा हो गया और उसके जबड़े से पोलाइतिस छूट गया। उसकी आस्तीन, उसके मुँह से खून के परनाले बह रहे थे और वह दायें चंगे हाथ के बल उठकर अपनी टूटी बायीं टाँग को घसीट रहा था। आँखें उसकी बुझती जा रही थीं।

"श्चूकिन... भाग जाओ," वह सुबकियाँ लेते हुए मिमियाया।

श्चूकिन ने गर्मघर की ओर कई राउण्ड फायर किये और उसके कई शीशे फूट गये। पर तहखाने के रोशनदान से निकले हरे और लचीले भीमकाय स्प्रिंग ने अपने बीस गज की देह से अहाते को पूरा भर डाला और पलक झपकते ही श्चूकिन की टाँगों से लिपट गया। वह ज़मीन पर गिर पड़ा और चमचमाती पिस्तौल हाथ से छूटकर दूर जा गिरी। श्चूकिन चिंघाड़ा, फिर उसका दम घुट गया, फिर कुण्डलियों ने सिर के अलावा उसे पूरा छिपा लिया। एक कुण्डल सिर के ऊपर से उसकी खाल छीलता गुज़रा और सिर यह फूट गया। राजकीय फार्म में और एक भी गोली चलने की आवाज नहीं सुनायी दी। यहाँ फुफकारती बुलन्द आवाज ही हावी थी। उसंके उत्तर में हवा कोन्त्सोव्का से दूरस्थ क्रन्दन को उड़ाकर ला रही थी पर अब यह कहना कठिन था कि यह किसका क्रन्दन है, कुत्तों का या आदमियों का।

अध्याय 10

क़यामत

"इज्वेस्तिया" समाचारपत्र के रात्रिकालीन सम्पादकालय में बिजली के गोले जगमगा रहे थे और मोटा प्रबन्ध-सम्पादक सीसे की मेज़ पर दूसरे पृष्ठ के लिए 'जनतंत्रों के संघ के समाचार' कालम में तार से आये डिस्पैचों का स्थान निर्धारित कर रहा था। एक प्रूफ पर उसकी नज़र पड़ी, उसने अपनी बिना कमानी की ऐनक से उसे ध्यान से पढ़ा और हँस पड़ा, उसने तकनीकी सम्पादकों और क्लिकर को बुलाकर उन्हें प्रूफ दिखाया। नम काग़ज़ की पतली पट्टी पर छपा था :

"ग्राचोव्का, स्मोलेन्स्क प्रान्त। जिले में घोड़े जितनी बड़ी मुर्ग़ी देखने में आयी है जो दुलत्ती मारती है। उसकी पूँछ के स्थान पर बुर्जुआ मेमों की कलगियाँ हैं।"

हँसते-हँसते कम्पोजीटरों के पेट में बल पड़ गये।

"मेरे जमाने में," ही-ही करता सम्पादक बोला, "जब मैं वान्या सीतिन के "रूस्सकोये स्लोवो" में काम करता था लोगों को पीने के बाद हाथी नज़र आने लगते थे। सच कह रहा हूँ। और अब मतलब शतुरमुर्ग नज़र आते हैं।"

कम्पोजीटर ठहाके लगा रहे थे।

"अरे सच में, शतुरमुर्ग ही तो है," क्लिकर बोला, "पर इसकी जगह क्या भरूँ, इवान वोनीफात्येविच?"

"अरे क्या तुम पागल हो गये," प्रबन्ध-सम्पादक बोला, "मुझे तो हैरानी होती है कि सम्पादक ने कैसे छोड़ दिया, यह तो किसी ने पीकर तार भेजा है।

"सच है, दावत के बाद भेजा होगा," कम्पोजिटरों ने सहमति व्यक्त की और क्लिकर ने मेज़ से शतुरमुर्ग के बारे में डिस्पैच को हटा लिया।

इसीलिए अगली सुबह हमेशा की तरह ढेरों रोचक सामग्री के साथ "इज्वेस्तिया" अख़बार छपा पर उसमें ग्राचोव्का के शतुरमुर्ग का कोई जिक्र तक न था। रीडर इवानोव ने जो "इज्वेस्तिया" का नियमित पाठक था, अपनी प्रयोगशाला में अख़बार खोला और उबासी लेकर बोला : "एक भी रोचक खबर नहीं," और सफ़ेद चोगा पहनने लगा। कुछ देर बाद उसकी प्रयोगशाला में बर्नर जलने लगे और मेंढक टर्राने लगे। और प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव की प्रयोगशाला में कोहराम मचा था। भयभीत पानक्रात सावधान की मुद्रा में खड़ा था।

"समझ गया... जो हुक्म," वह कह रहा था।

पेर्सिकोव ने उसे लाख की मुहर से बन्द लिफाफा थमाते हुए कहा :

"पशुपालन विभाग में सीधे इस निदेशक चिड़े के पास जाना और उससे साफ़-साफ़ कह देना कि वह—सूअर है। कहना कि मैंने, प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव ने यही कहलवाया है। और उसे यह लिफाफा थमा देना।"

"यह भी अच्छी मुसीबत है..." पीले चेहरेवाले पानक्रात ने सोचा और लिफाफा लेकर चला गया।

पेर्सिकोव लाल-पीले हो रहे थे।

"शैतान ही जाने कि मामला क्या है," वह दस्ताने चढ़े हाथों को मसलते हुए प्रयोगशाला में चहलकदमी कर रहे थे और चिल्लपों मचा रहे थे, "यह मेरा और प्राणीविज्ञान का अनदेखा उपहास है। मुर्ग़ियों के इन नासपीटे अण्डों के पहाड़ लाये जा रहे हैं, पर मैं दो महीने से ज़रूरी चीज़ें नहीं पा सका हूँ। मानो अमरीका सात समुन्दर पार हो! हमेशा कुछ न कुछ लफड़ा लगा रहता, हमेशा गड़बड़ रहती है," वह उँगलियों पर गिनने लगे, "पकड़ने में... चलो, ज़्यादा से ज़्यादा दस दिन लगेंगे, अच्छा मान लेते हैं—पन्द्रह दिन... चलो, बीस मानकर चलते हैं और हवाईजहाज से दो दिन लगेंगे, लन्दन से बर्लिन तक एक दिन... बर्लिन से यहाँ तक छः घण्टे... कितनी बेहूदी गड़बड़ है...

वह आवेश में टेलीफ़ोन पर झपटे और कहीं फ़ोन करने लगे।

उनकी प्रयोगशाला में किन्हीं रहस्यमय और बेहद खतरनाक प्रयोगों की पूरी तैयारी हो चुकी थी। वहाँ दरवाज़ों की झिर्रियों पर चिपकाने के लिए काग़ज़ की पट्टियाँ, बाहर निकली नलियोंवाले गोतोखोरों के हेल्मेट और पारे की तरह चमचमाते कुछ सिलिण्डर पड़े थे जिन पर "छूना वर्जित है" के लेबल चिपके हुए थे और खोपड़ी व दो हड्डियों का चित्र बना हुआ था।

प्रोफ़ेसर को शान्त होने में कम से कम तीन घण्टे लग गये ताकि वे कुछ मामूली काम करने में समर्थ हो सकें। उन्होंने फिर यही किया। संस्थान में वह रात के ग्यारह बजे तक काम करते थे इस लिए उन्हें इसकी तनिक भी खबर नहीं थी कि मोतियाई दीवारों के उस पार क्या हो रहा है। उन्हें न मास्को में किन्हीं साँपों के बारे में उड़ती अफ़वाह की खबर थी और न ही सांध्य समाचारपत्र में सुर्खियों में छपे अजीब संवाद की क्योंकि इवानोव आर्ट थियेटर में 'फ़्योदोर इवानोविच' नाटक देखने गया हुआ था, इसलिए उन्हें ख़बरें बतानेवाला कोई था ही नहीं।

पेर्सिकोव कोई आधी रात को प्रेचीस्तेन्का पहुँचे और सोने के लिए लेट गये, बिस्तर में उन्होंने लन्दन से मिले "ज़ूलाजिकल हेराल्ड" में कोई लेख पढ़ा। वह सो रहे थे, देर रात तक लट्टू की तरह नाचता मास्को भी सो रहा था, बस त्वेर्स्काया सड़क पर विशाल धूसर इमारत ही नहीं सो रही थी, जिसके कम्पाउण्ड में सारी इमारत को झकझोरते हुए "इजवेस्तिया" की रोटर प्रेसें भयंकर शोर मचा रही थीं। सम्पादक की केबिन में कोहराम मचा था। वह बिल्कुल पगलाया हुआ था, आँखें उसकी लाल थीं। उसे कुछ सूझ नहीं रहा था कि क्या करे और सबको वह भाड़ में भेज रहा था। उसके पीछे-पीछे पूँछ की तरह घूमता क्लिकर मुँह से शराब की बू छोड़ता हुआ कह रहा था :

"तो क्या हुआ, इवान वोनीफात्येविच, परेशानी की क्या बात है, कल सुबह

विशेषांक निकाल देंगे। अब प्रेस से थोड़े ही उतार सकते हैं अंक को।"

कम्पोजीटर घर नहीं गये बल्कि झुण्ड बनाकर घूम रहे थे, जमघट लगाकर तारों को पढ़ रहे थे जिनका अब ताँता लग गया था, रात भर वे हर पन्द्रह मिनट बाद मिल रहे थे, स्थिति अधिकाधिक भयंकर और विचित्र होती जा रही थी। अल्फ़्रेड ब्रोन्स्की का नुकीला हैट छापेखाने की चमचमाती गुलाबी रोशनी में इधर-उधर दिखायी पड़ रहा था, यांत्रिक मोटा भी चरमराता लुढ़क रहा था, वह कभी यहाँ होता तो कभी वहाँ। इमारत का दरवाज़ा धड़ाक से खुलता-बन्द होता, रात भर रिपोर्टरों का ताँता लगा रहा। छापेखाने के सभी बारह टेलीफ़ोन निरन्तर एंगेज्ड थे और एक्सचेंज रहस्यमय चोंगों में लगभग यंत्रवत दोहरा रही थी "एंगेज्ड" पर एक्सचेंज की आपरेटरों के सामने घण्टियाँ गाती ही जा रही थीं।....

कम्पोजीटरों ने यांत्रिक मोटे को घेर लिया और जहाजरानी का कप्तान उनसे कह रहा था :

"गैसों से लैस एरोप्लेन भेजने पड़ेंगे।"

"और कोई चारा ही नहीं," कम्पोजीटर उत्तर में बोले, "यह भी क्या मुसीबत है।" फिर माँ-बहन की भयंकर गालियों से हवा गूँज उठी और कोई चीखकर चिल्लाया :

"इस पेर्सिकोव को गोली मार देनी चाहिये।"

"पेर्सिकोव का क्या कसूर ," जमघट से आवाज आयी, "राजकीय फार्मवाले उस हरामजादे को गोली मारनी चाहिये, उसी स्साले को।"

"पहरा बिठाना चाहिये था," कोई और चिल्लाया।

"पर क्या पता ये अण्डे हो ही नहीं।"

सारी इमारत प्रेस की मशीनों से काँपती गड़गड़ा रही थी और ऐसा लगता था मानो यह धूसर अनाकर्षक भवन विद्युत आग में जल रहा हो।

सुबह भी उसे कम न कर पायी। उल्टे उसने उसे बढ़ा ही दिया हालाँकि बिजलियाँ बुझ चुकी थीं। डामर बिछे कम्पाण्ड में एक के बाद एक आकर मोटरसाइकिलें मोटरों के बीच खड़ी हो रही थीं। मास्को का सारा जीवन ठप्प हो गया, पक्षियों की तरह अख़बार के सफ़ेद पन्नों ने उसे ढक दिया। सबके हाथों में अख़बार फड़फड़ा रहे थे। सुबह के ग्यारह बजे तक अख़बार खत्म हो गये थे हालाँकि इस महीने "इज्वेस्तिया" पन्द्रह लाख प्रतियों में छपता था। प्रोफ़ेसर पेर्सिकोव बस द्वारा प्रेचीस्तेन्का से संस्थान पहुँचे। वहाँ एक खबर उनका इन्तज़ार कर रही थी। स्वागत कक्ष में करीने से लोहे की पत्तियों से जड़ी लकड़ी की तीन पेटियाँ रखी थीं जिन पर जर्मन भाषा में ढेरों विदेशी चिप्पियाँ चिपकी थीं और उनके ऊपर चाक से रूसी बुलन्द शब्दों में लिखा था : "सावधान—अंण्डे।"

प्रोफ़ेसर खुशी से नाच उठे।

"आख़िर को आ ही गये," वह चिंहुके। "पानक्रात, फौरन पेटियों को खोलो, पर

ज़रा देखके ताकि फूट न जायें। मेरी प्रयोगशाला में ले चलो।"

पानक्रात ने फौरन हुक्म की तामील की और सवा घण्टे बाद काग़ज़ के चिथड़ों और बुरादे से भरी प्रयोगशाला में उनका स्वर प्रचण्ड तूफ़ान की तरह गरजा :

"वे क्या मेरी हँसी उड़ाते हैं?" प्रोफ़ेसर मुक्के हिला-हिलाकर, हाथों में अण्डों को लेकर उन्हें उलट-पलटकर चिंघाड़ रहे थे, "यह जानवर है न कि चिड़ा। मैं किसी को भी अपनी हँसी नहीं उड़ाने दूँगा! यह क्या है, पानक्रात?"

"जी, अण्डे हैं," पानक्रात रुआँसी आवाज में उत्तर दे रहा था।

"मुर्गी के, समझते हो, मुर्ग़ी के इनका नास पिटे! मुझे इनकी क्या ज़रूरत है? उस हरामी को भिजवा दें, उसके राजकीय फार्म को!"

पेर्सिकोव कोने में लगे टेलीफ़ोन की ओर लपके, पर फ़ोन नहीं मिला पाये।

"व्लादीमीर इपात्येविच! व्लादीमीर इपात्येविच!" संस्थान के गलियारे में इवानोव की आवाज गरजी।

पेर्सिकोव टेलीफ़ोन के पास से हटे और पानक्रात रीडर के लिए रास्ता साफ़ करने के लिए दुम दबाकर भागा। अपने जेण्टलमैनोंवाले शऊर को भूलकर गुद्दी पर टिके अपने हैट को उतारे बिना वह दौड़ा-दौड़ा प्रयोगशाला में घुसा, उसके हाथ में अख़बार था।

"व्लादीमीर इपात्येविच, आपको पता है, क्या हो गया?" वह पेर्सिकोव के मुँह के पास 'विशेष संस्करण' की सुर्खीवाले अख़बार को हिलाकर चिल्लाया, जिसके बीचों बीच चटकीला रंगीन चित्र था।

"नहीं, आप सुनिये तो सही, उन्होंने क्या कर डाला," उसकी बात सुने बिना उत्तर में पेर्सिकोव चिल्लाये, "उन्होंने मुझे मुर्ग़ी के अण्डों से चकित करने की सोची है। यह चिड़ा काठ का उल्लू है, देखिये तो!"

इवानोव हक्का-बक्का रह गया। वह भयाक्रान्त नज़र से खुली पेटियों को ताकने लगा, फिर अख़बार को, इसके बाद तो उसकी आँखें चेहरे से कूदकर लगभग बाहर आ गयीं।

"अच्छा, तो यह बात है," हाँफते हुए वह बुदबुदाया, "अब मैं समझा... नहीं, व्लादीमीर इपात्येविच, आप एक नज़र तो डालिये," उसने झट से अख़बार फैलाया और काँपती उँगलियों से पेर्सिकोव को रंगीन चित्र दिखाया। उसमें, आग बुझाने के भयंकर पाइप की तरह पीली चित्तियोंवाला जैतूनी साँप अजीब-सी धुँधली हरियाली पर बल खा रहा था। यह फ़ोटो हल्के विमान से लिया गया जो बड़ी सावधानी के साथ साँप के ऊपर से काफ़ी नीचाई पर फिसला था, "आपके विचार से, व्लादीमीर इपात्येविच, यह क्या है?"

पेर्सिकोव ने चश्मे को माथे पर चढ़ाया, फिर उन्हें आँखों पर सरकाया, चित्र को गौर से देखकर वह अत्यन्त आश्चर्य के साथ बोले :

"यह क्या बला है। यह...अरे यह तो अनाकोण्डा है, दरियाई अजगर..."

इवानोव ने हैट गिरा दिया, कुर्सी पर बैठकर एक-एक शब्द को मेज़ पर घूँसा पटक-पटककर वह बोला :

"व्लादीमीर इपात्येविच, यह अनाकोण्डा स्मोलेन्स्क प्रान्त का है। बहुत भयंकर बात हो गयी। आप समझते हैं, उस हरामजादे ने मुर्ग़ियों की जगह साँपों को पैदा कर डाला, और आप सोचिये भी, उन्होंने भी मेंढकों की तरह ही बेशुमार तादाद में अण्डे दे दिये!"

"क्या कह रहे हैं आप?" पेर्सिकोव बोले और उनका चेहरा कत्थई पड़ गया... "प्योत्र स्तेपानोविच, आप मजाक कर रहे हैं... कहाँ से?"

पल भर के लिए इवानोव की बोलती बन्द हो गयी, फिर उसकी बोलती लौटी और खुली पेटी की ओर उँगली से इशारा करके जिसमें पीले बुरादे में सफ़ेद-सफ़ेद सिरे चमक रहे थे, वह बोला :

"यहाँ से।"

"क्या?!" पेर्सिकोव चिल्लाये, अब माज़रा उनकी समझ में आने लगा था।

इवानोव ने पूर्ण विश्वास के साथ अपनी भिंची मुट्ठियों को हिलाकर चिल्लाया :

"यक़ीन कीजिये! साँप और शतुरमुर्ग के अण्डों के आपके आर्डर को राजकीय फार्म में भेज दिया गया और मुर्ग़ी के अण्डे गलती से आपको भेज दिये गये।"

"हे भगवान... हे भगवान," पेर्सिकोव रटने लगे, उनका चेहरा हरा हो गया और वह स्टूल पर ढहने लगे।

दरवाज़े के पास खड़े पानक्रात को काटो तो खून नहीं, वह गूँगा खड़ा था। इवानोव उछलकर खड़ा हुआ, लपककर अख़बार उठाकर नाखून की नोक से पंक्ति को रेखांकित करते हुए प्रोफ़ेसर के कान में चिल्लाने लगा :

"अब देखते हैं कि उन्हें कैसा मजा चखना पड़ेगा!... अब क्या होगा, मैं उसकी तनिक भी कल्पना नहीं कर सकता। व्लादीमीर इपात्येविच, आप देखिये," और वह मुसे अख़बार पर जहाँ नज़र पड़ी वहीं से ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर पढ़ने लगा..."साँपों के झुण्ड मोझाइस्क की दिशा में बढ़ रहे हैं... रास्ते में वे बेशुमार अण्डे देते जा रहे हैं। दुखोव्स्की जिले में अण्डे देखने में आये हैं... मगरमच्छ और शतुरमुर्ग दिखायी पड़े हैं। स्पेशल पर्पस टुकड़ियाँ और राजकीय विभाग के दस्तों ने व्याजमा के पास के जंगल में आग लगाकर और इस प्रकार दैत्याकार जीवों के रास्ते को रोककर नगर में फैले आतंक को समाप्त किया..."

रंग-बिरंगे, नीले-सफ़ेद चेहरे, बावली आँखोंवाले पेर्सिकोव स्टूल से उठे और हाँफते हुए चिल्लाने लगे :

"अनाकोण्डा... अनाकोण्डा... दरियाई अजगर! हे भगवान!" ऐसी दशा में उसे न कभी इवानोव ने देखा और न ही पानक्रात ने।

प्रोफ़ेसर ने एक झटके में टाई खींच डाली, कमीज के बटन उखाड़ डाले, उनके चेहरे पर फालिज की भयंकर लाली छा गयी और वह लड़खड़ाते हुए बाहर की ओर दौड़े, उनकी आँखें काँच की तरह ठण्डी, जड़ और भावशून्य थीं। संस्थान की पत्थर की छतें चीत्कार से भर गयीं।

"अनाकोण्डा... अनाकोण्डा... प्रतिध्वनि गूँजी।

"प्रोफ़ेसर को पकड़ों!" इवानोव चीखकर पानक्रात से बोला जो भयभीत होकर एक जगह खड़ा फुदक रहा था। "उन्हें पानी दो... उन्हें फिट पड़ा है।"

अध्याय 11

युद्ध और मौत

मास्को में प्रचण्ड विद्युतीय रात दहक रही थी। सारी की सारी बिजलियाँ जली हुई थीं, घरों में ऐसा एक भी कमरा न था जहाँ शेड उतरी बत्तियाँ न जल रही हों। चालीस लाख की आबादीवाले मास्को का एक भी बाशिन्दा नहीं सो रहा था, सिवाय नादान बच्चों के। क्वार्टरों में लोग जैसे-तैसे रूखा-सूखा खाकर गुजारा कर रहे थे, क्वार्टरों में लोग कुछ चिल्ला रहे थे, हर पल सभी मंजिलों की खिड़कियों से विकृत चेहरे झाँक रहे थे, उनकी नज़रें सर्चलाइटों से आर-पार कटे आसमान की ओर उठ रही थीं। आकाश में रुक-रुककर सफ़ेद भभूके छूट रहे थे जो अपने धुँधले प्रकाश से मास्को को आलोकित करके बुझते और विलीन हो जाते। आकाश काफ़ी नीचे उड़ते वायुयानों की निरन्तर गरज से गुँजायमान था। त्वेर्स्काया-याम्स्काया सड़क पर खास तौर से विकट स्थिति थी। अलेक्सान्द्रोव्स्की स्टेशन पर हर दस मिनट बाद जैसे-तैसे, माल के विभिन्न श्रेणियों के यात्री डिब्बों, यहाँ तक कि टैंकरों तक को जोड़कर बनायी गयी रेलगाड़ियाँ पहुँच रही थीं जिन पर आतंकित लोग मक्खियों की तरह चिपके हुए थे, वे त्वेर्स्काया-याम्स्काया सड़क पर गाढ़ी खीर की तरह दौड़ रहे थे, बसों में सवार होकर जा रहे थे, ट्रामों की छतों पर सवार थे, एक दूसरे को कुचल रहे थे, पहियों के नीचे आकर कुचले जा रहे थे। स्टेशन पर रुक-रुककर भीड़ के ऊपर आशंकापूर्ण ठाँय-ठाँय हो रही थी–यह पटरियों पर स्मोलेन्स्क प्रान्त से मास्को की ओर पगले होकर दौड़ते लोगों के आतंक का दमन करने के लिए फ़ौजी दस्ते गोलियाँ चला रहे थे। स्टेशन पर रुक-रुककर खिड़कियों के शीशे झंकारकर टूट रहे थे, सारे के सारे इंजन सीटियाँ बजा रहे थे। सारी सड़कें परित्यक्त और कुचले पोस्टरों से ढकी थीं, ये ही पोस्टर सर्चलाइटों की तीखी सिन्दूरी रोशनी में दीवारों से झाँक रहे थे। सब उनसे परिचित थे इसलिए कोई उन्हें नहीं पढ़ रहा था। वे मास्को में युद्ध की स्थिति की घोषणा करते थे। उनमें आतँक के लिए सजा की चेतावनी थी और यह सूचना दी गयी थी कि एक

के बाद एक गैसों से लैस लाल सेना के सशस्त्र दस्ते स्मोलेन्स्क प्रान्त में भेजे जाने लगे हैं। पर पोस्टर चीत्कार करती रात को नहीं रोक सके। क्वार्टरों में प्लेंटे और फूलों के गमले गिरकर फूट रहे थे, कलान्चोव्स्काया चौक पर यारोस्लाव्स्की और निकोलायेव्स्की स्टेशन तक पहुँच पाने की व्यर्थ आशा में न जाने गठरियों और सूटकेसों में क्या बाँधा जा रहा था। पर उत्तर और पूर्व दिशा के स्टेशनों को पैदल सेना की घनी कतारों ने घेर रखा था और भारी-भारी ट्रक पेटियों से ऊपर तक लदे घरघराते जा रहे थे। पेटियों पर बैठे तिकोनी टोपियोंवाले सैनिक अपनी संगीनों को चारों दिशाओं में ताने हुए थे, यह वित्त मंत्रालय के तहखानों से सोने के सिक्कों का कोष बाहर भेजा जा रहा था, बड़े-बड़े बक्सों पर यह भी लिखा था : "सावधान। त्रेत्याकोव गैलरी।" मास्को भर में मोटरें पों-पों करती दौड़ रही थीं।

कहीं बहुत दूर लगी आग की लालिमा क्षितिज पर झिलमिला रही थी और तोपों की निरन्तर गोलाबारी से अगस्त की गहरी काली रात कँपकँपा रही थी।

सुबह से कुछ पहले, निद्राविहीन, एक भी बत्ती बुझाये बिना बैठे मास्को की सड़कों से होता हुआ, त्वेर्स्काया सड़क पर रास्ता साफ़ करते हुए लोगों को फाटकों और दुकानों की खिड़कियों में धकेलते हुए हज़ारों खुरों को पटकते हुए अश्व सेना का अजगर गुज़रा। सिन्दुरी बाशलिकों* के सिरे धूसर पीठों पर लहलहा रहे थे, भालों की नोकें आकाश में चुभ रही थीं। उन्माद और आतंक की बिखरी खिचड़ी को साफ़ करते हुए आगे बढ़ती क़तारों को देखकर कोहराम और भगदड़ मचाती भीड़ मानो एकदम होश में आ गयी। फुटपाथों पर खड़ी भीड़ आशा के साथ नारे लगाने लगी।

"अश्व सेना जिन्दाबाद!" उन्मत्त महिला स्वर चिल्ला रहे थे।

"जिन्दाबाद!" पुरुष जवाब देते।

"रौंद देंगे!!! रौंद रहे हैं!..." कहीं से चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं।

"बचाओ!" फुटपाथ से आवाज़ें आ रही थीं।

फुटपाथ से क़तारों पर सिगरेट के पैकेट, चाँदी के सिक्के, घड़ियाँ बरसने लगीं, कई औरतें सड़क पर निकलकर, अपने हाथ-पाँव तुड़वाने का जोखिम उठाकर अश्वों की कतारों की बगल में रकाबों को थामकर उन्हें चूमती हुई घिसटने लगीं। घोड़ों की निरन्तर टाप में कभी-कभी टुकड़ी कमाण्डरों की कमान गूँजती :

"लगाम खींच!"

कहीं से ज़ोर-ज़ोर से गला फाड़कर गाने की आवाज आ रही थी और सिन्दूरी रंग की गुद्दी पर खिसकी टोपियोंवाले चेहरे घोड़ों पर से नियोनसाइनों के प्रकाश में झिलमिला रहे थे। उघड़े चेहरेवाले घुड़सवारों की कतारों के बीच-बीच में विचित्र घुड़सवार नज़र आ रहे थे जो अजीब-से बुर्के पहने हुए थे। उनके मुँह से पीछे की ओर नलके जा रहे थे और पीठों पर तनियों से सिलिण्डर बँधे हुए थे। उनके पीछे-पीछे आग

* बाशलिकों–मफ़लर का काम देनेवाले लम्बे-लम्बे सिरोंवाला हुड।–सं.

बुझानेवाली गाड़ियों की तरह पाइपों से लिपटे भीमकाय टैंकर ट्रक और बन्द हैचोंवाले भारी टैंक बटिया को पीसते हुए अपने पट्टों पर चल रहे थे। घुड़सवारों की क़तारों में धूसर बख़्तर से पूरी तरह ढकी बख्तरबन्द गाड़ियाँ भी चल रही थीं, उनके बाहर भी वैसे ही नलके निकले हुए, बगलों पर सफ़ेद खोपड़ियाँ बनी थीं और लिखा था : "गैस। रसायन समाज।"

"भाइयो, बचाओ," फुटपाथों से लोग चिल्ला रहे थे, "कर दो सफाया पापी राक्षसों का... मास्को को बचा लो!"

"माँ... बहन..." क़तारों में गूँज रहा था। रात की रोशन हवा में सिगरेट के पैकेट फुदक रहे थे और घोड़ों पर से कढ़ी सफ़ेद खीसें विस्मित लोगों की ओर चमक रही थीं। कतारों में मन्द-मन्द हृदयविदारक गीत तैर रहा था।

...न इक्का, न बेगम, न गुलाम
शक नहीं इसमें कि कर देंगे हम सफाया हैवानों का,
मारी सीने में गोली चार–हो गया काम तमाम...

इस सब खिचड़ी के ऊपर "हुर्रा" की गरज हुई क्योंकि बिजली की तरह यह अफवाह फैल गयी कि क़तारों के आगे-आगे सभी घुड़सवारों जैसा बाशलिक ओढ़े घोड़े पर बैठा अश्व वाहिनी का सफ़ेद बालोंवाला वृद्ध कमाण्डर जा रहा है जो 10 साल पहले जीती-जागती किंवदंती बन गया था। भीड़ चिल्ला रही थी और डूबते दिलों को कुछ उबारती "हुर्रा... हुर्रा" की गरज आकाश में उड़ रही थी।

* * *

संस्थान की इमारत में धुँधली रोशनी थी। घटनाएँ इक्की-दुक्की, धुँधली, अस्पष्ट गूँज के रूप में ही वहाँ उड़कर पहुँचती। एक बार मनेज के पास की बिजली की घड़ी के नीचे गोलीबारी की बाढ़ गूँजी, यह वोल्खोन्का सड़क के एक मकान को लूटने की कोशिश करनेवाले लुटेरों को देखते ही गोली मार दी गयी थी। सड़क पर मोटरों की आवाजाही कम हो गयी थी, वह स्टेशनों के पास जमा हो गयी थी। प्रोफ़ेसर की प्रयोगशाला में जहाँ एक ही धुँधला बल्ब मेज़ पर रोशनी का पुँज बिखेरता जल रहा था, पेर्सिकोव हाथों पर सिर टिकाये मौन बैठे थे। उनके चारों ओर धुएँ का गुबार तैर रहा था। बक्से में किरण बुझ चुकी थी। थलजीवशालाओं में मेंढक चुप थे क्योंकि वे सो गये थे। प्रोफ़ेसर न काम करते थे न पढ़ते थे। एक ओर, उनकी बायीं कोहनी के नीचे संकरे पृष्ठ पर छपे टेलीग्रामों का सांध्य संस्करण था, जिसमें सूचित किया गया था कि सारा स्मोलेन्स्क शहर धू-धू जल रहा है, कि तोपखाना मोझाइस्क के जंगल के चप्पे-चप्पे पर गोलाबारी करके सभी नम खड्डों में भरे मगरमच्छों के अण्डों को नष्ट कर रहा है। यह सूचना दी गयी थी कि व्याजमा के पास वायुयानों के स्क्वाड्रन की कार्यवाही

काफ़ी सफल रही जिसने सारे जिले को गैसों से पाट दिया, पर इस इलाके में मरनेवालों की संख्या बेशुमार थी क्योंकि जनता सहीं ढंग से जिले छोड़कर जाने के बजाय आतंक के फलस्वरूप झुण्डों में बँटकर, अपनी जान को हथेली पर रखकर भगदड़ मचा रही थी। यह सूचना दी गयी थी कि मोझाइस्क की दिशा में काकेशियाई रिसाले की डिवीजन शतुरमुर्गों के झुण्डों पर चमकीली विजय प्राप्त की, उसने सभी को मार डाला और शतुरमुर्गों के अण्डों के ढेरों को तबाह कर दिया। इस युद्ध के दौरान डिवीजन को जान-माल का बस मामूली नुकसान हुआ। सरकार की सूचना में कहा गया था कि अगर जानवरों को राजधानी से 200 मील की दूरी पर नहीं रोका जा सका तो उसे पूरी तरह खाली कर दिया जायेगा। कर्मचारियों और मजदूरों को पूर्ण व्यवस्था बनाये रखनी चाहिये। स्मोलेन्स्क की घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने देने के लिए सरकार कड़े से कड़े कदम उठायेगी, जब कई हज़ार रैटल साँपों के अचानक हमले से मची भगदड़ के फलस्वरूप शहर में वहाँ आग लग गयी जहाँ लोग जलती अँगीठियों को छोड़-छोड़कर भागने लगे थे जबकि जान बचने की कोई आशा करना व्यर्थ था। यह सूचित किया गया था कि मास्को में कम से कम छः महीने की रसद है और मुख्य सेनापति के अधीन परिषद मकानों को बख्तरबन्द बनाने के लिए फौरी उपाय कर रही है ताकि उस हालत में हैवानों से राजधानी की सड़कों पर युद्ध किया जा सके अगर लाल सेनाएँ, वायुयान, और स्क्वाड्रन रेंगनेवाले जीवों की चढ़ाई को रोकने में असफल हुए।

प्रोफ़ेसर ने यह सब नहीं पढ़ा, वह भावशून्य आँखों से सामने देखते सिगरेट पर सिगरेट फूँकते जा रहे थे। उनके अलावा केवल दो व्यक्ति ही संस्थान की इमारत में थे : पानक्रात और बात-बात पर आँसू बहाती नौकरानी मार्या स्तेपानोव्ना, वह तीन रातों से न सोयी थी। पिछली रात उसने प्रोफ़ेसर की प्रयोगशाला में काटी जो किसी भी हालत में अपने एकमात्र बचे बुझे बक्से को नहीं छोड़ना चाहते थे। उस समय मार्या स्तेपानोव्ना छायादार कोने में मोमजामा मढ़े सोफे पर विराजमान थी, वह अपने विषण्ण विचारों में डूबी गैस बर्नर के ट्राइपाड पर प्रोफ़ेसर के लिए चढ़ी केतली को उबलते देखती मौन बैठी थी। संस्थान मौन था और सब कुछ अचानक ही हो गया।

अचानक फुटपाथ से ऐसी घृणा भरी बुलन्द आवाजें सुनायी पड़ीं कि मार्या स्तेपानोव्ना उछलकर चीख पड़ी। सड़क पर टार्चों की रोशनियाँ झिलमिलायीं और स्वागत-कक्ष से पानक्रात की आवाज सुनायी पड़ी। प्रोफ़ेसर को यह शोर पसन्द नहीं आया। वह पल भर के लिए सिर उठाकर बड़बड़ाये : "देखो तो, कैसा उधम मचा रहे हैं... अब मैं कर ही क्या सकता हूँ।" यह कहकर वह फिर से जड़ावस्था में लौट गये। पर वह भंग कर दी गयी। गेर्त्सन सड़क की ओर खुलनेवाला भारी दरवाज़ा बुरी तरह से खड़खड़ाया और सारी दीवारें हिल गयीं। फिर बगल की प्रयोगशाला में काँचं टूटने की आवाज आयी। प्रोफ़ेसर की प्रयोगशाला में भी झंकारकर काँच बिखर गया, सलेटी पत्थर खिड़की को फाँदकर आया और उसने शीशे की मेज़ को चूर-चूर कर दिया।

थलजीवशालाओं में मेंढक हड़बड़ा गये और उन्होंने टर्रा-टर्राकर आसमान सिर पर उठा लिया। मार्या स्तेपानोव्ना हड़बड़ाकर चीख पड़ी, वह प्रोफ़ेसर की ओर लपकी और उनके हाथ पकड़कर चिल्लाने लगी :

"भागिये, व्लादीमीर इपात्येविच, भागिये!"

वह रिवाल्विंग चेयर से उठे और तनकर खड़े हो गये, उँगली को हुक की तरह मोड़कर उन्होंने उत्तर दिया, उत्तर देते समय पल भर के लिए उनकी आँखों में पहले जैसी चमक हुई जिसने पहले जैसे उत्साही पेर्सिकोव की याद दिला दी। वह बोले :

"मैं कहीं नहीं जाऊँगा, यह सब बकवास है, वे पागलों की तरह हाय-तोबा मचा रहे हैं... अगर सारा का सारा मास्को ही पागल हो गया है तो मैं आख़िर जा कहाँ जा सकता हूँ। आप कृपा करके चुप हो जायें। मेरा इससे वास्ता क्या? पानक्रात!" उन्होंने आवाज़ देकर घण्टी बजायी।

शायद वह चाहते थे कि पानक्रात इस शोर-शराबे को बन्द करवा दे, जो उन्हें कभी भी पसन्द नहीं थी। पर अब पानक्रात कुछ भी करने में असमर्थ था। खड़खड़ का अन्त यह हुआ कि संस्थान का द्वार खुल गया और दूर से गोली चलने की ठाँय-ठाँय सुनायी पड़ी, फिर तो संस्थान की सारी इमारत दौड़ने, चिल्लाने, शीशे टूटने के कोलाहल से भर गयी। मार्या स्तेपानोव्ना ने कसकर पेर्सिकोव की आस्तीन पकड़ ली और उन्हें खींचकर कहीं ले जाने लगी। पर वह आस्तीन छुड़ाकर तनके खड़े हुए और अपना सफ़ेद चोगा पहने ही गलियारे में निकले।

"क्या चाहिये?" उन्होंने पूछा। दरवाज़ा पूरा खुल गया और उसमें सबसे पहले किरमिजी पट्टे तथा बायीं आस्तीन पर तारेवाले फ़ौजी की पीठ प्रकट हुई। वह दरवाज़े से उल्टे पाँव पीछे हट रहा था जिस पर क्रुद्ध भीड़ चढ़ाई कर रही थी और पिस्तौल से गोलियाँ चला रहा था। फिर वह भाग खड़ा हुआ पेर्सिकोव के पास से दौड़ते हुए चिल्लाया :

"प्रोफेसर, जान बचाइये, मैं अब कुछ नहीं कर सकता।"

उसके शब्दों के उत्तर में मार्या स्तेपानोव्ना की चीख गूँजी। सफ़ेद बुत की तरह खड़े पेर्सिकोव के पास से दौड़कर गया फ़ौजी टेढ़े-मेढ़े गलियारे के दूसरे सिरे पर अन्धकार में विलीन हो गया। दरवाज़े से चीखते-चिल्लाते लोग उमड़कर अन्दर भर रहे थे :

"मारो इसे! जान से मार डालो..."

"दुनिया के दुश्मन को!"

"तूने ही जानवर छोड़े हैं!"

गलियारों में विकृत चेहरे, फटे कपड़े नाचने लगे और किसी ने गोली चला दी। लाठियाँ दिखायी पड़ीं। पेर्सिकोव कुछ पीछे हटे, उन्होंने प्रयोगशाला के दरवाज़े को भेड़ दिया जहाँ फ़र्श पर मार्या स्तेपानोव्ना घुटनों के बल बैठी थी सलीब पर लटके आदमी की तरह हाथ फैलाये... वह भीड़ का रास्ता रोकना चाहते थे और खीजकर चिल्लाये :

"यह क्या बदतमीजी है... आप बिल्कुल जंगली है! आपको क्या चाहिये?" और चिंघाड़े : "भागो यहाँ से!" अपनी बात का अन्त उन्होंने अपनी तीखी सुपरिचित चीख से किया : "पानक्रात, भगा दो इन्हें यहाँ से!"

परन्तु पानक्रात अब किसी को नहीं भगा सकता था। पानक्रात का सिर फूटा था, उसकी बोटी-बोटी नोच डाली गयी थी, वह स्वागत-कक्ष में निर्जीव पड़ा था और सड़क से पुलिस की गोलियों की परवाह किये बिना भीड़ का रेला उसकी कुचली देह के पास से दौड़ता हुआ अन्दर घुसे आ रहा था।

फटे कोट, बन्दर जैसी बाण्डी टाँगोंवाला नाटा दूसरों से चण्ट निकला, उसने पेर्सिकोव के पास जाकर लाठी से जबरदस्त प्रहार करके उनका सिर फोड़ दिया। पेर्सिकोव लड़खड़ाने और ढहने लगे, उनके अन्तिम शब्द थे :

"पानक्रात... पानक्रात..."

बेचारी निर्दोष मार्या स्तेपानोव्ना को भी प्रयोगशाला में जान से मारकर उसकी बोटी-बोटी नोच दी गयी, कक्ष को जिसमें किरण बुझ चुकी थी चकनाचूर कर दिया गया, थलजीवशालाओं को भी चकनाचूर कर डाला और भयोन्मत मेंढकों को रौंदकर कुचल डाला गया, शीशे की मेज़ों को फोड़ दिया गया, लैम्पों का चूरा बना दिया गया और एक घण्टे बाद संस्थान की इमारत आग की लपटों में लिपटी थी, विद्युत पिस्तौलों से लैस पाँतें उसके पास पड़े शवों को घेरे हुए थीं और फायर-ब्रिगेड की गाड़ियाँ नलों को चूसती उन सभी खिड़कियों पर पानी की धाराएँ बरसा रही थीं जहाँ से धू-धू करके लम्बी-लम्बी लपटें फूट रही थीं।

अध्याय 12

पालादेव की सवारी

1928 के 19 अगस्त की रात को ऐसा पाला पड़ा जिसके बारे में किसी ने न सुना था, न बूढ़ों की याददाश्त में वह कभी अगस्त में पड़ा था। वह अपना पड़ाव डालकर दो दिन तक टिका रहा, तापमान गिरकर शून्य से 18 अंश नीचे तक चला गया। क्रोधोन्मत्त, मास्को ने सारी खिड़कियाँ, सारे दरवाज़े बन्क कर लिये। तीसरा दिन ढलते-ढलते ही आबादी की समझ में आया कि पाले ने राजधानी और उन असीम विस्तारों को बचा लिया जिन पर सन 28 की महाविपदा का प्रकोप हुआ था। मोझाइस्क के पास अपने तीन-चौथाई जवानों को खोकर अश्व सेना के हौंसले पस्त होने लगे थे, और गैस स्क्वाड्रन पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण की दिशाओं से मास्को की ओर बढ़ते घिनौने रेंगनेवाले जीवों को नहीं रोक पा रहे थे। पाले ने उनका काम तमाम कर दिया। घिनौने यूथ दो दिन तक 18-18 डिग्री के पाले को नहीं झेल

पाये और 21 अगस्त के बाद जब सीलन और कीचड़ और नम हवा को छोड़कर, अप्रत्याशित ठण्ड से पेड़ों की मुरझायी हरियाली को छोड़कर पाला चला गया तब लड़ने के लिए कोई बचा ही न था। विपदा टल गयी थी। जंगल, मैदान, असीम दलदल अभी भी रंग-बिरंगे अण्डों से पटे थे जिन पर कभी-कभी ऐसी विचित्र, अनदेखी चित्रकारी-सी देखने को मिलती जिसे न जाने कहाँ गायब हुआ रोक मैल समझता था, पर ये अण्डे पूरी तरह हानिरहित थे। वे निर्जीव थे, उनमें भ्रूण मर चुके थे।

असीम भू-क्षेत्र बहुत दिनों तक, रहस्यमय गेर्त्सन सड़क पर मेधावी नेत्रों में जन्मी किरण के फलस्वरूप पैदा हुए मगरमच्छों और साँपों के असंख्य शवों से सड़ते रहे, पर अब वे ख़तरनाक नहीं रहे थे। सड़ान्ध भरे ऊष्ण देशीय दलदलों के ये भंगुर जीव दो दिन में तीन प्रान्तों के क्षेत्र में भयंकर बदबू सड़ान्ध छोड़कर मर गये।

बहुत दिनों तक महामारियों का प्रकोप रहा, लोगों और जानवरों की लाशों से बहुत दिनों तक बीमारियाँ फैलती रहीं और सेना भी बहुत दिनों तक घूमती रही, पर अब वह गैसों से नहीं बल्कि बेलचों, मिट्टी कै तेज़ की टंकियों और पाइपों से लैस होकर ज़मीन को साफ़ करने में लगी थी। सफाई कर दी गयी और सन 29 के बसन्त तक सब खत्म हो गया।

और सन 29 के बसन्त में मास्को जगमगाहट का परिधान पहनकर नाचने लगा और फिर से पहले की तरह मोटर गाड़ियाँ फर्राटे से दौड़ने लगीं और क्राइस्ट सेवियर के टोपीनुमा गुम्बद पर चाँद का मानो धागे से टँगा हँसिया लटक गया। सन 28 के अगस्त में जलकर राख हुए दो मंजिला संस्थान के स्थान पर नया प्राणीवैज्ञानिक प्रासाद बनकर खड़ा हो गया और रीडर इवानोव उसका निदेशक था पर पेर्सिकोव अब नहीं रहे थे। लोगों की आँखों के सामने अब कभी भी मुड़ी उँगली से बना विश्वास का प्रतीक हुक प्रकट नहीं होता था, किसी को भी अब वह टर्राता स्वर नहीं सुनायी देता। किरण और सन 28 की उस कयामत की दुनिया में बहुत दिनों तक चर्चा होती रही पर बाद में प्रोफ़ेसर व्लादीमीर इपात्येविच पेर्सिकोव का नाम विस्मृति के कोहरे में लिपटकर वैसे ही विलीन हो गया जैसे अप्रैल की रात को उनके द्वारा खोजी गयी लाल किरण। फिर से इस किरण को पाने में सफलता न मिली हालाँकि एक ज़माने का नफीस जेंटलमैन और अब मामूली प्रोफ़ेसर प्योत्र स्तेपानोविच इवानोव कभी-कभी इसकी कोशिश करता था। पहले कक्ष को क्रुद्ध भीड़ ने पेर्सिकोव की हत्या की रात को नष्ट कर दिया था। तीन कक्ष हैवानों से स्क्वाड्रन की पहली लड़ाई के समय निकोल्स्की के "लाल किरण" राजकीय फार्म में जल गये, उन्हें ठीक नहीं किया जा सका। लैंसों और दर्पणों से प्रकाश पुँज का संयोग चाहे कितना ही सरल क्यों न था पर इवानोव के लाख प्रयासों के बावजूंद फिर से किरण नहीं मिल पायी। शायद इसके लिए ज्ञान के अलावा किसी और विशेषता की भी आवश्यकता थी जो विश्व में केवल एक ही व्यक्ति—दिवंगत प्रोफ़ेसर व्लादीमीर इपात्येविच पेर्सिकोव में थी।

कुत्ते का दिल

1

हू-हू-हू-हू-हू-हू-हूऽऽ-हूऽऽ! अरे, मेरी तरफ देखो, मैं मर रहा हूँ। फाटक की मेहराब में आँधी मेरी आत्मा की शान्ति के लिए भजन गा रही है और मैं उसके साथ चीत्कार कर रहा हूँ। मारा गया मैं, मारा गया। मैली टोपीवाले कमीने—केन्द्रीय आर्थिक परिषद के कर्मचारियों के सामान्य आहार की कैंटीन के बावर्ची ने खौलता पानी उंडेलकर मेरी बगल को उबाल दिया। कितना नीच है, ऊपर से प्रोलेटेरिान कहलाता है। हे भगवान, कितना दर्द हो रहा है! खौलते पानी ने हड्डियों तक को उबाल डाला। अब मैं रो रहा हूँ, गला फाड़के, पर भला रोने से क्या फायदा।

मैंने उसका क्या बुरा किया था? अगर मैंने जूठन में मुँह मार लिया तो क्या आर्थिक परिषद भूखी रह जायेगी? कंजूस पाजी कहीं का! आप कभी उसके थोबड़े पर ज़रा गौर कीजियेगा : अरे वह तो अपनी ऊँचाई से भी ज़्यादा चौड़ा है। कांसे की थूथनीवाला चोर कहीं का। अरे, लोग भी कैसे-कैसे होते हैं। टोपी ने दोपहर को खौलते पानी से मेरी ख़ातिरदारी की थी और अब अँधेरा छा चुका है, शाम के कोई चार बजे होंगे, प्रेचीस्तेन्का की फायर-बिग्रेड से आती प्याज की बू से तो यही लगता है। जैसा कि आप जानते हैं आग बुझानेवाले दलिया खाते हैं। पर यह बेकार चीज़ होती है, खुमियों की तरह। खैर, प्रेचीस्तेन्का के जान-पहचान के कुत्तों ने बताया था मानो नेग्लिन्का सड़क पर "बार" रेस्तराँ में सब 3 रूबल 75 कोपेक में पिंका सौस के साथ खुमियाँ के साथ खुमियाँ भकोसते हैं। अपनी-अपनी पसन्द की बात है—मेरे लिए तो यह जूता चाटने के बराबर है...हू-हू-हूऽऽ..

बगल में बेहद दर्द हो रहा है और मुझे अपने कैरियर का भविष्य दूर-दूर तक साफ़ नज़र आ रहा है : कल फफोले पड़ जायेंगे, पर पूछता हूँ कि मैं उनका इलाज कैसे करूँगा? गर्मियों में तो सोकोल्निकी बाग का चक्कर लगाया जा सकता था, वहाँ एक खास, बहुत बढ़िया बूटी होती है, मुफ़्त में सासेजों के सिरे उड़ाये जा सकते हैं, लोग-बाग चिकनाई से तर काग़ज़ फेंकते हैं, उन्हें एक बार चाटा तो चाटते ही रह जाओगे। अगर चाँदनी रात में गोल स्टेज पर ऐसी अदा में "प्यारी आईदा' गाता कोई खूसट न होता जिसे सुनकर दिल बैठ जाता है तो बहुत ही बढ़िया होता। पर अब कहाँ जाऊँ? आपने चूतड़ पर बूट की ठोकर खायी है? खायी है। पसलियों पर ईंट का स्वाद चखा है? जी भरकर चखा है। सब भुगत चुका हूँ, अपनी ज़िन्दगी से सुलह कर

चुका हूँ और अगर इस समय रो रहा हूँ तो सिर्फ़ शारीरिक पीड़ा और ठण्ड के कारण, क्योंकि मेरा जीवट अभी बुझा नहीं... कुत्ते का जीवट बड़ा मज़बूत होता है।

पर काया मेरी टूटी, पिटी है, लोग उसका काफ़ी उपहास कर चुके हैं। आख़िर सबसे बड़ी बात तो यह है कि खौलते पानी ने मेरे बालों की जड़ों को जला डाला, मतलब यह कि बायीं बगल की रक्षा के लिए कुछ नहीं बचा। चुटकी बजाते ही मुझे निमोनिया हो सकता है और उससे तो, नागरिको, मैं भूखों मर जाऊँगा। निमोनिया की हालत में तो घर में जीने के नीचे लेटना मुफीद माना जाता है, पर मुझ जैसे बीमार पड़े छड़े कुत्ते के लिए घूरे की पेटियों से आहार कौन ढूँढकर लायेगा? निमोनिया की हालत में मुझे पेट के बल रेंगना पड़ेगा, कमज़ोर हो जाऊँगा, तब तो कोई भी सींखची बुद्धिजीवी लाठी की एक ही चोट में मेरा काम तमाम कर डालेगा। और बिल्लेवाले जमादार मेरी टाँगें पकड़कर मुझे घूरे की गाड़ी में फेंक देंगे...

सभी प्रोलेटेरियनों में से जमादार सबसे नीच कमीने होते हैं। इन्सानियत की तलछट होते हैं। बावर्ची तरह-तरह के होते हैं। उदाहरण के लिए प्रेचीस्तेन्का के मरहूम व्लास को लो। उसने कितनी जानें बचायीं। क्योंकि बीमारी के दौरान पेट में कुछ डालना बहुत अहम बात है। हाँ, तो बुड्ढे कुत्ते बताते हैं कि व्लास हड्डी फेंकता था और उस पर आधा पाव गोश्त होता। उसकी आत्मा को शान्ति मिले क्योंकि वह सच्चा आदमी था, काउण्ट तोल्स्तोय के खानदान का बावर्ची था न कि सामान्य आहार परिषद का। अरे, सामान्य आहार में वे क्या-क्या हथकण्डे अपनाते हैं—एक कुत्ते की समझ में तो आता नहीं। अरे, वे हरामी बदबूदार गोश्त से शोराब पकाते हैं और लोग बेचारे कुछ नहीं जानते। दौड़े-दौड़े आते हैं और चटखारे ले-लेकर ठूँसते हैं।

किसी टाइपिस्ट लड़की को 9वीं श्रेणी के अनुसार पैंतालीस रूबल मिलते हैं, हाँ यह सच है कि प्रेमी क्रेप की स्टाकिंग उसे भेंट कर देता है। पर इस क्रेप के लिए उसे कितना जलील होना पड़ता है। वह उसके साथ किसी मामूली तरीके से नहीं बल्कि फ्रेंचलव करता है। आपस की बात है, ये फ्रेंच बड़े हरामज़ादे होते हैं। हालाँकि बढ़िया ठूँसते हैं और साथ में लाल शराब भी गटकते हैं। हाँ... तो टाइपिस्ट दौड़ी-दौड़ी आती है, आख़िर पैंतालीस रूबल में "बार" में तो जाया नहीं जा सकता। उसके पास तो बाइस्कोप देखने लायक पैसे भी नहीं होते, पर औरतों की ज़िन्दगी में एक ही तो खुशी होती है, वह है बाइस्कोप। थरथर काँपती है, मुँह बनाती है पर ठूँसती जाती है... सोचिये तो सही : दोनों डिशों के दाम 40 कोपेक होते हैं पर ये दोनों डिशें पन्द्रह कोपेक की भी नहीं होती क्योंकि बाकी 25 कोपेक का माल मैनेजर चुरा लेता है। पर भला उसे ऐसे खाने की ज़रूरत है? उसके दायें फेफड़े के ऊपरी हिस्से में गड़बड़ है, ऊपर से फ्रेंचलव की वजह से औरतों की बीमारी है, दफ़्तर में तनखां में से पैसे काट लिये, कैण्टीन में सड़ा खाना खिला दिया, वह रही, आ रही है... प्रेमी की स्टाकिंगों में दौड़ती हुई गेट की मेहराब में घुस रही है। टाँगें ठण्डी हैं, पेट को भी ठण्ड लग रही

है क्योंकि उस पर वैसे ही बाल हैं जैसे अब मेरे रह गये हैं पर जांघिया वह ठण्डा पहनती है, लेस का, बस नाममात्र का, प्रेमी की खातिर। वह फुलालेन का पहनकर देखे, प्रेमी चिल्लाकर कहेगा : तू कितनी भोण्डी है! अपनी मत्र्योना से मैं उकता चुका हूँ, फुलालेन के जाँघियों से मेरा जी भर चुका है, अब मेरा जमाना आया है। मैं अब अध्यक्ष हूँ, जितना भी अब चुराऊँगा—वह सब औरत के बदन, चाकलेटों और शैम्पेन पर खर्च करूँगा। क्योंकि जवानी में मैं बहुत फाके कर चुका, बस, अब मेरा पीछा छोड़ दो, स्वर्ग-नरक वगैरह कुछ नहीं होते।

मुझे लड़की पर तरस आता है, तरस! पर खुद अपने पर मुझे इससे ज़्यादा तरस आता है। यह मैं स्वार्थ की वजह से नहीं कह रहा, बिल्कुल नही, बल्कि इसलिए कि हमारी स्थितियाँ एक जैसी नहीं हैं। कम से कम घर तो उसका गर्म रहता है, पर मैं, पर मैं... कहाँ जाऊँगा? हू-हू-हूऽऽ!..

"पुच, पुच, पुच! शारिक, क्यों शारिक... तुम बेचारे क्यों रिरिया रहे हो? किसने तुम्हारा बुरा किया है? उफ..."

चुड़ैल बर्फ़ीली आँधी ने फाटक को झिंझोड़ा और अपने पल्ले से मिस के कान पर कोड़ा बरसाया। घुटनों तक उसकी स्कर्ट उठा दी, क्रीम कलर की स्टाकिंग और मैली-कुचैली लेसवाली शमीज की किनारी उघाड़ दी, शब्दों को घोंट दिया और कुत्ते को बर्फ से ढक दिया।

"हे भगवान... कैसा मौसम है... उफ, पेट में भी दर्द हो रहा है। यह कैन्टीन का खाना है, कैन्टीन का खाना! कब होगा इस सब का अन्त?"

सिर झुकाकर मिस ने हल्ला बोल दिया और मेहराब के बाहर निकल गयी, सड़क पर आँधी उसे फिरकी की तरह घुमाने, झिंझोड़ने लगी, फिर उसे बर्फ के बवण्डर में लपेटकर घुमाने लगी और युवती अगोचर हो गयी।

पर कुत्ता फाटक की मेहराब के नीचे बैठा रह गया। अपनी जख्मी बगल के दर्द से बेहाल होते हुए वह ठण्डी दीवार से सट गया, हताश होकर उसने दृढ़ निश्चय किया कि यहाँ से वह कहीं नहीं जायेगा, यहीं फाटक की मेहराब में दम तोड़ देगा। निराशा ने उसे घेर लिया। उसके मन में इतनी पीड़ा और कड़वाहट भरी थीं, इतना सूनापन और भय था कि नन्हे-नन्हे श्वान अश्रु मोतियों की तरह पलकों से निकलते और फौरन सूख जाते। जख्मी बगल पर उलझे रोयों के बर्फ़ बने गुच्छे थे और उनके बीच से जले के लाल-लाल भयंकर जख़्म झाँक रहे थे। बावर्ची कितने मूर्ख, कूढ़मगज और ज़ालिम होते हैं। "शारिक" उसने इस नाम से उसे पुकारा था... वह "शारिक" कहाँ से हुआ? शारिक* का मतलब—गोल-मटोल, बुद्धू, जौ का दलिया खानेवाला, अच्छी नस्ल के माँ-बाप की सन्तान होता है पर वह तो उलझे बालोंवाला, दुबला और मरियल आवारा कुत्ता है। ख़ैर नेक शब्दों के लिए शुक्रिया।

* शारिक—नन्हा गोला। (रूसी)—सं.

सामनेवाली जगमगाती दुकान का दरवाज़ा खुला और उसमें से एक नागरिक प्रकट हुआ। हाँ-हाँ, नागरिक ही, कामरेड नहीं, वैसे उसे शायद साहब कहना ज़्यादा उचित होगा। जितना पास आता जा रहा है उतना ही स्पष्ट होता जा रहा है—साहब ही है। आप सोच रहे हैं कि मैं ओवरकोट देखकर यह कहता हूँ? बकवास। अब तो बहुतेरे प्रोलेटेरियन भी ओवरकोट पहनने लगे हैं। हाँ, यह सच है कि कालर ऐसे नहीं होते, यह भी कोई कहने की बात है, फिर भी दूर से मुगालता हो सकता है। पर आँखों से—चाहे दूर से हो या पास से, कभी भी गलतफहमी नहीं हो सकती। अरे, आँखें—बहुत काम की चीज़ हैं। बैरोमीटर की तरह। सब साफ़-साफ़ दिखायी देता है—किस के दिल में सूखा पड़ा है, कौन यूँ ही चलते-चलते जूते की नोक से पसली खुजा सकता है और कौन खुद हरेक से डरता है। ऐसेवाले नाचीज़ की ही तो टाँग काटने में मज़ा आता है। डरता है—तो ले चख मजा। अगर डरता है—मतलब, खड़ा है... गुर्र ऽऽ... भौं-भौं...

साहब ने सधे कदमों से बर्फ की आँधी के गुबार में घुसकर सड़क को पार किया और फाटक की ओर आने लगा। हाँ, हाँ, दूर से ही उसकी असलियत पता चल जाती है। यह सड़ा गोश्त नहीं ठूँसनेवाला है और कहीं उसे परोसा भी गया तो ऐसा शोर मचायेगा, अख़बार में लिखेगा : मुझे यानी फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को सड़ा मांस खिलाया गया।

हाँ, तो वह पास आता जा रहा है। यह वाला डटके खाता है और चोरी नहीं करता, यह ठोकर मारनेवालों में से नहीं है और वह खुद भी किसी से नहीं डरता, इसलिए नहीं डरता कि पेट हमेशा भरा रहता है। यह दिमाग़ी काम करनेवाले साहब है, नुकीली फ्रेंच-कट दाढ़ी है, सफ़ेद मूँछें मोटी हैं और उन्हें फ्रांसीसी जाँबाजों की तरह ताव दिया गया है, पर बर्फ की आँधी उसके शरीर से बड़ी खराब बू ला रही है—अस्पताल की। और सिगार की भी।

मैं पूछता हूँ कि आख़िर वह इस कोआपरेटिव दुकान में गया क्यों? अब पास, बिलकुल पास आ गया... क्या ढूँढ़ रहा है? हू-हू-हूऽऽ... इस सड़ियल दुकान में आख़िर वह खरीद क्या सकता था, इसके लिए क्या ओखोत्नी र्‌याद की उम्दा दुकानें कम हैं? क्या?! सा-से-ज ख़रीदी है। साहब, अगर आपने देखा होता कि यह सासेज किस चीज़ से बनाते हैं तो आप दुकान के पास तक न फटकते। मुझे दे दीजिये।

कुत्ते ने बची-खुची शक्ति को बटोरा और पागलों की तरह मेहराब के नीचे से फुटपाथ की ओर रेंगने लगा। सिर के ऊपर आँधी ने बन्दूक छोड़ी, कपड़े पर लिखे विज्ञापन के विशाल अक्षरों को फड़फड़या : "क्या जवानी लौटाना सम्भव है?"

स्वाभाविक बात है, क्यों नहीं सम्भव। सुगन्ध ने मुझे जवान बना दिया, पेट से उठा दिया, दो दिन से खाली उदर की दहकती लहरों से भर दिया, अस्पताल को जीतनेवाली सुगन्ध ने, हलाल घोड़ी के कीमे, लहसुन और काली मिर्चवाली दिव्य

सुगन्ध। मैं महसूस करता हूँ, जानता हूँ कि उसके समूर के ओवरकोट की दायीं जेब में सासेज है। वह मेरे पास खड़ा। ओ मेरे मालिक! मुझ पर भी एक नज़र डालो। मैं मर रहा हूँ। हमारी किस्मत में भी क्या गुलामोंवाली मानसिकता बदी है!

कुत्ता आँसू बहाता, साँप की तरह पेट के बल रेंगने लगा। बावर्ची की करतूत पर ज़रा गौर कीजिये।—पर आप तो हरगिज नहीं देनेवाले। अरे, मैं अमीर लोगों को अच्छी तरह जानता हूँ! पर वैसे देखा जाये तो आपको इसकी क्या ज़रूरत है? आपको मुर्दा घोड़े की क्या ज़रूरत पड़ी है? सिवा मोस्सेलप्रोम* के ऐसा जहर आपको कहीं नहीं मिलेगा**। पर आपने तो आज नाश्ता किया है, आप, पुंसकता की बदौलत विश्व विभूति हैं। हू-हू-हू ऽऽ... आख़िर मृत्युलोक में हो क्या रहा है? जाहिर है कि अभी मरने का वक्त नहीं आया, पर हताश कितना हूँ—पाप है इतना हताश होना। इसके हाथ चाटूँ, और कोई चारा नहीं रहा।

रहस्यमय साहब कुत्ते के ऊपर झुका और आँखों के सुनहरी घेरों को चमकाकर उसने दायीं जेब से लम्बोतरा-सा सफ़ेद बण्डल निकाला। कत्थई दस्तानों को उतारे बिना उसने काग़ज़ खोला जिसे तत्क्षण हिमानी आँधी ने हड़प लिया और 'क्राकोव स्पेशल' कहलानेवाली सासेज का टुकड़ा तोड़ा। और टुकड़ा यह कुत्ते को डाल दिया। ओ, निःस्वार्थता की मूरत! हू-हू-हू ऽऽ!

"फ्यू-फ्यू," साहब ने सीटी बजायी और सख़्ती के साथ बोला : "ले! शारिक, शारिक!"

फिर वही शारिक। यही नाम दे डाला। ठीक है, जैसा चाहो उसी नाम से बुलाइये। आपने इतना नेक काम किया है।

कुत्ते ने पलक झपकते ही सासेज का छिलका उतार डाला और लार गटककर "क्राकोव स्पेशल' में दाँत गड़ा दिये और चुटकी बजाते ही उसे चट कर डाला। यह करते समय सासेज और बर्फ़ उसके हलक में ऐसी अटकीं कि आँखों में पानी आ गया क्योंकि लालच में वह सासेज पर बँधी सुतली तक को गटकते-गटकते बचा। और दो, और, मैं आपके हाथ चाटता हूँ। आपकी पतलून चूमता हूँ, मेरे आका!

"अभी इतना काफ़ी है..." साहब ऐसे बोला मानो कमान दे रहा हो। वह झुककर शारिक की आँखों में झाँका और अचानक उसने अपने दस्तानेवाले हाथ को प्यार और स्नेह से शारिक के पेट पर फेरा।

"अ-हा," वह अर्थपूर्ण अन्दाज़ में बोला, "पट्टा नहीं है, बहुत बढ़िया, तेरी ही तो मुझे ज़रूरत है। चल मेरे पीछे-पीछे।" उसने चुटकी बजायी, "फ्यू-फ्यू!"

आपके पीछे चलूँ? अरे, दुनिया के छोर तक चलने को तैयार हूँ। आप अपने नमदे

* मोस्सेलप्रोम—मास्को की खाद्य उद्योग कम्पनी।—सं.

** बुल्गाकोव ने व्लादीमीर मायाकोव्स्की द्वारा रचित विज्ञापन के तर्ज पर यह पंक्ति लिखी।—सं.

के जूतों से मुझे लात मारिये, मैं उफ तक न करूँगा।

सारी प्रेचीस्तेन्का सड़क पर बत्तियाँ जगमगा रही थीं। बगल में असहनीय पीड़ा हो रही थी, पर शारिक एक ही चिन्ता में डूबा था कि कहीं भीड़-भड़क्के में समूर का ओवरकोटधारी अवतार ओझल न हो जाये और किस तरह उसे अपना प्रेम और स्वामीभक्ति जताये। ओबुखोव गली के नुक्कड़ तक कोई सात बार वह उन्हें व्यक्त कर चुका था। उसका जूता चाटा, म्योर्त्वी गली के नुक्कड़ पर रास्ता साफ़ करने के लिए ज़ोर से ऐसा भौंका कि एक मदाम डर के मारे चबूतरे पर बैठ गयी, कोई दो बार उसने अपना रोना रोया ताकि उसके प्रति रहम बना रहे।

कोई हरामजादा, साइबेरियाई नस्ल की नकल करता आवारा बिल्ला परनाले के पाइप के पीछे से बाहर आया, बर्फ़ की आँधी के बावजूद उसे 'क्राकोव स्पेशल' की भनक लग गयी थी। यह सोचकर शारिक को दुनिया से इतनी नफ़रत हुई कि कहीं यह अमीर सनकी जो सड़क पर घायल कुत्तों को जमा करता है, कहीं इस चोट्टे को भी न ले चले साथ, और तब मोस्सेलप्रोम के उत्पाद को बाँटकर खाना पड़ेगा। इसलिए उसने बिल्ले को देखकर दाँत ऐसे किटकिटाये कि वह पंक्चर टायर की तरह फुफकारता हुआ पाइप के जरिये सीधा दूसरी मंजिल पर चढ़ गया। गुर्र ऽऽ भौं! भौं! भाग! प्रेचीस्तेन्का पर मटरगश्ती करनेवाले हर आवारा के लिए मोस्सेलप्रोम काफ़ी नहीं पड़ेगा।

साहब ने फायर-ब्रिगेड के सामने, उस खिड़की के सामने भी उसकी स्वामीभक्ति का मूल्याँकन किया जहाँ से फ्रेंच बाजे की मधुर घुर-घुर सुनायी दे रही थी, उसने कुत्ते को दूसरा टुकड़ा डाला, पहलेवाले से कम, कोई छटाँक भर।

अरे, बौड़म है। मुझे फुसला रहा है। फिक्र मत कीजिये! मैं खुद भी कहीं नहीं जाऊँगा। जहाँ कहेंगे वहीं आपके पीछे-पीछे चलता जाऊँगा।

"फ्यू-फ्यू-फ्यू! इधर!"

ओबुखोव गली में? जैसा हुक्म। अपन इस गली को अच्छी तरह जानते हैं।

"फ्यू-फ्य!" इधर? बड़ी खु... नहीं, माफ़ कीजिये। नहीं। यहाँ दरबान खड़ा है। और उससे तो बुरी चीज़ दुनिया में नहीं होती। वह जमादार से कई गुना ज़्यादा ख़तरनाक होता है। सबसे घिनौनी जात होती है। बिल्लियों से भी घिनौनी। गोटे की किनारीवाली वर्दी में जल्लाद।

"अरे तू घबरा नहीं, चल।"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, नमस्ते।"

"नमस्ते, फ़्योदोर।"

यह हुई न हस्ती। हे भगवान मेरी कुत्ते की किस्मत ने मुझे कैसे आदमी से मिलवा दिया! आख़िर यह क्या हस्ती है जो दरबान के सामने आवारा कुत्ते को साथ लेकर आवास कमेटी के मकान में घुस सकता है? देखो तो इस कमीने को—न चूँ की, न उँगली हिलायी! हाँ, आँखों में उसकी चमक नहीं, पर कुल मिलाकर वह सुनहरी

किनारीवाली टोपी में बेपरवाह लगता है। मानो ऐसा ही तो होना चाहिये। इज़्ज़त करता है साहब की, कितनी इज्जत करता है! ठीक है, और मैं उसके साथ आया हूँ और उसके पीछे-पीछे जाऊँगा। क्या, छूकर देखेगा? ठेंगा ले। तेरी बिवाइयोंवाली प्रोलेटेरियन टाँग को काटना चाहिये था। तेरी जात के जुल्मों का बदला लेने के लिए। कितनी बार झाड़ू से मेरी थूथनी बिगाड़ चुका है, क्यों?

"चल, चल।"

अपन समझते हैं, समझते हैं, आप फिक्र करने की तकलीफ न करें। जिधर आप जायेंगे अपन भी उधर चलेंगे। आप बस रास्ता दिखाते चलिये और मैं अपनी दुखती बगल के बावजूद आपसे पीछे नहीं रहूँगा।

जीने से नीचे की ओर :

"फ़्योदोर, मेरी कोई चिट्ठी नहीं थी?"

नीचे से जीने के ऊपर आदर के साथ :

"जी नहीं, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, (और चलते-चलते अपनेपन के साथ फुसफुसाकर) और तीन नम्बर क्वार्टर में सहवासियों को बसा दिया गया है।"

रोबीला श्वान उपकारक पैड़ी पर झट से घूमा और मुण्डेर पर झुककर उसने विस्मय के साथ पूछा :

"अच्छा?"

आँखें उसकी गोल हो गयीं और मूंछें तनकर खड़ी हो गयीं।

नीचे खड़े दरबान ने सिर ऊपर उठाया और हाथों से भोंपू बनाकर होठों पर रखा और पुष्टि की :

"जी हाँ, पूरे चार अदद।"

"हे भगवान! सोच सकता हूँ कि क्वार्टर में क्या हाल होगा। हाँ तो वे कैसे हैं?"

"ठीक ही हैं।"

"और फ़्योदोर पाव्लोविच?"

"चिकें और ईंटें लेने गये हैं। बीच में दीवारें खड़ी करेंगे।"

"शैतान ही जाने क्या हो रहा है!"

"सभी क्वार्टरों में लोगों को बसायेंगे, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, सिवाय आपके वाले में। अभी मीटिंग हुई थी, नयी कमेटी चुनी है और पहलीवाली को लात मारकर भगा दिया।"

"देखो तो, क्या-क्या हो रहा है...फ्यू-फ्यू।"

जी, आ रहा हूँ, तेज़ चलने की कोशिश कर रहा हूँ। आप देखिये न, बगल चैन नहीं लेने दे रही। अपना जूता चाटने की इजाज़त दीजिये। दरबान कीं गोटे की किनारीवाली वर्दी नीचे रह गयी। संगमरमर के जीने पर पाइपों से सुखद गर्मी फैल रही थी, एक बार फिर मुड़े और लो पहुँच गये दूसरी मंजिल पर।

2

पढ़ना सीखने की कोई ज़रूरत नहीं जबकि गोश्त की बू एक मील की दूरी से ही पता चल जाती है। पर फिर भी अगर आप मास्को में रहते हैं और आपकी खोपड़ी में थोड़ा-सा भेजा है तो आप न चाहते हुए भी साक्षर हो जायेंगे, वह भी किसी कक्षा में पढ़े बिना। मास्को के चालीस हज़ार कुत्तों में से शायद ही ऐसा कूढ़मग्ज हो जो अक्षरों को जोड़कर "सासेज" शब्द न पढ़ सकता हो।

शारिक ने रंगों से पढ़ना शुरू किया। उसको पैदा हुए चार महीने ही हुए थे कि मास्को में जगह-जगह हरे-नीले बोर्ड टँग गये जिन पर लिखा था : "मोस्सेलप्रोप—मांस की दुकान"। हम एक बार फिर कहते हैं कि इसकी तनिक भी ज़रूरत नहीं क्योंकि मांस की बू वैसे भी सूँघी जा सकती है। एक बार तो गड़बड़ ही हो गयी : म्यासनीत्स्की सड़क पर जहरीले नीले-से रंग को देखकर शारिक मांस की दुकान की जगह गोलूबिजनर ब्रदर्स की बिजली के सामान की दुकान में मुँह उठाये घुस गया क्योंकि मोटर ने अपने पेट्रोल के धुएँ से उसकी घ्राण शक्ति को निःस्पंद कर दिया था। वहाँ ब्रदर्स के यहाँ कुत्ते की इन्सुलेटेड तार से खातिरदारी हुई, ताँगेवाले के कोड़े का तो उससे कोई मुकाबला नहीं। उस विलक्षण घड़ी को ही शारिक की शिक्षाकी शुरुआत माना जाना चाहिये। फुटपाथ पर निकलते ही शारिक की समझ में आ गया कि "नीले" का मतलब हमेशा "मांस की दुकान" नहीं होता, और भयंकर दर्द के मारे दुम को पिछली टाँगों में दबाकर रिरियाता हुआ दौड़ पड़ा, उसे याद आया कि मांस की सभी दुकानों पर सबसे पहले सुनहरा या ललौंहा-सा कुछ काटा-पीटा बना होता है, एक टाँग पर खड़े चौखटे जैसा।

आगे तो उसे सफलता ही सफलता मिलती गयी। 'ली' उसने मोखोवाया के नुक्कड़ पर मछली की दुकान से सीखा, फिर 'छ' भी सीख लिया—उसे पूँछ से 'मछली' शब्द के पास जाने में सुभीता था क्योंकि उसके शुरू में पुलिसमैन खड़ा होता था।

अज्ञात साहब ने, जो दूसरी मंजिल पर अपने शानदार क्वार्टर के दर पर कुत्ते को लाया था, घण्टी बजायी और कुत्ते ने झट से चौड़े लहरदार गुलाबी काँच जड़े दरवाज़े की बगल में टंगी सुनहरी अक्षरोंवाली काली तख्ती की ओर नज़रें उठायी। शुरू का अक्षर तो उसने फौरन पढ़ डाला : "प-प्र-प्रो।" पर आगे अजीब-सा डण्डी की दोनों ओर लटका कोई मरदुआ अक्षर था। पता नहीं वह क्या था। "क्या सचमुच में प्रोलेटेरियन है" शारिक ने आश्चर्य के साथ सोचा... "यह हो ही नहीं सकता।" उसने थूथनी उठाकर एक बार फिर से समूर के कोट को सूँघा और विश्वास के साथ सोचा : "नहीं, यहाँ तो प्रोलेटेरियन की बू तक नहीं। पढ़े-लिखों का कोई शब्द है, भगवान ही जाने इसका मतलब क्या है।"

गुलाबी काँच के उस पार अचानक जगमग रोशनी जली और उसने काली तख़्ती

को और भी स्याह बना दिया। दरवाज़ा बिना किसी शोर के खुला और कुत्ते और उसके साहब के सामने सफ़ेद एप्रन बाँधे और सिर पर लेस का मुकुट-सा पहने रूपसी युवती प्रकट हुई, उसकी स्कर्ट से लैवेण्डर की खुशबू आ रही थी।

"यह हुई न बात, इसे मैं मानता हूँ," कुत्ते ने सोचा।

"तशरीफ लाइये, श्रीमान शारिक," साहब ने व्यंग्य के साथ उसे न्योता दिया और शारिक आनन्द के साथ दुम हिलाता हुआ तशरीफ ले आया।

भव्य प्रकोष्ठ को ढेरों चीज़ों ने घेर रखा था। फ़र्श तक के आइने, जिसने झट से दूसरे मरियल और खस्ताहाल शारिक को प्रतिबिम्बित किया, ऊँचाई पर लगे भयंकर मृग शृगों, समूर के असंख्य ओवरकोटों और गैलोशों तथा छत पर बिजली के दूधिया फूल की ओर उसका फौरन ध्यान गया।

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आप कहाँ से इसे पकड़ लाये?" मुस्कराते हुए युवती ने पूछा और लोमड़ी के समूर का भारी ओवरकोट उतारने में मदद करने लगी। "हे भगवान! इसे तो खाज की बीमारी है!"

"ऊल-जलूल बातें करती हो! कहाँ है खाज ?" साहब ने सख़्ती से शब्दों को तौल-तौलकर पूछा।

ओवरकोट उतरने पर वह इंग्लिश सर्ज का काला सूट पहने निकला और उसके पेट पर सोने की चेरन मन्द-मन्द चमकने लगी।

"रुक ज़रा, मत घूम, रुक... अरे, घूम मत उल्लू! हुं! यह खाज नहीं... अरे, चैन से खड़ा हो... हुं! यह जलने का घाव है। किस कमीने ने तुझ पर खौलता पानी डाला? बता? अरे, तू एक जगह खड़ा रह!.."

"हरामी बावर्ची ने, बावर्ची ने!" करुण आँखों से कुत्ता बोला और हल्के से कराहा।

"ज़ीना," साहब ने हुक्म दिया, "इसे फौरन जाँच के कमरे में ले जाओ और मुझे सफ़ेद चोगा दो।"

युवती ने सीटी बजायी, फिर चुटकी और कुत्ता कुछ हिचककर उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। वे दोनों एक सँकरे धुँधले गलियारे में पहुँचे, वार्निश से चमचमाते एक दरवाज़े के पास से होते हुए उसके सिर पर पहुँचे और फिर बायें मुड़कर अँधेरी कोठरी में पहुँच गये जो अपनी बदबू की वजह से कुत्ते को फौरन नापसन्द लगी। अँधेरा खटका और चौंधियाते धूप में बदल गया, चारों ओर शुभ्र चमचमाहट और जगमाहट होने लगी।

"अरे नहीं..." मन ही मन कुत्ता भौंका, "माफ़ कीजिये, मैं हाथ नहीं लगाने दूँगा! अब समझा, भाड़ में जायें अपनी सासेज के साथ! मुझे फुसलाकर कुत्तों के अस्पताल में ले आये। अभी कैस्टर आयल चाटने को मजबूर करेंगे और सारी बगल की कैंची से चीर-फाड़ कर देंगे, वह तो वैसे भी हाथ लगाये बिना ही दुख रही है।"

"ओ, नहीं, कहाँ चला?!" वह वाली चिल्लायी जिसका नाम ज़ीना था।

कुत्ता बल खाकर कमानी की तरह तन गया और अपनी चंगी बगल से अचानक

उसने दरवाज़े पर ऐसा प्रहार किया कि सारे घर में कँपकँपी दौड़ गयी। फिर पीछे हटकर वह लट्टू की तरह नाचने लगा और नाचते हुए उसने फ़र्श पर सफ़ेद बाल्टी को उलट दिया जिससे रूई के टुकड़े बिखरकर फैल गये। जब वह लट्टू की तरह घूम रहा था तो उसके चारों ओर चमचमाते औज़ारों से भरी अलमारियों से घिरी दीवारें फड़फड़ा रही थीं, सफ़ेद एप्रन और विकृत नारी मुख फुदकने लगे।

"तू कहाँ चला, झबरीले शैतान!" ज़ीना ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी। "देखो तो पागल को!"

"इनके यहाँ का पिछला दरवाज़ा कहाँ है?..." कुत्ता अटकल लगा रहा था। वह गेंद बनकर अन्दाज से एक काँच पर टूट पड़ा यह आशा लेकर कि यही दूसरा दरवाज़ा हो। काँच के टुकड़ों का बादल गरज और झंकार के साथ बरस पड़ा, किसी लाल-सी घिनौनी चीज़ से भरी मोटी बोतल फ़र्श पर कूदी और उसमें भरी चीज़ बदबू छोड़ती हुई फौरन फ़र्श पर फैल गयी। असली दरवाज़ा खुला।

"ठहर, स्साले," एक आस्तीन पर चोगा साहब फुदकता हुआ चिल्लाया और कुत्ते की टाँग पकड़ने लगा। "ज़ीना, इस हरामज़ादे की गुद्दी दबोचो!"

"हे...हे भगवान, यह कैसा कुत्ता है!"

दरवाज़ा और भी चौड़ा खुला और सफ़ेद चोगा पहने एक और मर्दाना शख़्सियत दौड़ी-दौड़ी कमरे में घुसी। टूटे काँच को कुचलते हुए वह कुत्ते की ओर नहीं बल्कि अलमारी की ओर लपकी, उसे खोला और सारा कमरा मीठी और जी मिचलानेवाली गन्ध से भर गया। इसके बाद वह शख्सियत कुत्ते के ऊपर पेट के बल टूट पड़ी, इस प्रक्रिया के दौरान कुत्ते ने रुचि के साथ जूते के तस्मों के ऊपरवाले हिस्से पर दाँत गड़ा दिये। शख्सियत ने उफ़ की पर डिगी नहीं। मतली भरे घोल ने कुत्ते की साँस जकड़ ली और उसका सिर चकराने लगा, फिर टाँगें मुड़ गयीं और वह एक बगल पर कहीं लुढ़क गया। "बेशक, आपका शुक्रिया," नुकीले शीशों पर लेटा वह स्वप्निल तन्द्रा में सोच रहा था। "अलविदा मास्को! अब मैं कभी प्रोलेटेरियनों और 'क्राकोव स्पेशल' सासेज को नहीं देख पाऊँगा। कुत्ते की ज़िन्दगी पर सब्र के लिए स्वर्ग में जा रहा हूँ। भाइयो, कसाइयो, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था?"

इतना सोचकर वह पसर गया और उसने दम तोड़ दिया।

जब वह पुनर्जीवित हुआ तो उसके सिर में हल्के-से चक्कर आ रहे थे और पेट में थोड़ी-थोड़ी-सी मतली भरी थी, बगल मानो थी ही नहीं, बगल उसकी मधुर मौन धारण किये हुए थी। कुत्ते ने अपनी दायीं निःस्पन्द आँख खोली और उसकी कोर से देखा कि बगलों और पेट पर पट्टी कसी है। "हजामत कर ही डाली कुतिया की औलादों ने," उसने तन्द्रा में सोचा, "पर मानना पड़ेगा कि यह उन्होंने बखूबी की है।"

"सेविलिया से ग्रेनाडा तक... रातों के शान्त अन्धकार में," उसके ऊपर कोई

खोयी-खोयी बेसुरी आवाज में गा रहा था।

कुत्ते को हैरानी हुई, उसने दोनों आँखों को खोल डाला और दो क़दमों की दूरी पर उसे सफ़ेद स्टूल पर मर्दाना पैर दिखायी पड़ा, पतलून का पायंचा चढ़ा हुआ था और उघड़ी पीली पिण्डली सूखे खून और टिंक्चर से सनी हुई थी।

"हे फरिश्तो!" कुत्ते ने सोचा, "मतलब, मैंने इसे काटा था। मेरी करतूत है। अब तो मार-मारकर मुझमें भूस भर देंगे!"

"गूँ ऽऽ जते हैं प्रेमगीत, झनझनाती हैं तलवारें! आवारा कहीं के, तू ने क्यों डाक्टर को काटा? बोल? काँच को क्यों फोड़ा? बोल?"

"उ-उ-उ," कुत्ता करुणा के साथ रिरियाया।

"अच्छा, ठीक है, होश में आ गया, लेटा रह, उल्लू के पट्ठे।"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आप इतने नर्वस कुत्ते को कैसे ले आये?" प्रीतिकर पुरुष स्वर ने पूछा और पतलून का पायंचा नीचे आया। तम्बाकू की गन्ध आयी और अलमारी में बोतलों की झंकार हुई।

"स्नेह के साथ। प्राणियों के साथ व्यवहार की यही एकमात्र सम्भव विधि है। आतंक के जरिये जीवधारियों से कुछ नहीं करवाया जा सकता चाहे वह विकास के किसी भी चरण पर क्यों न हों। मेरी यही मान्यता थी, है और रहेगी। वे बेकार ही सोचते हैं कि आतंक उनकी सहायता करेगा। नहीं, नहीं, नहीं करेगा मदद चाहे वह सफ़ेद हो, लाल हो, कत्थई भी क्यों न हो, आतंक तंत्रिकाओं को बिल्कुल जकड़कर निःस्पन्द बना डालता है। ज़ीना! मैंने इस मक्कार के लिए एक रूबल चालीस कोपेक की क्राकोव सासेज खरीदी है। जब उसे मतली आनी बन्द हो जाये, तो इसे खिलाने का कष्ट कर देना!"

बुहारी से काँच के टुकड़े खड़खड़ाये और ज़नानी आवाज नख़रे के अन्दाज़ में बोली :

"क्राकोव स्पेशल! अरे, इसके लिए तो मांस की दुकान में छीछड़े ही खरीद लिए होते। क्राकोव सासेज तो मैं खुद ही खा लूँगी।"

"खाके देखना। मैं तुम्हें दिखाऊँगा! आदमी के पेट के लिए यह जहर है। इतनी बड़ी लड़की है पर बच्चे की तरह गन्दी-गन्दी चीज़ें मुँह मे लेती है। सोचना भी नहीं! चेतावनी देता हूँ : जब तुम्हारा पेट खराब हो जायेगा तो न मैं और न ही डाक्टर बोरमेंताल तुम्हारा इलाज करेंगे... 'सब को जो कहेंगे कि तुमसे बढ़कर है कोई यहाँ...'"

इस समय सारा घर मधुर घण्टियों की टन-टन से भरा था और दर से, प्रकोष्ठ से बार-बार बोलने की आवाजें सुनायी पड़ रही थीं। टेलीफ़ोन की घण्टी बज रही थी। ज़ीना गायब हो गयी।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने बाल्टी में सिगरेट का टोटा फेंका, चोगे के बटन बन्द

किये, दीवार पर टँगे छोटे-से आइने के सामने खड़े होकर अपनी घनी मूँछों को ताव दिया और कुत्ते को पुकारा :

"फ्यू, फ्यू! कोई बात नहीं, कुछ नहीं हुआ। चलो, देखने चलते हैं।"

कुत्ता अपनी लिजलिजी टाँगों पर खड़ा हुआ लड़खड़ाकर काँपा, पर जल्दी से सम्भलकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के फड़फड़ाते दामन के पीछे-पीछे चल दिया। कुत्ते ने फिर से सँकरे गलियारे को पार किया पर अब उसने देखा कि वह ऊपर लटकी बिजली से जगमगा रहा है। और जब वार्निशवाले दरवाज़े से उसने फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के साथ कक्ष में प्रवेश किया तो उसकी सज्जा को देखकर कुत्ते की आँखें चौंधिया गयीं। सबसे पहले वह रोशनी से चमचमा रहा था : पच्चीकारीवाली छत पर, मेज़ पर, दीवार पर, अलमारियों के शीशों पर जगमगाहट ही जगमगाहट थी। बेशुमार चीज़ें रोशनी की बाढ़ में डूबी थीं, उनमें से दीवार पर लगे ठूँठ पर बैठा विशाल उल्लू उनमें से सबसे दिलचस्प लगा।

"लेट जा," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने आदेश दिया।

सामनेवाला नक्काशीदार दरवाज़ा खुला, वही, टँगकटा अन्दर आया, अब तेज़ रोशनी में वह बेहद सुन्दर, जवान निकला, उसकी नुकीली दाढ़ी थी, पर्चा थमाकर वह बोला :

"पुराना..."

इतना कहकर वह चुपचाप चला गया और फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चोगे को पड़फड़ाकर विशाल मेज़ के पीछे बैठ गये और फौरन बेहद रोबीले और भव्य बन गये।

"नहीं, यह अस्पताल नहीं, मैं किसी और जगह पहुँच गया," सकपकाकर कुत्ते ने सोचा और चमड़ा मढ़े भारी सोफे के पास क़ालीन पर पसर गया, "और इस उल्लू से अपन निबट लेंगे..."

दरवाज़ा धीरे-से खुला और किसी ने प्रवेश किया जिसे देखकर कुत्ते को इतनी हैरानी हुई कि वह भूंका, पर बहुत सहमे-सहमे...

"चुप! वाह-वाह, जनाब, आपको तो पहचानना मुश्किल हो गया।"

आगंतुक ने बड़े आदर और लज्जा के साथ झुककर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का अभिवादन किया।

"ही-ही! प्रोफ़ेसर, आप तो जादूगर हैं," वह लजाकर बोला।

"पतलून उतारिये, जनाब," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच आदेश देकर उठे।

"हे प्रभु ईसा मसीह," कुत्ते ने सोचा, "यह भी क्या नमूना है!"

नमूने के सिर पर बिल्कुल हरे बाल उगे थे, पर गुद्दी पर वे तम्बाकू के रंग के थे, नमूने के चेहरे पर झुर्रियाँ फैली थीं पर चेहरे का रंग नवजात शिशु की तरह गुलाबी था। बायीं टाँग नहीं मुड़ती थी, उसे क़ालीन पर घसीटकर चलना पड़ता था पर दायीं गेंद की तरह फुदकती थी। उम्दा कपड़े के कोट के कालर पर आँख की तरह नगीना

दमक रहा था।

कौतूहल के कारण कुत्ते की मतलाहट तक गायब हो गयी।

"भों-भों..." वह धीरे-से भौंका।

"चुप! नींद कैसी आती है, जनाब?"

"ही-ही! प्रोफ़ेसर, और तो यहाँ कोई यहाँ नहीं? यह तो लाजवाब है," आगंतुक लजाकर बोला। "परोल द'ओनर*—पच्चीस साल से ऐसा कुछ नहीं देखा," नमूने ने पतलून का बटन पकड़ा, "प्रोफ़ेसर साहब, आप यक़ीन नहीं करेंगे, हर रात नंगी लड़कियों के झुण्ड के झुण्ड दिखायी पड़ते हैं। मैं तो क़ायल हो गया हूँ आपका। आप जादूगर हैं।"

"हुं," आगंतुक की पुतलियों की जाँच करते हुए फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिन्तित स्वर में बोले।

अन्ततः बटनों पर काबू पाकर उसने अपनी धारीदार पतलून उतारी। उसके नीचे ऐसा जाँघिया था जैसा पहले कभी भी न देखा था। वह क्रीम कलर का था और उसपर काली तारकशी से बिल्लियाँ कढ़ी हुई थीं और इत्र की सुगन्ध आ रही थी।

बिल्लियों को देखकर कुत्ते से नहीं रहा गया और वह ऐसे भौंका कि नमूना उछल पड़ा।

"ओय!"

"मैं तेरी धुनाई करूँगा! डरिये मत, यह काटता नहीं है।"

"मैं नहीं काटता?" कुत्ते को हैरानी हुई।

आगंतुक की पतलून की जेब से क़ालीन पर छोटा-सा लिफाफा गिरा जिस पर खुले बालोंवाली सुन्दरी की तस्वीर बनी थी। नमूना उछला और झुककर उसे उठा लिया और उसका चेहरा लाल हो गया।

"आप ज़रा देखकर," उँगली हिलाकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने चेतावनी देते हुए विषण्ण स्वर में कहा, "फिर भी, सावधानी से, दुरुपयोग मत कीजिये!"

"मैं नहीं दुर..." कपड़े उतारते हुए नमूना झेंपकर बोला, "प्रोफ़ेसर साहब, मैं तो सिर्फ़ आजमाइश के लिए करता हूँ।"

"हाँ, तो क्या? कैसे परिणाम मिले हैं?" सख़्ती के साथ फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा।

नमूने ने आवेशित होकर हाथ हिलाये।

"25 साल से, भगवान की कसम, प्रोफ़ेसर साहब, ऐसा नहीं था। पिछली बार सन 1899 में पेरिस की र्‍यु दे ला पे पर ही ऐसा हुआ था।"

"पर आप हरे क्यों हो गये?"

आगंतुक का चेहरा मलिन हो गया।

* परोल द'ओनर—ईमान की कसम। (फ्रांसीसी)—सं.

"आग लगे चर्बीहड्डी* को! आप सोच तक नहीं सकते, प्रोफ़ेसर साहब, कि इन निखट्टुओं ने मुझे खिजाब की जगह क्या भेड़ दिया। आप देखिये भी," आँखों से आइने को खोजते हुए नमूना बड़बड़ाया। "उनका थोबड़ा तोड़ना चाहिये!" तैश में आकर वह बोला। "अब मैं क्या करूँ, प्रोफ़ेसर साहब?" उसने रुआँसा होकर पूछा।

'हुं, मुण्डवा लीजिये।"

"प्रोफ़ेसर," आगंतुक करुण स्वर में बोला," पर वे तो फिर से सफ़ेद ही निकलेंगे। इसके अलावा मैं काम पर अपना मुँह तक नहीं दिखाने लायक रहूँगा, वैसे भी तीन दिन से नहीं जा रहा हूँ। ओह, प्रोफ़ेसर साहब, काश, आप बालों को जवान बनाने का भी तरीका खोज लेते!"

"एकदम सब नहीं होता, एकदम नहीं होता, मेरे अजीज," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बुदबुदाये।

झुककर उन्होंने अपनी चमकती आँखों से मरीज के उघड़े पेट का मुआयना किया :

"हाँ तो सब ठीक है, बहुत बढ़िया। सच कहूँ तो मुझे ऐसे परिणाम की आशा तक नहीं थी। 'ढेरों खून, ढेरों गीत...' कपड़े पहनिये, जनाब!"

" 'पर मैं तो उसको जो सबसे सुन्दर!'" तवे जैसी खड़खड़ाती आवाज़ में मरीज ने आग के बोल गाये और चमचमाता हुआ कपड़े पहनने लगा। अपने को साज-सँवारकर उसने फुदकते हुए और इत्र की सुगन्ध फैलाते हुए फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को गिनकर नोटों की गड्डी थमायी और स्नेह के साथ उनके दोनों हाथों को पकड़ा।

"दो हफ़्ते दिखाने की ज़रूरत नहीं है," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले, "फिर भी मैं आपसे अनुरोध करूँगा : सावधानी बरतिये।"

"प्रोफ़ेसर साहब!" दरवाज़े के बाहर से आवेशित स्वर चहका, "आप बिल्कुल बेफ़िक्र रहिये," वह मीठी ही-ही करके चला गया।

घर में घण्टी की टन-टन बिखर गयी, वार्निशवाला दरवाज़ा खुला, टँगकटे ने फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को पर्चा थमाकर बताया :

"उम्र ग़लत बतायी है। शायद 54-55 की होगी। दिल की धड़कन धीमी-सी है।"

वह ग़ायब हो गया और उसकी जगह बड़ी अदा से हैट लगाये और अपने मुरझाये, झुर्रीदार गले में चमचमाता कण्ठहार पहने पोशाक को सरसराती एक मादाम प्रकट हुई। उसकी आँखों के नीचे काली-काली थैलियाँ लटकी थीं और कपोल गुड़ियों जैसे लाल थे। वह बहुत घबरायी लगती थी।

"मादाम! आपकी उम्र?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने बहुत सख़्ती के साथ उससे पूछा।

मादाम डर गयी, रूज की पपड़ी के नीचे उसकी चमड़ी का रंग उड़ गया।

"मैं, प्रोफ़ेसर साहब, कसम से, अगर आपको पता होता कि मेरे साथ कैसी त्रासदी

*चर्बीहड्डी–सौन्दर्य प्रसाधन बनानेवाली तत्कालीन फर्म।–सं.

हुई है!..."

"मादाम, आपकी उम्र क्या है?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने और भी सख़्ती से सवाल दोहराया।

"कसम से... पैंतालीस की..."

"मादाम," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चीख पड़े, "लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। कृपया देर मत लगाइये। आप अकेली थोड़े ही हैं!"

मदाम का वक्ष तेज़ी से उठ रहा था।

"मैं सिर्फ़ आपको, साइंस के चिराग को बता रही हूँ। पर क़सम से–यह कितनी भयंकर बात है..."

"आपकी उम्र कितनी है?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने गुस्से में आकर ज़ोर से चिल्लाकर पूछा और उनका चश्मा कौंधा।

"इक्यावन!" भय से छटपटाकर मदाम ने उत्तर दिया।

"कच्छा उतारिये, मदाम," राहत की साँस लेकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले और उन्होंने कोने में रखे ऊँचे सफ़ेद *फाँसी के तख्ते-से* की ओर इशारा किया।

"कसम से, प्रोफ़ेसर साहब," काँपती उँगलियों से कमर पर कोई बटन खोलते हुए मदाम बुदबुदा रही थी, "यह मोरित्स है न... मैं आपको सच-सच बता रही हूँ..."

" 'सेविलिया से ग्रेनाडा तक...' " फ़िलीप फ़िलीप्पोविच अनमने मन से गाने लगे और उन्होंने संगमरमर के वाश बेसिन का पैडल दबाया। पानी का शोर हुआ।

"भगवान की सौगन्ध!" मदाम बोल रही थी और कपोलों पर लिपे पलस्तर के नीचे से सजीव त्वचा की चित्तियाँ झाँक रही थीं। "मैं जानती हूँ कि यह मेरा आख़िरी प्रेम है। पर वह तो इतना कमीना है! प्रोफ़ेसर साहब! वह दग़ाबाज जुआरी है, सारा मास्को जानता है। वह एक भी कमीनी माडल को नहीं छोड़ता। वह आख़िर कितना जवान है!" मदाम बुदबुदा रही थी और सरसराते पेटीकोट के अन्दर से उसने लेस का गुच्छा-सा निकाला।

कुत्ते का दिमाग़ बिल्कुल चकरा गया, उसके दिमाग़ में सब सिर के बल घूमने लगा।

"भाड़ में जाओ तुम सब," उसने पँजों पर सिर टिकाकर, शर्म के मारे आँखें मूँदकर उनींदेपन में सोचा, "यह समझने की कोशिश तक नहीं करूँगा कि मामला क्या है–मेरे पल्ले कुछ पड़नेवाला तो है नहीं।"

झंकार से उसकी आँख खुली और उसने देखा कि फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने चिलमची में कोई चमकीली-सी नलियाँ फेंकी हैं।

चित्तीदार मदाम छाती पर हाथों को टिकाये आशा भरी नज़रों से फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को ताक रही थी। उन्होंने रौब के साथ भौंहें सिकोड़ीं और मेज़ पर बैठकर कुछ लिखा।

"मैं, मदाम, आपको बन्दर के अण्डकोश लगा दूँगा," उन्होंने घोषणा की और

सख़्ती से देखा।

"आह, प्रोफ़ेसर, क्या सचमुच बन्दर के?"

"हाँ," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने अडिगता के साथ कहा।

"आपरेशन कब होगा?" मदाम ने क्षीण स्वर में पूछा, उसके चेहरे का रंग उड़ता जा रहा था।

" ' सेविलिया से ग्रेनाडा तक...' हूँ... सोमवार को। सुबह क्लीनिक में दाखिल हो जाइयेगा। मेरा असिस्टेण्ट आपको तैयार कर देगा।"

"आह, मैं क्लीनिक में नहीं चाहती। आपके यहाँ नहीं किया जा सकता, प्रोफ़ेसर साहब?"

"बात यह है कि अपने यहाँ आपरेशन मैं बहुत कम मामलों में करता हूँ। यह बहुत महँगा पड़ेगा—500 रूबल।"

"मैं राजी हूँ, प्रोफ़ेसर साहब!"

फिर से पानी बहने का शोर हुआ, परोंवाली टोप लहलहायी, फिर तश्तरी की तरह गंजा सिर प्रकट हुआ और फ़िलीप फ़िलीप्पोविच से लिपट गया। कुत्ता ऊँघ रहा था, अब जी नहीं मतला रहा था, कुत्ता शान्त बगल ओर सुखद गर्मी का आनन्द ले रहा था, उसने खर्राटा तक ले डाला और सुखद सपने का एक अंश तक देख डाला : मानो उसने उल्लू की पूँछ के पँखों का पूरा का पूरा गुच्छा नोच डाला... फिर उत्तेजित आवाज सिर के ऊपर भौंकी।

"मास्को में मैं बहुत प्रसिद्ध हूँ, प्रोफ़ेसर साहब। मैं आख़िर करूँ क्या?"

"सज्जनो," क्षुब्ध होकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्ला रहे थे, "इस तरह की बातें नहीं करनी चाहिये! अपने को काबू में रखना चाहिये। उसकी उम्र कितनी है?"

"चौदह, प्रोफ़ेसर साहब... आप समझते हैं, अगर ख़बर फैल गयी तो मैं मारा जाऊँगा। कुछेक दिन में मैं विदेश के दौरे पर जानेवाला हूँ।"

"पर मैं तो आख़िर वकील नहीं हूँ, जनाब... दो साल सब्र कर लीजिये, फिर उससे शादी कर लीजियेगा।"

"मैं शादीशुदा हूँ, प्रोफ़ेसर साहब।"

"ओ सज्जनो, सज्जनो!"

दरवाज़ा खुल रहा था, चेहरे बदलते रहे थे, अलमारी में औज़ार खड़क रहे थे और फ़िलीप फ़िलीप्पोविच अथक काम में जुटे हुए थे।

"अश्लील घर है," कुत्ता सोच रहा था, "पर कितना मजा आ रहा है! आख़िर इसे मेरी क्या ज़रूरत पड़ी है? क्या सचमुच अपने यहाँ रखेगा? बड़ा झक्की है! अरे, इसे तो आँख के इशारे पर ऐसा बढ़िया कुत्ता मिल सकता था कि देखनेवाला ढंग रह जाता! क्या पता मैं भी सुन्दर हूँ। लगता है मेरी किस्मत अच्छी है! और उल्लू यह जो टँगा

है कमीना है... मक्कार है।"

काफ़ी शाम को जाकर ही कुत्ते की चेतना लौटी जब दरवाज़े की घण्टी बजना बन्द हो गयी, यह ठीक उसी क्षण हुआ जब दरवाज़े में खास आगंतुक घुसे। एकसाथ चार लोग आये थे। सब नौजवान थे और कपड़े उनके निहायत मामूली थे।

"इन्हें क्या चाहिये?" हैरानी में पड़कर कुत्ते ने सोचा। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने तो काफ़ी कुढ़कर अतिथियों की अगवानी की। वह मेज़ के पास खड़े थे और आगंतुकों को ऐसे घूर रहे थे जैसे सेनापति दुश्मनों को देखता है। उनकी गरुडीय नाक के नथुने फूल रहे थे। आगंतुक क़ालीन पर कदमताल कर रहे थे।

"हम आपके पास आये हैं, प्रोफेसर," उनमें से वहवाला बोला जिसके सिर पर कोई चौथाई गज ऊँची अत्यन्त घने घुँघराले बालों की पूली थी, "तो हम इस काम से आये हैं..."

"सज्जनों, आप बेकार ही ऐसे मौसम में जूतों पर गैलोश नहीं पहनते," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने उपदेश देते हुए उसे टोका, "पहली बात तो यह है कि आपको ठण्ड लग जायेगी, दूसरे आपने मेरे कालीनों को गन्दा कर दिया और मेरे यहाँ सारे कालीन ईरान के हैं।"

वह, पूलीवाला, चुप हो गया और चारों के चारों हैरानी के साथ फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का मुँह ताकने लगे। कुछ पलों तक सन्नाटा छाया रहा, मेज़ पर रखी काठ की नक्काशीदार तश्तरी पर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की उँगलियों की ठक-ठक ही उसे तोड़ रही थी।

"पहली बात तो यह है कि हम सज्जन नहीं हैं," अन्तत : चारों में से सबसे छोटा आड़ू जैसा तरुण बोला।

"पहली बात तो यह," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने उसे टोककर पूछा, "आप मर्द हैं या औरत?"

चारों फिर से मुँह खोले अवाक् रह गये। इस बार पहलेवाले की बोलती लौटी, उसी, सिर पर पूलीवाले की।

"क्या फर्क पड़ता है, कामरेड?" उसने अकड़कर पूछा।

"मैं औरत हूँ," चमड़े की जैकेट पहने आड़ूमुखी तरुण ने स्वीकार किया और उसका चेहरा लाल हो गया। उसके बाद न जाने क्यों आगंतुकों में से एक, भेड़ की खाल की ऊँची टोपी पहने सुनहरे बालोंवाला का भी चेहरा घना लाल हो गया।

"अगर यह बात है तो आप अपनी कैप पहने रह सकती हैं, पर आपसे, महाशय, मैं टोपी उतारने का अनुरोध करूँगा," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच रोबीली आवाज़ में बोले।

"मैं महाशय-वहाशय नहीं हूँ," भेड़ की खाल की ऊँची टोपी उतारतें हुए सुनहरे बालोंवाला चिहुँककर बोला।

"हम आपके पास आये हैं," काली पूलीवाले ने फिर से मुँह खोला।

"सबसे पहले यह बताओ–यह हम कौन हैं?"

"हम–हमारी बिल्डिंग की नयी कमेटी हैं," संयत आक्रोश में काली पूलीवाला बोलने लगा। "मैं–श्वोदेर, यह–व्याजेम्स्काया, वह–कामरेड पेस्त्रूखिन और झारोव्किन हैं। तो हम..."

"यह आपको फ़्योदोर पाव्लोविच साबलिन के क्वार्टर में बसाया गया है?"

"हमें," श्वोंदेर ने उत्तर दिया।

"हे भगवान, कालाबूखोव के मकान का बँटाधार हो गया!" हाथ नचाकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले।

"प्रोफ़ेसर, आप क्यों हँसी उड़ा रहे हैं?" श्वोंदेर ने क्षुब्ध होकर पूछा।

"अरे, हँस कहाँ रहा हूँ?! मैं पूरी तरह हताश हूँ," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये, "अब हीटिंग व्यवस्था का क्या होगा?"

"आप हमारा उपहास कर रहे हैं,, प्रोफ़ेसर प्रेओब्राझेन्स्की?"

"आप किस काम से मेरे पास आये हैं? जितना जल्दी हो सके बताओ, मैं खाना खाने जा रहा हूँ।"

"हम, बिल्डिंग कमेटी," नफ़रत के साथ श्वोंदर बोलने लगा, "हमारी बिल्डिंग की आम सभा के बाद आये हैं जिसमें बिल्डिंग के क्वार्टरों में पूरक आवंटन का सवाल खड़ा था..."

"कौन किस पर खड़ा था?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये। "अपनी बात को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने का कष्ट करें।"

"सवाल अतिरिक्त लोगों को क्वार्टरों में बसाने का खड़ा था।"

"बस करो! मैं समझ गया! आपको मालूम है कि 12 अगस्त के आदेशानुसार मेरा क्वार्टर हर तरह के पूरक आवंटन और पुनर्वास से मुक्त है?"

"मालूम है," श्वोदेर ने उत्तर दिया, "पर आम सभा आपके सवाल पर गौर करके इस नतीजे पर पहुँची कि आम तौर से और कुल मिलाकर आपने बहुत ज़्यादा घेर रखी है। बिल्कुल ज़्यादा। आप अकेले सात कमरों में रहते हैं।"

"मैं अकेला सात कमरों में रहता और काम करता हूँ," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने उत्तर दिया, "और आठवाँ कमरा भी चाहता हूँ। पुस्ताकलय बनाने के लिए मुझे उसकी ज़रूरत है।"

चारों गूँगे रह गये।

"आठवाँ! ही-ही," शिरस्त्राण से वंचित सुनहरे बालोंवाला बोला, "क्या बात कही है!"

"कैसी धृष्टता है!" औरत निकला तरुण बोला।

"मेरे पास मरीजों से मिलने का कमरा, गौर कीजिये, वही पुस्तकालय का काम

भी देता है, खाने का कमरा और मेरा अध्ययन-कक्ष है, ये कुल मिलाकर 3 हुए। जाँच का कमरा–4। आपरेशन रूम–5। मेरे सोने का कमरा–6 और नौकरों का कमरा–7 हुए। कुल मिलाकर काफ़ी नहीं पड़ते... खैर, वैसे इसका कोई महत्व नहीं। मेरा क्वार्टर मुक्त है और बात खत्म। मैं खाना खाने जा सकता हूँ?"

"माफ़ कीजिये," मोटे गुबरैले जैसा चौथा बोला।

"माफ़ कीजिये," श्वोंदेर उसकी बात काटते हुए बोला, "खाने के और जाँच के कमरों के बारे में ही तो बात करने आये हैं हम। आम सभा आप से स्वेच्छानुसार श्रमिक अनुशासन के तौर पर खाने के कमरे में इन्कार करने का अनुरोध करती है। मास्को में किसी के पास भी खाने का अलग कमरा नहीं है।"

"आइसाडोरा डंकन के पास तक नहीं," औरत ज़ोर से चिल्लाकर बोली।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के साथ कुछ ऐसा हुआ जिसके फलस्वरूप उनके चेहरे पर हल्की-सी लाली छा गयी पर उनके मुँह से एक भी बोल न निकला, वह इन्तज़ार कर रहे थे यह देखने के लिए कि आगे क्या होगा।

"और जाँच के कमरे से भी," श्वोंदेर आगे बोला, "जाँच के कमरे का अध्ययन-कक्ष में तबादला किया जा सकता है, बहुत बढ़िया प्रबन्ध होगा।"

"आहा," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच विचित्र-से स्वर में बोले, "पर मैं भोजन कहाँ करूँगा?"

"सोने के कमरे में," चारों के चारों समवेत स्वर में बोले।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की लाली पर हल्की-सी सलेटी रंगत छा गयी।

"सोने के कमरे में भोजन करूँ," वह किंचित दबे स्वर में बोलने लगे, "जाँच के कमरे में पढ़ूँ, मिलने के कमरे में कपड़े बदलूँ, नौकरों के कमरे में आपरेशन करूँ और खाने के कमरे में मरीजों की जाँच करूँ। काफ़ी सम्भव है कि आइसाडोरा डंकन ऐसा ही करती होगी। हो सकता है कि वह अध्ययन-कक्ष में खाना खाती हो और गुसलखाने में खरगोशों की चीर-फाड़ करती हो। हो सकता है। पर मैं आइसाडोरा डंकन नहीं हूँ!" अचानक वह चिंघाड़े और लाली उनकी पीली पड़ गयी। "मैं खाना खाने के कमरे में खाऊँगा और आपरेशन रूम में आपरेशन करूँगा! आम सभा को जाकर बता दीजिये, आपसे मेरा विनम्र निवेदन यह है कि आप अपना-अपना काम देखें और मुझे वहाँ भोजन करने की सम्भावना प्रदान करें जहाँ सभी सामान्य लोग करते हैं, अर्थात् खाने के कमरे में न कि गलियारे में या बच्चों के कमरे में।"

"तब, प्रोफ़ेसर, आपके दृढ़ प्रतिरोध को देखते हुए," श्वोंदेर आवेश में आकर बोला, "हम ऊपरवाली संस्थाओं से आपकी शिकायत करेंगे।"

"अच्छा," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले, "यह बात है?" और उनकी आवाज में सन्देहजनक शिष्टता का लहजा खनका, "आपकी अत्यन्त कृपा होगी, एक मिनट के लिए रुकिये।"

"यह हुई न बात," कुत्ते ने प्रशंसा भाव से ओतप्रोत होकर सोचा, "हूबहू मेरा जैसा है। ज़रा देखते जाओ, वह अभी इन्हें ऐसा काटेगा, ऐसा काटेगा। अभी कह नहीं सकता कि किस तरह पर ऐसा काटेगा...पीट दे इन्हें! इस लमटँगे के बूट के ऊपर घुटने की नस पर दाँत गड़ाने में क्या मजा आयेगा...गुर्र-गुर्र..."

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने मुक्का पटककर टेलीफ़ोन का चोंगा उठाया और यह बोले :

"कृपया... हाँ... शुक्रिया... कृपया प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच बुलाइये। प्रोफ़ेसर प्रेओब्राझेन्स्की बोल रहा हूँ। प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच, आप हैं? बड़ी खुशी है कि आप मिल गये। शुक्रिया, ठीक हूँ। प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच, आपका आपरेशन रद्द हो गया। क्या? कभी भी नहीं होगा। बाकी आपरेशन भी नहीं होंगे। वजह यह है : मैं मास्को में, मास्को में ही नहीं रूस में अपना काम बन्द कर रहा हूँ... अभी मेरे यहाँ चार जने आये हैं, उनमें से एक मर्दाना वेश में औरत है और दो पिस्तौल से लैस हैं, वे मेरे क्वार्टर का एक हिस्सा छीनने के लिए मुझ पर आतंक ढा रहे हैं।"

"प्रोफ़ेसर, आप क्या कह रहे हैं," श्वोंदेर बोला, उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

"माफ़ कीजिये... उनकी बातों को दोहराना मेरे लिए सम्भव नहीं। मैं बेसिर-पैर की बातों का शौकीन नहीं। यही कहना काफ़ी है कि उन्होंने मुझे अपना जाँच का कमरा खाली करने का सुझाव दिया है, दूसरे शब्दों में, उस कमरे में आपका आपरेशन करने के लिए मजबूर किया है जहाँ मैं अब तक खरगोशों की चीर-फाड़ करता था। मैं ऐसी परिस्थितियों में काम नहीं कर सकता और न ही मुझे इसका अधिकार है। इसलिए मैं अपना काम बन्द कर रहा हूँ, क्वार्टर पर ताला डालकर सोची शहर जा रहा हूँ। चाबियाँ श्वोंदेर को दे सकता हूँ। उसे ही करने दो आपरेशन।"

चारों बुतों की तरह खड़े थे, उनके बूटों से चिपकी बर्फ पिघल रही थी।

"क्या किया जा सकता है... मुझे खुद बहुत बुरा लगा.. क्या? नहीं-नहीं, प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच! नहीं-नहीं। अब मैं इसके लिए राजी नहीं। मेरे सब्र का बाँध टूट गया। अगस्त के महीने से यह दूसरी घटना है। क्या?! हुं...जैसी मर्जी। यही सही। पर सिर्फ़ एक शर्त है : चाहे कोई भी दे, चाहे जब, चाहे जो, पर यह ऐसा काग़ज़ हो कि उसके होने पर न श्वोदेर, न कोई और मेरे क्वार्टर के दरवाज़े के पास फटकने की हिम्मत कर सके। फाइनल काग़ज़ हो। खरा। असली! बख़्तर की तरह मजबूत। ताकि मेरे नाम का जिक्र तक न आये। बेशक। मैं उनके लिए मर गया। हाँ-हाँ। कृपया। कौन? आहा... यह हुई न बात। आहा... ठीक। अभी देता हूँ उसे चोंगा। कृपया कष्ट करें," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने ज़हर घुली आवाज में श्वोंदेर को सम्बोधित किया, "अभी आपसे बात की जायेगी।"

"सुनिये, प्रोफ़ेसर," जल-भुनकर श्वोंदेर बोला, "आपने हमारी बात को तोड़-मरोड़कर

पेश किया है।"

"मैं आपसे इस तरह के शब्दों का उपयोग न करने का अनुरोध करता हूँ।"

श्वोंदेर ने चोंगा थामा और बोला :

"मैं सुन रहा हूँ। हाँ...बिल्डिंग कमेटी का चेयरमैन... हम तो नियमों का पालन कर रहे थे... प्रोफ़ेसर की तो वैसे भी बिल्कुल खास स्थिति है... हम उनके कामों के बारे में जानते हैं... पूरे पाँच कमरे उनके पास रहने देनेवाले थे... अच्छा, ठीक है... अगर यह बात है... ठीक..."

उसने चोंगा रखा और मुड़ा, उसका चेहरा टमाटर की तरह लाल था।

"क्या थूका है मुँह पर! लौंडा लाजवाब है!" कुत्ते ने गदगद होकर सोचा। "इसे क्या कोई जादुई शब्द मालूम है? खैर, अब आप मुझे जितना चाहें मारें पर यहाँ से मैं कहीं नहीं जानेवाला।"

तीनों मुँह खोले खड़े, घड़ों पानी पड़े श्वोंदेर को ताक रहे थे।

"यह कितनी शर्मनाक बात है!" वह झिझकते हुए बोला।

"अगर इस समय बहस हुई होती," उत्तेजित होती और लाली से दहकती औरत बोली, "मैं प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच को साबित करके दिखा देती कि..."

"क्षमा कीजिये, आप इसी मिनट तो यह बहस छेड़ने का इरादा नहीं रखतीं?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने शिष्टतापूर्वक पूछा।

औरत की आँखें चमकीं।

"प्रोफ़ेसर, मैं आपके व्यंग्य को समझती हूँ, हम अभी चले जायेंगे... बस, मैं बिल्डिंग के सांस्कृतिक विभाग के निदेशक के नाते..."

"की नि-दे-शिका,"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने उसे ठीक किया।

"आपको," इतना कहकर औरत ने गरेबान में हाथ डालकर कई रंगीन और बर्फ से गीली पत्रिकाएँ निकालीं, "जर्मनी के बच्चों की सहायतार्थ कुछ पत्रिकाएँ खरीदने का सुझाव देना चाहती हूँ। पचास-पचास कोपेक की हैं।"

"नहीं, नहीं लूँगा," पत्रिकाओं पर तिरछी नज़र डालकर प्रोफ़ेसर ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

चेहरों पर अत्यन्त हैरानी का ठप्पा लग गया और औरत के चेहरे पर सिन्दूर पुत गया।

"आप क्यों इंकार कर रहे हैं?"

"इच्छा नहीं है।"

"आपको जर्मनी के बच्चों से सहानूभूति नहीं है?"

"है।"

"पचास कोपेक का दुःख है?"

"नहीं।"

"तब आख़िर क्यों?"

"नहीं होती इच्छा।"

वे कुछ देर मौन खड़े रहे।

"प्रोफ़ेसर, आप जानते हैं," गहरी साँस छोड़कर युवती बोली, "अगर आप यूरोपीय हस्ती न होते और आपकी इतने क्षोभजनक ढंग से हिमायत न की गयी होती, (सुनहरे बालोंवाले ने उसकी जैकेट के किनारे को खींचा पर उसने हाथ झिड़क दिया) हिमायतियों का हम पर्दाफाश कर डालेंगे, मुझे पूरा विश्वास है, तो आपको गिरफ़्तार कर लिया जाना चाहिये था।"

"पर क्यों?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने कौतूहलवश पूछा।

"आप प्रोलेटेरियट से घृणा करते हैं!" औरत दम्भ के साथ बोली।

"हाँ, मैं सर्वहारा को पसन्द नहीं करता," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने अफ़सोस के साथ सहमति व्यक्त की और बटन दबा दिया। कहीं घण्टी बजने की आवाज़ सुनायी पड़ी। गलियारे का दरवाज़ा खुला।

"ज़ीना," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये, "खाना परोसो। सज्जनो, आप मुझे आज्ञा देंगे?"

चारों चुपचाप अध्ययन-कक्ष से निकले, चुपचाप उन्होंने मिलने के कमरे, चुपचाप ही प्रकोष्ठ को पार किया और सुनायी पड़ा कि उन्हें निकालकर बाहर का दरवाज़ा कैसे ज़ोर के साथ धड़ाम से बन्द हो गया।

कुत्ता पिछली टाँगों पर उठा और उसने फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के सामने नमाज-सी अदा की।

3

चौड़ी काली किनारी की बहिश्त के फूलों से अलंकृत प्लेटों में बारीक कतलों में कटी सामन मछली और नमकीन ईल मछली रखी थीं। भारी पटरे पर पनीर का नम लोंदा था और चाँदी के पात्र में बर्फ से घिरा कैवियर था। प्लेटों के बीच कुछ पतले-पतले जाम और रंग-बिरंगी वोदका से भरी तीन बिल्लौरी सुराहियाँ थीं। ये सभी वस्तुएँ काँच और चाँदी के चमचमाते पुँज बिखेरती बलूत की विशाल नक्काशीदार अलमारी से सटी संगमरमर की छोटी-सी मेज़ पर रखी थीं। कमरे के केन्द्र में मकबरे की तरह भारी, सफ़ेद मेज़पोश से ढकी मेज़ थी, और उस पर दो जनों के लिए छुरी-काँटे, पादरियों की टोपी की तरह तह किये हुए नैपकिन और तीन काली-सी बोतलें रखी थीं।

ज़ीना चाँदी का ढका पात्र लायी जिसमें कुछ खदबदा रहा था। पात्र से एसी सुगन्ध आ रही थी कि कुत्ते के मुँह में फ़ौरन पानी भर गया। "ज़न्नत है!" उसने सोचा और

लकड़ी के फ़र्श पर लाठी की तरह अपनी दुम पटकने लगा।

"इधर लाओ," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने हिंस्र भाव से आदेश दिया। "डाक्टर बोरमेंताल, आपसे आग्रह करता हूँ, कैवियर को रहने दीजिये। अगर आप नेक सलाह मानना चाहते हैं तो इंग्लिश नहीं बल्कि सामान्य रूसी वोदका पीजिये।"

टँगकटे कामदेव ने—वह अब चोगे के बिना अच्छा-खासा काला सूट पहने हुए था—चौड़े कन्धे सिकोड़े, शिष्टता के साथ खींसें निपोरकर पारदर्शी द्रव डाला।

"नयी सरकारवाली है?" उसने पूछा।

"आप भी कैसी बातें करते हैं," मेज़बान बोला। "यह स्पिरिट है। दार्या पेत्रोव्ना खुद उम्दा वोदका बनाती है।"

"ऐसी बात नहीं, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, सबका कहना है कि सरकारी भी काफ़ी ठीक-ठाक है—30 डिग्री की है।"

"पर वोदका 40 डिग्री की होनी चाहिये न कि 30 की, यह तो पहली बात," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने उसे नसीहत देते हुए टोका। "दूसरे—भगवान ही जाने कि उन्होंने उसमें क्या-क्या मिलाया है। आप कह सकते हैं—जो उनकी मर्जी में आया?"

"कुछ भी मिला सकते हैं," टँगकटा विश्वास के साथ बोला।

"मेरा भी यही मत है," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले और एक घूँट में अपने जाम को गले के नीचे उतार दिया। "...वाह... डाक्टर बोरमेंताल, आपसे आग्रह करता हूँ, झट से इस चीज़ को मुँह में डालिये और अगर आप कहेंगे कि यह... मैं ज़िन्दगी भर के लिए आपका जानी दुश्मन बन जाऊँगा। 'सेविलिया से ग्रेनाडा तक...' "

इन शब्दों के साथ खुद उन्होंने चाँदी के चौड़े काँटे से छोटी-सी काली पावरोटी जैसी कोई चीज़ उठायी। टँगकटे ने उनके उदाहरण का अनुसरण किया। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की आँखें चमक उठीं।

"खराब है?" चबाते हुए फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा। "बुरी चीज़ है? आप जवाब दीजिये, डाक्टर साहब।"

"यह लाज़वाब है," सच्चे से टँगकटे ने उत्तर दिया।

"क्यों नहीं होगा... याद रखिये, इवान आर्नोल्दोविच, वोदका के साथ ठण्डी चीज़ें और सूप सिर्फ़ ज़मीनदार ही खाते हैं जिनका बोल्शेविकों ने अभी पूरा सफाया नहीं किया। अपनी थोड़ी-बहुत इज़्ज़त करनेवाला आदमी गर्मागर्म चीज़ें खाता है। और मास्को की गर्मागर्म चीज़ों में से यह अव्वल है। कभी 'स्लाव्यान्स्की बाजार' रेस्तराँ में यह बहुत बढ़िया बनती थी। ले, पकड़।"

"खाने के कमरे में कुत्ते को डाल रहे हैं," महिला स्वर गूँजा, "बाद में इसे कोई भी लालच देकर नहीं निकाला जा सकेगा।"

"कोई बात नहीं। बेचारे को भूख लगी है," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने काँटे की नोक पर कुत्ते को खाने को दिया, जिसे उसने बाजीगरों की महारत से ले लिया, काँटे को

उन्होंने शोर के साथ चिलमची में डाल दिया।

तदोपरान्त प्लेटों से केकड़ों की गन्धवाली भाप उड़ने लगी, कुत्ता मेज़पोश की छाया में बारूद की कोठरी का पहरा देनेवाले सन्तरी की तरह बैठा था। और फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, कलफ लगे कड़े नैपकिन के सिरे को कालर में ठूँसकर उपदेश दे रहे थे :

"भोजन, इवान आर्नोल्दोविच, बहुत जटिल चीज़ होती है। खाना खाना भी आना चाहिये, आप ही सोचिये—अधिकांश लोगों को खाना खाना ही नहीं आता। न सिर्फ़ यही जानना ज़रूरी है कि क्या खाना चाहिये बल्कि यह भी कि कब और कैसे खाना चाहिये। (फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने अर्थपूर्ण ढंग से चम्मच हिलायी।) और खाते समय क्या बातें करनी चाहिये। हाँ-हाँ। अगर आप अपनी पाचनक्रिया का ख़्याल रखते हैं तो मेरी नेक सलाह सुनिये—खाने के वक़्त बोल्शेविज्म और चिकित्सा-विज्ञान के बारे में बातें मत कीजिये। और भगवान के लिए, खाने से पहले सोवियत अख़बार मत पढ़ें।"

"हुं... पर दूसरे तो मिलते नहीं।"

"तो कोई भी मत पढ़िये। आपको पता है, मैंने अपने क्लीनिक में 30 पर्यवेक्षण किये हैं। तो आपका क्या ख़्याल है? अख़बार न पढ़नेवाले मरीजों की तबीयत बहुत बढ़िया है। उन लोगों का, जिन्हें मैंने विशेष रूप से "प्राव्दा" पढ़ने को मजबूर किया, वजन घट गया।"

"हुं..." सूप और शराब से गुलाबी होते टँगकटे ने दिलचस्पी जाहिर की।

"यही नहीं, घुटनों की प्रतिवर्ती क्रिया सुस्त हो गयी, भूख मर गयी, मानसिक दशा कुण्ठित हो गयी।"

"अच्छा..."

"हाँ-हाँ। पर मैं यह कर क्या रहा हूँ? खुद ही चिकित्सा विज्ञान के बारे में बोलने लगा।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने कुर्सी से पीठ टिकाकर घण्टी बजायी और किरमिजी पर्दे को चीरकर ज़ीना प्रकट हुई। कुत्ते के हिस्से स्टर्जन मछली का पीला-सा मोटा टुकड़ा आया, जो उसे पसन्द नहीं आया और इसके फौरन बाद रोस्ट-बीफ का टुकड़ा। उसे हड़पकर कुत्ते ने अचानक महसूस किया कि उसे नींद आ रही है और खाने को अब वह देख तक नहीं सकता। "बड़ी अजीब बात है," भारी पलकों को मूँदता हुआ वह सोच रहा था, "खाना मेरी आँखों को बिल्कुल नहीं सुहाता। पर खाने के बाद सिगरेट पीना—यह निहायत बेवकूफी है।"

खाने का कमरा अप्रिय नीले धुएँ से भर गया। अगले पँजों पर सिर टिकाकर कुत्ता ऊँघ रहा था।

"'सेंट-जुलियन' काफ़ी अच्छी शराब है," नींद में कुत्ते को सुनायी पड़ा, "पर अब

तो वह मिलती ही नहीं।"

छतों और कालीनों से छनकर कहीं ऊपर और बगल से आता दबा-दबा सहगान सुनायी पड़ा।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने घण्टी बजायी और ज़ीना हाज़िर हुई।

"ज़ीना, यह सब क्या है?"

"फिर से आम सभा हो रही है, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच," ज़ीना ने उत्तर दिया।

"फिर से!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच दर्द भरी आवाज में बोले। "बस अब समझो कालाबूखोव की बिल्डिंग का सत्यानाश हो गया। यहाँ से जाना पड़ेगा, पर कहाँ—सवाल यही है। सब ढर्रे पर चलेगा। शुरू में हर शाम को गाना गाया जायेगा, फिर सण्डासों में ठण्ड के कारण पाइप जम जायेंगे फिर हीटिंग व्यवस्था का बायलर फटेगा इत्यादि, इत्यादि। कालाबूखोव की क़ब्र खुद जायेगी।"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच नाहक परेशान हो रहे हैं," मुस्कराते हुए ज़ीना ने टिप्पणी की और प्लेटों का ढेर उठाकर ले गयी।

"आख़िर परेशान कैसे न होऊँ!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्ला पड़े।" आप समझिये भी, यह कैसा मकान था!"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आप ज़िन्दगी को बड़ी निराशा के साथ देखते हैं," टँगकटे कामदेव ने आपत्ति की, "वे अब बहुत बदल गये हैं।"

"जनाब, आप मुझे जानते हैं सच है न? मैं तथ्यों को माननेवाला पर्यवेक्षण करनेवाला आदमी हूँ। मैं निराधार परिकल्पनाओं का दुश्मन हूँ। रूस में ही नहीं यूरोप में भी यह जानते हैं। अगर मैं कुछ कहता हूँ तो उसका मतलब वह किसी तथ्य पर आधारित है जिससे मैं निष्कर्ष निकालता हूँ। और लीजिये एक तथ्य : हमारी बिल्डिंग का तोशकखाना और गैलोश रखने की जगह।"

"यह तो दिलचस्प बात लगती है..."

"गैलोश बेकार की चीज़ होती है। गैलोशों में सुख कहाँ होता है," कुत्ते ने सोचा, "पर हस्ती यह निकली है।"

"तो सुनिये—गैलोश रखने की जगह। मैं इस बिल्डिंग में 1903 से रहता हूँ। और इस दौरान 1917 के मार्च तक एक भी ऐसी घटना नहीं हुई, लाल पेंसिल से रेखांकित करता हूँ, एक भी ऐसी घटना न हुई कि दरवाज़ा खुला रहने के बावजूद कम से कम एक ही जोड़ी गैलोश ग़ायब हुए होते। गौर कीजिये कि यहाँ 12 क्वार्टर हैं और इसके अलावा मरीज मेरे यहाँ आते हैं। सन 17 के मार्च के एक दिन सारे के सारे गैलोश गायब हो गये, उनमें मेरे भी दो जोड़ी थे, साथ ही 3 छड़ियाँ तथा दरबान का ओवरकोट और समोवार भी। और उस दिन से गैलोश स्टैण्ड का अस्तित्व समाप्त हो गया। जनाब! मैं हीटिंग व्यवस्था की तो बात ही नहीं करता। नहीं करता। ठीक है, मान लेते हैं : अगर सामाजिक क्रान्ति हो रही है तो घरों को गर्म रखने की क्या ज़रूरत।

पर मैं पूछता हूँ कि जब यह सारा झमेला शुरू हुआ तो क्यों सब कीचड़ से लथपथ गैलोशों और नमदे के बूटों में संगमरमर के जीने पर चढ़ने लगे? अब तक क्यों गैलोशों को ताले में बन्द रखना पड़ता है? ऊपर से फ़ौजी को खड़ा करना पड़ता है कि कोई उन्हें न चुरा ले? मुख्य जीने से कालीन क्यों हटाया गया? भला कार्ल मार्क्स जीनों पर कालीन बिछाने की मनाही करता है? भला कार्ल मार्क्स ने कहीं लिखा है कि प्रेचीस्तेन्का पर कालाबूख की इमारत के गेट नं. 2 पर तख्ते जड़ दिये जायें और लम्बा चक्कर लगाकर पिछले अहाते से इमारत में घुसा जाये? इसकी किसे ज़रूरत है? प्रोलेटेरियन अपने गैलोश नीचे क्यों नहीं छोड़ सकता, बल्कि संगमरमर पर कीचड़ फैलाता है?''

''अरे, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, उसके पास तो गैलोश हैं ही कहाँ,'' टँगकटे के मुँह से निकला।

''सरासर ग़लत!'' फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने गरजकर कहा और गिलास में शराब भरी। ''हुं... खाने के बाद मैं लिकर नहीं पीता : उससे पेट अफरा जाता है और जिगर को नुकसान पहुँचता है... सरासर ग़लत! अब उसके पास गैलोश हैं और ये गैलोश. .. मेरेवाले हैं! ये वही गैलोश हैं जो 1917 के वसन्त में गायब हो गये थे। सवाल उठता है कि किसने उन पर हाथ साफ़ किया था? मैंने? यह हो ही नहीं सकता। बुर्जुआ साबलिन ने? (फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने छत की ओर उँगली उठायी।) ऐसा सोचना तक बेहूदी बात होगी। शुगर मिल के मालिक पोलोज़ोव ने? (फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने बगल की ओर इशारा किया।) कदापि नहीं! यह इन गवैया की ही करतूत है! हाँ-हाँ! पर कम से कम जीने परतो वे उन्हें उतार सकते थे! (फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का चेहरा तमतमा गया।) मैं पूछता हूँ कि ज़ीने से फूलों के गमले क्यों हटाये गये हैं? बिजली जो भगवान याददाश्त दे, बीस साल के दौरान दो बार गयी थी, आज के ज़माने में महीने में एक बार पाबन्दी से ग़ायब रहने लगी है? डाक्टर बोरमेंताल, सांख्यिकी—बड़ी खौफनाक चीज़ है। आपको, जो मेरी नयी रचना से परिचित हैं, यह किसी और की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह मालूम है।''

''फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, देश में तबाही मची है।''

''नहीं,'' पूर्ण विश्वास के साथ फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने आपत्ति की, ''नहीं। सबसे पहले आपको, अजीज इवान आर्नोल्दोविच, इस शब्द के उपयोग से बाज रहना चाहिये। यह—मरीचिका, धुआँ, कोरी गप्प है,'' फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने अपनी छोटी-छोटी उँगलियों को चौड़ा फैलाया, जिसकी वजह से मेज़पोश पर कछुओं जैसी दो परछाइयाँ कुलबुलाने लगीं। ''यह आपकी तबाही आख़िर है क्या बला? मौत की बुढ़िया? चुड़ैल, जिसने सारी खिड़कियों के शीशे फोड़ दिये, सारी बत्तियाँ बुझा दीं? अरे, वह तो है ही नहीं? इस शब्द का अर्थ क्या है?'' अलमारी के पास ऊपर को टाँगें किये लटकी गत्ते की अभागी बत्तख से फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने तैश में आकर पूछा और खुद ही उसके

बदले जवाब दिया, ''उसका अर्थ यह है : अगर मैं रोज़ शाम को आपरेशन करने के बजाय अपने घर में कोरस गाने लगूँगा तो मेरे यहाँ तबाही मच जायेगी। अगर मैं शौचालय में जाकर, ऐसी बात कहने के लिए कृपया माफ़ कीजिये, खुड्डी की जगह फ़र्श पर पेशाब करने लगूँ और ज़ीना व दार्या पेत्रोव्ना भी यही करने लगें तो शौचालय में तबाही मच जायेगी। अर्थात् तबाही संडासों में नहीं बल्कि दिमाग़ों में मची है। मतलब, जब ये गवैये चीखते हैं 'तबाही मिटाओ!'—मुझे हँसी आती है। (फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का चेहरा ऐसे विकृत हुआ कि टँगकटे का मुँह खुला रह गया।) कसम से, मुझे हँसी आती है! इसका मतलब है कि उनमें से हरेक को अपना सिर पीटना चाहिये! और जब वह सिर पीट-पीटकर अपने दिमाग़ से हर तरह के मतिभ्रम निकालकर कोठरियों को साफ़ करने के अपने काम में जुट जायेगा—तबाही अपने आप गायब हो जायेगी। दो मालिकों की चाकरी नहीं की जा सकती! एक ही समय में ट्राम की पटरी को बुहारना और किन्हीं स्पेनिश आवारओं के भाग्य का फैसला करना असम्भव है! यह किसी के बस का काम नहीं, डाक्टर, उन लोगों की तो बात ही छोड़ो जो अपने विकास में यूरोपवासियों से 200 साल पीछे हैं और अब तक ढंग से अपनी पतलून के बटन नहीं बन्द करना जानते!''

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच जोश में आकर बोल रहे थे। उनके गरुडीय नथुने फूल रह थे। भरपेट खाने के बाद वह किसी प्राचीन पैगम्बर की तरह प्रवचन दे रहे थे और उनके सिर की चाँदी चमक रही थी।

उनींदे कुत्ते को उनके शब्द भूमिगत गड़गड़ाहट की तरह प्रतीत हो रहे थे। कभी सपने में पीली मूर्खताभरी आँखोंवाला उल्लू सामने आ जाता, तो कभी सफ़ेद मैली टोपीवाले बावर्ची का कमीना थोबड़ा, तो कभी शेड की बिजली की तेज़ रोशनी में चमचमाती फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की मस्तानी मूँछे, तो कभी सुस्ती से रेंगती स्लेजगाड़ी की चरमराहट होकर गायब हो जाती और कुत्ते के उदर में रोस्ट-बीफ का चबा टुकड़ा रस में तैरता हुआ पच रहा था।

''यह तो सभाओं में भाषण झाड़-झाड़कर पैसा कमा सकता है,'' उनींद में डूबे कुत्ते ने सोचा, ''बड़ा चालू आदमी है। खैर, वैसे भी लगता है कि इसके पास पैसे की कोई कमी नहीं।''

''दारोगा!'' फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्ला रहा थे। ''दारोगा!'' कुत्ते के दिमाग़ में बुड़-बुड़ करके बुलबुले से फूट रहे थे... ''दारोगा! यही बस यही चाहिये। इसका कोई महत्व नहीं कि वह जार के बिल्लेवाला हो या लाल टोपीवाला। हरेक आदमी के पास दारोगा को खड़ा कर देना चाहिये और इस दारोगा को हमारे नागरिकों के गाने के उत्साह को ठण्डा करने का काम सौंपा जाना चाहिये। आप कहते हैं—तबाही। मैं आपसे कहता हूँ, डाक्टर, कि हमारी बिल्डिंग में, हमारी क्या, किसी भी बिल्डिंग में तब तक कोई सुधार नहीं होगा जब तक इन गवैयों को शान्त नहीं किया जायेगा! जैसे

ही ये गाना बन्द करेंगे वैसे ही स्थिति अपने आप सुधर जायेगी।"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आप प्रतिक्रान्तिकारी बातें कर रहे हैं," टँगकटे ने मजाक में टिप्पणी की," भगवान ना करे कि कोई आपकी बातें सुन ले।"

"कोई ख़तरा नहीं," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने तैश में आकर आपत्ति की। "कोई प्रतिक्रान्ति नहीं। हाँ, यह भी एक ऐसा शब्द है जो मुझे बिल्कुल नहीं पसन्द। बिल्कुल भी नहीं पता कि इसके पीछे छिपा क्या है? शैतान ही जाने! मैं तो यही कहता हूँ कि मेरी बातों में कोई प्रतिक्रान्ति-व्रान्ति नहीं है। उनमें विवेक और जीवन का अनुभव है।"

इतना कहकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने कालर से मुसे चमकते नैपकिन का सिरा निकाला और उसे मसोसकर शराब के अधूरे गिलास के पास रख दिया। टँगकटा झट से उठा और उसने धन्यवाद दिया।

"एक मिनट रुकिये, डाक्टर!" पतलून की जेब से बटुआ निकालते हुए फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने उसे रोका। उन्होंने आँखें मिचमिचाकर नोट गिने और इन शब्दों के साथ टँगकटे की ओर बढ़ा दिये : "आज, इवान आर्नोल्दोविच, आपके हिस्से के 40 रूबल हुए। कृपया लीजिये।"

कुत्ते के शिकार ने शिष्टाचार के साथ शुक्रिया अदा किया और लजाकर लाल होते हुए कोट की जेब में पैसे ठूँस दिये।

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आज शाम को तो आपको मेरी ज़रूरत नहीं?" उसने पूछा।

"नहीं, शुक्रिया। आज कुछ नहीं करेंगे। पहली बात तो यह कि खरगोश मर गया और दूसरे, आज बोल्शोई थियेटर में 'आइदा' आपेरा है। कब से मैंने उसे नहीं देखा! मुझे बहुत पसन्द है... याद है आपको? उसका दोगाना... तरा-रा-रम..."

"आप सब चीज़ों के लिए समय कैसे निकाल पाते हैं, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच?" डाक्टर ने आदर भाव से पूछा।

"जो किसी जल्दी में नहीं होता वह हर चीज़ के लिए समय निकाल लेता है," मेज़बान ने नसीहत दी। "बेशक, अगर मैं अपने काम की जगह दिन भर सभाओं में फुदकता रहता और बुलबुल की तरह गाता रहता तो मेरे पास समय नहीं होता," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की जेब में घड़ी ने मधुर झंकार की, "आठ बज चुके हैं... दूसरे अंक को देखने जाऊँगा... मैं श्रम विभाजन का पक्षधर हूँ। बोल्शोइवालों को गाने दो और मैं आपरेशन करूँगा। इसी में भला है। और कोई तबाही नहीं होगी... और हाँ, इवान आर्नोल्दोविच, आप ख़्याल रखियेगा : जैसे ही कोई उचित मौत हो फौरन घोल में डालकर मेरे पांस ले आइयेगा!"

"आप फिक्र मत करें, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, पोस्टमार्टमवालों ने वादा किया है।"

"बहुत अच्छा, इतने में हम इस आवारा, नसों के रोगी पर नज़र रखेंगे। इसकी

बगल को ठीक होने दो।"

"मेरा ख़्याल रखता है," कुत्ते ने सोचा, "बहुत भला आदमी है। मुझे मालूम है कि वह कौन है। वह श्वान कथाओं का नेक जादूगर है.... आख़िर यह तो हो नहीं सकता कि मैं सपना देख रहा हूँ। पर क्या पता सपना ही हो?! (नींद में कुत्ता काँप उठा।) आँख खुलेगी... और सब गायब हो जायेगी। न सिल्क के शेडवाला बिजली का लट्टू होगा, न सुखद गर्मी और न ही भरा पेट। फिर से गली-कूचों की ज़िन्दगी, भयंकर ठण्ड, बर्फ से जमी सड़क, फाके, चिड़चिड़े लोगों से वास्ता पड़ेगा... कैंटीन बर्फ... हे भगवान, कैसी दूभर ज़िन्दगी होगी!..."

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। गली-कूचों की ज़िन्दगी ही दुःस्वपन की तरह उड़नछू हो गयी और फिर न लौटी।

लगता कि तबाही इतनी डरावनी नहीं है। उसके बावजूद दिन में दो बार खिड़कियों के नीचे लगी धूसर पाइपों की कुण्डलियाँ तपकर गर्म हो जाती और सुखद गर्मी की लहरें सारे क्वार्टर में तैरने लगतीं।

यह बिल्कुल स्पष्ट था कि कुत्ते की लाटरी खुल गयी थी। अब दिन में कम से कम दो बार उसकी आँखों में प्रेचीस्तेन्का के संत के प्रति कृतजता के आँसू भर आते थे। इसके अलावा बैठक के कमरे में, मरीजों से मिलने के कमरे में अलमारियों के बीच रखी ड्रेसिंग टेबुल सौभाग्यशाली छैले कुत्ते को प्रतिबिम्बित करती।

"मैं खूबसूरत हूँ। क्या पता मैं अज्ञात गुमनाम श्वान राजकुमार होऊँ," आइनों की गहराई में टहलते, काफ़ी के रंग के झबरीले, सन्तुष्ट थूथनीवाले श्वान को देखकर कुत्ता सोचता। "काफ़ी सम्भव है कि मेरी दादी ने किसी न्यूफ़ाउण्डलैण्ड कुत्ते के साथ इश्क किया होगा। वही तो मैं देखता हूँ कि मेरी थूथनी पर सफ़ेद दाग है। सवाल उठता है कि वह आया कहाँ से? फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की पसन्द बड़ी ऊँची है, वह ऐसे-वैसे आवारा कुत्ते को नहीं लेनेवाला है।"

एक हफ़्ते के दौरान कुत्ते ने उतना ही भकोसा जितना कि गली में पिछले डेढ़ भूखे महीनों में। पर यह तो सिर्फ़ वजन के अनुसार। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के यहाँ खाने की क्वालिटी के बारे में मत पूछो। अगर इस बात को नज़रन्दाज कर भी दिया जाये कि दार्या पेत्रोव्ना रोज़ स्मोलेन्स्की बाज़ार से 18 कोपेक का छीछड़ों का पूरा ढेर खरीदकर लाती थी तब भी शाम के सात बजे खाने के कमरे में लंचों का उल्लेख करना काफ़ी होगा जिनके समय, कमनीय ज़ीना की आपत्ति के बावजूद कुत्ता उपस्थित रहता। इन लंचों के दौरान फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को अन्तिम रूप से देवता का दर्जा मिल गया। कुत्ता पिछली टाँगों पर खड़ा होकर कोट चबाता, कुत्ते ने इसका अध्ययन कर लिया कि फ़िलीप फ़िलीप्पोविच कैसे घण्टी बजाते हैं—दो बार मालिकाना अन्दाज में ज़ोर से घण्टी बजती और वह भौंककर उनका स्वागत करने के लिए प्रकोष्ठ में दौड़ा-दौड़ा जाता। मालिक करोड़ों हिमकणों से जगमगाते, नारंगी, सिगारों, इत्र, नीबुओं, पेट्रोल,

यू डी कोलोन, ऊनी कपड़े की गन्धों से भरे लोमड़ी के समूर के ओवरकोट में अन्दर घुसते और कमाण्डर की तुरही की तरह उनकी आवाज सारे घर में गूँजने लगती।

"अबे सुअर, तू ने उल्लू का क्यों भुर्ता बनाया? उसने तेरा क्या बिगाड़ा था? मैं तुझसे पूछ रहा हूँ, उसने तेरा क्या बिगाड़ा था? प्रोफ़ेसर मेचनिकोव को क्यों फोड़ दिया?"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, इसकी कम से कम एक बार हण्टर से धुनाई होनी चाहिये," रोष में आकर ज़ीना बोली, "नहीं तो यह बिल्कुल बिगड़ जायेगा। आप देखिये इसने आपके गैलोशों की क्या गत बनायी है।"

"किसी की भी धुनाई नहीं करनी चाहिये," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच भावुक होकर बोले, "हमेशा के लिए याद कर लो। आदमी और जानवर को सिर्फ़ समझा-बुझाकर ही प्रभावित किया जा सकता है। आज इसे मांस दिया था?"

"हे भगवान, यह तो सारा घर ही चट कर जायेगा। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आप भी क्या पूछते हैं। मुझे तो हैरानी होती है कि इसका पेट नहीं फटता।"

"खाने दो जी भर कर... ओ बदमाश, उल्लू ने तेरा क्या बिगाड़ा था?"

"कूँ-कूँ!" पँजे मोड़कर चापलूस कुत्ता पेट के बल रेंगने लगा।

फिर उसे शोर-शराबे के साथ गुद्दी पकड़कर मरीजों से मिलने के कमरे में होते हुए अध्ययन-कक्ष में घसीटकर ले जाया गया। कुत्ता रिरियाता हुआ, हाथ-पाँव मारता हुआ, कालीन से चिपटता हुआ, सर्कस की तरह बैठा घिसट रहा था। अध्ययन-कक्ष के बीचों-बीच कालीन पर काँच की आँखोंवाला उल्लू पड़ा था, उसके चिरे पेट से फिनायल की बू वाले चिथड़े झाँक रहे थे। मेज़ पर चकनाचूर चित्र पड़ा था।

"मैंने जानबूझकर नहीं सफाई की ताकि आप भी देख सकें," ज़ीना हाटकर बोल रही थी, "टुच्चा मेज़ पर चढ़ गया! झट से उसकी पूँछ पर झपट पड़ा। इससे पहले कि मैं कुछ कर पाती इसने उसकी धज्जियाँ उड़ा दीं। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, इसकी थूथनी पर उल्लू मारिये ताकि इसे पता चलें कि चीज़ें बिगाड़ने का क्या फल होता है।"

फिर हायतोबा मच गयी। कालीन से चिपके कुत्ते को घसीटकर उल्लू में उसकी थूथनी घुसेड़ने के लिए ले जाया जाने लगा, कुत्ते की आँखों से कड़वे आँसू फूट रहे थे और वह सोच रहा था : "पीट लो पर बस घर से मत निकालो।"

"उल्लू को आज ही टैक्सीडर्मिस्ट के यहाँ भिजवा दो। इसके अलावा यह लो 8 रूबल और 16 कोपेक ट्राम का भाड़ा, म्यूर की दुकान में जाकर इसके लिए अच्छा-सा पट्टा और जंजीर खरीद लाओ।"

अगले दिन कुत्ते को चौड़ा, चमकीला पट्टा पहना दिया गया। शुरू में शीशे में अपनी परछाई को देखकर वह बड़ा निराश हुआ और दुम दबाकर गुसलखाने में घुस गया और सोचने लगा कि कैसे सन्दूक या पेटी से रगड़कर उसे उतारा जाये। पर शीघ्र ही कुत्ता समझ गया कि वह तो निरा बुद्धू है। ज़ीना उसे जंजीर से बाँधकर ओबुखोव गली में

घुमाने के लिए ले गयी। कुत्ता गिरफ़्तार मुजरिम की तरह शर्म से पानी-पानी होता चल रहा था, परन्तु प्रेचीस्तेन्का पर क्राइस्ट सेवियर गिरजे तक जाने के बाद वह अच्छी तरह समझ गया कि जीवन में पट्टे का क्या महत्व है। रास्ते में मिले कुत्ते ईर्ष्या से जल रहे थे और म्योर्त्वी गली के नुक्कड़ पर एक दुमकटे आवारा कुत्ते ने उसे भौंककर गाली दी 'साहब का चाकर' और 'लफंगा'। जब वे ट्राम की पटरी को पार कर रहे थे तो पुलिसमैन ने आनन्द और आदर के साथ पट्टे पर नज़र डाली। पर जब वे लौटे तो उसके जीवन में अकल्पनीय बात हुई : फ़्योदोर दरबान ने खुद अपने हाथों से दरवाज़ा खोलकर शारिक को अन्दर आने दिया और ज़ीना से उसने कहा :

"देखो तो, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने कैसा झबरीला कुत्ता पाला है। बड़ा मोटा भी है।"

"क्यों नहीं होगा मोटा—अकेला छः जितना खाता है," पाले के कारण लाल-लाल गालोंवाली सुन्दर ज़ीना बोली।

"कुत्ते के लिए पट्टे का वही महत्व है जो आदमी के लिए ब्रीफकेस का," कुत्ते ने मन ही मन अपनी हाजिरजवाबी की दाद दी और कूल्हे मटकाता हुआ साहबों की तरह जीने पर चढ़ने लगा।

पट्टे का समुचित मूल्याँकन करके कुत्ता स्वर्ग के उस मुख्य विभाग में तशरीफ ले गया, जहाँ अब तक उसके आने की कड़ी मनाही थी—मतलब बावर्चिन दार्या पेत्रोव्ना की रियासत से है। दार्या पेत्रोव्ना की रियासत के दो चप्पे सारे मकान से कहीं मूल्यवान थे। काली और ऊपर टाइलों से सजी भट्ठी में रोज़ धू-धू करके आग जलती। ओवन चट-चट करता। लपटों की लाली में दार्या पेत्रोव्ना का चेहरा आग्नेय यातना और अतृप्त वासना से दहक रहा था। वह चिकनाई और चर्बी से चमक रहा था। 22 नकली हीरे कानों में और गुद्दी पर सुनहरे बालों के टोकरीनुमा फैशनेबुल केशविन्यास में दमक रहे थे। दीवारों की खूटियों पर सुनहरे पतीले लटके थे, सारी रसोई सुगन्धों तथा ढके पात्रों की फुफकार और खदबदाहट से भरी हुई थी...

"भाग!" दार्या पेत्रोव्ना चिल्लायी। "भाग यहाँ से, आवारा जेबकतरे! तेरी ही यहाँ कमी रह गयी थी! मैं अभी चिमटे से तेरी ख़बर लेती हूँ!..."

"तुझे क्या हो गया? क्यों भौंक रही है?" कुत्ता स्नेह के साथ आँखें मिचमिचा रहा था। "मैं जेबकतरा कहाँ हूँ? आप भला पट्टा नहीं देख रहीं?" और वह दरवाज़े में थूथनी घुसेड़कर तिरछा अन्दर घुस रहा था।

शारिक कुत्ते को लोगों के दिल जीतने का कोई राज पता था। दो दिन बाद वह कोयले की टोकरी के पास लेटा दार्या पेत्रोव्ना को काम करते देख रहा था। पतली पैनी छुरी से वह असहाय बटेरों के सिर और टाँगें काट रही थी, फिर खूंख्वार कसाई की तरह उसने हड्डियों से मांस को अलग किया, मुर्ग़ियों की अन्तड़ियाँ निकालीं, कीमा मशीन चलायी। इस सब के दौरान शारिक बटेर के सिर से जूझ रहा था। दार्या पेत्रोव्ना

ने दूध के कटोरे से पावरोटी के भीगे टुकड़े निकाले, उन्हें पटरे पर कीमे के साथ गूंधा, ऊपर से क्रीम डाली, नमक मिलाया और पटरे पर कटलेटों की टिकियाँ बनाने लगी। भट्ठी में आग धू-धू करके जल रही थी और कढ़ाई में बुलबुले फूट रहे थे, खद-खद हो रही थी। भट्ठी का कपाट ज़ोर से खुलता और भयंकर नर्क का दृश्य दिखायी पड़ता जहाँ लपलपाती लपटें अठखेलियाँ कर रही थीं।

शाम को भट्ठी का पाषाण मुख बुझ चुका था, रसोई की सफ़ेद पर्दे से आधी ढकी खिड़की के ऊपरवाले हिस्से से एकमात्र तारेवाली प्रेचीस्तेन्का की घनी और दम्भी रात झाँक रही थी। रसोई का फ़र्श सीलन भरा था, धुँधले से रहस्यमय पतीले रखे थे, मेज़ पर फायरमैन की टोपी रखी थी। शारिक हल्की-सी गर्म भट्ठी पर फाटकों पर बने शेरों की तरह लेटा था और कौतूहलवश एक कान उठाकर ज़ीना और दार्या पेत्रोव्ना के कमरे के अधखुले दरवाज़े में से देख रहा था कि कैसे चौड़ी पेटी बाँधे, काली मूँछोवाला आतुर पुरुष दार्या पेत्रोव्ना को अपनी बाँहों से भर रहा था। दार्या पेत्रोव्ना का सारा का सारा चेहरा, सिवा पाउडर से ढकी मुर्दों जैसी नाक के, यातना और वासना से धधक रहा था। रोशनी की पट्टी काली मूँछोवाले के फ़ोटो पर पड़ रही थी और उस पर काग़ज़ का फूल लगा था।

"राक्षस की तरह चिपक गया," झुटपुटे में दार्या पेत्रोव्ना बुदबुदा रही थी, "हट! अभी ज़ीना आ जायेगी। तुझे हुआ क्या, तुझे भी जवान बना दिया गया क्या?"

"अपन को इसकी कोई ज़रूरत नहीं," काली मूँछोवाला अपनी सुध-बुध खोकर फटी आवाज़ में उत्तर दे रहा था। "तुम में कितनी आग है!"

शाम को प्रेचीस्तेन्का का तारा भारी पर्दों के पीछे छिप जाया करता था और अगर बोल्शोई थियेटर में 'आइदा' आपेरा और अखिल रूसी शल्यचिकित्सक समाज की बैठक न होती तो देवता अपने अध्ययन-कक्ष में भारी आरामकुर्सी पर विराजमान हो जाता। छत की बत्ती नहीं जलती। मेज़ पर केवल हरे शेडवाला टेबुल लैम्प जलता। शारिक छाया में कालीन पर लेटा एकटक भयंकर हरकतों को ताक़ता। शीशे के बर्तनों में तीखे और धुँधले घिनौने घोल में आदमियों के भेजे पड़े होते। देवता के हाथ कोहनियों तक उघड़े, रबड़ के ललौंहे दस्तानों में बन्द होते और फिसलन भरी लुंजी उँगलियाँ भेजे की परतों को उलटती-पलटतीं। समय-समय पर देवता छोटी-सी चमचमाती छुरी से लैस हो जाता और धीरे-धीरे पीले लचीले भेजों की चीर-फाड़ करता।

"नील नदी के पावन तटों की ओर,"* होंठों को काटते, बोल्शोई थियेटर के सुनहरे उदर को याद करते हुए देवता मंद-मंद स्वर में गुनगुनाता।

इस समय पाइप तपकर अपने चरम पर पहुँच जाते थे। उनसे उठकर गर्मी छत तक जाती और वहाँ से सारे कमरे में फैलने लगती और कुत्ते की खाल में बचा अन्तिम पिस्सू जाग पड़ता जिसे अभी फ़िलीप फ़िलीप्पोविच अपने कर-कमलों से कंघी नहीं

* 'आइदा' आपेरा से पुरोहितों का कोरस।—सं.

कर पाये थे पर उसके भाग्य का फैसला हो चुका था। कालीन घर की आवाज़ों को सोख रहे थे। बाद में कहीं दूर प्रवेश द्वार की आहट होती।

"ज़ीना बाइस्कोप देखने गयी है," कुत्ता सोचता, "और जैसे ही लौटेगी तो मतलब खाना खायेंगे। आज तो शायद बीफ कटलेट बनी है।"

उस भयंकर दिन को सवेरे से ही शारिक के दिल को अप्रिय पूर्वाभास ने बींध दिया। इसके फलस्वरूप उस पर अचानक उदासी हावी हो गयी और सुबह का नाश्ता—आधा कटोरा दलिया और कल की भेड़ की हड्डी—उसने मन मारकर किया। वह अनमने ढंग से मरीजों से मिलने के कमरे में गया और वहाँ अपनी ही परछाई पर हल्के-से भौंक दिया। पर दोपहर को इसके बाद जब ज़ीना उसे बाहर घुमाकर लायी, दिन का ढर्रा सामान्य रूप से चल पड़ा। आज मरीज नहीं आये थे क्योंकि सुविदित है कि मंगलवार को छुट्टी होती है और देवता रंग-बिरंगी तस्वीरोंवाली मोटी-मोटी पोथियों को मेज़ पर फैलाये अपने अध्ययन-कक्ष में बैठा था। खाने का इन्तज़ार था। यह सोचकर कुत्ता कुछ खुश हो गया कि आज खाने को टर्की मिलेगी, वह रसोई में जाकर पता लगा आया था। गलियारे से जाते हुए कुत्ते को फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के अध्ययन-कक्ष में टेलीफ़ोन की अचानक बजी अप्रिय घण्टी सुनायी पड़ी। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने चोंगा उठाकर फ़ोन सुना और अचानक व्याकुल हो उठे।

"बहुत अच्छा," उनकी आवाज सुनायी दी, "फौरन ले आइये. फौरन!"

वह हड़बड़ी मचाने लगे, उन्होंने घण्टी बजायी और ज़ीना को फौरन खाना लगाने का आदेश दिया।

"खाना! खाना लगाओ! खाना!"

खाने के कमरे में फौरन प्लेटों की खड़खड़ सुनायी पड़ी, ज़ीना दौड़धूप करने लगी, रसोई से दार्या पेत्रोव्ना की बड़बड़ सुनायी दी कि टर्की अभी तैयार नहीं हुई। कुत्ते को फिर से घबराहट महसूस हुई।

"मुझे घर में हायतौबा पसन्द नहीं," वह सोच रहा था... जैसे ही उसने यह सोचा हायतौबा ने और भी अप्रिय रूप धारण कर लिया। सबसे पहले डाक्टर बोरमेंताल के आने के फलस्वरूप जिसकी उसने कभी टाँग काटी थी। वह अपने साथ बदबूवाली अटैची लाया था और ओवरकोट उतारे बिना ही उसे उठाये हुए गलियारे से सीधे जाँच के कमरे में घुस गया। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच काफ़ी का अधूरा प्याला छोड़कर, जो वह कभी नहीं करते थे, बोरमेंताल की अगवानी करने के लिए दौड़े, यह भी वह कभी नहीं करते थे।

"कब मरा?" वे चिल्लाये।

"तीन घण्टे पहले," बोरमेंताल ने बर्फ से ढकी टोपी को उतारे बिना अटैची खोलते हुए जवाब दिया।

"कौन मर गया?" कुत्ते ने असन्तोष और विषाद के साथ सोचा और टाँगों के बीच घुस गया। "मुझे यह बिल्कुल भी पसन्द नहीं जब लोग हायतौबा मचाते हैं।"

"भाग यहाँ से! जल्दी, जल्दी, जल्दी!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चारों दिशाओं में चिल्लाने लगे और जैसा कि कुत्ते को लगा सारी घण्टियाँ बजाने लगे। ज़ीना दौड़ी-दौड़ी आयी। "ज़ीना! दार्या पेत्रोव्ना टेलीफ़ोन पर रहे, लिखती जाये, पर किसी से नहीं मिलना है! तुम्हारी ज़रूरत है। डाक्टर बोरमेंताल, आपसे अनुरोध करता हूँ—जल्दी-जल्दी करें!"

"मुझे यह मामला पसन्द नहीं, कुछ गड़बड़ है," कुत्ता रूठकर मुँह चढ़ाये घर में टहलने लगा और सारी दौड़धूप जाँच के कमरे में केन्द्रित हो गयी। अचानक ज़ीना कफ़न जैसा चोग़ा पहने जाँच के कमरे में रसोई में आगे-पीछे दौड़ने लगी।

"जाके कुछ भकोस लूँ क्या? और ये सब भाड़ में जायें," कुत्ते ने फैसला किया और अचानक उसे अप्रत्याशित तोहफ़ा मिल गया।

"शारिक को कुछ मत देना," जाँच के कमरे से आदेश गरजा।

"उस पर नज़र रखना क्या आसान है?"

"बन्द कर दो!"

और शारिक को फुसलाकर गुसलख़ाने में बन्द कर दिया गया।

"क्या बदतमीजी है," अँधियारी गुसलखाने में बैठा हुआ शारिक सोच रहा था, "निहायत बेवकूफ़ी है..."

गुसलखाने में कोई पन्द्रह मिनट तक उसकी मनोदशा बड़ी विचित्र रही—कभी उसे गुस्सा आता तो कभी उसका दिल बैठ जाता। सब ऊबाऊ और अस्पष्ट-सा था...

"ठीक है, कल अपने गैलोश का हाल देखना, परमपूज्य फ़िलीप फ़िलीप्पोविच," वह सोच रहा था, "दो जोड़ी तो पहले ही ख़रीद चुके हैं, एक और खरीदनी पड़ेगी। कुत्तों को बन्द करने की सजा में।"

पर अचानक उसके क्रुद्ध विचारों का सिलसिला टूट गया। उसे न जाने क्यों अचानक इतनी स्पष्टता से अपनी तरुणाई के पहले दिनों का एक अंश याद आ गया—प्रेओब्राझेन्स्की चुँगी के पास असीम अहाता, फूटी बोतलों में प्रतिबिम्बित सूरज के कण, टूटी-फूटी ईंटें, आज़ाद घूमते आवारा कुत्ते।

"नहीं, झूठ बोलने की क्या ज़रूरत, अब यहाँ रहने के बाद कोई आज़ादी नहीं चाहिये," उदासी में पड़ा कुत्ता नाक घरघराता सोच रहा था, "अब आदत पड़ गयी है। मैं साहबी कुत्ता हूँ, बुद्धिजीवी प्राणी हूँ, मज़े की ज़िन्दगी का स्वाद चख चुका हूँ। और आख़िर आज़ादी है ही क्या? बस, धुआँ, मरीचिका, कोरी गप्प ही तो है... इन कमबख़्त लोकतंत्रवादियों के मन की उपज..."

फिर गुसलखाने का अँधियारा डरावना लगने लगा, वह रोकर दरवाज़े पर टूट पड़ा और उसे खरोंचने लगा।

"हू-हू-हू!" कुएँ जैसी गूँज घर में भर गयी।

"फिर से उल्लू की धज्जियाँ उड़ा दूँगा," कुत्ते ने प्रचण्ड पर नंपुसक क्रोध में सोचा। फिर निढाल होकर कुछ देर लेटा रहा और जब वह उठा तो उसके रोंगटे खड़े थे क्योंकि गुसलखाने में उसे घिनौनी भेड़िये की-सी आँखें दिखायी दीं।

यातना की पराकाष्ठा के क्षण दरवाज़ा खुल गया। कुत्ता बाहर निकला और बदन झाड़कर वह मुँह फुलाये रसोई की तरफ चला पर ज़ीना पट्टा पकड़कर उसे जाँच के कमरे में खींचकर ले चली। कुत्ते का दिल दहल उठा।

"मेरी आख़िर क्या ज़रूरत है?" उसने सन्देह के साथ सोचा। "बगल का घाव भर चुका है—कुछ समझ में नहीं आता।"

और वह लकड़ी के चिकने फ़र्श पर घिसटने लगा, इसी प्रकार उसे जाँच के कमरे में लाया गया। उसमें अब तक अनदेखी रोशनी की जगमगाहट ने उसे फौरन हैरत में डाल दिया। छत से लटका सफ़ेद गोला ऐसा चमक रहा था कि उसकी रोशनी आँखों को चुभती थी। पुरोहित शुभ्र आभा में लिपटा दाँत भींचकर नील नदी के पावन तटों के बारे में गुनगुना रहा था। बस, धुँधली-सी गन्ध बता रही थी कि यह फ़िलीप फ़िलीप्पोविच थे। उनके छंटे सफ़ेद बाल पादरियों जैसी ऊँची टोपी में छिपे थे; देवता ने धवल परिधान धारण कर रखा था और ऊपर से उसने पादरियों के पेशबन्द की तरह सँकरी रबड़ की एप्रन बाँध रखी थी। हाथों पर काले दस्ताने चढ़े थे।

टँगकटा भी पादरियों की टोपी पहने था। लम्बी मेज़ बिछी हुई थी और उसकी बगल से छोटी-सी चौकोर चमकीली टाँगवाली मेज़ सटी हुई थी।

यहाँ आकर कुत्ते को सबसे ज़्यादा नफरत टँगकटे से हुई और सबसे ज़्यादा उसकी आज की आँखों को देखकर। प्रायः उसकी नज़रें सीधी, साहसिक होती थीं, पर आज वे कुत्ते की नज़रों से मिलने की जगह इधर-उधर दौड़ रही थीं। वे चौकस, खोटी थीं और उनकी गहराइयों में कोई अपराध नहीं तो कम से कम कोई बुरा, बदनीयत इरादा छिपा था। कुत्ते ने उसपर भारी, विषण्ण नज़र डाली और कोने में चला गया।

"ज़ीना, पट्टा," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच धीरे से बोले, "आराम से ताकि घबराये नहीं।"

पल भर में ज़ीना की भी आँखें टँगकटे जैसी घिनौनी हो गयीं। वह कुत्ते के पास गयी और उसने स्पष्ट कृत्रिमता के साथ कुत्ते को सहलाया। कुत्ते ने उसपर विषाद और तिरस्कारपूर्ण नज़र डाली।

"ठीक है... तुम तीन जने हो। अगर चाहोगे तो दबोच लोगे। पर तुम्हें शर्म आनी चाहिये... कम से कम मुझे यह तो पता होना चाहिये कि तुम मेरे साथ क्या करनेवाले हो..."

ज़ीना ने पट्टा खोला, कुत्ते ने सिर हिलाकर फूत्कार छोड़ी। टँगकटा उसके सामने आ धमका, उससे सड़ी मतली भरी बू फैल रही थी।

"थू कैसी घिनौनी है... मुझे क्यों इतनी मतली आ रही है और डर लग रहा है.." यह सोचकर कुत्ता पीछे हटा।

"जल्दी कीजिये, डाक्टर," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बेसब्री में बोले।

हवा में तीखी मिठास भरी बू फैल गयी। टँगकटे ने कुत्ते पर चौकस घिनौनी आँखें गड़ाकर पीठ के पीछे से दायाँ हाथ निकाला और झट से कुत्ते की नाक पर नम रूई के टुकड़े को रख दिया। शारिक भौचक्का रह गया, उसके सिर को हल्का-सा चक्कर आया, पर वह पीछे हटने में सफल हो गया। टँगकटे ने लपककर अचानक उसकी थूथनी पर रूई लपेट दी। फौरन साँस जकड़ गयी, पर कुत्ता एक बार फिर छूटने में सफल हो गया। "ज़ालिम..." उसके दिमाग़ में कौंधा। "आख़िर क्यों?;" एक बार फिर से थूथनी रूई से लपेट दी गयी। बस, तभी जाँच के कमरे के बीचों-बीच उसे झील दिखायी पड़ी और उसमें बड़े हँसमुख बेहद गुलाबी स्वर्गवासी कुत्ते नौका-विहार कर रहे थे। टाँगे हड्डियों से वंचित होकर मुड़ गयीं।

"मेज़ पर लिटाओ!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के हँसमुख स्वर में शब्द गूँजे और नारंगी धाराओं में बँटकर तैरने लगे। भय लुप्त हो गया, हर्ष ने उसका स्थान ले लिया। कोई दो सेकेण्ड तक तन्द्रा में डूबते कुत्ते को टँगकटे से प्रेम की अनुभूति हुई। फिर सारा जहान सिर के बल खड़ा हो गया और पेट के निचले हिस्से में हाथ के ठण्डे पर सुखद स्पर्श की भी अनुभूति हुई। फिर–कुछ न रहा।

4

आपरेशन की सँकरी मेज़ पर शारिक कुत्ता चित्त पड़ा था और उसका सिर सफ़ेद मोमजामे के तकिये पर असहाय पड़ा था। उसके पेट के बाल काटे जा चुके थे और अब डाक्टर बोरमेंताल हाँफते हुए जल्दी-जल्दी मशीन को खाल में गड़ाकर शारिक के सिर के बाल मूंड रहा था। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच मेज़ के किनारे पर कोहनियाँ टिकाकर अपने सुनहरे चश्मे जैसी चमकीली आँखों से इस प्रक्रिया का निरीक्षण कर रहे थे और व्याकुल स्वर में बोल रहे थे।

"इवान आर्नोल्दोविच, सबसे अहम वह पल होगा जब मैं टर्किश सैडल में प्रवेश करूँगा। फौरन, आपसे अनुरोध करता हूँ, फौरन मुझे ग्रन्थि पकड़ाकर और झट से टाँके लगा दें। अगर तब खून निकलने लगा तो समय भी बरबाद हो जायेगा और कुत्ता भी नहीं रहेगा। खैर वैसे भी इसके बचने का कोई चांस नहीं है," वह कुछ देर तक चुप रहे, आँखें मिचमिचाकर वह मानो उपहासभरी नज़र से कुत्ते की अधखुली आँख में झाँके और बोले। "दया आती है इस पर। आप सोचिये, इससे लगाव हो गया है मुझे।"

यह कहते हुए वह ऐसे हाथ उठा रहे थे मानो बेचारे शारिक कुत्ते को किसी कठिन पराक्रम पर भेजने से पहले उसे आशीर्वाद दे रहे हों। वह कोशिश कर रहे थे कि काले

रबड़ पर धूल का एक भी कण न लगे।

मुंडे बालों के नीचे से कुत्ते की सफ़ेद-सी त्वचा चमकने लगी। बोरमेंताल मशीन पटककर उस्तरे से लैस हो गया। उसने छोटे-से असहाय सिर पर साबुन लगाया और उस्तरा चलाने लगा। उस्तरे की धार सरसराकर चल रही थी, कहीं-कहीं खून निकल आया था। सिर पर उस्तरा फेरकर टँगकटे ने उसे बेंजोल से तर फाये से पोंछा, इसके बाद कुत्ते के नंगे पेट को तानकर हाँफते हुए बोला : "तैयार है।"

ज़ीना ने वाश बेसिन का नल खोला और बोरमेंताल हाथ धोने के लिए लपका। ज़ीना ने बोतल से उन पर स्पिरिट उँडेली।

"मैं जा सकती हूँ, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच?" कनखियों से कुत्ते के मुंडे सिर को सहमकर देखते हुए उसने पूछा।

"हाँ।"

ज़ीना चली गयी। बोरमेंताल हड़बड़ाकर आगे के काम में जुट गया। उसने शारिक के सिर के चारों ओर जाली के हल्के नैपकिन बिछा दिया और तब तकिये पर अब तक अनदेखी कुत्ते की गंजी टाण्ट और विचित्र दढ़ियल थूथनी दिखायी पड़ी।

बस तभी पुरोहित हरकत में आया। उसने तनकर कुत्ते के सिर पर नज़र डाली और कहा :

"हे भगवान तेरा आसरा है। छुरी।"

बोरमेंताल ने छोटी मेज़ पर लगे चमचमाते ढेर से छोटी-सी विचित्र छुरी निकाली और उसे पुरोहित को थमा दिया। फिर उसने पुरोहित जैसे ही काले दस्ताने चढ़ा लिये।

"सो रहा है?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा।

"सो रहा है।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के दाँत भिंच गये, आँखों में कंटीली चमक आ गयी और छुरी के एक वार में उन्होंने शारिक के पेट पर लम्बा चीरा लगा दिया। खाल फौरन खुल गयी और उससे चारों ओर खून के फौवारे छूटे। बोरमेंताल हिंस्र पशु की तरह लपका और जाली के फायों से शारिक के घाव को दबाने लगा, फिर छोटी-सी चिमटियों से उसके किनारों को दबा लिया और वह सूख गया। बोरमेंताल के माथे पर पसीने की मोटी-मोटी बूदें फूट पड़ीं। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने दूसरा प्रहार किया और वे दोनों शारिक के बदन को कांटों, कैंचियों और न जाने कैसे ब्रेकेटों से चीरने लगे। रक्तिम आँसुओं से नम गुलाबी और पीले ऊतक बाहर निकल आये। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच छुरी से बदन को कुरेदने लगे और फिर चिल्लाये : "कैंची!"

किसी बाजीगर की तरह टँगकटे के हाथ में औजार चमका। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच और गहराई में कुरेदने लगे और दो-तीन बार घुमाकर उन्होंने शारिक के बदन से किन्हीं छीछड़ों समेत उसकी अण्डग्रन्थियाँ निकाल लीं। मेहनत और घबराहट से बिल्कुल तर बोरमेंताल काँच के मर्तबान की ओर लपका और उसने दूसरी, नम और शिथिल

अण्डग्रंथियाँ निकालीं। प्रोफ़ेसर और असिस्टेंट के हाथों में छोटे-छोटे नम तन्तु उछलकर गुंथने लगे। क्लैंपों में टेढ़ी सुइयाँ खट-खट करने लगीं, अण्डग्रंथियों को शारिकवालियों की जगह सिल दिया गया। पुरोहित घाव के ऊपर से हटा, उसपर फाये को दबाकर उसने आदेश दिया :

"डाक्टर, फटाफट खाल को सी दीजिये," फिर उसने दीवार पर लगी गोल सफ़ेद घड़ी पर नज़र डाली।

"14 मिनट लग गये," दाँत भींचे हुए बोरमेंताल बोला और टेढ़ी सुई को उसने मुरझाई खाल में घुसेड़ दिया। फिर वे दोनों हड़बड़ाये हत्यारों की तरह जल्दी मचाने लगे।

"छुरी!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये।

छुरी मानो खुद ही उछलकर उसके हाथ में पहुँच गयी जिसके बाद फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के चेहरे ने भयंकर रूप धारण कर लिया। उन्होंने सोने और पोर्सलीन की खीसें निकालीं और एक ही बार में शारिक के माथे पर लाल घेरा बना दिया। उस्तरा फिरी खाल को हटा दिया गया खोपड़ी की हड्डी निकल आयी। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये :

"बरमा!"

बोरमेंताल ने उन्हें चमचमाता बरमा थमाया। होंठ चबाते हुए फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बरमे से शारिक की खोपड़ी में एक-एक सेण्टीमीटर की दूरी पर नन्हें-नन्हे छेद करने लगे, छेदों ने सारी खोपड़ी पर एक घेरा बना दिया। फिर बड़े विचित्र आकार की आरी के सिरे को उन्होंने पहले छेद में घुसेड़ा और उसे ऐसे चलाने लगे जैसे प्लाईवुड का घेरा काटते हैं। खोपड़ी धीरे-से झन्ना और काँप रही थी। कोई तीन मिनट बाद शारिक की खोपड़ी का ढक्कन उतार दिया गया।

तब शारिक के भेजे का नीली-सी नसों और लाल-से धब्बोंवाला गुम्बद उघड़ा। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने झिल्लियों में कैंची गड़ाकर उन्हें खोल दिया। एक बार खून की पतली-सी धारा फूटी, वह प्रोफ़ेसर की आँखों पर पड़ती-पड़ती बची और उसने उनकी टोपी पर छींटे डाल दिये। बोरमेंताल ने शेर की तरह लपककर उसे चिमटी से दबा दिया। बोरमेंताल के चेहरे पर पसीने की धाराएँ बह रही थीं और उसका चेहरा मांसल व रंग-बिरंगा लगने लगा। उसकी आँखें प्रोफ़ेसर के हाथ और मेज़ पर रखे औजारों के बीच आगे पीछे दौड़ रही थीं। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने तो रौद्र रूप धारण कर लिया था। उनकी नाक फुफकार रही थी, दाँत मसूड़ों तक उघड़े थे। वह भेजे की झिल्ली चीरकर खोपड़ी के खुले पात्र से मस्तिष्क के गोलार्द्धों को निकालकर कहीं गहराई में चले गये। उसी क्षण बोरमेंताल के चेहरे का रंग उड़ने लगा, एक हाथ से शारिक की छाती थामकर वह भर्रायी आवाज में बोला :

"नब्ज तेज़ी से डूब रही है..."

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच उस पर वहशी नज़र डालकर कुछ मिमियाये तथा और गहराई में उतर गये। बोरमेंताल ने चटाक से काँच का एम्प्यूल खोला, सुई भरी और शारिक के दिल में उसे बेवफाई से भोंक दिया।

"टर्किश सैडल के पास पहुँच रहा हूँ," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच गुर्राये और खून से लथपथ लसीले दस्तानों से उन्होंने शारिक का सलेटी-पीला भेजा खोपड़ी के बाहर निकाला। पल भर के लिए उन्होंने शारिक की थूथनी को कनखियों से देखा और बोरमेंताल ने पीले घोलवाले दूसरे एम्प्यूल को तोड़कर लम्बे सिरिंज में उसे भरा।

"दिल में?" उसने सहमे स्वर में पूछा।

"आप क्यों पूछ रहे हैं?" गुस्से में प्रोफ़ेसर चिंघाड़े," वह अब तक 5 बार मर चुका है। लगाइये! भला सोचा जा सकता है?" यह कहकर उनका चेहरा किसी जोशीले डाकू जैसा हो गया।

डाक्टर ने कुत्ते के दिल में झट से सुई भोंक दी।

"जान है, पर थोड़ी-सी," वह सहमकर बुदबुदाया।

"सोचने का वक्त नहीं, ज़िन्दा है या नहीं जिन्दा," विकराल फ़िलीप फ़िलीप्पोविच फुफकारकर बोले, "मैं सैडल तक पहुँच गया। वैसे भी मर जायेगा... धत्त तेरे... नील नदी के पावन तटों की ओर... ग्रन्थि लाइये।"

बोरमेंताल ने उन्हें बोतल थमायी जिसमें तागे से बँधा एक लौंदा घोल में तैर रहा था। एक हाथ से, "यूरोप में इनकी टक्कर का कोई नहीं... कसम से!", बोरमेंताल ने पल भर के लिए सोचा, उन्होंने लौंदे को निकाला और दूसरे से खुले गोलार्द्धों के बीच गहराई में ऐसे ही लौंदे को कैंची से काटा। शारिक के लौंदे को उन्होंने ट्रे में फेंक दिया और नयेवाले को धागे सहित भेजे में उतार दिया और अपनी छोटी-छोटी उँगलियों से, जो मानो जादू से पतली और लचीली हो गयीं, उन्होंने उसे कहरुबे के रंग के तन्तु से बाँध दिया। इसके बाद उन्होंने सिर में से तरह-तरह के क्लैंप, चिमटी निकालकर फेंकी और भेजे को हड्डी के पात्र में वापस छिपा दिया। सीधे खड़े होकर उन्होंने शान्त स्वर में पूछा :

"मर गया न?"

"हल्की-सी नब्ज है," बोरमेंताल ने उत्तर दिया।

"एड्रिआनालीन का इंजेक्शन और दो।"

प्रोफ़ेसर ने मस्तिष्क को झिल्लियों से ढक दिया, कटे ढक्कन को सही नाप के अनुसार रखा, त्वचा से उसे ढका और चिंघाड़े :

"टाँके लगाओ!"

बोरमेंताल ने तीन सुइयाँ तोड़कर कोई पाँच मिनट में टाँके लगा डाले।

और अब खून से तर तकिये की पृष्ठभूमि में सिर पर वलयाकार घाववाले शारिक की निर्जीव, निस्तेज़ थूथनी पड़ी थी। बस, तब फ़िलीप फ़िलीप्पोविच जी भरकर खून

पी चुके पिशाच की तरह वहाँ से हटे। उन्होंने पसीने से नम टाल्क का बादल छोड़कर एक दस्ताना उतार डाला, दूसरे को फाड़कर फ़र्श पर पटक दिया और दीवार पर लगे बटन को दबाकर घण्टी बजायी। ज़ीना दहलीज पर मुँह मोड़कर प्रकट हुई ताकि खून से लथपथ शारिक न दिखायी दे। पुरोहित ने सिलखड़ी से ढके हाथों से खून में रंगी टोपी उतारी और चिल्लाया :

"ज़ीना, मुझे फौरन सिगरेट दो। साफ़ कपड़े दो और टब भी भरो।"

उन्होंने मेज़ के किनारे पर ठोड़ी टिकायी, दो उँगलियों से कुत्ते की दायीं पलक उठायीं और स्पष्ट रूप से मरती आँख में झाँककर बोले :

"शैतान की दुम। मरा नहीं। खैर फिर भी मर जायेगा। ओह, डाक्टर बोरमेंताल, कुत्ते का दुःख है, चालाक सही पर था स्नेही।"

5

डाक्टर बोरमेंताल की डायरी के अंश

पतली फुलस्केप आकार की कापी बोरमेंताल की लिखावट से भरी थी। पहले दो पृष्ठों पर वह स्पष्ट, सटीक और सुन्दर थी, आगे फैली हुई, घबराहट में लिखी, स्याही के धब्बों से भरी थी।

22 दिसम्बर 1924 सोमवार।

रोगी का रिकार्ड।

कोई दो साल की आयु का प्रयोगाधीन कुत्ता। नर। नस्ल—आवारा। नाम—शारिक। बाल छितरे, गुच्छों में। रंग—भूरा किंचित सुरमई। पूँछ का रंग हंडिया के दूध जैसा। दायीं बग़ल पर जले के पूरी तरह भरे घाव के निशान। प्रोफ़ेसर के यहाँ लाये जाने तक आहार—अनियमित। दाखिल होने के बाद एक हफ्ते बाद—अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट। वजन 8 कि.ग्रा. (विस्मयादिबोधक चिह्न)। दिल, फेफड़े, पेट, टैम्परेचर...

23 दिसम्बर। कल शाम के साढ़े आठ बजे प्रो. प्रेओब्राझेन्स्की की विधि से यूरोप में प्रथम आपरेशन किया गया : क्लोरोफार्म देकर शारिक की अण्डग्रन्थियाँ निकाल दी गयीं और उनकी जगह एक पुरुष की अण्डग्रंथियाँ नलियों समेत रोप दी गयीं जो आपरेशन से 4 घण्टे 4 मिनट पहले मरे 28 वर्षीय पुरुष से निकाली गयी थीं और प्रो. प्रेओब्राझेन्स्की के नुस्खे के अनुसार कीटाणु रहित लवण घोल में सुरक्षित रखी गयी थीं।

इसके उपरान्त खोपड़ी की शल्यक्रिया करके उपरोक्त पुरुष की पीयूष-ग्रन्थि मस्तिष्क में आरोपित की गयी।

8 सी. सी. क्लोरोफार्म, एक इंजेक्शन कैंफर का और दिल में एड्रिआनालीन के दो इंजेक्शन दिये गये।

आपरेशन का प्रयोजन : पीयूष-ग्रन्थि के प्रत्यारोपण की सम्भावना का पता लगाने के लक्ष्य से प्रो. प्रेओब्राझेन्स्की द्वारा पीयूष-ग्रन्थि और अण्डग्रन्थि के सयुंक्त प्रत्यारोपण का प्रयोग और भविष्य में लोगों के शरीर को जवान बनाने के लिए इसके प्रभाव का अध्ययन।

आपरेशनकर्ता—प्रो. फ़ि. फ़ि. प्रेओब्राझेन्स्की।

सहायक—डा. इ. आ. बोरमेंताल।

आपरेशन के बाद की रात : खतरे की सीमा तक नब्ज का बारम्बार गिरना। मौत की प्रतीक्षा। प्रेओब्राझेन्स्की की सिफ़ारिश पर बड़ी मात्रा में कैंसर के इंजेक्शन ।

24 दिसम्बर। प्रातः—कुछ सुधार। साँस की गति सामान्य से दुगनी, टैम्परेचर 108। कैंफर और केफीन के इंजेक्शन।

25 दिसम्बर। फिर से बिगड़ाव। नब्ज़ मुश्किल से चल रही है, हाथ-पाँव ठण्डे हो गये, पुतलियाँ स्थिर हैं। प्रेओब्राझेन्स्की की सिफारिश पर दिल में एड्रिआनालीन और कैंफर के इजेंक्शन दिये गये तथा नस में ग्लूकोज चढ़ाया गया।

26 दिसम्बर। थोड़ा-सा सुधार। नब्ज की गति 180, साँस 92, टैम्परेचर 106। कैंफर के इंजेक्शन और एनीमा द्वारा भोजन।

27 दिसम्बर। नब्ज 152, साँस 50, टैम्परेचर 104, पुतलियाँ हिलती हैं। त्वचा के नीचे कैंफर का इंजेक्शन।

28 दिसम्बर। उल्लेखनीय सुधार। दोपहर को अचानक पसीना टूटा, टैम्परेचर 100। आपरेशन के घावों की स्थिति पहले जैसी। पट्टी बदली गयी। भूख लगने लगी। तरल आहार।

29 दिसम्बर। अचानक माथे और धड़ की बगलों के बाल झड़ गये। परामर्श के लिए बुलाये गये : चर्म रोग विभाग के प्रोफ़ेसर वसीली वसील्येविच बुन्दारेव और मास्को के आदर्श पशुचिकित्सा संस्थान का निदेशक। उन्होंने स्वीकार किया कि वैज्ञानिक साहित्य में ऐसा कोई मामला नहीं देखने में आया। निदान नहीं हो पाया। टैम्परेचर—सामान्य।

(पेंसिल से)

शाम को पहली बार भौंका (8 बजकर 15 मिनट)। आवाज़ में उल्लेखनीय परिवर्तन। "भौं-भौं" नहीं बल्कि "आ-ओ" भौंकता है जो कराहने की आवाज जैसे लगती है।

30 दिसम्बर। बड़े पैमाने पर बाल झाड़कर साफ़ होने लगे। तौलने का अप्रत्याशित परिणाम निकला—हड्डियों की वृद्धि (लम्बे होने) के फलस्वरुप वजन 30 कि. ग्रा. हो गया। कुत्ता पहले की तरह ही लेटा रहता है।

31 दिसम्बर। भूख की सीमा नहीं।

(कापी में स्याही का धब्बा। धब्बे के बाद जल्दबाजी में लिखी लिखावट)

12 बजकर 12 मिनट पर कुत्ता साफ़-साफ़ भौंका : "ली-छ-म।"

(कापी में जगह छूटी है और आगे घबराहट के कारण गलती से लिखा है) :

1 दिसम्बर। (काटकर ठीक किया गया) 1 जनवरी 1925। सवेरे फ़ोटो खींचा गया। साफ़-साफ़ भौंकता है "लीछम," इस शब्द को वह ज़ोर-ज़ोर से मानो खुशी से दोहराता है। दिन के 3 बजे **(बड़े-बड़े अक्षरों में)** हँस पड़ा जिसके फलस्वरूप नौकरानी ज़ीना बेहोश हो गयी। शाम को एक साथ आठ बार उसने "लीछम" शब्द को दोहराया।

(पेंसिल से तिरछे अक्षरों में) : प्रोफ़ेसर ने "लीछम" शब्द को विकोडित कर लिया, उसका मतलब है मछली... बड़ी विस्मयकारी बात...

2 जनवरी। मैग्नीशियम की रोशनी में मुस्कराते हुए का फ़ोटो खींचा गया। बिस्तर से उठकर आधे घण्टे तक पिछली टाँगों पर ठीक से खड़ा रहा। लगभग मेरे क़द का है।

(कापी में अलग से पन्ना जुड़ा है)

रूसी विज्ञान को अपूर्णीय क्षति होते-होते बची।

प्रोफ़ेसर फि. फि. प्रेओब्राझेन्स्की की बीमारी का रिकार्ड।

1 बजकर 13 मिनट—प्रो. प्रेओब्राझेन्स्की मूर्च्छित हो गये। गिरते समय कुर्सी के पाये से सिर टकराया। टिंक्चर।

मेरी और ज़ीना की उपस्थिति में कुत्ते ने (अगर उसे अब कुत्ता कहा जा सकता हो) प्रोफ़ेसर प्रेओब्राझेन्स्की को माँ की गाली दी।

(अन्तराल)

6 जनवरी। (कभी पेंसिल से तो कभी बैंगनी रोशनाई से)

आज, जब उसकी दुम झड़ गयी उसने साफ़-साफ़ "शराबखाना" शब्द का उच्चारण किया। फ़ोनोग्राफ चालू है। शैतान ही जाने क्या बला है।

मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

प्रोफ़ेसर ने मरीजों को देखना बन्द कर दिया। शाम के 5 बजे से जाँच के कमरे से, जहाँ यह जीव चहलकदमी करता है, गालियाँ और ये शब्द साफ़-साफ़ सुनायी देते हैं : "दो जाम और।"

7 जनवरी। वह बहुत सारे शब्दों का उच्चारण करता है : "कोचवान", "जगह नहीं", "सांध्य समाचार", "बच्चों के लिए बेहतरीन तोहफा" और रूसी भाषा में मिलनेवाली सभी गालियाँ।

उसका रूप बड़ा विचित्र है। बाल सिर्फ़ सिर, ठोड़ी और छाती पर बचे हैं। बाकी

बदन गंजा, मुरझाई खालवाला है। जननेंद्रियों के क्षेत्र में वह परिपक्व होता पुरुष है। खोपड़ी काफ़ी बढ़ गयी। माथा तिरछा और नीचा है।

कसम से, पागल हो जाऊँगा।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की तबीयत अभी भी खराब है। अधिकांश पर्यवेक्षण मैं करता हूँ। **(फ़ोनोग्राफ, फ़ोटोग्राफी)**

शहर में अफवाहें फैलने लगीं।

परिणाम लाइलाज है। आज दिन में गली में लोफरों और बुढ़ियों का जमघट लगा रहा। अब भी तमाशबीन खिड़कियों के नीचे खड़े हैं। सुबह के अख़बारों में हैरतअंगेज खबर छपी। "ओबुखोव गली में मंगल-ग्रहवासी के बारे में अफ़वाहें निराधार हैं। उन्हें सुखारेव्का मण्डी की फेरीवालियों ने फैलाया है और उन्हें सख़्त सजा दी जायेगी।" किस मंगल-ग्रहवासी की बात करते हैं? यह तो उससे भी भयंकर है।

"सांध्य" तो इससे भी आगे बढ़ गया, उसने लिखा कि ऐसा बच्चा पैदा हुआ है जो वायलिन बजाता है। साथ में वायलिन का चित्र और मेरा फ़ोटो छपा हैं और उसके नीचे लिखा है : "प्रो. प्रेओब्राझेन्स्की जिन्होंने माँ का सीजेरियन आपरेशन किया।" इसे शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता... वह नया शब्द "पुलिसमैन" बोलता है।

पता चला कि दार्या पेत्रोव्ना मुझ पर फिदा थी और उसने फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की एल्बम से मेरा फ़ोटो चुरा रखा था। जब मैंने रिपोर्टरों को खदेड़ दिया तो उनमें से एक रसोई में घुस इत्यादि गया।

मरीजों को देखने के वक़्त क्या होता है! आज 82 फ़ोन आये। टेलीफ़ोन काट दिया। बाँझें पागल हो गयी हैं, ताँता लगा है...

श्वोंदेर की अगुआई में पूरी बिल्डिंग कमेटी तशरीफ लायी। किसलिए—खुद नहीं पता।

8 जनवरी। रात को निदान हो गया। एक सच्चे वैज्ञानिक की तरह फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने अपनी गलती मान ली—पीयूष ग्रन्थि की बदली का परिणाम जवानी की वापसी नहीं, बल्कि पूर्ण **मानवीकरण (तीन बार रेखांकित)** होता है। इसके फलस्वरूप उनकी अद्भुत, सनसनीखेज खोज का महत्व कम नहीं हो जाता।

वह आज पहली बार घर में घूमा-फिरा। गलियारे में बिजली का बल्ब देख कर हँस रहा था। फिर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच और मेरे साथ वह अध्ययन-कक्ष में गया। वह पिछले पंजों पर **(कटा हुआ)**.... टाँगों पर अडिग खड़ा होता है और देखने में नाटे और बेडौल आदमी जैसा लगता है।

अध्ययन-कक्ष में हँस रहा था। उसकी मुस्कान अप्रीतिकर, कृत्रिम-सी है। फिर उसने गुद्दी खुजायी, इधर-उधर देखा और मैंने बिल्कुल स्पष्ट रूप से उच्चारित शब्द को रिकार्ड कर लिया : "बुर्जुआं।" गालियाँ दे रहा था। उसकी ये गालियाँ क्रमबद्ध रूप से निरन्तर निकलती रहती हैं और शायद वे बिल्कुल निरर्थक हैं। वे कुछ-कुछ फ़ोनोग्राफिक स्परूप की हैं : मानो इस जीव ने पहले कहीं गालियाँ सुनी होंगी और वे उसके दिमाग़ में अनायास रिकार्ड होती गयीं और अब वे ढेरों में फूट रही हैं। खैर वैसे मैं कमबख्त, मनश्चिकित्सक नहीं हूँ।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच पर गालियों का न जाने क्यों बेहद विषण्ण प्रभाव होता है। ऐसे क्षण भी आते हैं जब वे नयी परिघटनाओं के संयत और निष्पक्ष अध्ययन को भूलकर एक तरह से बेसब्र हो उठते हैं। इस प्रकार गालियों के दौरान वे अचानक तिलमिलाकर चिल्ला पड़े :

"बस कर!"

इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

अध्ययन-कक्ष की सैर के बाद संयुक्त प्रयासों से शारिक को जाँच के कमरे में ले जाया गया।

इसके बाद मेरा और फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का सलाह-मशविरा हुआ। मानना पड़ेगा कि पहली बार मैंने इस आत्मविश्वासी और बुद्धिमान आदमी को असंमजस में पड़ा देखा। अपनी आदत के अनुसार गुनगुनाते हुए उन्होंने पूछा : "तो अब हम क्या करेंगे?" और खुद ही अक्षरक्षः यह उत्तर दिया : "मोस्क्वोश्वेया,* हाँ... सेविलिया से ग्रेनाडा तक। मोस्क्वोश्वेया, डाक्टर साहब..." मैं कुछ नहीं समझ पाया। उन्होंने समझाया : "इवान आर्नोल्दोविच, मैं आप से अनुरोध करता हूँ कि इसके लिए कच्छे-बनियान, पतलून और कोट खरीद लाइये।"

9 जनवरी। शब्दावली हर पाँच मिनट में **(औसतन)** नये शब्द से समृद्ध हो रहा है, आज सुबह से वाक्यों से भी। लगता है कि वे चेतना में जमे थे और अब पिघलकर निकल रहे हैं। निकले शब्द का प्रयोग होने लगता है। कल शाम से फ़ोनोग्राफ ने दर्ज किया : "धक्का मत दे", "हरामजादे", "पायदान से उतर", "मैं तुझे चखा दूँगा", "अमरीका की मान्यता", "स्टोव"।

10 जनवरी। वस्त्र पहनाये गये। बनियान सहर्ष पंहनाने दिया, खिलखिलाकर हँस तक रहा था। जाँघिया पहनने से इन्कार कर दिया, अपने विरोध को उसने फटी आवाज

* मोस्क्वोश्वेया–सिले-सिलाये कपड़े बनानेवाली मास्को की तत्कालीन कम्पनी।–सं.

में यह चिल्ला-चिल्लाकर व्यक्त किया : "लाइन में खड़े हो, कुतिया की औलादो, लाइन में!" कपड़े पहना दिये गये। मोजे बड़े निकले।

(कापी में कई रेखाचित्र हैं, देखकर तो यही लगता है कि वे कुत्ते की टाँग को आदमी की टाँग में बदलने की प्रक्रिया को दर्शाते हैं)

पाँव के पंजर का पिछला हिस्सा (planta) लम्बा हो रहा है। उँगलियाँ बढ़ रही हैं। नाखून।

शौचालय के नियमित उपयोग का फिर से प्रशिक्षण। नौकरानियाँ बिल्कुल हार गयीं।

पर जीव की समझदारी का उल्लेख करना उचित होगा। काम काफ़ी सफलता से आगे बढ़ रहा है।

11 जनवरी। पतलून से आख़िर को सुलह कर ली। लम्बा हँसमुख वाक्य बोला : "निकाल सिग्रेट–पतलून है तेरी ग्रेट।"

सिर के बाल–आदमियों जैसे ही लगते हैं। पर गुद्दी पर कुत्ते के बालों जैसे ही हैं। आज कानों से बचे-खुचे रोएँ झड़ गये। भूख बेहद अच्छी है। नमकीन हेरिंग मच्छी बड़े शौक से खाता है।

शाम के 5 बजे की घटना : जीव द्वारा उच्चारित शब्द पहली बार आस-पास की घटनाओं से अलग नहीं बल्कि उनकी प्रतिक्रिया थे। तात्पर्य यह कि जब प्रोफ़ेसर ने उसे आदेश दिया : "जूठन को फ़र्श पर मत फेंक," उसने अचानक उत्तर दिया : "पिण्ड छोड़, पिस्सु।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच स्तब्ध रह गये पर बाद में सम्भलकर बोले :

"अगर तू ने फिर कभी मुझे या डाक्टर को गाली दी तो तेरी शामत आ जायेगी।"

इस पल मैं शारिक का फ़ोटो खींच रहा था। मैं दावे से कहता हूँ कि वह प्रोफ़ेसर की बात समझ गया। उसके चेहरे पर असन्तोष की छाया पड़ी। उसने काफ़ी झुँझलाहट के साथ घूरकर देखा, पर शान्त हो गया।

हुर्रा, वह समझता है!

12 जनवरी। पतलून की जेब में हाथ डालना सिखाने का पाठ। गालियाँ देने की आदत छुड़ा रहे हैं। सीटी बजाकर गाने की धुन निकाली। बातचीत में हिस्सा लेता है।

मैं कुछ परिकल्पनाएँ पेश करने से अपने को नहीं रोक पा रहा : फिलहाल शरीर को जवान बनाने की बात को गोली मारो। दूसरी बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है : प्रो. प्रेओब्राझेन्स्की के विलक्षण प्रयोग ने मानव मस्तिष्क के एक रहस्य का उद्घाटन किया है। आज से मस्तिंष्क की पीयूष-ग्रन्थि की भूमिका स्पष्ट हो गयी है। वह मानवीय रूप को निर्धारित करती है। उसके हार्मोनों को शरीर के अतिमहत्वपूर्ण–रूप के हार्मोन–कहा जा सकता है। विज्ञान में नया क्षेत्र खुलता है : फाउस्टस के पात्र के

बिना ही मानव का अणु उत्पन्न हुआ है। सर्जन की छुरी ने नये आदमी को उत्पन्न किया। प्रेओब्राझेन्स्की, आप–सृष्टा हैं। **(स्याही का धब्बा)**

खैर, मैं बात से हट गया... हाँ, तो वह बातचीत में हिस्सा लेता है। मेरे अनुमानानुसार, बात यह है : प्रत्यारोपित पीयूष-ग्रन्थि ने कुत्ते के मस्तिष्क में वाणी के केन्द्र को सक्रिय कर दिया और शब्दों की धारा फूट पड़ी। मेरे विचार में यह मामला नवनिर्मित मस्तिष्क का नहीं बल्कि मस्तिष्क के विस्तार का। विकास के सिद्धान्त की कितनी अद्‌भुत पुष्टि है! कितनी महान है कुत्ते से रसायन शास्त्री मेंडेलेयेव तक की यह शृंखला! मेरी एक परिकल्पना यह भी है : अपने जीवन के श्वान काल में शारिक के मस्तिष्क ने असीम अवधारणाओं को संजो लिया। वे सभी शब्द जिनका उसने शुरू में प्रयोग किया–सब के सब, बाजारू हैं, वह उन्हें सुनकर मस्तिष्क में छिपा लेता था। अब सड़क पर चलते समय मैं रास्ते में मिलनेवाले कुत्तों को रहस्यमय विस्मय के साथ देखता हूँ। भगवान ही जाने कि उनके दिमाग़ों में क्या छिपा है।

शारिक पढ़ता था। पढ़ता था **(3 विस्मयादिबोधक चिह्न)**। मैं यह समझ गया। मछली की वजह से। वह पीछे से आगे को पढ़ता था। मैं यह तक जानता हूँ कि इस गुत्थी की कुंजी कहाँ है : कुत्ते की दृष्टि की तंत्रिकाओं के अन्तराल में।

मास्को में क्या हो रहा है–आदमी की समझ के बाहर की बात है। अब तक सुखारेव्का मण्डी के सात फेरीवाले गिरफ़्तार कर लिये गये हैं, यह अफवाह फैलाने के लिए कि बोल्शेविकों की वजह से प्रलय आनेवाली है। दार्या पेत्रोव्ना कह रही थी, उसने सही-सही तारीख भी बतायी थी : 28 नवम्बर 1925, कि शहीद सन्त स्तेफान के दिवस को पृथ्वी आकाश की धुरी से टकरा जायेगी... तरह-तरह के धोखेबाज व्याख्यान देने लगे हैं। इस पीयूष-ग्रन्थि से हमने ऐसा चण्डूखाना बना दिया कि घर छोड़कर भागने को जी चाहता है। मैं प्रेओब्राझेन्स्की के अनुरोध पर उनके यहाँ आकर रहने लगा हूँ और रात को शारिक के साथ मरीजों के मिलने के कमरे में सोता हूँ। जाँच के कमरे को मिलने का कमरा बना दिया गया। श्वोंदेर की बात सही निकली। बिल्डिंग कमेटी खुशी के चिराग जला रही है। अलमारियों में एक भी शीशा नहीं बचा, क्योंकि कूदता था। मुश्किल से छुड़वाया।

फिलीप के साथ कुछ अजीब-सी बात हो रही है। जब मैंने उन्हें अपनी परिकल्पनाओं और शारिक को उच्च विकसित मानसिक व्यक्तित्व में परिवर्तित करने की सम्भावना के बारे में बतायां तो वह हुंह करके बोले : "आप यह सोचते हैं?" उनका लहजा बड़ा द्वेषपूर्ण था। क्या सचमुच मेरा अनुमान गलत है? बुड्ढे ने कुछ सोचा है। जब मैं रोगी का रिकार्ड लिखने में व्यस्त रहता हूँ, वह उस आदमी के रिकार्ड का

अध्ययन करता है जिसकी पीयूष-ग्रन्थि हमने ली।

(कापी में जोड़े गये पन्ने पर)

क्लीम ग्रिगोर्येविच चुगून्किन, आयु 25 वर्ष, अविवाहित। पार्टी का सदस्य नहीं पर सहानुभूति रखता है। 3 बार मुकदमा चला और बरी हो गया : पहली बार सबूतों की कमी के कारण, दूसरी बार सामाजिक उत्पत्ति ने बचा लिया और तीसरी बार–15 साल की निलम्बित बामशक्कत कैद। चेरियाँ। व्यवसाय–शराबखानों में बालालाइका वादक।

कद नाटा, बेडौल। जिगर फूला हुआ (शराब का अतिसेवन)। मृत्यु का कारण–शराबखाने में दिल में छुरी का वार।

बुड्ढा दिन-रात क्लीम के रिकार्ड से जूझता रहता है। समझ में नहीं आता कि मामला क्या है। इस बारे में बड़बड़ा रहा था कि मुझे पोस्टमार्टम के समय चुगून्किन की सारी लाश की जाँच करने का ख़्याल नहीं आया। मामला क्या है–समझ नहीं आता। फर्क क्या पड़ता है कि किसकी पीयूष-ग्रन्थि है?

17 जनवरी। कई दिनों से कुछ नहीं लिखा। इन्फ्लुंएजा हो गया था। इस दौरान रूप निश्चित हो गया :

क) बदन की बनावट की दृष्टि से पूर्ण मानव है;
ख) वजन लगभग 48 कि. ग्र.;
ग) क़द नाटा;
घ) सिगरेट पीने लगा;
ङ) आदमियों का आहार खाता है;
च) अपने आप कपड़े पहनता है;
ज) फर्राटे से बातें करता है।

यह हुआ पीयूष-ग्रन्थि का कमाल। **(स्याही का धब्बा)**

इसके साथ रोगी का रिकार्ड समाप्त कर रहा हूँ। हमारे समक्ष नया शरीर है; उसका अध्ययन शुरू से किया जाना चाहिये।

संलग्न हैं : वार्तालाप के स्टेनोग्राम, फ़ोनोग्राफ के रिकार्ड, फ़ोटो।
हस्ताक्षरः प्रो. फि. फि. प्रेओब्राझेन्स्की का असिस्टेंट

डाक्टर बीरमेंताल।

6

जाड़े की शाम थी। जनवरी का महीना ढल रहा था। खाने से पहले का, मरीज़ों को देखने से पहले का वक़्त था। मरीजों से मिलने के कमरे के दरवाज़े की चौखट पर काग़ज़ का सफ़ेद पन्ना लटका था जिस पर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के हाथ से लिखा था :

"घर में गिरियाँ चबाने की मनाही करता हूँ।

फि. प्रेओब्राझेन्स्की।"

और नीली पेंसिल से समोसों जैसे बड़े अक्षरों में बोरमेंताल के हाथ से लिखा था :

"शाम के 5 बजे से सुबह के 7 बजे तक बाजे बजाने की मनाही है।"

इसके बाद ज़ीना की लिखावट में :

"जब लौटें तो फ़िलीप फ़िलीप्पोविच से कह दीजियेगा : मुझे नहीं पता कि वह कहाँ गया। फ़्योदोर कह रहा था कि श्वोंदेर के साथ गया है।"

प्रेओब्राझेन्स्की के हाथ से :

"सौ साल तक शीशे जड़नेवाले का इन्तज़ार करूँगा?"

दार्या पेत्रोव्ना के हाथ से **(छपाई के अक्षरों में) :**

"ज़ीना दुकान गयी है, कह रही थी कि साथ लायेगी।"

रेशमी शेडवाली बत्ती के फलस्वरूप खाने के कमरे में रात का-सा वातावरण था। बर्तनों की अलमारी से दो हिस्सों में टूटी रोशनी प्रतिबिम्बित हो रही थी—शीशों पर काटे के निशान जैसी पट्टी चिपकी हुई थी। मेज़ पर झुके फ़िलीप फ़िलीप्पोविच अख़बार के खुले विशाल पन्नों में डूबे हुए थे। उनके चेहरे पर बिजलियाँ कौंधकर उसे विकृत बना रही थीं और मिंजे दाँतों से टूटे, अधूरे शब्द बिखर रहे थे। वह टीका पढ़ रहे थे :

"इसमें कोई शक नहीं कि यह उसकी नाजायज औलाद है (जैसा कि सड़े-गले बुर्जुआ समाज में कहा जाता था)। ऐसे ही अपना मनबहलाव करता है हमारा कूटवैज्ञानिक बुर्जुआ वर्ग! तब तक तो कोई भी सात कमरे घेरे रह सकता है जब तक लाल किरण की तरह उसके सिर पर न्याय की चमचमाती तलवार नहीं चमकी।

श्वों... र"

दो दीवारों के पार से बड़ी लगन और मस्ती से बालालाइका बज रही थी और 'चमकता है चाँद' की जटिल धुन फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के दिमाग़ में टीका के शब्दों से गुंथकर घिनौनी खिचड़ी पका रही थी। उसे पढ़कर वह कन्धे के ऊपर से बिना थूक के थूके और दाँत मींजे हुए यंत्रवत गुनगुनाने लगे।

"च-मकता है चाँ-द... च-मकता है चाँ-द... चम-कता है चाँद.... थू, चिपक गयी

यह नामाकूल धुन!"

उन्होंने घण्टी बजायी। पर्दे में से ज़ीना का चेहरा झाँका।

"उसे कह दो कि 5 बज गये हैं, बन्द करे, कृपया उसे यहाँ भेज दो।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच मेज़ के पास आरामकुर्सी पर बैठे थे। बायें हाथ की उँगलियों में सिगार का कत्थई टोटा दबा था। पर्दे के पास, चौखट का सहारा लिए टाँग पर टाँग रखे नाटे कद का और देखने में भद्दा आदमी खड़ा था। उसके सिर के कड़े बाल ऐसे उग रहे थे जैसे जंगल को साफ़ करके बनाये गये खेत में झाड़ियाँ और चेहरा बढ़ी दाढ़ी के रोयों से ढका था। माथा इतना नीचा था कि देखकर हैरानी होती थीं। फैली भौंहों के गुच्छों के लगभग बाद ही सिर का घना बुरुश शुरू हो जाता था।

बायीं बगल के नीचे फटे सारे कोट पर पुआल कि तिनके चिपके हुए थे, दायें घुटने पर धारीदार पतलून फटी हुई थी और बायें पर बैंगनी रंग में सनी थी। आदमी के गले पर जहरीले आसमानी रंग की टाई बंधी थी, उस पर नकली लाल का पिन लगा था। इस टाई का रंग इतना भड़कीला था कि समय-समय पर अपनी थकी आँखों को बन्द करते फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को पूर्ण अन्धकार में कभी छत पर तो कभी दीवार पर नीली आभावाली धधकत मशाल दिखायी पड़ती। खुलकर उनकी आँखें फिर चौंधिया जातीं क्योंकि फ़र्श से रोशनी के पुँज बिखेरते पेटेंट लैदर के सफ़ेद गेटरोंवाले जूते आँखों को चुभते।

"मानो गैलोश पहन रखे हो," अप्रिय अनुभूति के साथ फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने सोचा, उसाँस लेकर वह घरघराये और बुझे सिगार को जलाने में लग गये। दरवाज़े के पास खड़ा आदमी धुँधली आँखों से प्रोफ़ेसर को ताक़ता, कमीज़ पर राख झाड़ता सिगरेट पी रहा था।

लकड़ी की बटेर के पास दीवार पर लगी घड़ी ने पाँच घण्टे बजाये। जब फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने बात छेड़ी तो उसके उदर में अभी भी कुछ कराह-सी हो रही थी।

"मैंने, शायद दो बार, रसोई की टाँड़ पर न सोने का अनुरोध किया था न, खास तौर से दिन में?"

आदमी ऐसे खाँसा मानो गले में गुठली अटक गयी हो और उत्तर दिया :

"रसोई की हवा ज़्यादा अच्छी है।"

उसकी आवाज असाधारण भारी-सी थी पर साथ ही किसी छोटे-से पीपे में गूँजती-सी लगती थी।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने सिर हिलाकर पूछा :

"यह घिनौनी चीज़ आयी कहाँ से? मेरा मतलब टाई से है।"

आदमी आँखों को उँगली पर टिकाकर उन्हें फूले होंठ के ऊपर से नीचे ले गया और तिरछी आँखों से टाई को प्रेम के साथ निहारने लगा।

"घिनौनी क्यों?" वह बोला। "बेहतरीन टाई है। दार्या पेत्रोव्ना ने दी है।"

"दार्या पेत्रोव्ना ने आपको सड़ियल चीज़ दी है, इन जूतों जैसी। यह क्या चमचमाती बकवास है? कहाँ से आये? मैंने क्या कहा था? डी-सें-ट जूते खरीदने को; पर यह क्या है? क्या डाक्टर बोरमेंताल ने ऐसे चुने?"

"मैंने कहा था कि पेटेंट लैदर के हों। क्या मैं लोगों से गया-बीता हूँ? कुजनेत्स्की पर जाकर देखें—सब पेटेण्ट लैदर के पहनते हैं।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने सिर नचाया और सख़्ती से बोले :

"टाण्ड पर सोना बन्द। समझे? यह क्या बदतमीजी है! आख़िर आप परेशान करते हैं। वहाँ औरतें रहती हैं।"

आदमी का चेहरा तमतमा गया और होंठ आगे को निकल आये।

"इन औरतों को देखो। कोई मेमें थोड़े ही हैं। मामूली नौकरानियाँ हैं पर तड़ी ऐसी झाड़ती हैं मानो कमिसारनी हों। यह जीन्का ही चुगली करती फिरती है।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच कड़ी नज़र से देखकर बोले :

"ज़ीना को जीन्का कहने की जुर्रत मत करो! समझे?"

सन्नाटा छा गया।

"मैं पूछ रहा हूँ, समझे?"

"समझा।"

"गर्दन से इस सड़ी टाई को उतार दो। आप... तू... आप शीशे में अपना मुँह तो देखिये—आपने क्या गत बना रखी है। जोकरों जैसी। फ़र्श पर सिगरेट के टोटे मत फेंका करो—सौवीं बार कह रहा हूँ। घर में एक भी भद्दा शब्द न सुनायी दे मुझे! थूको नहीं! यह रहा पीकदान। फ्लश का ठीक से प्रयोग किया करो। ज़ीना से तरह-तरह की बातें बन्द। वह शिकायत करती है कि आप अँधेरे में उसे छेड़ते हैं। देख के! मरीज से किसने कहा 'वह कुत्ता ही जाने!'? आप क्या सचमुच सोचते हैं कि यह चण्डूखाना है?"

"आप तो पापाजी मेरा जीना हराम कर रहे हैं," अचानक आदमी रुआँसी आवाज में बोला।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का चेहरा लाल हो गया, चश्मा चमका।

"यहाँ कौन है तुम्हारा पापाजी? यह क्या बदतमीजी है? मैं फिर कभी यह शब्द नहीं सुनना चाहता! मुझे पूरा नाम लेकर बुलाया करो!"

आदमी के चेहरे पर धृष्टता उमड़ आयी।

"आप क्यों हमेशा... कभी थूको मत। तो कभी सिगरेट मत पियो। वहाँ मत जाओ... आख़िर यह सब क्या है? और 'पापाजी' के बारे में आपका कहना गलत है। भला मैंने आपरेशन करने को कहा था?" आदमी क्षुब्ध होकर भौंक रहा था। "देखो तो सही! जानवर को पकड़ लिया, सिर पर छुरी फेर दी और अब घिन करते हैं। हो सकता है मैंने आपरेशन के लिए अपनी सहमति दी हो न हो। और (आदमी ने छत

की ओर आँखें उठायीं, मानो कोई सूक्ति याद कर रहा हो) और मेरे सम्बन्धियों ने भी नहीं। मुझे हरजाना माँगने के लिए नालिश करने का हक है।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की आँखें फटी की फटी रह गयीं, हाथ से सिगार छूट गया। "कैसी चीज़ से पाला पड़ा है," उनके दिमाग़ में कौंधा।

"आप इससे असन्तुष्ट हैं कि आपको आदमी बना दिया गया?" आँखें तरेरकर उन्होंने पूछा। "आप कहीं फिर से घूरे के ढेरों पर तो घूमना बेहतर नहीं समझते? फाटकों के नीचे ठण्ड में ठिठुरना? अगर मुझे पता होता तो..."

"घूरे-घूरे का आप क्यों मुझे ताना मार रहे हैं। मैं खुद अपना पेट पालता था। अगर मैं आपकी छुरी से मर गया होता तब? इस पर आप क्या कहेंगे, कामरेड?"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच कहिये!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच खीजकर चिल्लाये। "मैं आपका कामरेड नहीं! क्या बेहूदगी है!"—"कैसी बला है," उन्होंने सोचा।

"हाँ-हाँ, बेशक, क्यों नहीं..." विजेता की तरह टाँग आगे बढ़ाकर आदमी व्यंग्य के साथ बोला, "हम सब समझते हैं। हम आपके कैसे कामरेड हुए! औकात क्या है हमारी?! हम यूनीवर्सिटियों में तो पढ़े नहीं, 15 कमरों के टबवाले मकान में रहे नहीं। पर अब इन बातों को भुला देना चाहिये। आज के ज़माने में हरेक को अपना हक मिला है..."

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच आदमी का तर्क सुन रहे थे, उनके चेहरे का रंग उड़ता जा रहा था। वह अपने भाषण को रोककर दिखाने के वास्ते हाथ में चबी सिगरेट के लिए राखदानी की ओर चल पड़ा। वह झूलता हुआ चल रहा था। वह बड़ी देर तक सिगरेट को राखदानी में मसलता रहा, उसके चेहरे का भाव स्पष्ट रूप से कह रहा था : "ले! ले!" सिगरेट बुझाकर चलते समय उसने अचानक दाँत किटकिटाये और नाक को अपनी बगल में ठूँसा।

"उँगलियों से पिस्सू पकड़ो! उँगलियों से!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ज़ोर से चिल्लाये। "मैं यह नहीं समझ पाता कि आप उन्हें लाते कहाँ से हैं?"

"कैसी बातें करते हैं, मैं क्या उन्हें जान-बूझकर पालता हूँ?" आदमी बुरा मानकर बोला। "लगता है पिस्सुओं को मुझसे प्यार है," तभी उसने आस्तीन के अस्तर में हाथ डालकर हवा में हल्की-सी ललौंही रुई का गुच्छा उड़ाया।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने छत पर बनी फूलमालाओं की ओर नज़र उठायी और मेज़ को उँगलियों से ठोंकने लगे। आदमी पिस्सू को मृत्यदण्ड देकर वहाँ से हटा और कुर्सी पर बैठ गया। हाथ उसने कोट के कालर के समानान्तर लटका लिए। उसकी आँखें लकड़ी के फ़र्श की ओर थीं। वह अपने जूतों का अवलोकन कर रहा था और इसमें उसे बड़ा आनन्द आ रहा था। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने उधर देखा जहाँ चपटी नोकों पर बिम्ब चमचमा रहे थे, आँखें मिचमिचाकर वह बोले :

"आप किस काम के बारे में मुझे बताना चाहते थे?"

"अरे कोई बड़ा नहीं! मामूली काम है। मुझे, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, दस्तावेज की ज़रूरत है।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच किन्चित सिहर गये।

"हुं...दस्तावेज! शैतान की दुम! सच में.... हुम्म... ऐसे काम नहीं चल सकता क्या..." उनके स्वर में हिचकिचाहट और विषण्णता की झलक थी।

"आप सोचिये तो," आदमी दृढ़ता के साथ बोला, "दस्तावेज के बिना कैसे काम चल सकता है? बस माफ़ कीजिये। आप खुद ही जानते हैं कि आदमी को बिना दस्तावेज के जीने की कड़ी मनाही है। सबसे पहले बिल्डिंग कमेटी करती है मनाही..."

"बिल्डिंग कमेटी बीच में कहाँ से आ गयी?"

"क्या मतलब? मिलते हैं, पूछते हैं : महानुभाव, तुम कब अपना दस्तावेज दर्ज करवाओगे?"

"हे भगवान," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच निरानंद स्वर में बोले, "मिलते हैं, पूछते हैं. ..कल्पना कर सकता हूँ कि आप उनको क्या बताते हैं। पर मैंने तो आपको जीने पर मटरगश्ती करने की मनाही की थी।"

"मैं क्या क़ैदी हूँ?" आदमी ने हैरान होकर पूछा, अपनी सच्चाई का बोध उसके नकली लाल में भी चमचमा उठा। "यह क्या 'मटरगश्ती' जैसी बातें करते हैं?! आपके शब्द काफ़ी अपमानजनक हैं। मैं वैसे ही चलता हूँ जैसे बाकी लोग।"

उसने अपनी पेटेण्ट लैदर की टाँगों से कदमताल की।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चुप हो गये, आँखें उनकी कोने में जाकर दुबक गयीं। "कुछ भी हो, अपने को तो काबू में रखना ही चाहिये," उन्होंने सोचा। बर्तनों की अलमारी के पास जाकर एक घूँट में पानी का पूरा गिलास खाली कर डाला।

"ठीक है," वह कुछ संयत होकर बोले, "बात शब्दों की नहीं। हाँ तो यह आपकी लाजवाब बिल्डिंग कमेटी क्या कहती है?"

"वह क्या कहेगी... आप वैसे उसे यूँ ही लाजवाब की गाली दे रहे हैं। वह हितों की रक्षा करती है।"

"किसके हितों की, कृपा करके मझे भी तो बताइये?"

"जाहिर है किसके—श्रमिक तत्वों के।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की आँखें बाहर निकल आयीं।

"पर आप श्रमजीवी कैसे हुए?"

"नवधनाढ्य तो हूँ नहीं, सब जानते हैं।"

"चलो ठीक है। हाँ, तो आपके क्रान्तिकारी हित की रक्षा के लिए उसे चाहिये क्या?"

"जाहिर है—मेरा नाम दर्ज करना। वह कहते हैं—यह कहाँ देखा है कि आदमी

मास्को में अपना नाम दर्ज करवाये बिना रहे। यह हुई एक बात। पर सबसे बड़ी बात—फ़ौजी कार्ड की है। मैं नहीं चाहता कि लोग मुझे भगोड़ा कहें। और फिर यूनियन, बेरोज़गारी दफ़्तर के लिए भी..."

"पर यह बताइये कि आपको मैं कैसे दर्ज करवाऊँ? यह मेज़पोश दिखाकर या अपने परिचय-पत्र के बूते? आख़िर स्थिति को तो समझना चाहिये! आप यह मत भूलिये कि आप... अ... हुं... आप आख़िर, क्या कहें—हाँ, अचानक प्रकट हुए, प्रयोगशाला में बने प्राणी हैं," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का आत्मविश्वास घटता जा रहा था।

आदमी विजयोल्लास में मौन खड़ा था।

"बहुत अच्छा आपको दर्ज करने, और सब कुछ आपकी इस बिल्डिंग कमेटी की योजनानुसार करने के लिए आख़िर चाहिये क्या? आख़िर न आपका कोई नाम है न कुलनाम।"

"यह आप ठीक नहीं कह रहे। नाम मैं बिल्कुल बेफिक्र होकर चुन सकता हूँ। अख़बार में छपवा दिया और छुट्टी हुई।"

"तो आप क्या नाम रखना चाहेंगे?"

आदमी ने टाई ठीक की और उत्तर दिया।

"टैलीग्राफ टेलीग्राफोविच।"

"बेवकूफ़ों जैसी बात मत करो," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच नाक-भौं सिकोड़कर बोले, "मैं आपके साथ गम्भीरता से बात कर रहा हूँ।"

विषैली मुस्कान ने आदमी की मूँछ के रोयों को मरोड़ा।

"एक बात मेरी समझ में नहीं आती," वह उल्लास में समझदारी की बात कहने लगा। "मुझे माँ की गाली नहीं देनी चाहिये। थूकने की मनाही है। पर आपके मुँह से बस बेवक़ूफ़-बेवक़ूफ़ ही सुनायी पड़ता है। लगता है कि रूस में सिर्फ़ प्रोफ़ेसरों को गाली देने की इजाजत है।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का चेहरा लाल हो गया और पानी भरते समय उन्होंने गिलास फोड़ दिया। दूसरे में भरकर उन्होंने पानी पिया और सोचने लगे : "थोड़ी-सी कसर रह गयी है, वह मुझे पाठ पढ़ाने लगेगा और बिल्कुल ठीक करेगा। अपने को काबू में नहीं रख सकता।"

वह कुर्सी पर घूमे और अति शिष्टाचार से धड़ झुकाकर और लौह दृढ़ता से बोले :

"माफ़ कीजिये। मेरी नसों में गड़बड़ी है। आपका नाम मुझे कुछ अजीब लगा। आपने ऐसा नाम ढूँढ़ा कहाँ से, मैं भी तो जानूँ?"

"बिल्डिंग कमेटी ने सुझाया था। जंत्री में देखा था। उन्होंने कहा : कौन-सा पसन्द है? मैंने बस चुन लिया।"

"किसी जंत्री में ऐसा कोई नाम नहीं हो सकता।"

"अजीब बात है," आदमी व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ बोला, "आपके यहाँ, जाँच के कमरे में टँगे कलैण्डर में है।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने कुर्सी से उठे बिना हाथ बढ़ाकर दीवार पर लगे घण्टी के बटन को दबाया और ज़ीना प्रकट हुई।

"जाँच के कमरे से कलैण्डर लाओ।"

मौन के क्षण बीतने लगे। जब ज़ीना जन्त्रीवाला कलैण्डर लायी तो फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा :

"कहाँ?"

"4 मार्च को मनाया जाता है।"

"दिखाइये... हुं... शैतान की दुम.... ज़ीना, इसे फौरन अँगीठी में ठूँस दो।

ज़ीना विस्मित आँखों को फाड़े कलैण्डर लेकर चली गयी और आदमी ने सिर हिलाकर उलाहना दिया।

"कुलनाम बतायेंगे?"

"कुलनाम मैं पुश्तैनी रखने को तैयार हूँ।"

"क्या? पुश्तैनी? कौन-सा?"

"शारिकोव।"

अध्ययन-कक्ष में मेज़ के सामने चमड़े का कोट पहने बिल्डिंग कमेटी का चेयरमैन श्वोंदेर खड़ा था। डाक्टर बोरमेंताल आरामकुर्सी पर बैठा था। डाक्टर के पाले से लाल गालों पर (वह अभी-अभी बाहर से लौटा था) उतना ही असमंजस था जितना कि पास बैठे फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के चेहरे पर।

"आख़िर क्या लिखना है?" बेसब्री के साथ उन्होंने पूछा।

"पूछना क्या," श्वोंदेर बोला, "मुश्किल काम थोड़े ही है। प्रमाणपत्र लिखिये, नागरिक प्रोफ़ेसर, कि इस प्रमाणपत्र का वाहक, वास्तव में, आपके घर में... हूँ... पैदा हुआ, टेलीग्राफ टेलीग्राफोविच शारिकोव है।"

आरामकुर्सी पर बैठा बोरमेंताल असमंजस में हिला। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की मूंछ फड़की।

"हुं... शैतान की दुम! इससे मूर्खता भरी बात की कल्पना करना असम्भव है। वह पैदा-वैदा नहीं हुआ, बस.. कहने का मतलब..."

"यह आपका मामला है," श्वोंदेर शान्त विद्वेष के साथ बोला, "पैदा हुआ था नहीं... कुल मिलाकर आप ही ने तो प्रयोग किया था, प्रोफ़ेसर! आप ही ने तो नागरिक शारिकोव की रचना की।"

"साफ़ तो है बात," किताबों की अलमारी के पास से शारिकोव भौंका। वह आइने की अथाह गहराई में प्रतिबिम्बित होती टाई को निहार रहा था।

"आपसे मेरा विनम्र अनुरोध है," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच झट से बोले, "बातचीत में टाँग न अड़ायें। आप बेकार ही कह रहे 'साफ़ तो है बात'—बात बिल्कुल भी साफ़ नहीं है।"

"मैं क्यों नहीं बोलूँ," रूठकर शारिकोव बड़बड़ाया।

श्वोंदेर ने तत्काल उसकी हिमायत की :

"माफ़ कीजिये, प्रोफ़ेसर, नागरिक शारिकोव बिल्कुल ठीक कह रहा है। यह उसका अधिकार है कि वह अपने भाग्य के फैसले पर विचार-विमर्श में भाग ले, विशेषकर तब, जब बात दस्तावेजों की हो रही है। दस्तावेज—दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ होती है।"

उसी क्षण कान के पास हुई ज़ोर की घनघनाहट ने वार्तालाप को भंग कर दिया। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चोंगे में बोले : "हैलो...", उनका चेहरा तमतमा गया और वह चिल्लाये :

"कृपया मामूली बातों के लिए मुझे परेशान मत करें। आपको उससे क्या वास्ता?" और उन्होंने चोंगे को ज़ोर से पटक दिया।

श्वोंदेर के चेहरे पर मन्द-मन्द खुशी का भाव फैल गया।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच लाल होकर चिल्लाये :

"संक्षेप में, खत्म करते हैं इस किस्से को।"

उन्होंने पैड से एक पन्ना फाड़ा और उस पर कुछ शब्द घसीटे, फिर खीजकर उन्हें ज़ोर से पढ़ा :

" 'इसके द्वारा प्रमाणित करता हूँ...' शैतान ही जाने क्या बला है...हुं... 'इसके वाहक, मस्तिष्क पर आपरेशन के जरिये प्रयोगशाला में प्रयोग द्वारा प्राप्त हुए व्यक्ति को दस्तावेज की आवश्यकता है...' शैतान की दुम! वैसे मैं इन वाहियात दस्तावेजों के ख़िलाफ़ हूँ। हस्ताक्षर—प्रोफ़ेसर प्रेओब्राझेन्सकी।"

"बड़ी हैरानी होती है, प्रोफ़ेसर," श्वोंदेर अपमानित होकर बोला, "आप दस्तावेजों को वाहियात कैसे कह सकते हैं? मैं बिल्डिंग में बिना दस्तावेजों के आदमी को नहीं रहने दे सकता, ऊपर से पुलिस में रिजर्व फ़ौजियों की लिस्ट में उसका नाम दर्ज नहीं। अचानक साम्राज्यवादी दरिन्दों से युद्ध छिड़ गया तो?"

"मैं लाम पर कहीं नहीं जानेवाला!" अचानक मुँह फुलाकर शारिकोव अलमारी पर भौंका।

श्वोंदेर सकपका गया, पर झट से सम्भलकर उसने शिष्टता के साथ शारिकोव से कहा :

"आप, नागरिक शारिकोव, बिल्कुल भी सचेत नागरिकों जैसी बात नहीं कर रहे। फ़ौजी लिस्ट में नाम ज़रूर दर्ज करना चाहिये।"

"दर्ज कर लूँगा, पर लड़ने—मेरा ठेंगा जायेगा," अपनी टाई को ठीक करते हुए

शारिकोव कुढ़कर बोला।

अब झेंपने की बारी श्वोंदेर की थी। प्रेओब्राझेन्स्की ने बोरमेंताल की ओर मुड़कर विद्वेष और उदासी भरी नज़रों से कहा : "देख ली नैतिकता।" बोरमेंताल ने अर्थपूर्ण अन्दाज में सिर हिलाया।

"आपरेशन के समय मैं बुरी तरह जख़्मी हुआ हूँ," मुँह फुलाये शारिकोव रिरियाया, "देख, मेरी क्या गत बनायी है," और उसने सिर की ओर इशारा किया। माथे के आर-पार आपरेशन का काफ़ी ताज़ा निशान फैला था।

"आप अराजकतावादी स्वार्थी हैं?" श्वोंदेर ने भौंह तानकर पूछा।

"मुझे छूट मिलनी चाहिये," शारिकोव ने उत्तर में कहा।

"ठीक है, अभी इसकी बात नहीं हो रही," हैरान श्वोंदेर ने उत्तर दिया, "तथ्य यह है कि हम प्रोफ़ेसर का प्रमाणपत्र पुलिस को भेज देंगे और आपको दस्तावेज़ मिल जायेगा।"

"हाँ, एक बात और..." अचानक फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने उसे टोका, शायद कोई विचार उन्हें सता रहा था, "बिल्डिंग में आपके पास कोई कमरा खाली नहीं है? मैं उसे ख़रीदने को तैयार हूँ।"

श्वोंदेर की बादामी आँखों में पीली-सी चिंगारियाँ नाचने लगीं।

"नहीं, प्रोफ़ेसर, बड़े खेद की बात है। और न ही इसकी कोई सम्भावना है।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने होंठ भींच लिए और कुछ नहीं कहा। टेलीफ़ोन फिर से ज़ोर से घनघनाया। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने कुछ भी पूछे बिना टेलीफ़ोन के चोंगे को हुक से ऐसे गिरा दिया कि वह थोड़ा-सा घूमकर अपने नीले तार के सहारे लटक गया। सब सिहर गये। "बुड्ढे की नसें जवाब दे रही हैं," बोरमेंताल ने सोचा और श्वोंदेर, आँखें चमचमाता हुआ झुका और चला गया।

शारिकोव जूते के तलवे को चरमराता हुआ उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

प्रोफ़ेसर और बोरमेंताल अकेले रह गये। कुछ देर चुप रहकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने धीरे-से सिर हिलाया और बोले :

"क़सम से, यह एक बुरे सपने की तरह है। आप देखते हैं? क़सम से, डाक्टर, मैं इन दो हफ्तों में पिछले 14 साल की अपेक्षा बहुत ज़्यादा थक गया हूँ! क्या नमूना है!"

कहीं दूर काँच फूटा, फिर फुर्र से किसी औरत की दबी-सी चीख़ उड़ी और बुझ गयी। गलियारे के वालपेपर पर कोई प्रेत शक्ति सरसराती हुई जाँच के कमरे की ओर लपकी, वहाँ कुछ गिरा और तत्क्षण उड़ता हुआ उल्टा लौटा। दरवाज़े धड़ाम से खुलने-बन्द होने लगे और रसोई से दार्या पेत्रोव्ना की भारी चीख गूँजी। इसके बाद शारिकोव भौंका।

"हे भगवान, और क्या बला आ गयी!" दरवाज़े की ओर लपककर फ़िलीप

फ़िलीप्पोविच चिल्लाये।

"बिल्ली," बोरमेंताल भाँप गया और उनके पीछे-पीछे दौड़ पड़ा। वे गलियारे में प्रकोष्ठ की ओर दौड़ते उसमें घुसे, वहाँ से वह शौचालय और स्नानालय की ओर जानेवाले गलियारे में मुड़े। रसोई से ज़ीना दौड़ी-दौड़ी निकली और फ़िलीप फ़िलीप्पोविच से टकरा गयी।

"मैंने कितनी बार कहा है कि बिल्लियों को मत आने दो," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच गुस्से में चिल्लाये। "वह कहाँ है?! इवान आर्नोल्दोविच, भगवान के लिए मरीज़ों को जाकर शान्त कर दीजिये!"

"गुसलख़ाने में, मरदुआ गुसलखाने में घुसा हुआ है," हाँफते हुए ज़ीना चिल्लायी।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच गुसलख़ाने के दरवाज़े पर टूट पड़े पर वह खुल नहीं रहा था।

"फौरन खोलो!"

उत्तर में बन्द गुसलखाने की दीवारों पर कोई कूदने लगा, चिलमचियाँ गिरने लगीं, दरवाज़े के पीछे से शारिकोव की प्रचण्ड आवाज़ की दबी-सी चिंघाड़ हुई :

"जान से मार डालूँगा..."

पाइपों में पानी चलने की आवाज़ हुई और वह बहने लगा। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच गुसलख़ाने के दरवाज़े पर पूरा ज़ोर डालकर उसे धकेलने लगे। तमतमाये विकृत चेहरेवाली दार्या पेत्रोव्ना रसोई की दहलीज़ पर प्रकट हुई। फिर गुसलख़ाने के रसोई में खुलनेवाले रोशनदान के काँच पर कुलबुलाते कीड़े जैसी तरेर पड़ी और उसके दो टुकड़े झन्न से नीचे गिरी, उनके पीछे-पीछे गर्दन पर आसमानी फन्दा डालें दारोगा की तरह मोटा-ताजा बाघ जैसी धारियोंवाला भीमकाय बिल्ला धम्म से गिरा। वह सीधा मेज़ पर रखी लम्बोतरी प्लेट में गिरा, उसके दो टुकड़े करके प्लेट से फ़र्श पर जा पड़ा, फिर वह तीन टाँगों पर खड़ा हुआ चौथी को ऐसे हिलाया मानो नाच रहा हो और फट से पिछली सीढ़ियों के दरवाज़े की झिरी से छूमन्तर हो गया। झिरी चौड़ी हुई और बिल्ले की जगह रूमाल में लिपटी किसी एक बुढ़िया की सूरत प्रकट हुई। सफ़ेद बिन्दियों से ढका बुढ़िया का लहँगा रसोई में नमूदार हो गया। बुढ़िया ने तर्जनी और अँगूठे को जोड़कर अपने पोपले मुँह को पोंछा, सूजी और कँटीली आँखों से रसोई का मुआयना किया और कौतूहल के साथ बोली :

"हे प्रभु ईसा मसीह!"

सफ़ेद चेहरेवाले फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने रसोई पार करके बुढ़िया से गरजकर पूछा :

"आप को क्या चाहिये?"

"बोलनेवाले कुत्ते को देखने का जी कर रहा है," बुढ़िया चापलूसी भरे स्वर में बोली और उसने हवा में सलीब का निशान बनाया।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के चेहरे का रंग और भी उड़ गया, बुढ़िया के बिल्कुल पास

जाकर वह ज़ोर से फुफकारे :

"फौरन रसोई से निकल जाओ!"

बुढ़िया उल्टे पाँव दरवाज़े की ओर हटने लगी और बुरा मानकर बोली : "बड़ी बदतमीजी दिखा रहे हैं आप, प्रोफ़ेसर साहब।"

"मैं कहता हूँ निकलो यहाँ से!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच फिर से बोले और उनकी आँखें उल्लू की तरह गोल हो गयीं। बुढ़िया को निकालकर उन्होंने अपने हाथों से काले दरवाज़े को धड़ाक से बन्द किया, "दार्या पेत्रोव्ना, मैंने तो आपसे कहा था!"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच," दार्या पेत्रोव्ना अपनी मुट्ठियों को भींचकर बोली, "मैं क्या कर सकती हूँ? दिन भर लोगों का ताँता लगा रहता है, क्या सब काम छोड़ दूँ?"

गुसलखाने में पानी की दबी कलकल खौफनाक होती जा रही थी, पर आदम स्वर अब नहीं सुनायी दे रहा था। डाक्टर बोरमेंताल आ गया।

"इवान आर्नोल्दोविच, आपसे अनुरोध करता हूँ... हुं... वहाँ कितने मरीज हैं?"

"ग्यारह", बोरमेंताल ने उत्तर दिया।

"सबको जाने को कह दीजिये, आज मैं नहीं देखूँगा।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने उँगली मोड़कर दरवाज़ा खटखटाया और चिल्लाये : "फौरन बाहर आने का कष्ट करें! आपने दरवाज़ा क्यों बन्द किया है?"

"हू-हू!" शारिकोव की करुणा भरी बुझी-बुझी आवाज ने उत्तर दिया।

"क्या बोल रहे हैं?... पानी बन्द कर दीजिये, सुनायी नहीं दे रहा।"—"भौं! भौं!.."

"अरे, पानी तो बन्द कर दो! उसने किया क्या समझ में नहीं आता..." प्रचण्ड आवेश में फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये।

ज़ीना और दार्या पेत्रोव्ना दरवाज़ा खोले रसोई में से झाँक रही थीं। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने फिर से दरवाज़े को मुक्के से पीटा।

"यह रहा!" दार्या पेत्रोव्ना रसोई से चिल्लाई।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच उधर दौड़े। छत के पास रोशनदान के फूटे शीशे से टेलीग्राफ टेलीग्राफोविच की सूरत बाहर निकली। वह टेढ़ी थी, आँखें रुआँसी और नाक पर ताजे खून के लपलपाती खरोंच।

"आप क्या पागल हो गये?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा। "आप निकल क्यों नहीं रहे?"

शारिकोव खुद भयभीत और उखड़ा-उखड़ा-सा था। उसने मुड़कर उत्तर दिया : "मैं बन्द हो गया।"

"कुण्डी खोल लो। आपने क्या कभी कुण्डी नहीं देखी है?"

"मुरदई, खुल ही नहीं रही!" भयभीत स्वर में टेलीग्राफ़ ने उत्तर दिया।

"हे भगवान! इसने लैच दबा दिया!" ज़ीना हाथ नचाकर चिल्लायी।

"वहाँ एक बटन है!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच पानी के शोर के कारण ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कह रहे थे।

"उसे नीचे की ओर दबा दीजिये... नीचे दबाइये! नीचे!"

शारिकोव ग़ायब हो गया और एक मिनट बाद फिर से रोशनदान में प्रकट हुआ।

"साला कुछ भी तो नहीं दिखायी दे रहा," वह भयाक्रांत होकर रोशनदान से भौंका।

"अरे, बिजली जला लो। यह पागल हो गया है!"

"हरामी बिल्ले ने बल्ब फोड़ दिया," शारिकोव ने उत्तर दिया, "मैं उस हरामजादे की टाँगें पकड़ने लगा तो नल खुल गया पर अब मिल नहीं रहा।"

तीनों के तीनों हाथ नचाकर स्तब्ध खड़े रह गये।

कोई पाँच मिनट बाद बोरमेंताल, ज़ीना और दार्या पेत्रोव्ना नली की तरह मुड़े कालीन को अपने बैठने के अंगों से दरवाज़े के नीचे की झिरी को बन्द करने के लिए दबा रहे थे और फ़्योदोर दरबान दार्या पेत्रोव्ना की शादी के वक्त की मोमबत्ती को जलाकर लकड़ी की सीढ़ी से रोशनदान में घुस रहा था। बड़े-बड़े सलेटी चौखानेवाले उसके नितम्ब दिखायी पड़े और छेद में गायब हो गये।

"बू... हू-हू!" पानी के शोर में शारिकोव कुछ चिल्ला रहा था।

फ़्योदोर की आवाज़ सुनायी पड़ी :

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, खोलना ही पड़ेगा, बहकर निकलने दो, रसोई से खींच लेंगे।"

"खोलिये!" गुस्से में फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये।

तिकड़ी कालीन पर से उठी, गुसलखाने का दरवाज़ा हिला और झट से गलियारे में बाढ़ आ गयी। वहाँ वह तीन धाराओं में बँटकर सीधे-सामने के शौचालय में, दायें—रसोई में और बायें—प्रकोष्ठ में भरने लगी। कूदती, छप-छप करती ज़ीना ने उसका दरवाज़ा बन्द कर दिया। टखनों तक भरे पानी में चलता हुआ फ़्योदोर निकला, वह न जाने क्यों मुस्करा रहा था। वह मोमजामे की तरह सिर से पाँव तक भीगा हुआ था।

"बड़ी मुश्किल से बन्द किया, प्रेशर बहुत तेज़ है," उसने समझाया।

"वह कहाँ है? फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा और कोसकर एक टाँग उठायी।

"बाहर निकलते हुए डर रहा है," मूर्ख मुस्कान के साथ फ़्योदोर ने बताया।

"पिटाई करेंगे, पापाजी?" गुसलखाने से शारिकोव की रुआँसी आवाज़ आयी।

"बुद्धू कहीं का!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

ज़ीना और दार्या पेत्रोव्ना स्कर्टों को घुटनों तक उठाये, टाँगें उघाड़े तथा दरबान के साथ शारिकोव नंगे पाँव, पतलूनों के पायंचों को मोड़कर गीले कपड़ों से रसोई के फ़र्श पर छप-छप कर रहे थे तथा उन्हें गन्दी बाल्टियों और वाश बेसिन में निचोड़ रहे थे। लावारिस भट्ठी धू-धू जल रही थी। पानी दरवाज़े से होता हुआ लोहे के जीने से सीधा

तहखाने में गिर रहा था।

बोरमेंताल पंजों के बल प्रकोष्ठ के लकड़ी के फ़र्श पर गहरे पानी में खड़ा थोड़े-से, खुले दरवाज़े की झिरी से वार्ता कर रहा था।

"आज मरीजों को नहीं देखा जायेगा, प्रोफ़ेसर की तबीयत ठीक नहीं है। दरवाज़े के पास हट जाइये, हमारे यहाँ पाइप फट गया है..."

"पर कब देखेंगे?" दरवाज़े के पीछे से आवाज़ अड़ी हुई थी। "मुझे बस एक मिनट बात करनी है..."

"मुमकिन नहीं है," बोरमेंताल पंजों के बदले एड़ियों पर खड़ा हो गया, "प्रोफ़ेसर सो रहे हैं और पाइप फट गया कृपया कल आइये। ज़ीना! प्यारी! यहाँ पोंछिये, नहीं तो वह सामनेवाले जीने पर फैल जायेगा।"

"कपड़ों से काम नहीं चल रहा।"

"अभी मगों से उलीचकर निकाल देंगे," फ़्योदोर का उत्तर आया, "अभी।"

दरवाज़े की घण्टी बजे जा रही थी और बोरमेंताल अब पानी में तलवों पर खड़ा था।

"आपरेशन आख़िर कब होगा?" आवाज पीछा नहीं छोड़ रही थी और झिरी में घुसने की कोशिश कर रही थी।

"पाइप फट गया है..."

"मैं रबड़ के गैलोश पहनकर आ सकता हूँ..."

दरवाज़े के बाहर नीली-सी आकृतियाँ आती जा रही थी।

"नहीं-नहीं, कल आइयेगा।"

"मैंने वक़्त ले रखा है"

"कल आइयेगा। नल फट गया है।"

डाक्टर के पैरों के पास फ़्योदोर झील में छप-छप करता मग से पानी उलीच रहा था और खरोंचों से ढके चेहरेवाले शारिकोव ने नयी विधि सोच निकाली। उसने एक बड़े कपड़े को नलके की तरह मोड़ा और पेट के बल पानी में लेटकर उसे वापस शौचालय की ओर ले जाने लगा।

"तू क्या कर रहा है, निकम्मे, सारे घर में फैला रहा है?" दार्या पेत्रोव्ना नाराज़ हो रही थी। "वाश बेसिन में निचोड़।"

"अरे, वाश बेसिन क्या," हाथों से मटमैले पानी को पकड़ते हुए, शारिकोव कह रहा था, "वह बाहरवाले जीने पर निकल जायेगा।"

गलियारे से घसीटकर बैंच निकली और उसपर नीले धारीदार मोजें पहने फ़िलीप फ़िलीप्पौविच सन्तुलन करते खड़े हो गये।

"इवान आर्नोल्दोविच, आप किसी के लिए दरवाज़ा मत खोलिये। सोने के कमरे में जाइये, मैं आप को जूते दे दूँगा।"

"कोई बात नहीं, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, मामूली बात है।"

"गैलोश पहन लीजिये।"

"कोई बात नहीं। पैर वैसे भी भीग गये हैं।"

"हे भगवान!" परेशानी में फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले।

"कितना कमीना जानवर है!" अचानक शारिकोव की आवाज़ गूँजी और वह हाथ में शोरबे का कटोरा उठाये उकड़ूँ चलकर सामने आया।

बोरमेंताल ने धड़ाक से दरवाज़ा बन्द कर दिया, उससे न रहा गया और वह हँस पड़ा। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के नथुने फूल गये, चश्मा उनका चमका।

"आप किस की बात कर रहे हैं?" उन्होंने शारिकोव से पूछा। "हमें भी बताइये।"

"मैं बिल्ले की बात कर रहा हूँ। इतना कमीना है," नज़रें चुराते हुए शारिकोव ने उत्तर दिया।

"शारिकोव, पता है," साँस लेकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले, "आप जैसा धृष्ट जीव मैंने ज़िन्दगी में अब तक कभी नहीं देखा।"

बोरमेंताल ही-ही करने लगा।

"आप," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच आगे बोले, "बड़े ढीठ हैं। आपको यह कहने की हिम्मत कैसे हुई? आप ही ने यह करतूत की, ऊपर से अपने को ऐसी छूट दे रहे हैं... शैतान ही जाने कि यह क्या है!"

"शारिकोव, कृपया मुझे यह बताइये कि," डाक्टर बोरमेंताल बोला, "आप और कब तक बिल्लिय्रों का पीछा करते रहेंगे? शर्म आनी चाहिये! आख़िर कितनी बेहूदगी है! जंगली कहीं का!"

"मैं जंगली कहाँ हूँ," मुँह लटकाकर शारिकोव ने उत्तर दिया, "मैं बिल्कुल भी जंगली नहीं। उसे घर में देख नहीं सकता। हमेशा कुछ न कुछ चुराने की ताक में रहता है। दार्या का कीमा चटकर गया। मैं उसे सबक सिखाना चाहता था।"

"खुद आपको सबक सिखाने की ज़रूरत है!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले, "आप शीशे में अपनी सूरत तो देखिये।"

"आँख ही फोड़ दी होती," अपनी आँख को गीले गन्दे हाथ से छूकर शारिकोव उदास स्वर में बोला।

जब नमी से काला पड़ा लकड़ी का फ़र्श कुछ सूख गया, सभी शीशों पर हम्मामों जैसी भाप जम गयी और दरवाज़े की घण्टी बजना बन्द हो गयी, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच मुलायम चमड़े के लाल जूते पहने प्रकोष्ठ में खड़े थे।

"यह लो, फ़्योदोर, अपना इनाम।"

"आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।"

"फौरन जाकर कपड़े बदल लो। और हाँ, दार्या पेत्रोव्ना के पास जाकर वोदका पी लो।"

"आपका बहुत-बहुत शुक्रिया," फ़्योदोर हिचकिचाकर आगे बोला : "फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, एक बात और है। मैं माफ़ी माँगता हूँ, कहते हुए अच्छा नहीं लग रहा। 7 नम्बर क्वार्टर के शीशे के... नागरिक शारिकोव ने पत्थर मारे थे..."

"बिल्ली को?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा, उनका चेहरा घटा की तरह घिर आया।

"मुसीबत तो यही है कि क्वार्टर के मालिक हो। वह नालिश करने की धमकी दे रहा था।"

"शैतान की दुम!"

"शारिकोव उनकी बावर्चिन से लिपट रहा था और वह उसे भगाने लगे। बस, हो गयी तू-तू-मैं-मैं।"

"भगवान के लिए तुम मुझे ऐसी बातों के बारे में हमेशा फौरन बता दिया करो! कितने चाहिये?"

"डेढ़।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पचास-पचास कोपेक के तीन चमचमाते सिक्के निकाले और फ़्योदोर को थमा दिये।

"ऐसे हरामज़ादे को ऊपर से डेढ़ रूबल दो," पीछे से दबी आवाज सुनायी दी, "वह खुद..."

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच मुड़े, होंठ काटकर उन्होंने शारिकोव को धकेला और धकेलकर मरीज़ों से मिलने के कमरे में उसे ले जाकर उन्होंने बाहर से ताला लगा दिया। शारिकोव झट से दरवाज़ा पीटने लगा।

"बन्द करो!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच वास्तव में रुग्ण स्वर में चिल्लाये।

"हर चीज़ की हद होती है," फ़्योदोर ने अर्थपूर्ण टिप्पणी की, "ऐसे ढीठ को मैंने कभी नहीं देखा।"

न जाने कहाँ से बोरमेंताल प्रकट हो गया।

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, कृपया आप फिक्र न करें।"

चुस्त-दुरस्त ने कमरे का दरवाज़ा खोला और वहाँ से उसकी आवाज सुनायी पड़ी :

"आप क्या सोचते हैं? चंडूखाने में हैं क्या?"

"ठीक है..." फ़्योदोर बेबाक होकर बोला, "यह हुई न बात... कनपटी पर और पड़ना चाहिये..."

"आप भी कैसी बातें करते हैं, फ़्योदोर," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच दुखित स्वर में बोले।

"माफ़ कीजिये, आप पर दया आती है, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच।"

7

"नहीं, नहीं और नहीं!" बोरमेंताल हठी स्वर में बोला। "लगाने का कष्ट करें।"

"कसम से, क्यों पड़े हो पीछे," शारिकोव असन्तोष के साथ बड़बड़ाया।

"शुक्रिया, डाक्टर," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच स्नेह के साथ बोले, "मेरा तो जी कहते-कहते ऊब गया है।"

"जब तक नहीं लगा लेते तब तक नहीं खाने दूँगा। ज़ीना, शारिकोव से मेयोनेज ले लीजिये।"

"कैसे 'ले लीजिये'?" शारिकोव परेशान हो गया। "मैं अभी लगा लेता हूँ।"

बायें हाथ से उसने प्लेट को ज़ीना से छिपा लिया और दायें से कालर में नैपकिन का सिरा ठूँसा और वह नाई की दुकान में बाल कटवाते ग्राहक जैसा लगने लगा।

"कृपया काँटे का इस्तेमाल कीजिये," बोरमेंताल ने हिदायत दी।

शारिकोव ने गहरी साँस ली और गाढ़ी तरी में स्टर्जन मछली के टुकड़ों को पकड़ने लगा।

"मैं थोड़ी-सी वोदका और पी लूँ?" उसने प्रश्न के रूप में घोषणा की।

"आपके लिए काफ़ी नहीं?" बोरमेंताल ने पूछा।" पिछले समय वोदका पर आपका कुछ ज़्यादा ही ज़ोर रहता है।"

"आपका कुछ जाता है?" शारिकोव ने पूछा और घूरकर देखने लगा।

"आप बेवकूफी की बातें कर रहे हैं.." फ़िलीप फ़िलीप्पोविच सख़्ती से बोले पर बोरमेंताल ने उनकी बात काट दी।

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, चिन्ता न कीजिये, मैं खुद निबट लूँगा। आप, शारिकोव, बेवकूफ़ी की बातें कर रहे हैं और सबसे शर्मनाक बात तो यह है कि इतने दम्भ और आत्मविश्वास से कर रहे हैं। वोदका देने में मेरा बेशक कुछ नहीं जाता, ऊपर से वह मेरी नहीं बल्कि फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की है। बात यह है कि वह नुकसानदेह है। यह तो एक बात हुई, दूसरे वोदका के बिना भी आप बदतमीजी दिखाते हैं।"

बोरमेंताल ने बर्तनों की अलमारी के चिपकाकर जोड़े गये शीशों की ओर इशारा किया।

"ज़ीना, कृपया मुझे थोड़ी-सी मछली और देना," प्रोफ़ेसर बोले।

इस बीच शारिकोव ने सुराही की ओर हाथ बढ़ाया और बोरमेंताल को कनखियों से देखते हुए उसने अपना जाम भरा।

"दूसरों को भी डालनी चाहिये," बोरमेंताल बोला, "और ऐसे : पहले फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को, फिर मुझे और अपने को सबसे बाद में।"

शारिकोव के होंठों पर हल्की-सी व्यंग्य की मुस्कान हुई और उसने जामों में वोदका भर दी।

"आप के यहाँ सब परेड की तरह होता है," वह बोला, "नैपकिन–उधर, टाई-इधर, ऊपर से 'माफ़ कीजिये', 'कृपया', 'शुक्रिया' रटते रहते हैं, यह नहीं कि असली ढंग से करो। आप अपने लिए परेशानी खड़ी करते हैं, ज़ार के ज़माने की तरह रहते हैं।"

"यह 'असली ढंग' क्या होता है? हमें भी तो कृपया बताइये।"

शारिकोव ने कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि जाम उठाकर बोला :

"अच्छा, मेरी कामना है कि सब..."

"आपकी भी यही कामना करते हैं," किंचित व्यंग्य के साथ बोरमेंताल ने प्रतिक्रिया की।

शारिकोव ने जाम की अपने हलक में उँडेलकर खाली कर दिया, नाक-भौं सिकोड़ी, डबलरोटी के टुकड़े को नाक के पास ले जाकर सूँघा और फिर निगल लिया, इस प्रक्रिया के दौरान उसकी आँखों में पानी भर आया।

"तजुर्बा," अचानक फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बिना किसी संदर्भ के, मानो नींद में बोले।

बोरमेंताल ने हैरानी में उनकी ओर कनखियों से देखा।

"समझा नहीं..."

"तजुर्बा!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने फिर से कहा और अफ़सोस के साथ सिर हिलाया, "इस मामले में कुछ नहीं किया जा सकता–क्लीम।"

बोरमेंताल ने अत्यन्त कौतूहल के साथ फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की ओर घूरकर देखा :

"आपका यह अनुमान है, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच?"

"अनुमान की ज़रूरत नहीं, मुझे पक्का विश्वास है।"

"सच..." बोरमेंताल ने मुँह खोला परन्तु शारिकोव को कनखियों से देखकर चुप हो गया।

वह सन्देहजनक ढंग से भौंहे सिकोड़े बैठा था।

"Später*.." फ़िलीप फ़िलीप्पोविच धीरे से बोले।

"Gut,**" असिस्टेंट ने उत्तर दिया।

ज़ीना टर्की लायी। बोरमेंताल ने फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के गिलास में लाल अंगूरी डाली और शारिकोव से पूछा।

"मुझे नहीं चाहिये। इससे अच्छा मैं वोदका पी लूँगा।" उसके चेहरे पर रौनक आ गयी, माथे पर पसीना चमकने लगा, वह खुश नज़र आ रहा था। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का भी शराब के बाद मिजाज़ कुछ दुरुस्त हो गया। उनकी आँखें निर्मल हो गयीं, वह

---

* Später–बाद में। (जर्मन)–सं.

** Gut–ठीक है। (जर्मन)–सं.

कृपा की दृष्टि से शारिकोव की ओर देख रहे थे जिसका नैपकिन से फिरा काला सिर, मलाई पर बैठी मक्खी जैसा लग रहा था।

खा-पीकर बोरमेंताल में कुछ करने की इच्छा जाग उठी।

"अच्छा, यह बताइये कि आज शाम को हम क्या करें?" उसने शारिकोव वे पूछा।

वह आँखें मिमिचाता हुआ बोला :

"सर्कस चलेंगे, बेहतर यही होगा।"

"रोज़ सर्कस जाते हो," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच खुश-मिजाज़ी में बोले, "मेरे ख़्याल में काफ़ी बोरियत की चीज़ है। आप की जगह मैं कम-से-कम एक बार तो थियेटर चला जाता।"

"मैं थियेटर नहीं जाऊँगा," कुढ़कर शारिकोव बोला और उसने डकार ली।

"मेज़ पर बैठकर डकार लेने से दूसरों की भूख मारी जाती है," बोरमेंताल ने यंत्रवत् सूचना दी। "आप मुझे माफ़ कीजिये... आख़िर आप को थियेटर क्यों नहीं अच्छा लगता?"

शारिकोव ने खाली जाम को उठाकर उसे ऐसे देखा मानो दूरबीन देख रहा हो, कुछ सोचकर उसने होंठ आगे निकाले।

"अरे, बेकार का काम है... बोले जाते हैं, बोले जाते हैं... प्रतिक्रान्ति के सिवा कुछ नहीं।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने कुर्सी से पीठ टिकाकर ऐसा ठहाका लगाया कि उनके मुँह में सोने के खूँटे चमकने लगे। बोरमेंताल सिर्फ़ सिर हिलाकर रह गया।

"आप कुछ पढ़-वढ़ ही लेते," उसने सुझाव दिया, "नहीं तो, पता है..."

"पढ़ता हूँ, क्यों नहीं, पढ़ता हूँ..." शारिकोव ने उत्तर दिया और अचानक झपटकर उसने अपने लिए आधा गिलास वोदका भर ली।

"ज़ीना," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच आशंकित होकर चिल्लाये, "बेटी, वोदका हटा दो। अब ज़रूरत नहीं। तो आप क्या पढ़ते हैं?"

उनके दिमाग़ में अचानक यह दृश्य घूम गया : सुनसान द्वीप, नारियल का पेड़, जानवर की खाल लपेटे आदमी। "रोबिन्सन क्रूज़ो पढ़ने को देनी चाहिये..."

"अरे वही... क्या नाम है उसका... उस शैतान का.... हाँ काउत्स्की से एंगेल्स का पत्राचार।"

टर्की के मांस के साथ बोरमेंताल का काँटा रास्ते में रुक गया, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की शराब छलक गयी, और शारिकोव मौके का लाभ उठाकर वोदका गटक गया।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने मेज़ पर कोहनियाँ टिकायीं, शारिकोव पर नज़रें गड़ायीं और पूछा :

"हमें बताइये कि आपने जो पढ़ा है उसके बारे में आपका क्या विचार है?"

शारिकोव ने कन्धे उचकाकर कहा :

"अरे, मैं सहमत नहीं।"
"किस से? एंगेल्स से या काउत्स्की से?"
"दोनों से नहीं।"
"क्या बात कही है, कसम से... पर आप अपनी तरफ से क्या सुझाव देंगे?"
"अरे, सुझाव की क्या ज़रूरत?... लिखते हैं, लिखते जाते हैं...कांग्रेस... न जाने कौन से जर्मनी की बात करते हैं... सिर चकराने लगता है। अरे सब जमा करो और बाँट दो..."
"मैंने यही सोचा था," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच मेज़पोश पर हाथ पटककर बोले, "मेरा यही अनुमान था।"
"आप इसकी विधि भी जानते हैं?" बोरमेंतोल ने जिज्ञासा प्रकट की।
"अरे, विधि की क्या ज़रूरत," वोदका के बाद शारिकोव की ज़बान खुल गयी थी, उसने समझाया, "कोई मुश्किल काम नहीं। नहीं तो देखो : एक सात कमरों में रहता है, पतलूनें उसके पास 40 हैं और दूसरा घूरे के ढेर में खाना ढूँढता है।"
"सात कमरों के बारे में आपका इशारा शायद मेरी तरफ़ है?" इतराते हुए आँखें मिचमिचाकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा।
शारिकोव कन्धों में सिर छिपाकर चुप हो गया।
"चलो ठीक है, मैं बँटवारे के ख़िलाफ़ नहीं हूँ। डाक्टर, कल आपने कितने मरीजों को वापस भेजा?"
"39 को," बोरमेंताल ने फट से उत्तर दिया।
"हुं... 390 रूबल। चलो, तीनों मर्द आपस में बाँट लेते हैं। ज़ीना और दार्या पेत्रोव्ना को शामिल नहीं करेंगे—वे औरतें हैं। शारिकोव आपके हिस्से 130 रूबल पड़े। लाइये, निकालने का कष्ट करें।"
"यह क्या बात हुई," घबराकर शारिकोव ने पूछा, "किस बात के?"
"नल और बिल्ली के लिए," अचानक व्यंग्यपूर्ण संयम छोड़कर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये।
"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच," आशंकित होकर बोरमेंताल चीख पड़ा।
"ठहरिये। आपकी बदतमीजी के लिए जिसके फलस्वरूप मरीज़ों को वापस भेजना पड़ा। यह नहीं सहा जा सकता। वहशी की तरह घर भर में कूदता है, नल की टोंटियाँ उखाड़ता फिरता है। मदाम पोलासूखेर की बिल्ली को किसने मारा? किसने..."
"आपने, शारिकोव, परसों जीने पर एक औरत को काटा था," बोरमेंताल भी टूट पड़ा।
"आप खड़े हैं..." फ़िलीप फ़िलीप्पोविच गुर्राये।
"उसने मुझे झापड़ मारा था," शारिकोव रिरियाया, "मेरा मुँह सरकारी नहीं है!"
"क्योंकि आपने उसकी छाती को नोचा था," शराब के गिलास को लुढ़काकर

बोरमेंताल चिल्लाया, "आप खड़े हैं..."
"आप विकास के सबसे नीचे सोपान पर खड़े हैं," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ज़ोर से चिल्लाये, "आप अभी निरूपित होते, बौद्धिक दृष्टि से अविकसित जीव हैं, आपके सभी काम जानवरों वाले हैं और आप अपने को विश्वविद्यालय में पढ़े दो लोगों के सामने सरासर बेहयाई से, व्यापक प्रश्नों पर कोई सलाह देने की और कैसे सब कुछ बाँटा जाये इस के बारे में व्यापक मूर्खता दिखाने की छूट दे रहे हैं... ऊपर से आपने दन्त मंजन खा डाला..."
"परसों की बात है," बोरमेंताल ने पुष्टि की।
"देखा न," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच गरज रहे थे, "नाक पर लिख लो, हाँ, आपने क्यों उस पर से जस्ते का मलहम पोंछ डाला?—कि आपको चुपचाप सुनना चाहिये कि आपसे क्या कहा जा रहा है। कुछ सीखकर समाज का थोड़ा-बहुत काम चलाऊ सदस्य बनने की कोशिश करनी चाहिये। अच्छा, बताइये कि किस निगोड़े ने आपको यह क़िताब दी।"
"आप के लिए सब निगोड़े हैं," दो तरफ़ से हमलों के कारण घबराया हुआ शारिकोव बोला।
"मुझे अन्दाज़ा है," गुस्से में लाल होकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये।
"तो, क्या, हाँ, श्वोंदेर ने दी थी। वह निगोड़ा नहीं है... ताकि मैं विकसित होऊँ..."
"मैं देख रहा हूँ कि काउत्स्की के बाद आपका कैसे विकास हो रहा है," पीले पड़कर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ज़ोर से चीखे और दीवार पर लगे बटन को दबाया। "आज की घटना इसका ज्वलन्त प्रमाण है। ज़ीना!"
"ज़ीना!" बोरमेंताल चिल्लाया।
"ज़ीना!" भयाक्रांत शारिकोव चीखा।
ज़ीना दौड़ी-दौड़ी आयी, उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था।
"ज़ीना, वहाँ मरीज़ों के कमरें में...वहीं है?"
"हाँ," शारिकोव ने विनम्रता से उत्तर दिया," तूतिया की तरह हरी।"
"हरी क़िताब है..."
"झट से जलाने को कहेंगे," हताश होकर शारिकोव चिल्लाया, "वह सरकारी है, लाइब्रेरी की!"
"पत्राचार है नाम उसका एंगेल्स और उस शैतान का.... उसे भट्ठी में झोंक दो!"
ज़ीना दौड़ी-दौड़ी चली गयी।
"कसम से, मैं इस श्वोंदेर को पहली ही डाल पर लटकाकर फा सी दे दैता," टर्की के डैने में ज़ोर से दाँत गड़ाते हुए फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले, "बिल्डिंग में नासूर की तरह यह कमीना बैठा है। यही नहीं, ऊपर से वह अख़बारों में तरह-तरह के लेखों में

लोगों पर कीचड़ उछालता है...''

शारिकोव द्वेष और व्यंग्य के साथ प्रोफ़ेसर को कनखियों से देखने लगा। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने भी तिरछी नज़र से उसका ज़वाब दिया और चुप हो गये।

''लगता है घर में कलह होकर रहेगी,'' अचानक भविष्यदृष्टा की तरह बोरमेंताल ने सोचा।

ज़ीना गोल ट्रे में केक और काफ़ी की केतली लायी।

''मैं नहीं खाऊँगा,'' अचानक शारिकोव धमकी भरे स्वर में घृणा के साथ बोला।

''आपको कोई नहीं दे रहा है। तमीज से पेश आइये। डाक्टर, आप लीजिये।''

खाना मौनपूर्वक सम्पन्न हुआ।

शारिकोव ने जेब में से मुसी सिगरेट निकाली और धुआँ उड़ाने लगा। काफ़ी पीकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने अपनी आदत के अनुसार ऊँची टेक पर पीठ टिकायी और मेज़ पर पड़े अख़बार की ओर हाथ बढ़ाया।

''डाक्टर, कृपया इसके साथ सर्कस चले जाइये। पर भगवान के लिए यह देख लीजिये कि उसमें कहीं बिल्लियों का खेल तो नहीं है।''

''ऐसे कमीने जानवरों को सर्कस में फटकने कैसे देते हैं,'' शारिकोव सिर हिलाकर असन्तोष के साथ बोला।

''पता नहीं और भी कैसे-कैसों को आने देते हैं,'' फ़िलीप फ़िलीप्पोविच दोहरे अर्थ में बोले, ''सर्कस में आज क्या है?''

''हुं... हाथी और बाजीगरी का कमाल।''

''अच्छा। तो हाथियों के बारे में आपकी क्या राय है, प्रिय शारिकोव?'' फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने शक के अन्दाज़ में शारिकोव से पूछा।

वह बुरा मान गया।

''मैं क्या समझता नहीं? बिल्ली की बात दूसरी है। हाथी लाभदायक जानवर होते हैं,'' शारिकोव ने उत्तर दिया।

''चलो, बहुत अच्छी बात है। अगर लाभदायक हैं तो जाकर उन्हें देख आइये। इवान आर्नोल्दोविच का कहना मानना। कैण्टीन में उनके साथ कोई बहस मत करना! इवान आर्नोल्दोविच, आपसे मेरा विनम्र अनुरोध है कि शारिकोव को बियर मत खरीद के दीजियेगा।''

दस मिनट बाद इवान आर्नोल्दोविच और शारिकोव, बत्तख जैसी चोंचवाली टोपी और हल्के ओवरकोट को पहनकर चले गये। घर में शान्ति छा गयी। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच अपने अध्ययन-कक्ष में चले गये। उन्होंने हरे रंग के भारी शेडवाले टेबुल लैम्प को जलाया, इससे विशाल अध्ययन-कक्ष में शान्ति और चैन का राज्य हो गया तथा चहलकदमी करने लगे। बड़ी देर तक सिगार की नोक हल्की-सी हरी ज्योति के साथ जलती रही। अपने हाथों को प्रोफ़ेसर ने पतलून की जेबों में डाल लिया और कोई

विकट विचार उनके उड़े बालोंवाले विद्वान ललाट को सता रहा था। वह होंठ पुचकारते, दाँत मींचकर 'नील नदी के पावन तटों की ओर...' गुनगुनाने लगते, कुछ बड़बड़ाते। अन्तत : सिगार को राखदानी में रखकर वह काँच ही काँच की अलमारी के पास गये और सारे अध्ययन-कक्ष को छत पर लगे तीन अत्यन्त शक्तिशाली बल्बों के प्रकाश से आलोकित कर दिया। अलमारी के तीसरे खाने से फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पतला-सा ज़ार निकाला और भौंहे सिकोड़कर बिजली की रोशनी में उसका मुआयना करने लगे। गाढ़े पारदर्शी घोल में, पेंदी को छुए बिना शारिक के भेजे की गहराइयों से निकाला गया छोटा-सा, सफ़ेद-सा लौंदा तैर रहा था। कन्धे उचकाते हुए, होंठ मरोड़ते हुए और हुँकारते हुए फिलीप फिलोप्पोविच आँखों से टटोल रहे थे मानो सफ़ेद न डूबनेवाले लौंदे में प्रेचीस्तेन्का के मकान के जीवन को अस्त-व्यस्त करनेवाली आश्चर्यजनक घटनाओं के कारण की जड़ को देखना चाहते हो।

काफ़ी सम्भव है कि प्रकाण्ड विद्वान ने उसे देख लिया हो। कम-से-कम पीयूष-ग्रन्थि को जी भर देखने के बाद उन्होंने ज़ार को अलमारी में रखकर ताला लगा दिया, चाबी को वास्कट की जेब में रखा और सिर की कन्धों में छिपाकर तथा हाथों को अन्दर तक कोट की जेबों में ठूँसकर सोफ़े के चमड़े पर ढह गये। बड़ी देर तक दूसरे सिगार को जलाने की कोशिश में उन्होंने उसका सिरा बिल्कुल चबा ही डाला और अन्तत : पूर्ण एकान्त में, हरे रंग में रंगे सफ़ेद बालोंवाले डाक्टर फाउस्टस की तरह बोले :

''कसम से, लगता है कि मैं कर ही डालूँगा।''

किसी ने उसको उत्तर नहीं दिया। घर में सभी प्रकार का शोर थम चुका था। जैसा कि सुविदित है रात के ग्यारह बजे ओबुखोव गली में आवाजाही बन्द हो जाती है कभी-कभार भारी पर्दों की उस ओर से दूरी पर देर से जाते राहगीर के क़दमों की आहट सुनायी पड़ती और विलीन हो जाती। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की उँगलियों से दबकर जेबी घड़ी की मधुर घण्टियों से अध्ययन-कक्ष मुखरित हो रहा था... प्रोफ़ेसर बेसब्री से डा. बोरमेंताल और शारिकोव के सर्कस से लौटने का इन्तज़ार कर रहे थे।

8

पता नहीं कि फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने क्या करने का फैसला किया था। अगले सप्ताह उन्होंने कोई ख़ास क़दम नहीं उठाया और शायद उन्हीं की निष्क्रियता के कारण घर का जीवन घटनाओं से लबालब भर गया।

नल और बिल्ले के किस्से के कोई छह दिन बाद बिल्डिंग कमेटी से शारिकोव के पास औरत निकला तरुण आया और उसे दस्तावेज सौंपे जिन्हें शारिकोव ने फौरन जेब में छिपा लिया और इसके फौरन बाद डा. बोरमेंताल को आवाज दी।

''बोरमेंताल!''

"नहीं, कृपा करके आप इज्जत के साथ पूरा लेकर मुझे बुलाइये!" बोरमेंताल बोला, उसका चेहरा तमतमा रहा था।

इसका उल्लेख किया जाना चाहिये कि इन छह दिनों में सर्जन अपने शिष्य से आठ बार लड़ बैठा था, इसलिए ओबुखोव गली के कमरों में घुटन भरा वातावरण था।

"तो मुझे भी पूरा नाम लेकर इज़्ज़त के साथ बुलाया करो!" शारिकोव का यह उत्तर बिल्कुल उचित ही तो था।

"नहीं!" दरवाज़े से फ़िलीप फ़िलीप्पोविच गरजे। "ऐसे नाम से अपने घर में मैं आपको नहीं बुलाने दूँगा। अगर आप चाहते हैं कि आपको बेतकल्लुफी से 'शारिकोव' कहकर न पुकारा जाये तो मैं और डाक्टर बोरमेंताल आपको 'शारिकोव साहब' कहकर बुलाया करेंगे।"

"मैं साहब नहीं हूँ, साहब सब पेरिस में बैठे हैं!" शारिकोव भौंका।

"श्वोंदेर की करतूत है!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये। "ठीक है, मैं इस कमीने को देख लूँगा। जब तक मैं यहाँ हूँ, तब तक मेरे घर में साहबों के सिवा कोई नहीं आ सकता! अन्यथा, या मैं यहाँ से चला जाऊँगा या आप, शायद आप ही को जाना पड़ेगा। आज मैं अख़बारों में विज्ञापन दे दूँगा, और यक़ीन कीजिये, मैं आपके लिए कमरा ढूँढ़ के रहूँगा।"

"हाँ-हाँ, मैं इतना बुद्धू हूँ कि यहाँ से चला जाऊँ," शारिकोव ने दो टूक जवाब दिया।

"क्या?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा और उनका चेहरा इतना बिगड़ गया कि बोरमेंताल ने लपककर स्नेह और चिन्ता के साथ उनकी आस्तीन थाम ली।

"मिस्टर शारिकोव, आप इतनी बदतमीजी मत कीजिये!" बोरमेंताल ज़ोर से चीखकर बोला। शारिकोव पीछे हटा और उसने जेब से तीन काग़ज़ निकाले : हरा, पीला और सफ़ेद और उन पर उँगलियाँ ठोंकते हुए बोला :

"देखो। आवास सहकारिता का सदस्य हूँ और मुझे प्रेओब्राझेन्स्की के यहाँ क्वार्टर नं. पाँच में सोलह वर्ग गज जगह रहने को मिलनी ही है," शारिकोव ने कुछ सोचकर जोड़ा, जिसे बोरमेंताल के दिमाग़ ने यंत्रवत नयी बात के रूप में दर्ज किया : "तकलीफ फरमाइये।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने होंठ काटा और उसे दाँतों में दबाते हुए असावधानी से बोले :

"क़सम से, मैं इस श्वोंदेर को आख़िर में गोली मार ही दूँगा।"

शारिकोव ने अत्यन्त ध्यान और उग्रता के साथ इन शब्दों को लिया, उसकी आँखों से यह साफ़ जाहिर होता था।

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, vorsichtig*..." बोरमेंताल ने आगाह किया।

"हर चीज़ की हद होती है... अगर ऐसा कमीनापन दिखाया है!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच रूसी में चिल्लाये। "याद रखिये, शारिकोव... साहब, कि अगर आपने एक बार और धृष्टता दिखायी तो मैं आपको दोपहर का खाना, यही नहीं अपने घर में आपका दाना-पानी ही बन्द

*vorsichtig–सावधानी से। (जर्मन)–सं.

कर दूँगा। सोलह गज–बहुत बढ़िया, पर यह मेंढक पर्चा मुझे आपका पेट भरने को मजबूर नहीं कर सकता!"

यह सुनते ही शारिकोव ने घबराकर मुँह खोला।

"खाने के बिना मैं नहीं रह सकता," वह बुदबुदाया, "मैं कैसे पेट पालूँगा?"

"तब तमीज से पेश आइये!" दोनों चिकित्सक समवेत स्वर में बोले।

शारिकोव काफ़ी दब गया था और उस दिन किसी का कुछ बुरा नहीं किया, सिवाय अपना : बोरमेंताल की अल्प अनुपस्थिति का लाभ उठाकर उसने, उसके उस्तरे को हथिया लिया और अपने कपोल पर ऐसे फेरा कि फ़िलीप फ़िलीप्पोविच और डा. बोरमेंताल को उसके घाव पर टाँके लगाने पड़े जिसके कारण शारिकोव बड़ी देर तक आँसू बहाता हुआ रोने लगा।

अगली रात को प्रोफ़ेसर के अध्ययन-कक्ष के हरियाले झुटपुटे में दो जने बैठे थे–खुद फ़िलीप फ़िलीप्पोविच और उनका विश्वासपात्र अनुचर बोरमेंताल। घर नींद में डूबा था। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच अपना आसमानी ड्रेसिंग गाउन और लाल स्लीपर पहने हुए थे, बोरमेंताल क़मीज़ के ऊपर गेलिस चढ़ाये बैठा था। चिकित्सकों के बीच गोल मेज़ पर मोटी एल्बम के पास ब्राण्डी की बोतल, कटे नीबू की प्लेट और सिगारों का डिब्बा रखे थे। वैज्ञानिक कमरे को धुएँ से भरकर बड़े ज़ोर-शोर से हाल की ताजी घटना पर विचार कर रहे थे : उस शाम को शारिकोव ने फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के अध्ययन-कक्ष से पेपरवेट के नीचे रखे बीस रूबल पर हाथ साफ़ किया, घर से गायब हो गया, देर से लौटा, नशे में धुत्त। यही नहीं। उसके साथ दो अजनबी भी आये जो जीने पर शोर मचाने लगे और शारिकोव के यहाँ रात बिताने की इच्छा व्यक्त करने लगे। उपरोक्त व्यक्ति केवल तभी गये जब इस घटना के समय बनियान के ऊपर ओवरकोट पहने उपस्थित फ़्योदोर ने थाने नम्बर पैंतालीस को फ़ोन किया। जैसे ही फ़्योदोर ने चोंगा रखा वैसे ही ये व्यक्ति रफूचक्कर हो गये। पता नहीं कि इन व्यक्तियों के जाने के बाद प्रकोष्ठ से क़ीमती पत्थर की राखदानी, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की ऊदबिलाव के समूर की टोपी और उन्हीं की छड़ी कहाँ चली गयीं, उपरोक्त छड़ी पर सुनहरे अक्षरों में खुदा था : "प्रिय और आदरणीय फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को कृतज्ञ सहयोगियों की ओर से..." आगे रोमन अंकों में लिखा था XXV।

"ये कौन थे?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच मुट्ठियाँ भींचे शारिकोव के सीने पर चढ़ गये।

वह लड़खड़ाता और वहाँ टँगे ओवरकोटों से चिपटता बड़बड़ा रहा था कि इन व्यक्तियों को वह नहीं जानता पर वे किसी कुतिया की औलाद नहीं बल्कि भले मानस हैं।

"सबसे बड़े आश्चर्य की बात है कि वे तो दोनों नशे में धुत्त हैं... पर आख़िर हो कैसे गये?" खूँटी पर उस स्थान को ताक़ते हुए फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को बड़ी हैरानी हो रही थी, जहाँ कभी जयन्ती की यादगार टँगी रहती थी।

"स्पेशलिस्ट हैं," जेब में रूबल डालकर सोने के लिए जाते हुए फ़्योदोर ने समझाया।

बीस रूबल के मामले में शारिकोव साफ़ मुकर गया और उसने कुछ ऐसा अस्पष्ट-सा कहा कि घर में वही अकेला तो नहीं रहता।

"अहा, तो हो सकता है कि डा. बोरमेंताल ने पैसों पर हाथ साफ़ किया हो?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने शान्त परन्तु खौफनाक अन्दाज़ में पूछा।

शारिकोव ने लड़खड़ाकर अपनी बिल्कुल मदहोश आँखें खोलीं और अपना अनुमान व्यक्त किया :

"हो सकता है ज़ीन्का के लिए हों..."

"क्या कहा?..." प्रेत की तरह दरवाज़े की चौखट में प्रकट हुई ज़ीना चिल्लायी, वह सीने पर खुले ब्लाउज को हाथ से ढके हुई थी। "इसे कैसे हिम्मत हुई..."

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की गर्दन लाल हो गयी।

"ज़ीना प्यारी, शान्त हो जाओ," उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए वह बोले, "चिन्ता मत करो, हम सब ठीक कर देंगे।"

ज़ीना होंठ फैलाकर फौरन रो पड़ी और हँसली पर रखा उसका हाथ कूदने लगा।

"ज़ीना, तुम्हें शर्म नहीं आ रही? कौन ऐसा सोच रहा है? थू, कितनी शर्म की बात है!" सकपकाकर बोरमेंताल बोला।

"ज़ीना, तुम तो बिल्कुल बुद्धू हो, क़सम से," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने मुँह खोला।

पर तभी ज़ीना का रोना अपने आप ही रुक गया और सब के सब चुप हो गये। शारिकोव की तबीयत बिगड़ गयी। दीवार से सिर टकराकर उसके मुँह से ध्वनि निकली—कुछ-कुछ "इ" या "ये" जैसी, नहीं "ऐ-ऐ ऽऽ!" जैसी कहना ठीक होगा। उसका चेहरा फक पड़ गया और जबड़ा ऐंठकर हिलने लगा।

"बालटी दो इस निगोड़े को, जाँच के कमरेवाली!"

और सब बीमार शारिकोव की तीमारदारी के लिए दौड़धूप करने लगे। जब उसे सोने के लिए ले जाया जा रहा था, वह, बोरमेंताल की बाँहों में घिरा बड़े स्नेह और लय के साथ गालियाँ दे रहा था, जिनका वह मुश्किल से उच्चारण कर पा रहा था।

यह क़िस्सा रात के एक बजे थे, पर अध्ययन-कक्ष में ब्रांडी और नीबू के बल पर दोनों जने जागे हुए थे। उन्होंने इतना धूम्रपान कर डाला था कि धुआँ घनी परतों में धीरे-धीरे तैर रहा था, वह इतना घना था कि हिलोरें तक न ले रहा था।

डाक्टर बोरमेंताल के चेहरे पर पीलापा छाया था, आँखों में असीम दृढ़ता थी, उसने सींक की तरह पतली घुंडीवाले जाम का उठाया।

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच", भावातिरेक में वह चिहुँका, "मैं यह कभी नहीं भूलूँगा कि कैसे मैं एक भूख के मारे छात्र के रूप में आपके पास आया और आपने मुझे अपने विभाग में शरण दी। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, विश्वास कीजिए, आप मेरे लिए प्रोफ़ेसर, गुरू से भी बढ़कर हैं... मेरा कोटि-कोटि धन्यवाद स्वीकार करें... अपने को चूमने की मुझे अनुमति दीजिए, प्रिय फ़िजीप फ़िलीप्पोविच।"

"हाँ, मेरे अज़ीज़..." सकपकाकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच मिमियाये और उसे गले लगाने के लिये उठे। बोरमेंताल ने उनका अलिंगन किया और उनकी घनी, तम्बाकू के धुएँ की

तेज़ बू वाली मूँछों का चुम्बन लिया।

"क़सम से, फ़िलीप फ़िली..."

"आपने मुझे द्रवित कर दिया, इतना द्रवित... आपका धन्यवाद," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच कहने लगे, "अज़ीज मेरे, कभी-कभी आपरेशन के दौरान मैं आप पर चिल्लाता हूँ। आप कृपया मुझे बूढ़े को माफ़ कर दें। सच देखा जाये तो मैं इतना एकाकी हूँ... सेविलिया से ग्रेनाडा तक..."

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आपको ऐसा कहते हुए शर्म नहीं आती?.." जोशीला बोरमेंताल सच्चे दिल से बोला। "अगर आप नहीं चाहते कि मैं बुरा मानूँ तो कृपया फिर कभी ऐसी बातें नहीं कीजियेगा..."

"अरे, बहुत-बहुत शुक्रिया आपका... नील नदी के पावन तटों की ओर... शुक्रिया... मुझे भी एक योग्य डाक्टर के रूप में आपसे प्रेम हो गया है।"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, मैं आपसे कहता हूँ!..." आवेश में बोरमेंताल बोला और लपककर उसने गलियारे को जानेवाला दरवाज़ा बन्द कर दिया। लौटकर वह फुसफुसाकर बोलने लगा, "आख़िर यही एक चारा बचा है। बेशक, मैं आपको सलाह देने का साहस नहीं कर सकता पर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, अपने को तो देखिये, आप बिल्कुल बेहाल हो गये हैं, आख़िर इस तरह तो आगे काम नहीं किया जा सकता!"

"बिल्कुल सम्भव नहीं," उसाँस लेकर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पुष्टि की।

"देख लीजिये, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती," बोरमेंताल फुसफुसा रहा था, "पिछली बार आपने कहा था कि आप को मेरी वजह से डर लगता है, काश आपको पता होता, प्रिय प्रोफ़ेसर, कि आपकी बात ने मेरे दिल को कितना छू डाला। पर आख़िर मैं बच्चा तो हूँ नहीं, खुद समझता हूँ कि इसके कितने भयंकर परिणाम हो सकते हैं। पर मुझे पक्का विश्वास है कि इसके सिवा कोई चारा नहीं।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच उठे और उसकी ओर हाथों को हिलाते हुए कहने लगे :

"प्रलोभन मत दीजिये, उसका नाम तक मत लीजिये," धुआँ भरे बालों को हिलाकर प्रोफ़ेसर कमरे में चहलक़दमी कने लगे, "मैं सुनने तक को राजी नहीं हूँ। आप समझते हैं कि अगर पकड़े गये तो परिणाम क्या होगा। आख़िर हम 'सामाजिक उत्पत्ति को ध्यान में रखकर'—बरी नहीं हो सकते, चाहे पहले ही अपराध किया हो। आख़िर आपकी सामाजिक उत्पत्ति उचित नहीं है न, प्यारे?"

"कहाँ से आयी! बाप मेरा विलनो में ज़ार की अदालत का मुलाज़िम था," ब्राण्डी को खाली करते हुए बोरमेंताल खिन्न स्वर में बोला।

"आप ही देख लीजिये। यह तो बहुत खराब विरासत है। इससे बुरी की तो कल्पना तक नहीं की जा सकती। खैर, भूल माफ़ हो, मेरी तो इससे भी ख़राब है। बाप मेरा कैथीड्रल का पादरी था। शुक्रिया उसका। सेविलिया से ग्रेनाडा तक... रातों के शान्त अन्धकार में... देखा, शैतान की दुम को!"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आप विश्वप्रसिद्ध हस्ती हैं और किसी, ऐसा कहने के लिये माफ़ कीजिये, कुतिया की औलाद के लिये... भला वे आपको हाथ तक लगा सकते हैं!"

"इसीलिये तो मैं ऐसा नहीं करूँगा," सोच में डूबे हुए फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने काँच की अलमारी के सामने रुककर उसे निहारते हुए आपत्ति की।

"पर क्यों?"

"क्योंकि आप विश्वप्रसिद्ध हस्ती नहीं हैं।"

"मेरी क्या औक़ात..."

"इसीलिये तो। असफलता की हालत में सहयोगी को अकेला छोड़कर खुद विश्वप्रसिद्ध का दामन थाम लूँ, नहीं माफ़ कीजिये... मैं मास्को में पढ़ा छात्र हूँ, न कि शारिकोव।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने गर्व के साथ कन्धे उठाये और फ्रांस के प्राचीन बादशाह जैसे लगने लगे।

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आह..." खेद के साथ बोरमेंताल बोला, "मतलब आगे क्या? अब आप इन्तज़ार करेंगे कि कब यह गुण्डा आदमी बनेगा?"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने हाथ के इशारे से उसे टोका, अपने लिये ब्रांडी डाली, उसे पीकर नींबू चूसा और बोले :

"इवान आर्नोल्दोविच, आपका क्या ख़्याल है, मुझे एनाटामी और फ़िज़ियोलाजी का, या यूँ कहें, मानव के मस्तिष्क की बनावट और क्रिया की कुछ समझ है? आपका क्या विचार है?"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आप मुझसे पूछते हैं?" बोरमेंताल ने भावुक होकर पूछा।

"अच्छा ठीक है। कूट विनम्रता को परे रखते हैं। मैं भी सोचता हूँ कि इस क्षेत्र में मैं मास्को में सबसे गया-बीता नहीं हूँ।"

"पर मेरा ख़्याल है कि न केवल मास्को में बल्कि लन्दन और आक्सफ़ोर्ड में भी आपका नम्बर अव्वल है!" जोश में आकर बोरमेंताल ने उनकी बात काट दी।

"अच्छा चलो, मान लेते हैं। हाँ, तो भावी प्रोफ़ेसर बोरमेंताल, सुन लीजिये, इसमें किसी को सफलता नहीं मिलेगी। निर्विवाद बात है। पूछने की ज़रूरत भी नहीं। मेरा हवाला दे दीजियेगा, कहियेगा, प्रेओब्राझेन्स्की ने कहा था। Finita क्लीम!" अचानक फ़िलीप फ़िलीप्पोविच विजय भाव के साथ बोले। "बोरमेंताल सुनिये, आप मेरे अनुयाइयों में पहले हैं, इसके अलावा आप मेरे दोस्त भी हैं जैसाकि आज मुझे यक़ीन हो गया। तो मैं आपको एक दोस्त के नाते ही एक चीज़ बता रहा हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि आप मेरी बदनामी नहीं करेंगे। वह यह कि इस आपरेशन में बुड्ढा गधा प्रेओब्राझेन्स्की तीसरे वर्ष के छात्र की तरह फेल हो गया। हाँ, यह सच है कि आविष्कार हो गया, पर आप खुद जानते हैं—कैसा," यहाँ फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने अफ़सोस के साथ दोनों हाथों से खिड़की के पर्दे की ओर इशारा किया, ज़ाहिर था उनका तात्पर्य मास्को से था, "पर इवान आर्नोल्दोविच, यह ध्यान में रखिये कि इस आविष्कार का एकमात्र परिणाम यह होगा कि अब यह शारिकोव हम सब पर सवार

होगा, यहाँ," प्रेओब्राझेन्स्की ने अपनी सीधी और बूढ़ी गर्दन पर हाथ मारा, "फिक्र मत कीजिये! अगर यहाँ कोई," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच मौज में बोलते जा रहे थे, "यहाँ लिटाकर मेरी धुनाई करता, तो कसम से, मैं उसे पचास रूबल देता! सेविलिया से ग्रेनाडा तक... लानत हो मुझ पर... आख़िर मैंने भेजों से पीयूष-ग्रन्थियाँ कुरेदकर निकालने पर पाँच साल खपा दिये. .. आप जानते हैं कि मैंने कितना काम किया—कल्पना करना कठिन है। और अब सवाल उठता है—आख़िर किस चीज़ की ख़ातिर? एक दिन प्यारे-से कुत्ते को ऐसे नीच हैवान में बदलने के लिये कि रोंगटे खड़े हो जायें।"

बड़ी विलक्षण बात है!"

"मैं आप से पूरी तरह सहमत हूँ। देख लीजिये डाक्टर, इसका क्या परिणाम होता है जब शोधकर्ता प्रकृति के समानान्तर, टटोल-टटोलकर चलने की जगह नाक की सीध में चलता है और रहस्योद्घाटन करता है : लो, पाओ शारिकोव को और चाटो उसे।"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, अगर स्पिनोज़ा का भेजा होता?"

"हाँ!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाकर बोले, "हाँ! अगर बेचारा कुत्ता मेरी छुरी से न मरा, आपने तो देखा ही था कि यह किस दर्जे का आपरेशन होता है। संक्षेप में कहा जाये तो मैंने, अर्थात फ़िलीप प्रेओब्राझेन्स्की ने ज़िन्दगी में इससे कठिन काम कभी नहीं किया। स्पिनोजा या ऐसे किसी और बन्दे की पीयूष-ग्रन्थि को प्रत्यारोपित करके कुत्ते को किसी बड़ी ऊँची हस्ती में बदला जा सकता है। पर किसलिये? सवाल यही उठता है। कृपया मुझे बताइये कि कृत्रिम रूप से स्पिनोजा जैसों को बनाने की क्या ज़रूरत जब कोई भी लुगाई उसे जब चाहे पैदा कर सकती है। आख़िर खोल्मोगोरी में मदाम लोमोनोसोवा ने अपने उस प्रसिद्ध बेटे* को पैदा किया था! डाक्टर, मानवजाति खुद इसका ख़्याल रखती है, अपने विकास की प्रक्रिया के दौरान वह तरह-तरह के नीच-कमीनों की विपुल राशि में से हर साल पृथ्वी की शोभा बढ़ानेवाली दर्जनों मेधाओं को जन्म देती है। अब आप डाक्टर, समझे कि क्यों मैंने शारिकोव के मेडिकल रिकार्ड में आपके निष्कर्ष का खण्डन किया था। मेरे आविष्कार का दाम, लानत हो उस पर, जिसकी तारीफ़ों के पुल आप बाँधते हैं, फूटी कौड़ी भी नहीं... आप बहस मत कीजिये, इवान आर्नोल्दोविच, मैं तो आख़िर समझ चुका हूँ। मैं कभी कोरी बातें नहीं करता, आप तो यह बहुत अच्छी तरह जानते हैं। सैद्धान्तिक दृष्टि से यह रोचक है। अच्छा, ठीक है! फ़िज़ियोलाजिस्ट वाहवाही करेंगे। मास्को पागल हो रहा है... पर व्यावहारिक परिणाम क्या मिलेगा? अब आपके सामने क्या है?" प्रेओब्राझेन्स्की ने उँगली से जाँच के कमरे की ओर इशारा किया जहाँ शारिकोव सो रहा था।

"ग़ज़ब का कमीना।"

"पर वह कौन है? क्लीम, क्लीम," प्रोफ़ेसर चिल्लाये, "क्लीम चुगुनोव (बोरमेंताल ने मुँह खोला), हाँ-हाँ, वही : दो बार सजायाफ़्ता, शराबखोरी, 'सबका बँटवारा करो', टोपी और

* मि. लोमोनोसोव (1711-1765)—प्रथम रूसी विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक।—सं.

बीस रूबल ग़ायब हो गये (तभी फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को भेंटस्वरूप मिली छड़ी की याद आ गयी और उनका चेहरा लाल हो गया)–हरामी सुअर... खैर, इस छड़ी को मैं ढूँढ लूँगा। संक्षेप में पीयूष-ग्रन्थि एक बन्द कक्ष की तरह है जो किसी ठेठ आदमी के रूप को निर्धारित करता है। किसी ठेठ आदमी का! सेविलिया से ग्रेनाडा तक..." आँखों को ज़ोर-ज़ोर से मटकाते हुए फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चीख रहे थे, "न कि सामान्य मानवीय रूप। यह मस्तिष्क का लघु रूप होता है। मुझे इसकी बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं, भाड़ में जाये। मैं किसी दूसरी चीज़ के बारे में, सुजननिकी के बारे में, मानव की नस्ल सुधारने के बारे में सोचता था, पर जवानी का राज़ खोल लिया। क्या आप सोचते हैं कि मैं पैसे की खातिर ये आपरेशन करता हूँ? आख़िर मैं तो एक वैज्ञानिक हूँ।"

आप महान वैज्ञानिक हैं, हाँ-हाँ!" ब्रांडी गटकते हुए बोरमेंताल बोला। उसकी आँखों में खून उतर आया।

"मैं दो साल पहले पीयूष-ग्रन्थि से पहली बार यौन हार्मोन का सत पाने के बाद एक छोटा-सा प्रयोग करना चाहता था। और इसके स्थान पर क्या हो गया? हे भगवान! पीयूष-ग्रन्थि में ये हार्मोन, हे प्रभु.... डाक्टर, मेरे सामने निराशा ही निराशा मुँह बाये खड़ी है, कसम से, मुझे कुछ नहीं सूझ रहा।"

बोरमेंताल अचानक आस्तीनें चढ़ाकर, आँखों को भेंगा करके बोला :

"तब गुरुजी, मगर आप नहीं चाहते तो मैं खुद जोखिम उठाकर उसे संखिया खिला दूँगा। कोई परवाह नहीं कि पापा अदालत के मुलाजिम थे। आख़िर को यह आपके द्वारा रचित प्रायोगिक जीव ही तो है।"

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच निःस्पन्द होकर आरामकुर्सी पर ढह गये और बोले :

"नहीं, मैं आपको यह नहीं करने दूँगा, मेरे प्यारे बच्चे। मैं साठ साल का हूँ, मैं तुम्हें सलाह दे सकता हूँ। कभी भी अपराध मत कीजिये चाहे किसी के विरुद्ध ही वह लक्षित हो। बुढ़ापे तक हाथ साफ़ रखो।"

"फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, पर सोचिये तो, अगर श्वोंदिर ने इसे पट्टी पढ़ा दी तो उसका अंजाम क्या होगा?! हे भगवान, मैं अभी समझा कि यह शारिकोव क्या बन सकता है!"

"अहा! अब समझ गये? पर मैं आपरेशन के दस दिन बाद ही समझ गया था। पर सुनिये, श्वोंदिर ही सबसे बड़ा उल्लू है। वह नहीं समझता कि शारिकोव मेरे लिये इतना नहीं जितना कि उसके लिये ख़तरनाक है। आजकल वह उसे हर तरह से मेरे ख़िलाफ़ उकसाने की कोशिश कर रहा है, वह नहीं समझता कि अगर किसी ने शारिकोव को श्वोदेर के ख़िलाफ़ उकसा दिया तो उसकी धज्जियाँ ही उड़ जायेंगी।"

"क्यों नहीं! बिल्लियों की गत करता है! कुत्ते के दिलवाला आदमी।"

"अरे नहीं-नहीं," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले, "डाक्टर, आप सबसे बड़ी भूल कर रहे हैं, भगवान के लिये कुत्ते को कोई दोष न दें। बिल्लियाँ–यह थोड़े दिनों की बात है... यह अनुशासन और दो-तीन हफ़्ते का मामला है। मेरी बात पर यक़ीन कीजिये। बस, कोई एक

महीने में वह उन पर झपटना छोड़ देगा।"

"पर अभी क्यों नहीं?"

"इवान आर्नोल्दोविच, यह तो सहज बात है... आप आख़िर पूछ क्या रहे हैं? आख़िर पीयूष-ग्रन्थि हवा में तो लटकी नहीं। वह तो आख़िर कुत्ते के भेजे में रोपी गयी है, उसे पनपने का मौका दीजिये। आजकल शारिकोव कुत्ते की बची-खुची आदतों को व्यक्त कर रहा है और उसके कामों में बिल्लियों के प्रति व्यवहार ही सर्वश्रेष्ठ है। समझिये तो, ख़ौफनाक बात तो यही है कि उसका अब कुत्ते का नहीं आदमी का दिल है। और वह भी कुदरत का बनाया हुआ सबसे बुरा!"

बोरमेंताल का आक्रोश चरम पर था, उसने अपनी पतली पर बलिष्ठ भुजाओं की मुट्ठियों को भींचा और बोला।

"इसमें कोई सन्देह नहीं। मैं उसे जान से मार डालूँगा!"

"मैं तुम्हें इसकी मनाही करता हूँ!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने दो टूक उत्तर दिया।

"पर सोचिये तो..."

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने अचानक चौकस होकर उँगली उठायी :

"ठहरिये... मुझे किसी के क़दमों की आहट सुनायी दी।"

दोनों कान लगाकर सुनने लगे पर गलियारे में शान्ति थी।

"वहम हुआ था," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बोले और ज़ोर-ज़ोर से जर्मन में बोलने लगे। उनकी बातों में कई बार 'जरायम' शब्द गूँजा।

"एक मिनट", अचानक बोरमेंताल चौकस होकर दरवाज़े की ओर बढ़ा। क़दमों की आहट साफ़-साफ़ सुनायी दे रही थी और वह अध्ययन-कक्ष के पास आयी। इसके अलावा किसी के बुदबुदाने की आवाज आ रही थी। बोरमेंताल ने दरवाज़ा खोला और चौंककर पीछे हटा। आरामकुर्सी पर बैठे फ़िलीप फ़िलीप्पोविच स्तब्ध रह गये।

गलियारे के रोशन चतुर्भुज में सिर्फ़ नाइटी पहने दार्या पेत्रोव्ना खड़ी थी, उसका मरने-मारने को उतारू चेहरा तमतमाया हुआ था। गदरायी, डर के मारे बिल्कुल नग्न लगी देह से प्रोफ़ेसर और डाक्टर की आँखें चौंधिया गयीं। अपनी बलिष्ठ भुजाओं से दार्या पेत्रोव्ना कुछ खींचकर ला रही थी और यह 'कुछ' बैठ-बैठकर उड़ रहा था और उसकी छोटी-छोटी काले रोयों से ढकी टाँगें फ़र्श पर घिसटती गुंथ रही थीं। यह 'कुछ', निःसन्देह, शारिकोव ही था। वह बिल्कुल हक्का-बक्का, अभी तक नशे में था, उसने सिर्फ़ कुर्ता पहन रखा था।

भव्य और निर्वस्त्र दार्या पेत्रोव्ना ने शारिकोव को आलू की बोरी की तरह पटका और ये शब्द कहे :

"देख लीजिये, प्रोफ़ेसर साहब, हमारे अतिथि टेलीफ़ेन टेलीफ़ोनोविच को। मेरी तो शादी हो चुकी है पर ज़ीना–कुँवारी कन्या है। अच्छा हुआ कि मेरी आँख खुल गयी।"

इस बात को समाप्त करके दार्या पेत्रोव्ना को लाज आ गयी और हाय करके उसने हाथों से सीना ढाँपा और सिर पर पाँव रखकर दौड़ पड़ी।

"दार्या पेत्रोव्ना, भगवान के लिए माफ़ कर दीजिये," होश में आकर लाल-सुर्ख फ़िलीप फ़िलीप्पोविच पीछे से चिल्लाये।

बोरमेंताल ने क़मीज़ की आस्तीनें ऊपर तक चढ़ा लीं और शारिकोव की ओर बढ़ा। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच उसकी आँखों को देखकर सिहर गये।

"डाक्टर, आप क्या कर रहे हैं! मैं इसकी मनाही करता हूँ..."

बोरमेंताल ने दायें हाथ से शारिकोव का गरेबान पकड़ा और उसे ऐसे झिंझोड़ा कि आगे से कुर्ता फट गया।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बीच-बचाव करने के लिए दौड़े और क्षीणकाय शारिकोव को सर्जन के मजबूत हाथों के चँगुल से छुटाने लगे।

"आपको मार-पीट करने का अधिकार नहीं है!" ज़मीन पर बैठा अधमरा शारिकोव चिल्लाने लगा, उसका नशा उतर रहा था।

"डाक्टर!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच चिल्लाये।

बोरमेंताल कुछ होश में आया और उसने शारिकोव को छोड़ दिया, छुटते ही वह तत्काल चिल्लपों मचाने लगा।

"अच्छा, ठीक है," बोरमेंताल फुफकारा, "कल सुबह तक रुक जाते हैं। जब इसका नशा उतर जायेगा तो मैं इसे ऐसा तमाशा दिखाऊँगा कि याद रखेगा।"

फिर वह शारिकोव की बगलों में हाथ डालकर उसे घसीटता हुआ मरीज़ों के कमरे में सुलाने के लिए ले गया।

शारिकोव ने अड़ने की कोशिश की पर पाँव उसका कहना नहीं मान रहे थे।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने टाँगें चौड़ी कीं जिसके फलस्वरूप ड्रेसिंग गाउन के आसमानी पल्ले खुल गये, गलियारे की छत पर लगी बत्ती की ओर हाथ और आँखें उठायीं और बोले :

"तो ये बातें हैं..."

9

डाक्टर बोरमेंताल अगली सुबह शारिकोव को तमाशा नहीं दिखा सका जिसका उसने वादा किया था, इसका कारण यह था कि टेलीग्राफ टेलीग्राफोविच फरार हो गया। बोरमेंताल को भयंकर खीज हुई, उसने अपने को गधा कहा क्योंकि बाहर के दरवाज़े की चाबी उसने नहीं छिपायी, चिल्लाने लगा कि इस भूल के लिए उसे माफ़ नहीं किया जा सकता और इस कामना के साथ चुप हुआ कि शारिकोव बस की चपेट में आ जाये। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बालों में उँगलियाँ गड़ाये अपने अध्ययन-कक्ष में बैठे कह रहे थे :

"सोच सकता हूँ कि सड़क पर क्या नज़ारा होगा... कर सकता हूँ कल्पना।। सेविलिया से ग्रेनाडा तक, हे भगवान।"

"वह बिल्डिंग कमेटी में भी हो सकता है," कहकर बोरमेंताल पागलों की तरह भाग

गया।

बिल्डिंग कमेटी में चेयरमैन श्वेंदिर से उसकी इतनी कहा-सुनी हो गयी कि वह खामोव्नी इलाके की लोक अदालत के नाम अर्जी लिखने बैठ गया, साथ-साथ वह चिल्ला रहा था कि उसने प्रोफ़ेसर प्रेओब्राझेन्स्की के पालतू की चौकीदारी का ठेका नहीं ले रखा, ऊपर से, कल की बात है कि यह पालतू टेलीग्राफ धोखेबाज निकला, जिसने बिल्डिंग कमेटी से कोआपरेटिव दुकान में मानो किताबें खरीदने के लिए 7 रूबल उधार लिये थे।

फ़्योदोर ने, जिसे इस मामले में 3 रूबल की कमाई हुई सारे मकान को ऊपर से लेकर नीचे तक छान मारा। कहीं भी शारिकोव का नामोनिशान तक न मिला।

सिर्फ़ एक बात प्रकाश में आयी—कि पौ फटते ही टेलीग्राफ टोपी, मफलर और ओवरकोट पहनकर साथ में अलमारी से शराब की बोतल, डाक्टर बोरमेंताल के दस्ताने और अपने सारे दस्तावेज लेकर रवाना हुआ। दार्या पेत्रोव्ना और ज़ीना बिना छिपाये अपनी असीम खुशी और इस आशा को व्यक्त कर रही थी कि शारिकोव फिर कभी नहीं लौटेगा। इसकी पूर्वबेला में शारिकोव ने दार्या पेत्रोव्ना से साढ़े तीन रूबल उधार लिये थे।

"अब भुगतो बेवकूफी का फल!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच मुक्के दिखा-दिखाकर गुर्रा रहे थे। दिन भर टेलीफ़ोन की घण्टियाँ बजती रहीं, अगले दिन भी बजती रहीं। डाक्टरों ने ढेरों मरीजों को देखा और तीसरे दिन यह सवाल मुँह बाकर खड़ा हो गया कि पुलिस को सूचित करना ज़रूरी है जिसे शारिकोव को मास्को के भँवर में ढूँढ़ना चाहिये।

जैसे ही मुँह से "पुलिस" शब्द निकला वैसे ही ओबुखोव की पुनीत शान्ति को ट्रक के चीत्कार ने भंग कर दिया और घर की खिड़कियाँ काँप उठीं। फिर ज़ोर की घण्टी गूँजी और टेलीग्राफ टेलीग्राफोविच ने बड़े रुआब से प्रवेश किया, पूर्ण सन्नाटे में टोपी उतारी, ओवरकोट को खूँटी पर टाँगा और नये रूप में हाज़िर हुआ। उसने किसी की उतरी चमड़े की जैकेट, चमड़े की ही घिसी पतलून और घुटनों तक फीतोंवाले अंग्रेजी बूट पहन रखे थे। तत्क्षण प्रकोष्ठ में बिल्लियों की तीव्रतम बू फैल गयी। प्रेओब्राझेन्स्की और बोरमेंताल फौरन मानो कमान पाकर, छाती पर हाथ बाँधे, चौखट का सहारा लेकर टेलीग्राफ टेलीग्राफोविच की प्रथम सूचनाओं की प्रतीक्षा करने लगे। उसने कड़े बालों को सहलाया, खंखारकर गला साफ़ और ऐसे नज़रें दौड़ायीं कि यह स्पष्ट हो गया : टेलीग्राफ अपनी झेंप को बेहयाई से छिपाना चाहता है।

"मैं, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच," अन्ततः वह बोला, "अफसर बन गया हूँ।"

दोनों चिकित्सकों के कण्ठों से अनिश्चित-सी ध्वनि निकली और वे हिले। प्रेओब्राझेन्स्की की सुध पहले लौटी, हाथ बढ़ाकर वह बोले :

"काग़ज़ दिखाइये।"

उसपर टाइप हुआ था : 'इस पत्र का वाहक टेलीग्राफ टेलीग्राफोविच शारिकोव वास्तव में मास्को नगरपालिका के नगर की आवारा जानवरों (बिल्लियों इत्यादि) से सफाई के

उपविभाग का निदेशक है।"

"ठीक," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के मुँह से निकला, "किसने आपको दिलवायी यह नौकरी? ख़ैर, मैं खुद अनुमान लगा सकता हूँ।"

"हाँ, श्वोंदिर ने," शारिकोव ने उत्तर दिया।

"यह पूछने की अनुमति दीजिये कि आपसे यह इतनी बदबू क्यों आ रही है?"

शारिकोव ने चिन्तित होकर जैकेट को सूँघा।

"तो क्या हुआ... जाहिर है : काम की बू है। कल बिल्लियों को खूब-खूब मारा था..."

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने सिहरकर बोरमेंताल की ओर देखा। उसकी आँखें दुनाली की तरह शारिकोव पर तनी थीं। बिना किसी प्रस्तावना के वह शारिकोव की ओर बढ़ा और आराम से विश्वास के साथ उसका टेंटुआ दबोच लिया।

"बचाओ!" शारिकोव चिंचियाया, उसके चेहरे का रंग उड़ गया।

"डाक्टर!"

"कुछ भी बुरा नहीं करूँगा, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, आप चिन्ता मत करें," बोरमेंताल लौह स्वर में बोला और चिल्लाया : "ज़ीना, दार्या पेत्रोव्ना!"

वे प्रकोष्ठ में प्रकट हुईं।

"मेरे साथ-साथ दोहराइये," बोरमेंताल ने कहा और शारिकोव के गले को समूर के ओवरकोट में हल्के-से दबाया, "मुझे माफ़ कर दीजिये..."

"ठीक है, दोहरा रहा हूँ," फटी आवाज़ में शारिकोव बोला, वह बिल्कुल स्तब्ध रह गया था, अचानक उसने फेफड़ों में हवा भरी और "बचाओ" चिल्लाने की कोशिश की पर आवाज नहीं निकली और उसका सिर समूर के ओवरकोट में लिपट गया।

"डाक्टर, छोड़ दीजिये, आपसे अनुरोध करता हूँ।"

शारिकोव ने सिर हिलाकर सूचित किया कि वह हार मान रहा है और दोहरायेगा।

"...आदरणीय दार्या पेत्रोव्ना और ज़ीना, मुझे माफ़ कर दीजिये..."

"उफ, ज़ीना..." हवा को खींचते हुए शारिकोव भर्रायी आवाज़ में दोहरा रहा था "...इसके लिए कि मैंने..."

"रात को नशे में घिनौनी हरकत की।"

"हरकत की..."

"फिर कभी ऐसी हरक़त नहीं करूँगा..."

"नहीं करूँ..."

"छोड़ दीजिये, छोड़ दीजिये इसे, इवान आर्नोल्दोविच," दोनों औरतें एकसाथ मिन्नत करने लगीं, "आप इसका गला घोंट देंगे।"

बोरमेंताल ने शारिकोव को मुक्त कर दिया और पूछा :

"ट्रक आपका इन्तज़ार कर रहा है?"

"नहीं," टेलीग्राफ आदर के साथ बोला, "वह मुझे छोड़ने आया है।"

"ज़ीना, ट्रकवाले को जाने दो। अब यह बात ध्यान में रखिये : आप फिर से फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के घर में लौटे हैं?"

"मैं और कहाँ जाऊँ?" नज़रें चुराते हुए शारिकोव ने सहमकर उत्तर दिया।

"ठीक। आपकी चूँ तक नहीं सुनायी देनी चाहिये। अन्यथा हर भद्दी हरकत के लिए आपका मेरे से वास्ता पड़ेगा। समझे?"

"समझ गया!"

शारिकोव के ख़िलाफ़ हिंसात्मक कार्यवाही के दौरान फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बिलकुल चुप रहे। वह किन्चित् दयनीय मुद्रा में दरवाज़े की चौखट से सटे, फ़र्श पर नज़रें गड़ाये नाखून कुतर रहे थे। फिर अचानक उन्होंने अपनी नज़रें उठायीं ओर धीरे-से यंत्रवत् पूछा :"

"आप उनका... बिल्लियों का क्या करते हैं?"

"ओवरकोट बनाने के काम आयेंगी," शारिकोव ने उत्तर दिया, "मज़दूरों को बेचने का लिए उन्हें गिलहरियों की तरह रंगा जायेगा।"

तदोपरान्त घर में शान्ति छा गयी जो दो दिन तक जारी रही। टेलीग्राफ टेलीग्राफोविच सुबह ट्रक में बैठकर चला जाता, शाम को लौटता, फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की संगत में चुपचाप खाना खाता।

इसके बावजूद कि बोरमेंताल और शारिकोव एक ही—मरीजों से मिलने के कमरे में—सोते थे, वे एक-दूसरें से बातें नहीं करते थे, पहले बोरमेंताल को ही ऊब होने लगी।

कोई दो दिन बाद घर में एक दुबली-सी, आँखों का मेकअप किये, क्रीम कलर की स्टाकिंग पहने एक युवती आयी और घर की भव्यता को देखकर बहुत झेंप गयी। पुराना-घिसा ओवरकोट पहने वह शारिकोव के पीछे-पीछे चल रही थी और प्रकोष्ठ में प्रोफ़ेसर से टकरा गयी।

वह चौंककर रुक गये और आँखें मिचमिचाकर उन्होंने पूछा :

"आप कौन हैं?"

"मैं उसके साथ शादी कर रहा हूँ, यह हमारी टाइपिस्ट है, मेरे साथ रहेगी। बोरमेंताल से कमरा खाली करवाना पड़ेगा। उसके पास अपना क्वार्टर है," शारिकोव ने चिढ़कर कहा।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने शर्म से लाल हुई युवती को पलकें झपकाते हुए देखा, कुछ सोचा और बड़ी शिष्टता से उससे बोले :

"मैं आपसे एक मिनट के लिए मेरे अध्ययन-कक्ष में चलने का अनुरोध करूँगा।"

"मैं भी इसके साथ चलूँगा," झट से शक भरी आवाज़ में शारिकोव बोला।

तभी न जाने कहाँ से बोरमेंताल आ टपका।

"माफ़ कीजिये," वह बोला, "प्रोफ़ेसर मदाम से बात करेंगे और हम यहीं रहेंगे।"

"मैं नहीं चाहता," शर्म से दहकती युवती और फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के पीछे जाने की कोशिश करते हुए शारिकोव विद्वेष के साथ बोला।

"नहीं, माफ़ कीजिये," बोरमेंताल ने शारिकोव की कलाई थाम ली और वे जाँच के कमरे

में चले गये।

कोई पाँच मिनट तक अध्ययन-कक्ष से कुछ सुनायी नहीं दिया, पर फिर अचानक युवती की दबी-दबी सुबकियाँ सुनायी पड़ीं।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच मेज़ के पास खड़े थे और युवती लेसवाले मैले रूमाल में मुँह गड़ाये रो रही थी।

"उस कमीने ने कहा था कि लड़ाई में घायल हुआ था," युवती रो रही थी।

"झूठ बोलता है," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने दृढ़ता से उत्तर दिया। सिर हिलाकर वह आगे बोले : "मुझे सचमुच में आप पर दया आती है, पर ओहदे की वजह से जो मिला उसका दामन थामना तो ठीक नहीं है... बेटी, यह तो आख़िर अच्छी बात नहीं... यह लो..." उन्होंने मेज़ की दराज खोली और तीस-तीस के तीन नोट निकाले।

"मैं ज़हर खा लूँगी," युवती रो रही थी, "कैण्टीन में रोज़ सड़ा मांस मिलता है... धमकी भी देता है... कहता है कि वह लाल सेना का कमाण्डर है.... कहता है कि मेरे साथ आलीशान मकान में रहेगा.... रोज़ अनानास खाया करेंगे... कहता है मैं मन का भला हूँ, बस बिल्लियों से नफ़रत करता हूँ। उसने याददाश्त के लिए मेरी अँगूठी ले ली है..."

"छोड़ो भी, मन का भला है... सेविलया से ग्रेनाडा तक," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बुदबुदा रहे थे, "सब ठीक हो जायेगा—आप अभी इतनी जवान हैं..."

"क्या सचमुच उसी फाटक के पासवाला?"

"लो, पैसे ले लो, जब उधार मिल रहे हैं," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ज़ोर से बोले।

फिर दरवाज़े के कपाट खुले और फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के कहने पर बोरमेंताल शारिकोव को अन्दर लाया। वह आँखें चुरा रहा था और उसके सिर के बाल ब्रुश की तरह खड़े थे।

"कमीने," अपनी आँसू भरी आँखों को चमकाकर युवती बोली, उसका मेकअप बिगड़ गया था, नाक पर पाउडर की परत जगह-जगह घुलकर बह गयी थी।

"आपके माथे पर यह निशान किस चीज़ का है? कृपया मदाम को बताने का कष्ट करें," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने चोरी से पूछा।

शारिकोव ने सब कुछ दाँव पर लगा दिया :

"मैं कोल्चाक की फ़ौज से लड़ते समय घायल हुआ था," वह भौंका।

युवती उठी और ज़ोर से रोकर चल पड़ी।

"मत रोइये!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच पीछे से चिल्लाये। "ज़रा रुकिये, अँगूठी लाइये," शारिकोव सम्बोधित करके वे बोले।

उसने चुपचाप पन्ने के नगवाली अँगूठी उतारकर दे दी।

"ठीक है," अचानक वह गुस्से में बोला, "तू मुझे याद रखेगी। कल मैं तेरी छँटनी कर दूँगा।"

"इससे मत डरिये," बोरमेंताल पीछे से चिल्लाया, "मैं इसे कुछ नहीं करने दूँगा।" उसने मुड़कर शारकोव को ऐसी नज़र से देखा कि वह पीछे को हटा और उसका सिर अलमारी

से टकरा गया।

"उसका नाम क्या है?" बोरमेंताल ने उससे पूछा। "नाम!" वह अचानक जनून में आकर चिल्लाया।

"वास्नेत्सोवा," नज़रों से रफूचक्कर होने का रास्ता खोजते हुए शारिकोव ने उत्तर दिया।

"रोज़", शारिकोव की जैकेट का कालर पकड़कर बोरमेंताल बोला, "खुद सफाई विभाग में पता किया करूँगा—वास्नेत्सोवा की छँटनी तो नहीं की गयी। और अगर आपने.... अगर पता चला कि हो गयी छँटनी तो मैं... अपने हाथों से आपको फौरन गोली मार दूँगा। देखके, शारिकोव—मैं साफ़-साफ़ कहे देता हूँ!"

शारिकोव टकटकी बाँधे बोरमेंताल की नाक को घूर रहा था।

"हमारे पास भी रिवाल्वरों की कमी नहीं..." टेलीग्राफ बुदबुदाया, पर बहुत धीरे-से और अचानक मौका देखकर चम्पत हो गया।

"देखके!" पीछे से बोरमेंताल चिल्लाया।

रात को और अगले दिन की दोपहर तक सन्नाटा ऐसे छाया रहा जैसे तेज़ तूफ़ान से पहले घटाएँ छा जाती हैं। सब चुप थे। पर अगले दिन जब टेलीग्राफ टेलीग्राफोविच जिसे सुबह को अनिष्ट का पूर्वाभास-सा हुआ, खिन्न-सा ट्रक में बैठकर काम पर चला गया, प्रोफ़ेसर प्रेओब्राझेन्स्की की अपने एक भूतपूर्व मरीज, फ़ौजी वर्दीधारी मोटे, कद्दावर आदमी से बेवक्त भेंट हुई। वह प्रोफ़ेसर से मिलने की हठ कर रहा था और अन्ततः सफल हो गया। अध्ययन-कक्ष में प्रवेश करके उसने शिष्टाचारवश बूटों की एड़ियाँ खटकायीं।

"आपके क्या फिर से दर्द उठने लगा है?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा, वह काफ़ी झुके-झुके-से नज़र आ रहे थे। "कृपया बैठिये।"

"थैंक्यू। नहीं, प्रोफ़ेसर साहब," मेज़ के कोने पर टोपी रखते हुए आगंतुक ने उत्तर दिया," आपका बड़ा आभारी हूँ... हु... फ़िलीप फ़िलीप्पोविच, मैं बिल्कुल दूसरे काम से आपके पास आया हूँ... आपके प्रति आसीन आदर की वजह से... हु... सावधान करने के लिये। निरी बकवास है। वह, बस नीच ही है..." मरीज़ ने बैग खोलकर एक काग़ज़ निकाला, "अच्छा हुआ कि सीधे मेरे पास पहुँचा..." फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने चश्मे के ऊपर बिना कमानी की ऐनक को नाक पर बिठाया और पढ़ने लगे। वह बड़ी देर तक बुदबुदाते रहे, हर क्षण उनका चेहरा बदलता जा रहा था। "...और बिल्डिंग कमेटी के चेयरमैन, कामरेड श्वोंदेर की भी हत्या की धमकी दी, जो इसका प्रमाण है कि उसके पास अग्नेयास्त्र है। प्रतिक्रान्तिकारी भाषण देता है और स्पष्ट मेंशेविक की तरह अपनी सामाजिक-चाकरनी ज़ीना को एंगेल्स तक की किताब को भट्ठी में झोंकने का हुक्म दिया, उसका असिस्टेंट इवान बोरमेन्ताल आर्नोल्दोविच गुप्त रूप से, नाम दर्ज कराये बिना उसके घर में रहता है। सफाई उपविभाग के निदेशक टे.टे. शारिकोव के हस्ताक्षरों को सत्यापित करता हूँ। बिल्डिंग कमेटी का चैयरमैन श्वोंदेर, सचिव पेस्त्रूखिन।"

"आप मुझे इसे अपने पास रखने की अनुमति देंगे?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा,

उनके चेहरे पर चकत्ते फैल रहे थे। "माफ़ कीजिये, शायद मामले पर कार्रवायी करने के लिये आपको इसकी ज़रूरत होगी न?"

"प्रोफ़ेसर साहब," मरीज बड़ा बुरा मान गया, "आप सचमुच हमसे इतनी नफरत करते हैं। मैं..." और वह टर्की मुर्ग की तरह मुँह फुलाने लगा।

"मेरे अज़ीज़, माफ़ कीजिये!" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बुदबुदाये, "क्षमा कर दीजिये, मैं सचमुच आपको ठेस नहीं पहुँचाना चाहता था। अजीज मेरे, नाराज मत होओ, उसने मुझे इतना सता डाला है..."

"मैं सोच सकता हूँ," मरीज अपनी ठेस को बिल्कुल भूलकर बोला, "कितना नीच-कमीना है! उसको देखने की इच्छा होती है। मास्को में आपके बारे में कैसी-कैसी बातें हो रही हैं..."

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने बस निराशा में हाथ झाड़ दिया। तभी मरीज ने ध्यान दिया कि प्रोफ़ेसर की कमर झुक गयी और मानो पिछले कुछ दिनों में उनके बाल सफ़ेद हो गये।

जैसा कि आम तौर पर होता है, अपराध पककर पत्थर की तरह गिरा। टेलीग्राफ टेलीग्राफोविच अनिष्ट की कोंचती अनुभूति को लिये ट्रक पर सवार होकर घर लौटा। फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की आवाज़ ने उसे जाँच के कमरे में बुलाया। हैरानी के साथ शारिकोव वहाँ गया और उसने अस्पष्ट-से भय के साथ बोरमेंताल के चेहरे पर तनी दुनाली की और फिर फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की ओर देखा। असिस्टेण्ट के गिर्द बादल मँडरा रहा था और सिगरेट को थामे उसका बायाँ हाथ स्त्रियों की जाँच की कुर्सी के चमचमाते हत्थे पर हल्का-सा फड़क रहा था।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच बड़ी भीषण शान्ति के साथ बोले :

"अपनी चीज़ें समेटिये : पतलून, ओवरकोट, सब कुछ जो आपको चाहिए और–घर से निकल जाइये!"

"यह कैसे हो सकता है?" शारिकोव को बड़ी हैरानी हुई।

"घर से निकल जाइये, आज ही," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच अपने नाखूनों को घूरते हुए फिर से नीरस स्वर में बोले।

टेलीग्राफ टेलीग्राफोविच पर कोई भूत-प्रेत चढ़ गया; शायद मौत उसकी घात लगाये बैठी थी और दुर्भाग्य उसकी पीठ पीछे खड़ा था। वह स्वयं अवश्यम्भाविता के गर्त्त में कूद गया और गुस्से में भौंकने लगा :

"आपने समझ क्या रखा है! सोचते हो कि मैं आपसे निपट नहीं सकता? यहाँ सोलह गज मेरे हैं और मैं कहीं नहीं जानेवाला।"

"मकान खाली कर दो," बड़े प्रेम से फ़िलीप फ़िलीप्पोविच फुसफुसाये।

शारिकोव ने खुद अपनी मौत को न्योता दिया। उसने बायाँ हाथ उठाया और जगह-जगह से कटा बिल्लियों की भयंकर बदबूवाला ठेंगा दिखाया। फिर उसने दायें हाथ से ख़तरनाक बोरमेंताल के लिये जेब से रिवाल्वर निकाला। बोरमेंताल की सिगरेट टूटे तारे की तरह गिर

गयी और कुछ सेकेण्ड बाद भयभीत फ़िलीप फ़िलीप्पोविच टूटे काँच पर फुदकते हुए अलमारी और कोच के बीच आगे-पीछे दौड़ रहे थे। कोच पर सफाई उपविभाग का निदेशक घरघराता हुआ चित्त लेटा था और उसकी छाती पर सवार सर्जन बोरमेंताल छोटे-से सफ़ेद तकिये से उसका दम घोंट रहा था।

कुछ मिनट बाद डाक्टर बोरमेंताल सामनेवाले दरवाज़े की ओर गया, उसका चेहरा बिल्कुल बदला हुआ था, घण्टी के बटन के पास उसने पर्चा टाँग दिया :

"प्रोफ़ेसर की बीमारी के कारण आज मरीजों को नहीं देखा जायेगा। कृपया घण्टी न बजायें।"

चमचमाते कलमतराश से उसने घण्टी का तार काट दिया, आइने में उसने अपने, खून रिसती खरोंचों से भरे चेहरे और कटे-नुचे थरथराते हाथों का मुआयना किया। फिर वह रसोई में पहुँचा और चौकस बैठी ज़ीना और दार्या पेत्रोव्ना से बोला :

"प्रोफ़ेसर साहब ने अनुरोध किया है कि आप घर से कहीं न जायें।"

"अच्छा," ज़ीना और दार्या पेत्रोव्ना ने सहमकर उत्तर दिया।

"कृपया मुझे पीछे के दरवाज़े को ताला लगाकर चाभी साथ ले जाने की अनुमति दीजिये," दरवाज़े के पीछे छाया में हथेली से चेहरे को छिपाते हुए बोरमेंताल बोला। "थोड़ी देर के लिये, इसलिये नहीं कि आप पर यक़ीन नहीं। अगर कोई आ गया और आपसे न रहा गया, आप खोल देंगी, पर हमारे काम में कोई विघ्न नहीं पड़ना चाहिए। हम व्यस्त हैं।"

"ठीक है," औरतों ने उत्तर दिया और फ़ौरन उनके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। बोरमेंताल ने पीछेवाले दरवाज़े को ताला लगाया, आगेवाले को भी, गलियारे से प्रकोष्ठ में खुलनेवाले को भी और उसके कदमों की आहट जाँच के कमरे में जाकर बुझ गयी।

घर में सन्नाटा छा गया, वह उसके कोने-कोने में भर गया। झुटपुटे का मनहूस, आशंकापूर्ण अँधियारा–संक्षेप में अन्धकार छाने लगा। हाँ, यह सच है कि बाद में पीछेवाले पड़ोसियों का कहना था कि उस शाम को अहाते में खुलनेवाली प्रेओब्राझेन्स्की के जाँच के कमरे की खिड़कियों में तेज़ रोशनी जल रही थी और उन्होंने मानो प्रोफ़ेसर की सफ़ेद टोपी तक को देखा था.... पर यक़ीन नहीं होता। हाँ, जब यह मामला खत्म हो गया, ज़ीना भी कहती फिर रही थी कि जाँच के कमरे से बोरमेंताल और प्रोफ़ेसर के निकलने के बाद अध्ययन-कक्ष में इवान आर्नोल्दोविच को देखकर तो उसकी जान ही सूख गयी थी। वह मानो अध्ययन-कक्ष की अँगीठी के सामने उकडूँ बैठा अपने हाथों से नीले कवरवाली कापी को जला रहा था जो उसने प्रोफ़ेसर के मरीज़ों के रिकार्डों के ढेर से निकाली थी! डाक्टर के चेहरे पर मानो हरा रंग पुता था और वह पूरा... पूरा का पूरा खरोंचों से भरा था। उस शाम को फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को भी पहचानना मुश्किल था। और यह भी कि... ख़ैर, क्या पता कि प्रेचीस्तेन्का की मासूम बाला गप्प मार रही हो...

सिर्फ़ एक बात की गारण्टी दी जा सकती है : उस शाम को घर में पूरा और खौफनाक सन्नाटा था।

कहानी समाप्त

उपसंहार

ओबुख़ोव गली में स्थित प्रोफ़ेसर प्रेओब्राझेन्स्की के घर में जाँच के कमरे में हुए संघर्ष के ठीक दस दिन बाद वैसी ही रात को घण्टी घनघनायी।

"अपराध पुलिस और जाँच अधिकारी। खोलने का कष्ट करें।"

कदमों के दौड़ने, ठकठक की आवाजें गूँज उठीं और लोग अन्दर घुसने लगे। फिर से काँचों से जड़ी अलमारियों वाले मरीजों से मिलने के बिजली से जगमगाते कमरे में ढेरों लोग भर गये : दो पुलिस की वर्दी में, एक काले ओवरकोट में, बैग उठाये, मन ही मन खुश होता पीले चेहरेवाला श्वोंदिर, तरुण औरत, दरबान फ़्योदोर, ज़ीना, दार्या पेत्रोव्ना और शर्म के मारे बिना टाई के गले को हाथों से ढकता अधूरे कपड़े पहने बोरमेंताल।

अध्ययन-कक्ष के दरवाज़े ने फ़िलीप फ़िलीप्पोविच को उगला। वह सुपरिचित आसमानी ड्रेसिंग गाउन पहने बाहर निकले, सभी फौरन देख सकते थे कि पिछले सप्ताह के दौरान फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का वजन काफ़ी बढ़ गया है। पहले जैसे रोबीले और फुर्तीले फ़िलीप फ़िलीप्पोविच आत्मसम्मान से परिपूर्ण रात्रिकालीन अतिथियों के समक्ष उपस्थित हुए और उन्होंने ड्रेसिंग गाउन में होने के लिए क्षमा माँगी।

"प्रोफ़ेसर साहब, कोई बात नहीं," सादे कपड़ोंवाले आदमी ने बड़ा झेंपकर कहा, फिर वह हिचकिचाकर बोला, "बहुत बुरा लगता है, हमारे पास आपके घर की तलाशी लेने का और," आदमी ने फ़िलीप फ़िलीप्पोविच की मूँछों को कनखियों से देखा, "और उसके परिणाम के अनुसार गिरफ़्तार करने का वारण्ट है।"

फिलीप फ़िलीप्पोविच ने आँखें सिकोड़कर पूछा :

"किस आरोप में और किसे मैं जानना चाहता हूँ?"

आदमी गाल खुजलाकर बैग में से निकाले काग़ज़ को पढ़कर सुनाने लगा :

"प्रेओब्राझेन्स्की, बोरमेन्ताल, ज़ीना बूनिना और दार्या पेत्रोव्ना पर सफाई उपविभाग के निदेशक टेलीग्राफ़ टेलीग्राफोविच की हत्या का आरोप लगाया गया है।"

ज़ीना की दहाड़ के कारण उसके आख़िरी शब्द नहीं सुनायी पड़े। फिर कुछ गति आयी।

"मैं कुछ नहीं समझा," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने शाही अन्दाज में कन्धे उचकाकर कहा, 'यह कौन है शारिकोव? अच्छा, यह मेरे कुत्ते की बात चल रही है... जिसका मैंने आपरेशन किया था?"

"प्रोफ़ेसर साहब, माफ़ कीजिये, कुत्ते की नहीं, बल्कि जब वह आदमी बन चुका था। बात यही है।"

"मतलब वह बोलता था?" फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने पूछा। "पर इसका मतलब इंसान बन जाना तो नहीं होता। खैर, छोड़िये। शारिक अब भी ज़िन्दा है, किसी ने भी उसे मारने की सोची तक नहीं।"

"प्रोफ़ेसर," काला आदमी बड़ा हैरान होकर बोला और भौंहें तान लीं, "तब उसे पेश करना होगा। दस दिन से ग़ायब है, और माफ़ कीजिये, परिस्थितियाँ बड़ी सन्देहजनक हैं।"

"डाक्टर बोरमेन्ताल टेढ़ी मुस्कान के साथ चला गया।

जब उसने लौटकर सीटी बजायी तो उसके पीछे से अध्ययन-कक्ष में से बड़ा विचित्र कुत्ता निकला। जगह-जगह से वह गंजा था और जगह-जगह पर बाल उग रहे थे। वह सर्कस के सधे कलाबाज की तरह पिछली टाँगों पर चलकर आया और फिर चारों टाँगों पर खड़े होकर उसने नज़र दौड़ायी। कमरे में जैली की तरह का सन्नाटा जम गया। माथे पर सिन्दूरी निशानवाला भयंकर कुत्ता फिर से पिछली टाँगों पर खड़ा हुआ और मुस्कराकर आरामकुर्सी पर बैठ गया।

दूसरे पुलिसमैन ने हड़बड़ाकर सलीब का निशान बनाया और पीछे हटकर उसने ज़ीना के दोनों पैर दबा दिये।

काला वस्त्रधारी आदमी मुँह को बन्द किये बिना यूँ बोला :

"यह कैसे?.. यह सफाई विभाग में नौकरी करता था..."

"मैं तो इसे वहाँ नियुक्त किया नहीं था," फ़िलीप फ़िलीप्पोविच ने उत्तर दिया, "इसकी, अगर मुझसे भूल नहीं हो रही, श्रीमान श्वोंदिर ने सिफारिश की थी।"

"मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा," काला आदमी पसोपेश में पड़कर पहले पुलिसमैन को सम्बोधित करके बोला, 'यही है वह?"

"वह," बिना आवाज़ के पुलिसमैन बोला। "हूबहू वही।"

"वही है," फ़्योदोर की आवाज़ गूँजी, "बस, स्साले के फिर से बाल निकल आये हैं।"

"पर वह तो बोलता था... ख... ख..."

"अभी भी बोलता है पर कम ही कम, इसलिये मौक़े का फ़ायदा उठाइये नहीं तो जल्दी ही वह बिल्कुल चुप हो जायेगा।"

"पर आख़िर क्यों?" काले आदमी ने धीरे से पूछा।

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच के कन्धे उचका दिये।

"विज्ञान अभी जानवरों को इंसान बनाने की विधि नहीं जानता। मैंने कोशिश की थी पर जैसा कि आप देखते हैं, सफलता नहीं मिली। कुछ दिन बोलकर फिर से अपनी पुरानी अवस्था में लौटने लगा। इसे पूर्वजता कहते हैं।"

"भद्दे शब्दों का प्रयोग न करें," अचानक कुत्ता भौंका और आरामकुर्सी से उठा।

अचानक काले आदमी का चेहरा पीला पड़ गया, उसके हाथ से बैग छूट गया और वह गिरने लगा, पुलिसवाले ने उसे बगल से और फ़्योदोर ने पीछे से पकड़ लिया। कोहराम

मच गया और उसमें तीन वाक्य साफ़-साफ़ सुनायी दिये :

फ़िलीप फ़िलीप्पोविच का : "दवाई दो। यह बेहोशी है।"

डाक्टर बोरमेंताल का : "अगर श्वोंदिर ने फिर कभी प्रोफ़ेसर प्रेओब्राझेन्स्की के घर में मुँह दिखाया तो मैं खुद अपने हाथों जीने से धक्का दे दूँगा।"

और श्वोंदिर का : "कृपया इन शब्दों को हलफनामे में दर्ज कर लिया जाये।"

पाइपों की धूसर कुण्डलियाँ गर्मी का प्रसार कर रही थीं। पर्दों ने एकाकी तारेवाली प्रेचीस्तेन्का की घनी रात को छिपा दिया। श्रेष्ठम जीव, दिव्य श्वान उपकारक आरामकुर्सी पर बैठा था और शारिक कुत्ता चमड़े के सोफे के पास कालीन पर पसरा हुआ था। मार्च महीने में कोहरे की वजह से कुत्ते को सिर का दर्द सताता था जो सिर के टाँकों के घेरे में होता था। पर शाम को गर्मी पाकर वह मिट जाता था। अब भी वह कम ही कम होता जा रहा था और कुत्ते के दिमाग़ में सुखद सुडौल विचार तैर रहे थे।

"मेरी किस्मत कितनी अच्छी निकली, कितनी अच्छी निकली," वह ऊँघता हुआ सोच रहा था। "इस घर में मेरे पाँव जम ही गये। अब मुझे पूरा यकीन हो गया कि मेरी उत्पति में ज़रूर कोई गड़बड़ है। ज़रूर न्यूफाउण्डलैण्ड का ही इसमें हाथ है। कुलटा थी मेरी दादी, भगवान बुढ़िया की आत्मा को शान्ति दे। हाँ, यह ज़रूर है कि सिर साख का सारा कुरेद डाला, पर शादी तक यह ठीक हो जायेगा। अपन को इससे क्या लेना।"

दूर से बोतलों की झंकार सुनायी पड़ रही थी। टँगकटा जाँच के कमरे की अलमारियों की सफाई कर रहा था।

सफ़ेद बालों वाला जादूगर बैठा गुनगुना रहा था :

"नील नदी के पावन तटों की ओर..."

कुत्ता भयंकर चीज़ों का साक्षी था। चिपचिपे दस्ताने पहनकर दिव्य पुरुष हाथों को पात्र में डालकर भेजे निकाल रहा था—बड़ा कर्मठ, हठीला आदमी है, लगा था कुछ खोजने में, चीर-फाड़ करता, आँखें सिकोड़कर जाँच करता गुनगुना रहा था :

"नील नदी के पावन तटों की ओर..."



परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

ISBN:81-87425-79-2
[redacted]